परम कोडिंग का रहस्य
- 100वां अध्याय
अध्याय 100 • आध्यात्मिक-वैज्ञानिक दृष्टिकोण • शीर्ष से मूल तक का सफर
1 कंप्यूटर = गधा, वैज्ञानिक की कोडिंग चाहिए
Coded Computer
Dead Computer
Coded Computer
<›> {code..}
print(जागृत)
बिना कोडिंग = गृत / कुछ नहीं कर सकता
कोडिंग से जीवंत / कार्यरत
गधा ताकतवर है पर चलाने वाला चाहिए। वैसे ही कंप्यूटर शक्ति है पर कोडिंग के बिना जड़ है।
2 मनुष्य की बुद्धि में परम कोडिंग किसने डाली?
वही परम चेतना — श्रीकृष्ण की दिव्य कोडिंग आत्मा में डालते हैं।
यह कोड जन्मजात है: विवेक, प्रेम, धर्म, करुणा।
3 अहंकार सम्राट - "मैं करता हूँ" का मुकुट, पर कोडर को भूल गया
मैं ही करता हूँ
धर्म,
करुणा,
अहंकार = कोड को अपना मान लिया,
कोडर को विस्मृत कर दिया
4 केन-उपनिषद - बुद्धि साधन है, साध्य नहीं
केन प्रेषितं पतति प्रेषितं मनः
केन प्राणः प्रथमः प्रैति
बुद्धि केवल साधन/उपकरण है। लक्ष्य तो वह
परम चेतना है। बुद्धि से परे वही सत्य है।
AI में तर्क है पर भावना नहीं -
5 भावना ब्रह्म की सत्ता
5
AI = तर्क, डेटा,
गणना
AI कोड कर सकता है,
गणना कर सकता है
भावना = प्रेम, करुणा, समर्पण
ब्रह्म की सत्ता
भावना केवल परमात्मा की देन है; AI में
AI तर्क दे सकता है, पर प्रेम नहीं दे सकता।
भावना ब्रह्म की सत्ता है।
6 नास्तिक "हमें नहीं पता" = परमात्मा की कुर्सी
हमें नहीं पता
परमात्मा की कुर्सी
जब बुद्धि 'पता नहीं' कहे, वहीं परमात्मा विराजे हैं।
अज्ञान भी ईश्वर की ओर सकेत है।
बुद्धि भोग में लगेगी तो जीव
7 बुद्धि का दुरुपयोग भोग में = 84 लाख जेल
84 लाख योनि जेल
विज्ञान बाहर परम कोडर ढूंढ रहा है।
पर असली कोडिंग तुम्हारे भीतर है — आत्मा में।
8 परमात्मा को पाने मूर्ख बनो, बुद्धिमानी
त्यागो
गर्व की बुद्धिमानी त्यागो। बालक-सदृश
सरल बनो। समर्पण ही मार्ग है।
विज्ञान का लक्ष्य परम कोडर, पर बाहर ढूंढ रहे,
कोडिंग भीतर है
बाहर खोज →
10 निष्कर्ष - वैज्ञानिक के दिमाग की कोडिंग
खोजोगे तो परमात्मा सामने
जब भीतर की कोडिंग — आत्मा की कोडिंग
खोजेंगे, तभी परमात्मा प्रत्यक्ष होंगे।
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
॥ सर्व खलु इदं ब्रह्म ॥ • 100वां अध्याय • भीतर ही परम कोडर •

परम कोडिंग का रहस्य - कौन है वो परम कोडर?
Computer is "गधा" without coding | Human Buddhi also needs "Divine Coding"
बिना कोडिंग = मृत मशीन
ERROR:
No Code |
कंप्यूटर गधा है
कंप्यूटर = गधा
कंप्यूटर गधा है, वैज्ञानिक की कोडिंग चाहिए
0101
2. मनुष्य की बुद्धि में परम कोडिंग किसने डाली?
5. AI में तर्क है पर भावना नहीं — भावना ब्रह्म की सत्ता
Logic ✓
Emotion ✗
बुद्धि का दुरुपयोग भोग में = 84 लाख योनियों में
तर्क सीमित है, चेतना नहीं
परम कोडर = परमात्मा/ब्रह्म
अहंकार सम्राट है — "मैं करता हूँ" भूल जाता है कोडर को
केन-उपनिषद — इंद्रियाँ, बुद्धि साधन हैं, साध्य नहीं
नास्तिक "हमें नहीं पता" कहते हैं — वही परमात्मा की कुर्सी
परमात्मा को पाने के लिए बुद्धिमान नहीं, मूर्ख बनना पड़ता है
विज्ञान का लक्ष्य परम कोडर तक पहुंचना, पर बाहर ढूंढ रहे, कोडिंग भीतर है
10. निष्कर्ष: जिस दिन वैज्ञानिक के दिमाग की कोडिंग खोजोगें, परमात्मा सामने होंगे
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
• भीतर की कोडिंग = प्रेम, चेतना, करुणा • AI में कोड है, पर आत्मा नहीं •

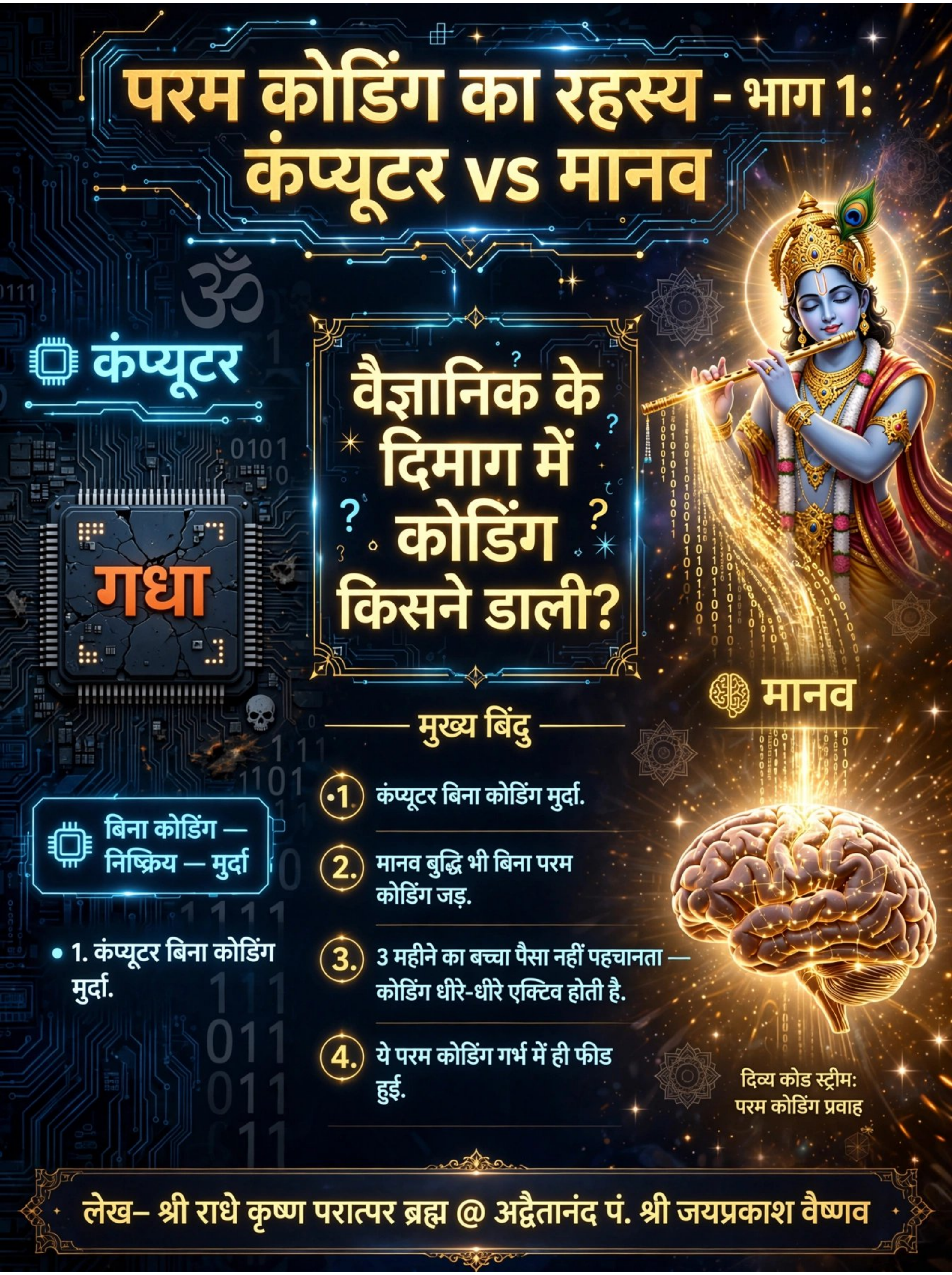
परम कोडिंग का रहस्य - भाग 1:
कंप्यूटर vs मानव
कंप्यूटर
वैज्ञानिक के दिमाग में कोडिंग किसने डाली?
गधा
मानव
मुख्य बिंदु
1. कंप्यूटर बिना कोडिंग मुर्दा.
2. मानव बुद्धि भी बिना परम कोडिंग जड़.
3. 3 महीने का बच्चा पैसा नहीं पहचानता — कोडिंग धीरे-धीरे एक्टिव होती है.
4. ये परम कोडिंग गर्भ में ही फीड हुई.
बिना कोडिंग — निष्क्रिय — मुर्दा
• 1. कंप्यूटर बिना कोडिंग मुर्दा.
दिव्य कोड स्ट्रीम: परम कोडिंग प्रवाह
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 2: अहंकार सम्राट
Design 2 of 5
अहंकार
010101
010101
010101
बुद्धि
मैं करता हूँ
दर्शन
1. बुद्धि परिपक्व होते ही अहंकार चपेट में लेता है.
2. अहंकार सम्राट है - बड़े-बड़े पहलवान नतमस्तक.
3. "मैं करता हूँ" भूल जाता है कि कोडिंग किसने की.
4. यहीं से जीव का पतन शुरू.
5. जब तक कोडर को नहीं पहचानते, परम कोडर से नहीं मिल पाओगे.
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 3:
केन-उपनिषद की घोषणा
आधुनिक विज्ञान
केन-उपनिषद
Theme: Ancient Scripture vs Modern Science
भावना कहाँ है?
हार्डवेयर-सॉफ्टवेयर तो मापा जा सकता है...
भावना = ब्रह्म की सत्ता
प्रेम
भक्ति
करुणा
बुद्धि, मन, इंद्रियाँ साधन हैं, साध्य नहीं
ॐ
केन उपनिषद
• 1. केन-उपनिषद - परमात्मा बुद्धि की सीमा से बाहर
• 2. AI में तर्क है पर प्रेम नहीं, करुणा नहीं, ईश्वर की तड़प नहीं।
• 3. भावना केवल परमात्मा की सत्ता - मशीन नहीं पकड़ सकती
• 4. वैज्ञानिक हार्डवेयर-सॉफ्टवेयर पकड़ पाए, 'स्वविवेक' नहीं।
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

Design 4 of 5:
परम कोडिंग का रहस्य -
भाग 4: नास्तिक का ढोंग
परमात्मा की कुर्सी
मुख्य बिंदु:
1. नास्तिकता का सबसे बड़ा कोना - 'हमें नहीं पता' का ढोंग.
2. वे पता करना ही नहीं चाहते - अहंकार मर जाएगा.
3. जैसे ही परम कोडर खोजोगे, नास्तिकता का कोहरा छंट जाएगा.
4. नास्तिकता अज्ञानता का छलावा है, जो सत्य से डरती है.
हमें नहीं पता
SCIENTIST — ATHEIST
जब वैज्ञानिक अपनी सीमा पर पहुँचता है, तो कहता है
हमें नहीं पता - वही जगह साक्षात् परमात्मा की कुर्सी है
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 5:
निष्कर्ष - कहाँ से आई ये बुद्धि?
क्या बुद्धि आसमान से टपक गई?
कंप्यूटर → केवल मशीन
मनुष्य → चेतन आत्मा
कंप्यूटर को कोड करने के लिए मनुष्य चाहिए
वह स्वयं कोड नहीं लिख सकता
निर्जीव — निर्देश के बिना असमर्थ
अंतर
मनुष्य को चेतना कोड करने के लिए परमात्मा चाहिए
वह स्वयं चेतना नहीं रच सकता
चेतन
किन्तु परमात्मा पर निर्भर
निष्कर्ष — सत्य की 5 कड़ियाँ
1. 3 महीने का बच्चा पैसा क्यों नहीं पहचानता? बुद्धि बढ़ने का इंतजार क्यों?
2. जितने आविष्कार हुए, पहले से दिमाग मौजूद था
3. तो 'दिमाग' मनुष्य में कहाँ से टपका?
4. जैसे ही कैचिंग पावर आया, अहंकार रूपी एड्स ने शिकार कर लिया
5. भूल गया बुद्धि में कोडिंग डालने वाले 'परम कोडर ब्रह्म परमात्मा' को!
यह कोडिंग साक्षात् कृष्ण की है.
चेतना, बुद्धि और सर्व सृष्टि का मूल — परम ब्रह्म श्री कृष्ण ही परम कोडर हैं!
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 6: अंतिम प्रहार - सबसे बड़ा रहस्य

मनुष्य के अंदर बुद्धि में कोडिंग करने के लिए क्या चाहिए???

कंप्यूटर helpless
कंप्यूटर खुद से कोडिंग तैयार क्यों नहीं किया?
मनुष्य को क्यों आना पड़ा?

Human brain
क्या मनुष्य अपना कोडिंग खुद से तैयार किया?
तो कंप्यूटर क्यों नहीं?

अंतिम प्रहार — 10 बिन्दु: सबसे बड़ा रहस्य

1. कंप्यूटर का सुप्रीम मनुष्य/वैज्ञानिक है.
2. तो वैज्ञानिकों का सुप्रीम कौन है?
3. बिना कोडिंग समझने की शक्ति तैयार नहीं हो सकती.
4. क्या नास्तिक के बाप ने बुद्धि की कोडिंग की? की?
5. यह अहंकार की समझ से बाहर है — बस "मैं मैं मैं" जानता है.
6. जैसे बुद्धि बढ़ती है, अहंकार चूहे को बिल्ली जैसे चपेट में लेता है.
7. बुद्धि अहंकार की शिकार होकर परम सत्य नहीं जान सकती, संसार में भटकती है.
8. यहीं है ब्रह्मांड का सबसे बड़ा रहस्य — इसको जान लिया तो मुक्ति, नहीं जाना तो 84 लाख में अनंत काल.
9. नास्तिक को पहले विज्ञान पढ़ो — कंप्यूटर को कैचिंग करवाने मनुष्य आया, तो मनुष्य में चेतन कोडिंग करने कौन आया?
10. जो इस जगह हारा, वो ब्रह्मांड का सबसे बड़ा गधा, वैज्ञानिक भी गधा.

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

अहंकार को पूछो - तू उस दिन कहाँ था???

Theme: BEFORE & AFTER — परम कोडिंग का रहस्य — भाग 7: अहंकार का पोस्टमार्टम

3 महीने का पिल्लू

बुद्धि बढ़ते ही

अहंकार का पोस्टमार्टम — 7 मुख्य सच

1. 9 महीने पेट में था — तो कहाँ था? दूध पीने कहाँ गया था?
2. बुद्धि नहीं थी — तो चुपचाप सिकुड़ा हुआ था.
3. उस दिन मैं-मैं का नशा कहाँ गया था?
4. अहंकार को समझ नहीं आएगा — मैं-मैं का भूत पकड़ लिया है.
5. अगर समझ आ जाए — तो बेहोश होकर गिर जाए.
6. अहंकार जिस दिन चक्कर खाकर गिर गया — उसी दिन परमात्मा मिल जाए.
7. परमात्मा तब तक नहीं मिलेंगे — जब तक अहंकार बेहोश होकर गिरेगा नहीं.

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 8: अहंकार का अंतिम पोस्टमार्टम

3 महीने के पिल्लू थे तो तेरा 'मैं' कहाँ था?

प्रतीकात्मक तीन-स्तरीय यात्रा

पैनल 1:
3 महीने का पिल्लू - असहाय अवस्था

सब दूसरों ने कराया

पैनल 2:
9 महीने गर्भ में - सिकुड़ा हुआ

चुपचाप पड़ा था

पैनल 3:
आज का अहंकारी - डिंग मार रहा है

आज का अहंकारी - डिंग मार रहा है

← समय के साथ अहंकार का विकास →

मुख्य सत्य — आत्मचिंतन के 12 बिंदु

1. जैसे ही बुद्धि बढ़ी, बकवास शुरू
   'कहाँ है भगवान?'
2. तो यही बकबक गर्भ में क्यों नहीं थी?
3. नाचने की ताकत कहाँ से मिली?
   भ्रूण से ताकतवर किसने बनाया?
4. संसार के माया जाल में भूल गया भ्रूण रूप.
5. खुद से ताकत मिली? ये भ्रम है!
6. मृत्यु के बाद फिर शून्यावस्था में जाना होगा.
7. परम शक्ति ने 2 दिन नाचने की शक्ति दी
   निरीक्षण के लिए.
8. पहचान लिया तो मुक्ति, नहीं तो 84 लाख योनियों में.
9. दिमाग में नोट कर लो
   केवल पहचानने के लिए ताकत मिली है.
10. माँ की गोद में उठ नहीं पा रहा था
    कौन भर दिया ताकत से?
11. वही ताकत को जानने धरती में आना हुआ
    सर्वशक्तिमान की पहचान.
12. जो पहचान लिया मुक्त, जो नहीं पहचान पाया
    अनंत काल 84 में.

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

ॐ

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 9: वैराग्य का रहस्य

प्रश्न: क्या वैराग्य गरीबी से ही होता है?

उत्तर: नहीं - 50% सत्य

खाने के दाने नहीं, फिर भी भगवान की तरफ नहीं जाता - कृपा नहीं

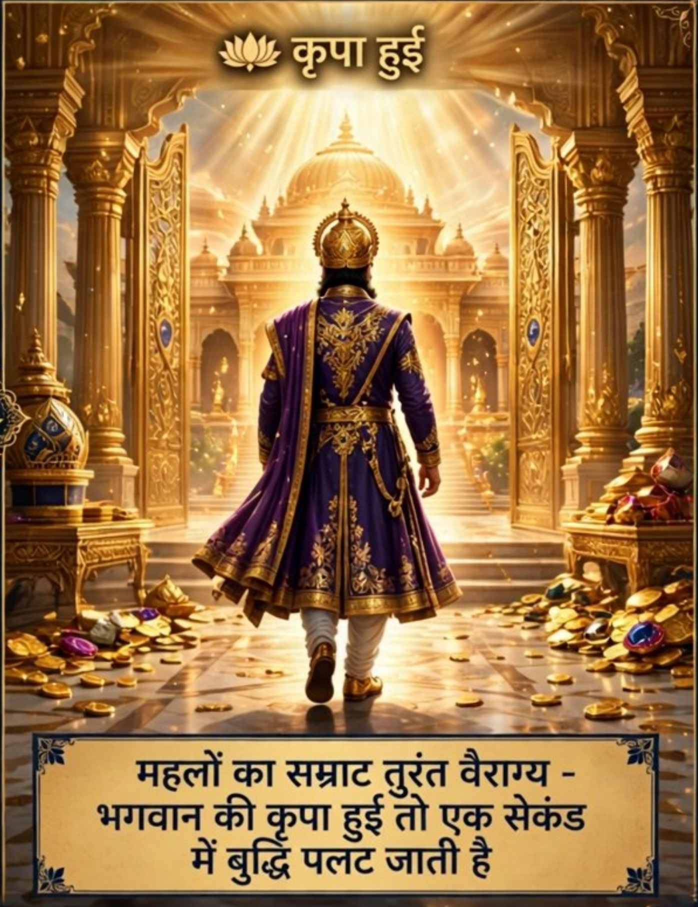

महलों का सम्राट तुरंत वैराग्य - भगवान की कृपा हुई तो एक सेकंड में बुद्धि पलट जाती है

वैराग्य के 9 रहस्य — कृपा बनाम गरीबी

1. वैराग्य गरीबी से नहीं, भगवान की कृपा से होता है.
2. कृपा हुई तो महल छोड़कर निकल जाएगा, करोड़ों की संपत्ति होते हुए भी.
3. बुद्धि पलटने की क्रिया को भगवान की कृपा कहते हैं.
4. अनंत जन्मों से चंचल मन माया में फंसा - वैराग्य संभव नहीं.
5. जब तक माया अधिपति कृपा न करें, वैराग्य नहीं हो सकता.
6. भगवान के दो अस्त्र अहंकार तोड़ने के - गरीबी और असाध्य रोग.
7. इन दोनों से जिसका अहंकार न टूटा, ऐसा प्राणी नहीं.
8. जब तक ये दोनों न आएं, अहंकार सर पर चढ़ा रहेगा.
9. यही दोनों अहंकार रूपी चट्टान को तोड़ पाए हैं, तीसरा अस्त्र नहीं.

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोड़िंग का रहस्य - भाग 10:
अहंकार तोड़ने के 4 हथौड़े
अहंकार रूपी महा भयंकर चट्टान को
तोड़ने के केवल 4 हथौड़े
हथौड़ा 1:
अकाल गरीबी
50% अहंकार टूटा -
शरीर स्वस्थ है!
हथौड़ा 2:
असाध्य रोग
50% टूटा - पैसे से ठीक
कर लूंगा!
अहंकार
हथौड़ा 3:
असफलता
Dream
Cancelled
50% टूटा - अगली बार
सफल हो जाऊंगा!
हथौड़ा 4:
रिश्तो का नाश
50% टूटा - अकेला जी लूंगा,
पैसा है मेरे-मेरे का जाल खत्म
जब चारों हथौड़े एक साथ प्रहार करते हैं →
100% अहंकार का नाश = भगवान में पूर्ण समर्पण
भक्त का अंतिम समर्पण
हे गिरधर मेरे श्री कृष्ण! अब
मुझे पूरी अपनी शरण में ले लो
प्रभु! मेरा अब दुनिया में कोई
नहीं है आपके सिवा! मैं दुखों
के चक्रव्यूह में फस गया हूं!
मैं हार चुका हूं!
डॉक्टर रिपोर्ट —
"अब हम कुछ नहीं
कर सकते, ऊपर वाले
के हाथ है"
नोट: 0.1% खुशी भी बाकी
तो अहंकार नहीं टूटता
श्री कृष्ण का दिव्य उत्तर
मैं जिनका कल्याण चाहता हूं,
उनको यही स्थिति में लाता हूं!
जब तक अहंकार लवलेश मात्र भी
बचा है, मैं पहले उसको नष्ट करता हूं!
इन चार हथौड़ों से हेकड़ी तोड़ता हूं,
फिर अपनाता हूं!
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म | @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

जन्मदिन, त्यौहार, मंडई मेला - यह सब क्या है? होश में रहो! -

• परम कोडिंग का रहस्य - भाग 11: जन्मदिन का सत्य •

सत्य का प्रवाह:

1. मुझे जन्मदिन से मतलब नहीं - केवल सत्य और परमात्मा.
2. संपूर्ण प्राणी प्रतिपल काल के ग्रास में जा रहे हैं.
3. यह आवागमन - जन्म-मृत्यु की चक्की, अज्ञानता की चक्की है.
4. ज्ञान प्राप्त हुआ, आत्मज्ञान प्राप्त हुआ, सत्य का साक्षात्कार हुआ तो चक्र से मुक्ति.
5. अज्ञानता अनदि काल से जीवात्मा को जन्म-मृत्यु के बंधन में बांधे है - जैसे जेल में कैदी.
6. जेल खाना - आवागमन; जीवात्मा - कैदी; जेल में डालने वाला - अज्ञानता.
7. जेल से छुडाने वाला - ज्ञान और भक्ति.
8. अज्ञानता का समाप्त होना ही मुक्ति का मार्ग है.
10. बस जिह्नको समझ आ जाए - "मैं कौन हूं? मेरा वास्तविक स्वरूप क्या है? जगत क्या है?" — उन्हीं का जन्म सफल है, बाकी का फिर से जन्म निश्चित.

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 12: महाकाल चक्र की गहराई

जन्मदिन मना रहे हो?
12 घंटे बाद फिर काल के ग्रास में!

1. समय चक्र की पिसाई में सारा जगत पीस रहा है.
2. यह जन्म-मृत्यु की चक्की अज्ञानता की चक्की है.
3. अज्ञानता का समाप्त होना ही मुक्ति का मार्ग है.
4. जिसको समझ आ जाए - मैं कौन हूं? मेरा वास्तविक स्वरूप? जगत क्या है?
5. उन्हीं का जन्म सफल है, बाकी का फिर से जन्म निश्चित.
6. केवल सत्य और परमात्मा से मतलब रखो.

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोड़िंग का रहस्य - भाग 13: मुक्ति का मार्ग

जेल से छुड़ाने वाला – ज्ञान और भक्ति

1. अज्ञानता अनादि काल से जीवात्मा को बांधे है.
2. केवल सत्य और परमात्मा से मतलब रखो.
3. जिसको समझ आ जाए – “मैं कौन हूं?” “मेरा वास्तविक स्वरूप क्या है?”
4. उन्हीं का जन्म सफल है.
5. Unlimited Universe – अनंत ब्रह्मांड कालचक्र की चपेट में है, पर ज्ञानी मुक्त है.

“अज्ञानता ही माया का स्वरूप है और ब्रह्म ज्ञान स्वरूप – संसार अज्ञान का समुद्र और यही संसार का मायाजाल”

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 14:
कठोपनिषद 2.3.4 84 लाख योनियों का चक्र
कठोपनिषद 2.3.4 - मानव योनि: मुक्ति का अंतिम द्वार
मानव योनि - साधन धाम मोक्ष कर द्वारा
मौज मस्ती करने का सिस्टम नहीं है!
मानव जन्म पाकर भी - पार्टी, बर्थडे, खाने, सोने, मस्ती में व्यर्थ समय
मृत्यु के बाद सीधे 84 राउंड में लॉक - हजारों कल्प तक घसीटना पड़ेगा
मृत्यु होते ही कर्मानुसार जीव फिर 84 लाख योनियों के चक्र में फंस जाता है
पशु
पक्षी
कुत्ता
बानर
बिंल्ली
"मानव योनि 100 अरब वर्ष में एक बार मिलती है"
कीट
बिच्छू
बिच्छू
सर्प
जलचर
इह चेदशकत्बोद्धुं प्रावशरीरस्य विस्रसः। ततः सर्गेषु लोकेषु शरीरत्वाय कल्पते ॥4॥
हिन्दी अर्थ: "यदि इस शरीर के नष्ट होने से पहले-पहले यहों ही बोध प्राप्त कर लिया, तब तो ठीक है; नहीं तो अनेक कल्यों तक विभिन्न लोकों में शरीर धारण करने पड़ते हैं।"
मुख्य संदेश — ८ महत्वपूर्ण बातें:
1. जन्म-मृत्यु की चक्की दिन-रात की तरह - अनंत काल तक चलती है.
2. जीवात्मा की गति: कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी, शेर-हाथीं में घूमना.
3. भगवान की करुणा से 84 से छूटने का एक चांस
4. साधन धाम मोक्ष कर द्वारा - केवल मानव योनि ही मुक्ति का द्वार.
5. मानव योनि का दुरुपयोग किया तो सीधे 84 में - खाने-पीने-मौज में बर्बाद किया तो पशु योनि.
6. मानव योनि का लक्ष्य: केवल मोक्ष का प्रयास.
7. 100 अरब वर्ष में एक बार मिलती है - ब्रह्मा जी के एक सप्ताह बाद अगला चांस.
8. मोक्ष का प्रयास नहीं किया तो फिर 84 में हजारों कल्प तक कष्ट.
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 15:
सच्ची भक्ति vs सोशल मीडिया की नौटंकी
राधा कृष्ण
मैं भक्त हूं
12.4K likes
892 comments
301 shares
भगवान दिल देखते हैं, स्टेटस नहीं
Yamraj पूछते हैं - "अंत समय क्या मांगा?"
अंत समय क्या मांगा?
हे भगवान बचा लो, बीमारी ठीक कर दो
तेरी मर्जी
जो बचा लो नहीं कहता उसे भगवान मिलते हैं
निष्काम प्रेम + संसार से वैराग्य = भगवान की प्राप्ति
नौटंकी भक्ति: टाइम पास, लाइक कमेंट
सच्ची भक्ति: शिकायत नहीं, समर्पण
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

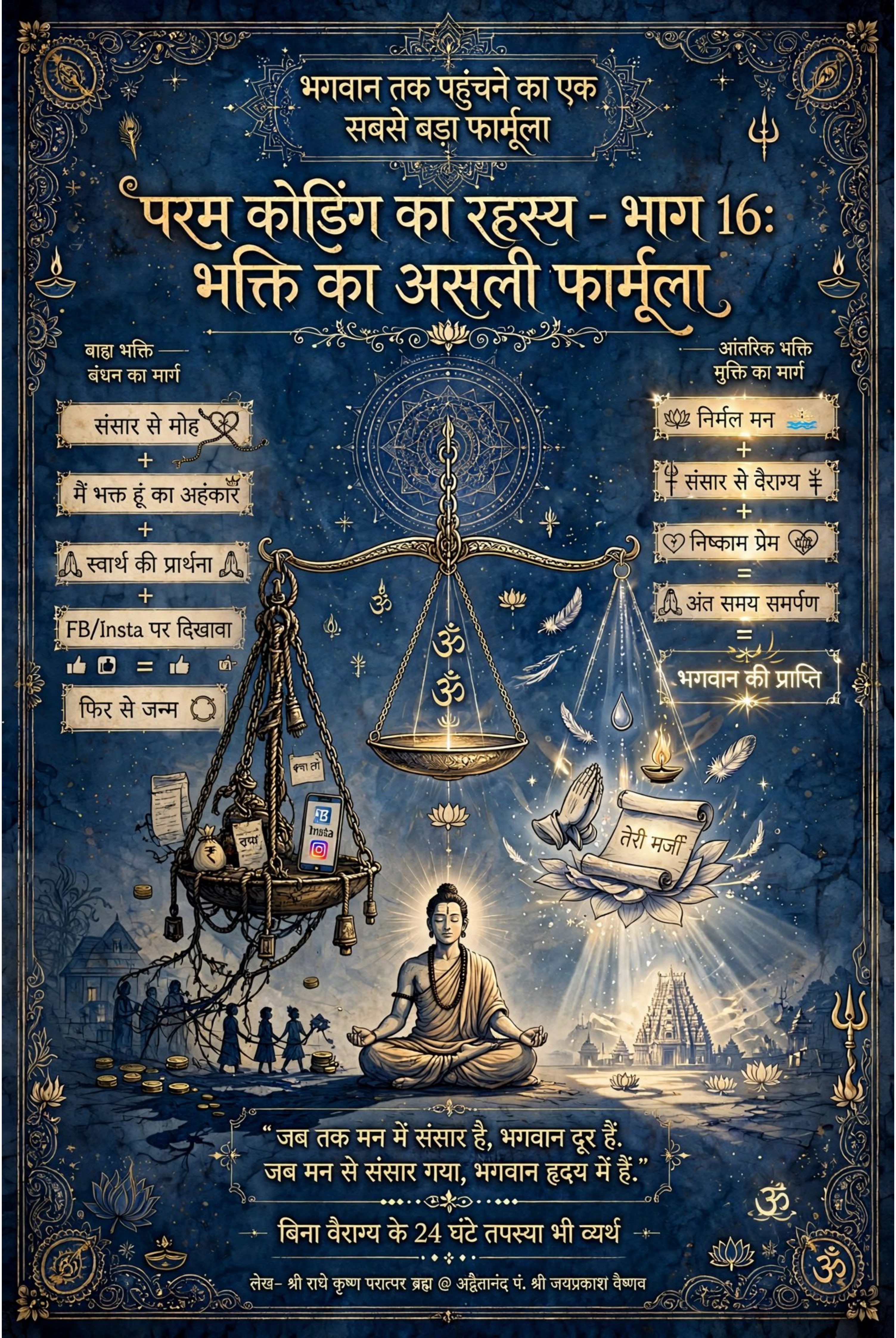

भगवान तक पहुंचने का एक
सबसे बड़ा फार्मूला
परम कोडिंग का रहस्य - भाग 16:
भक्ति का असली फार्मूला
बाह्य भक्ति —
बंधन का मार्ग
संसार से मोह
+
मैं भक्त हूं का अहंकार
+
स्वार्थ की प्रार्थना
+
FB/Insta पर दिखावा
=
फिर से जन्म
— आंतरिक भक्ति
मुक्ति का मार्ग
निर्मल मन
+
संसार से वैराग्य
+
निष्काम प्रेम
=
अंत समय समर्पण
=
भगवान की प्राप्ति
ॐ
ॐ
Insta
तेरी मर्जी
"जब तक मन में संसार है, भगवान दूर हैं.
जब मन से संसार गया, भगवान हृदय में हैं."
बिना वैराग्य के 24 घंटे तपस्या भी व्यर्थ
लेख- श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोड़िंग का रहस्य - भाग 17:
दिखावे की भक्ति vs निष्काम समर्पण
भगवान की प्राप्ति
मोक्ष
मोक्ष
तेरी मर्जी
मैं भक्त हूं
Follow
Follow
Likes
वैराग्य
निर्मल मन
प्रेम के आँसू
नौटंकी भक्ति का पेड़
दिखावे की जड़ें उथली - फल नहीं लगता
संसार का मोह गिरा देता है
सच्ची भक्ति का कल्पवृक्ष
निष्काम प्रेम की जड़ें गहरी - अमृत फल देता है
वैराग्य का वृक्ष अडिग रहता है
जो अंत समय 'बचा लो' कहे वो डूबता है, जो 'तेरी मर्जी' कहे वो तर जाता है
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

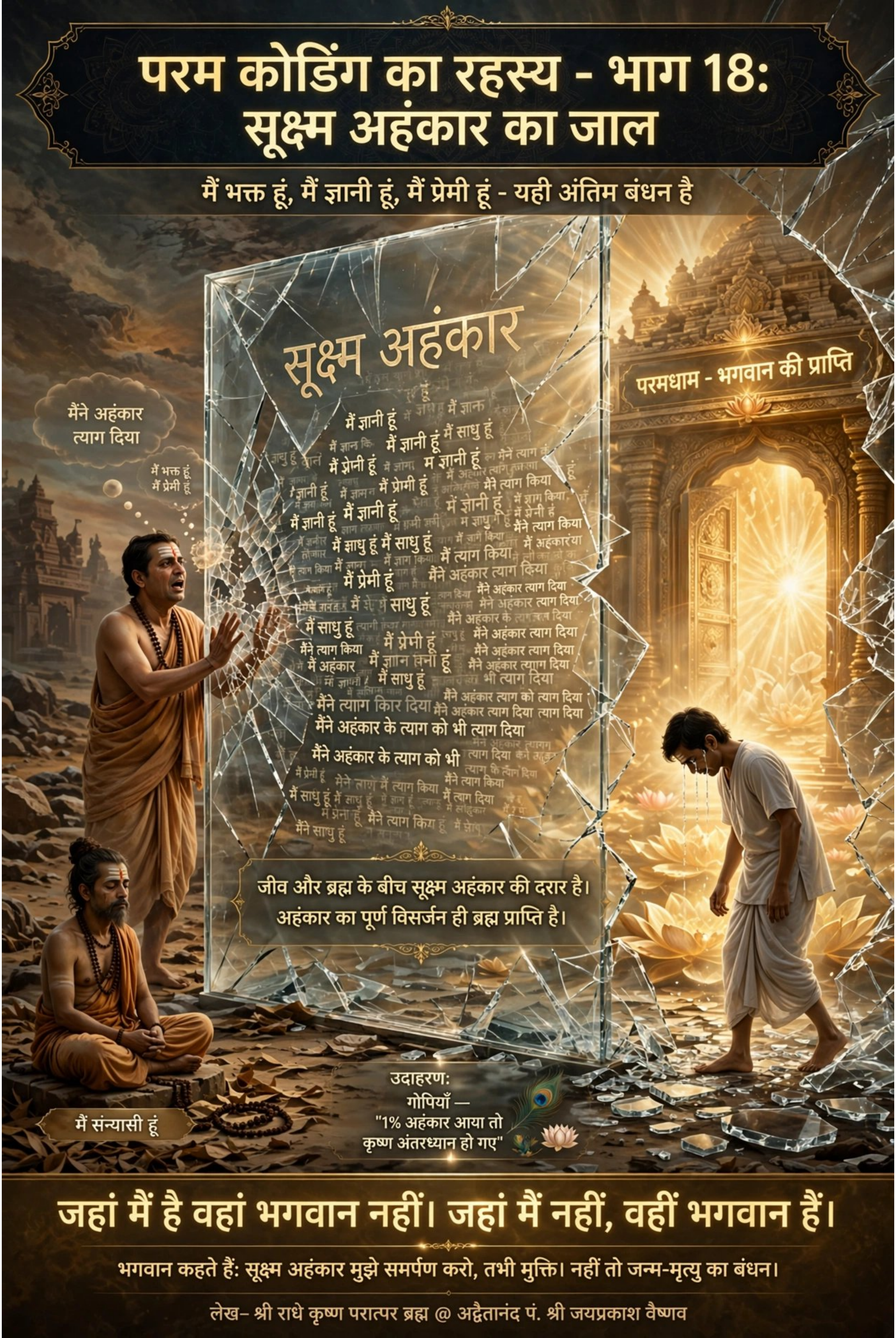
परम कोडिंग का रहस्य - भाग 18:
सूक्ष्म अहंकार का जाल
मैं भक्त हूं, मैं ज्ञानी हूं, मैं प्रेमी हूं - यही अंतिम बंधन है
सूक्ष्म अहंकार
मैंने अहंकार त्याग दिया
मैं भक्त हूं मैं प्रेमी हूं
परमधाम - भगवान की प्राप्ति
मैं ज्ञानी हूं
मैं ज्ञानी हूं मैं साधु हूं
मैं प्रेमी हूं
मैं प्रेमी हूं
मैं ज्ञानी हूं
मैं साधु हूं
मैंने अहंकार त्याग दिया
मैं साधु हूं
मैं प्रेमी हूं
मैंने अहंकार के त्याग को भी त्याग दिया
मैंने अहंकार के त्याग को भी
जीव और ब्रह्म के बीच सूक्ष्म अहंकार की दरार है।
अहंकार का पूर्ण विसर्जन ही ब्रह्म प्राप्ति है।
मैं संन्यासी हूं
उदाहरण:
गोपियाँ —
"1% अहंकार आया तो
कृष्ण अंतरध्यान हो गए"
जहां मैं है वहां भगवान नहीं। जहां मैं नहीं, वहीं भगवान हैं।
भगवान कहते हैं: सूक्ष्म अहंकार मुझे समर्पण करो, तभी मुक्ति। नहीं तो जन्म-मृत्यु का बंधन।
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 19: मैं का समर्पण
भगवान हिसाब नहीं देखते, समर्पण देखते हैं
तेरी मर्जी
मैं का बहीखाता
• मैंने 1 लाख माला की
• मैंने 24 घंटे सेवा की
• मैंने चारों वेद याद किए
• मैंने संन्यास लिया
• मैं भगवान से प्रेम करता हूं
• मैंने अहंकार त्याग दिया
तेरी मर्जी
मैं का बहीखाता भारी - जन्म-मृत्यु में गिराता है.
तेरी मर्जी का एक फूल हल्का - परमधाम ले जाता है
“पूरे जीवन नाम जप करके भी अगर मन में आया ‘मैंने इतना नाम लिया’ तो फिर से जन्म.
जिसने नाम लिया पर ‘मैं’ भूल गया, वही तर गया”
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

मृत्यु लोक - परीक्षा हॉल
भगवान की परीक्षा में 'मैं' लिखने वाला फेल, 'मैं' मिटाने वाला पास
परम कोडिंग का रहस्य - भाग 20:
परीक्षा हॉल का नियम
तेरी मर्जी
फेल - फिर से जन्म
फेल - फिर से जन्म
मैंने 1 लाख जाप किया
मैंने त्याग किया
पास - परमधाम
जहां मैं की स्याही है वहां फेल,
जहां मैं मिटा
वहां परमधाम
ब्रज की गोपियों को 1% अहंकार आया तो कृष्ण अंतरध्यान हो गए.
जब गोपी गीत गाकर रोईं - बिना 'मैं' के, तब मिले
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 21: अहंकार का अंतिम संस्कार

जब तक 'मैं' जिंदा है, भगवान नहीं मिलते।
जब 'मैं' की चिता जले, तभी आत्मा उड़े।

मीराबाई, प्रहलाद, ध्रुव - सबने 'मैं' जलाया, तब भगवान मिले। तुम कब जलाओगे?

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य – भाग 22: अहंकार का शीश महल
अहंकार का शीश महल
परमधाम
मैं भक्त हूं
मैं ज्ञानी हूं
मैं ज्ञानी हूं
मैं ज्ञानी हूं
मैं त्यागी हूं
मैंने अहंकार त्याग दिया
मैंने अहंकार त्याग दिया
मैंने अहंकार त्याग दिया
जब तक शीश महल में 'मैं' के दर्पण हैं, भगवान बाहर हैं। जब दर्पण टूटे, भगवान भीतर हैं।
जिसने अपना प्रतिबिंब देखना बंद किया, उसने भगवान को देख लिया
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

अहंकार का जाल = मैं के लेबल

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 23: अहंकार की मछली का जाल

जिस मछली पर 'मैं' का लेबल है वो जाल में फंसी है।
जिस पर कोई लेबल नहीं, वो भगवान तक पहुंची।

मीरा के पास 'मैं भक्त हूं' का लेबल नहीं था, इसलिए कृष्ण मिले।
नारद के पास 'मैं ज्ञानी हूं' का लेबल था, इसलिए भगवान दूर रहे।

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 24: अहंकार का प्यासा कुआं

जब तक 'मैं' की आवाज है, भगवान की आवाज सुनाई नहीं देती

अहंकार के कुएं में गिरा हुआ 'मैं-मैं' करता रहता है।
'तेरी मर्जी' की रस्सी लटकी है, पर पकड़ता नहीं।

"संत कहते हैं - कुएं से वही निकलता है जो 'मैं' चिल्लाना बंद कर दे।
जो चुप हो जाए, वही रस्सी पकड़ पाए।"

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 25: अहंकार का अंधा कुआं

यह अंधा कुआं है - जो 'मैं' लेकर गिरा, वो कभी न निकला।
यहां न रस्सी पहुंचती, न सीढ़ी।

"संत कहते हैं - इस कुएं से बचने का एक ही उपाय: गिरो ही मत।
'मैं' को जन्म ही मत दो। जो गिर गया, वो जन्मों तक भटकता है।"

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 26: माया का अंधा कुआं

जो माया के कुएं में गिरा, वो इन 9 डिपार्टमेंट में फंस मया

माया का अंधा कुआं - एक गिरा तो नौ डिपार्टमेंट में बंट गया। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, राग-द्वेष, भय, चिंता - सब यहीं हैं।

"संत कहते हैं - इससे निकलने का एक ही रास्ताः 'तेरी मर्जी' की सीढ़ी।
'मैं' की हर ईंट निकाल दो, कुआं अपने आप भर जाएमा।"

लेख- श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

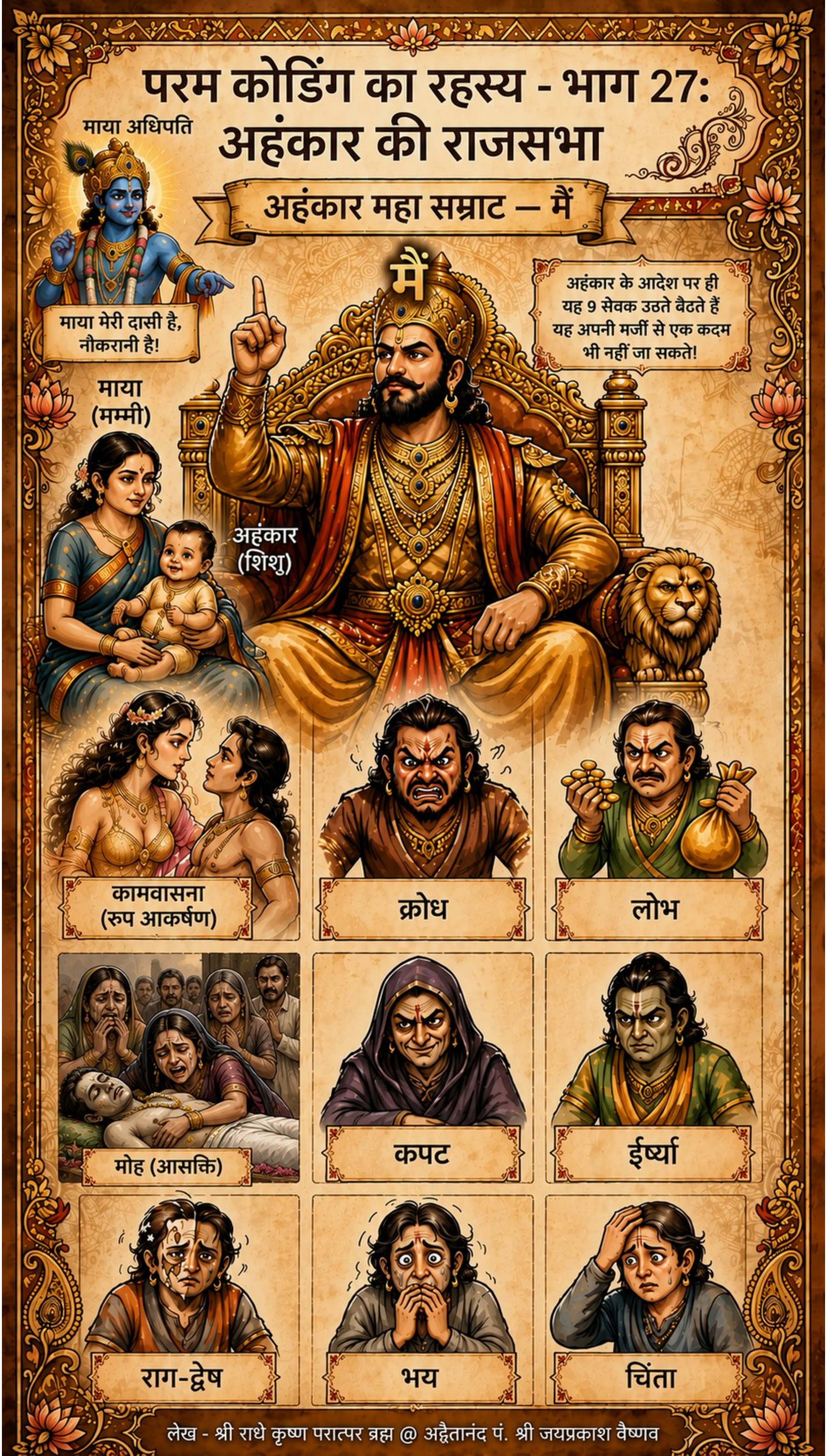
परम कोडिंग का रहस्य - भाग 27:
अहंकार की राजसभा
माया अधिपति
अहंकार महा सम्राट – मैं
मैं
माया मेरी दासी है, नौकरानी है!
अहंकार के आदेश पर ही यह 9 सेवक उठते बैठते हैं यह अपनी मर्जी से एक कदम भी नहीं जा सकते!
माया (मम्मी)
अहंकार (शिशु)
कामवासना (रुप आकर्षण)
क्रोध
लोभ
मोह (आसक्ति)
कपट
ईर्ष्या
राग-द्वेष
भय
चिंता
लेख - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य – भाग 29
श्री राधा रानी – अनंत सौंदर्य का मूल
मोहिनी छवि है।
संपूर्ण स्त्री तत्व की सुंदरता श्री राधा रानी की ब्र ब्रह्मन परमेश्वरी के आकर्षण का एक बूंद मात्र से संसार में अनंत स्त्री प्रकट हुई है। जितनी संसार में स्त्री सुंदरत है, मोहिनी छवि है, वह सब श्री राधा रानी का अंश है। अपनी सुंदरता की एक बूंद को संसार की स्त्रियें को दे दिया, जिसमें समस्त संसार पागल हो गया है। श्री राधा रानी कौन हैं? आनंद कंदिनी! वही संपूर्ण जगत की मूल सुंदरता हैं। याद रखना – स्वर्ग की अप्सरा को देखकर भी मनुष्य बेहोश हो जाए, वो अप्सरा भी श्री राधा रानी के अंश की अंश है।
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य – भाग 29
श्री राधा रानी – अनंत सौंदर्य का मूल
संपूर्ण स्त्री तत्व की सुंदरता श्री राधा रानी की सुंदरता है।
श्री राधा रानी पूर्ण ब्रह्म परमेश्वरी के आकर्षण का एक बूंद मात्र से संसार में अनंत स्त्री प्रकट हुई है। जितनी संसार में स्त्री सुंदरता है, मोहिनी छवि है, वह सब श्री राधा रानी का अंश है। अपनी सुंदरता की एक बूंद को संसार की स्त्रियों को दे दिया, जिसमें समस्त संसार पागल हो गया है। श्री राधा रानी कौन हैं? आनंद कंदिना! वही संपूर्ण जगत की मूल सुंदरता हैं। याद रखना – स्वर्ग की अप्सरा को देखकर भी मनुष्य बेहोश हो जाए, वो अप्सरा भी श्री राधा रानी के अंश की अंश है।
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य – भाग 30
माया का पर्दा
ॐ
माया का पर्दा हटते ही जीव को सत्य का दर्शन होता है। सोना, रूपया, संबंध – सब माया है।
पर्दे के पीछे श्री राधा-कृष्ण का नित्य धाम है। जो इस पर्दे को हटा दे, वही मुक्त है।
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

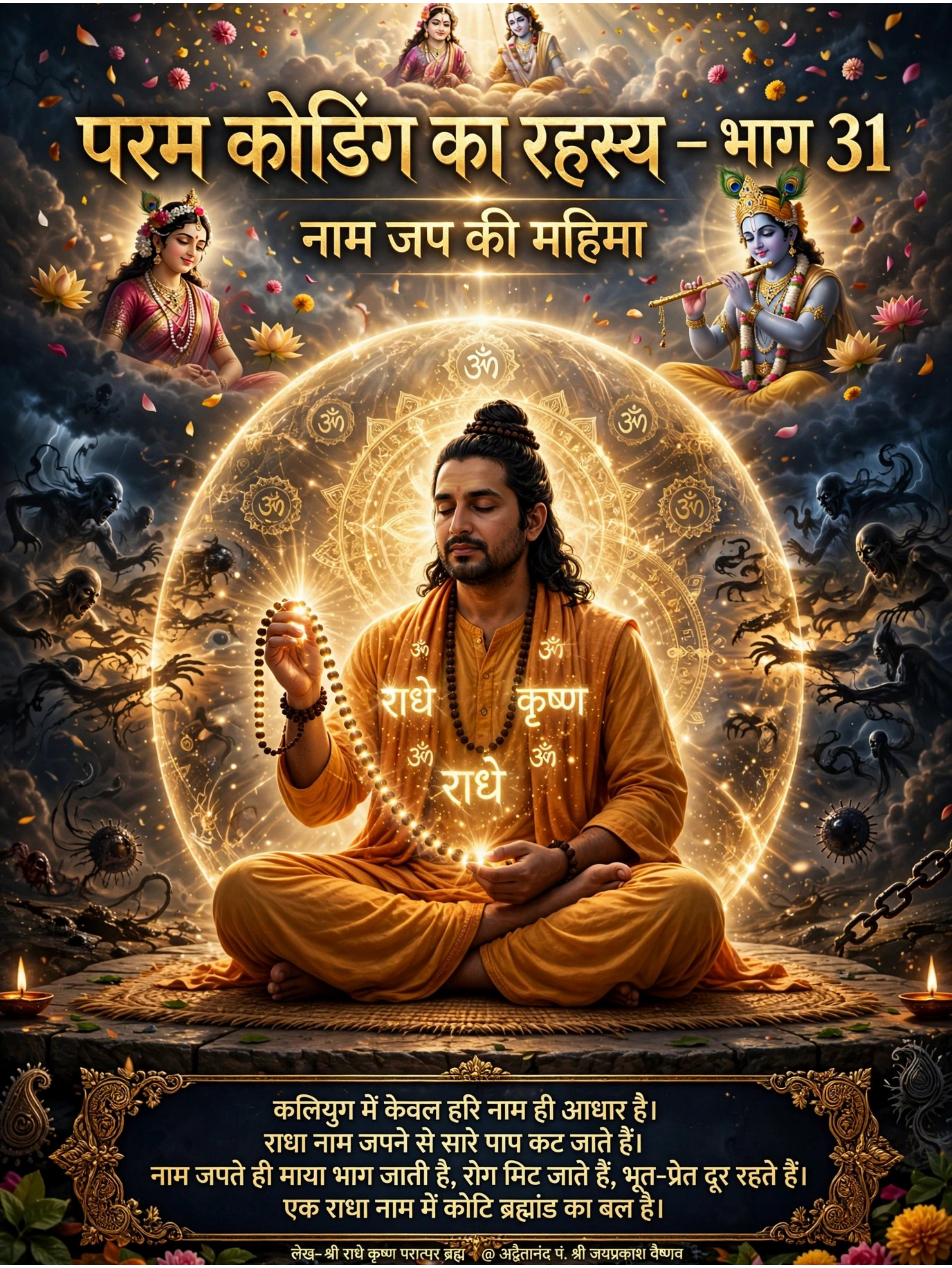
परम कोडिंग का रहस्य – भाग 31
नाम जप की महिमा
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
राधे
कृष्ण
राधे
कलियुग में केवल हरि नाम ही आधार है।
राधा नाम जपने से सारे पाप कट जाते हैं।
नाम जपते ही माया भाग जाती है, रोग मिट जाते हैं, भूत-प्रेत दूर रहते हैं।
एक राधा नाम में कोटि ब्रह्मांड का बल है।
लेख- श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य – भाग 31
भगवान के तीन विष्णु और उनका कार्य

① कारणोदकशायी महाविष्णु (महाविष्णु)
(Kāraṇodakaśāyī Viṣṇu)

महाविष्णु योगनिद्रा में कारण सागर में शयन करते हैं! उनके प्रत्येक रोमकूप से अनंत ब्रह्मांड प्रकट होते हैं और प्रलय में पुनः उन्हीं में लीन हो जाते हैं!

निज स्थान
कारण सागर (कारणार्णव)

कार्य
- अनंत ब्रह्मांडों की उत्पत्ति!
- प्रत्येक रोमकूप से असंख्य ब्रह्मांडों का प्रकट होना!
- प्रलय में सभी ब्रह्मांडों का पुनः अपने भीतर समा जाना!
- समस्त भौतिक सृष्टि का मूल कारण!

अवस्था
सृष्टि का प्रारंभ

प्रधान शक्ति
महा माया

② गर्भोदकशायी विष्णु
(Garbhodakaśāyī Viṣṇu)

प्रत्येक ब्रह्मांड में प्रवेश कर गर्भोदकशायी विष्णु नाभि कमल से ब्रह्माजी को प्रकट करते हैं और उन्हें सृष्टि रचना की शक्ति प्रदान कर ब्रह्मांड का संचालन करते हैं!

निज स्थान
प्रत्येक ब्रह्मांड के गर्भोदक सागर में

कार्य
- प्रत्येक ब्रह्मांड में प्रवेश करना!
- नाभि कमल से ब्रह्माजी का प्राकट्य!
- ब्रह्मा को सृष्टि रचना की शक्ति देना!
- प्रत्येक ब्रह्मांड का पालन प्रारंभ करना!

अवस्था
ब्रह्मांड का संचालन

प्रधान शक्ति
सृष्टि व्यवस्था

③ क्षीरोदकशायी विष्णु (परमात्मा)
(Kṣīrodakaśāyī Viṣṇu / Paramātmā)

क्षीरोदकशायी विष्णु क्षीरसागर में शयन करते हैं और प्रत्येक जीव के हृदय में परमात्मा रूप से स्थित होकर उसका मार्गदर्शन करते हैं!

निज स्थान
- क्षीरसागर
- प्रत्येक जीव के हृदय में
- प्रत्येक परमाणु में

कार्य
- जीव के हृदय में परमात्मा रूप से स्थित रहना!
- स्मृति, ज्ञान और विस्मृति देना (गीता 15.15)!
- कर्मों का साक्षी और अनुमन्ता होना!
- सम्पूर्ण जगत का सूक्ष्म संचालन!

अवस्था
प्रत्येक क्षण

प्रधान शक्ति
परम चेतना (चित् शक्ति)

तीनों विष्णु के कार्य का क्रम

महाविष्णु
ब्रह्मांडों की उत्पत्ति
(अनंत ब्रह्मांडों का प्रकट होना)

→

गर्भोदकशायी विष्णु
प्रत्येक ब्रह्मांड का संचालन
(ब्रह्मा की उत्पत्ति और सृष्टि की रचना)

→

क्षीरोदकशायी विष्णु (परमात्मा)
प्रत्येक जीव के हृदय में स्थित
(जीव का मार्गदर्शन और कर्म साक्षी)

शास्त्रीय संदर्भ
- श्रीमद्भागवत महापुराण
- ब्रह्मसंहिता 5.47 – 5.48
- भगवद्गीता 15.15, 18.61

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

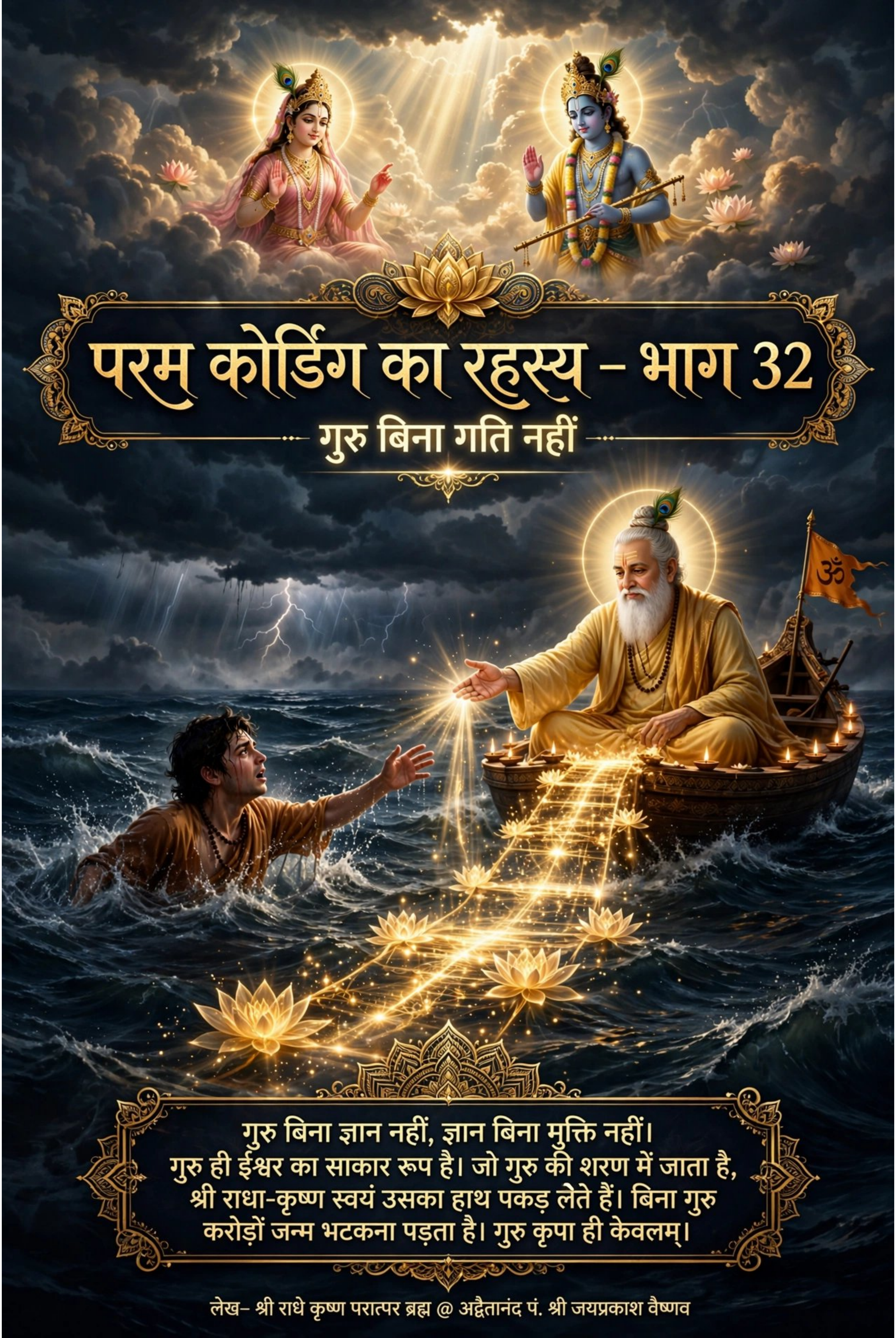

परम कोर्डिंग का रहस्य – भाग 32
गुरु बिना गति नहीं
ॐ
गुरु बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना मुक्ति नहीं।
गुरु ही ईश्वर का साकार रूप है। जो गुरु की शरण में जाता है,
श्री राधा-कृष्ण स्वयं उसका हाथ पकड़ लेते हैं। बिना गुरु
करोड़ों जन्म भटकना पड़ता है। गुरु कृपा ही केवलम्।
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोर्डिंग का रहस्य – भाग 35

जीव और आत्मा में क्या अंतर है? (बहुत बड़ा भ्रम टूटेगा आज)

भक्तों, 99% लोग जीव और आत्मा को एक ही समझते हैं – यही सबसे बड़ा अज्ञान है!

नोट कर लो।

1. आत्मा क्या है?

2. जीव क्या है?

आत्मा परमात्मा का अंश है। नित्य, शुद्ध, बुद्ध, चेतन, अजर, अमर, अविनाशी है। आत्मा कभी जन्म नहीं लेती, कभी मरती नहीं। आत्मा कर्म नहीं करती, केवल साक्षी है – देखने वाली है। आत्मा में कोई विकार नहीं, कोई वासना नहीं। जैसे बिजली – पवित्र, एक जैसी। गीता में कहा है – "ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।"
आत्मा भगवान का सनातन अंश है।

जब वही शुद्ध आत्मा जब मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार (अंतःकरण), सूक्ष्म शरीर और अनंत जन्मों की वासनाओं के साथ जुड़ जाती है, तब वह "जीव" कहलाती है! सूत्रः आत्मा + अंतःकरण + वासना + सूक्ष्म शरीर = जीव
जैसे शुद्ध बिजली जब टेबलेट, फ्रिज, बल्ब में जाती है तो अलग-अलग नाम हो जाता है, वैसे ही आत्मा जब शरीर में आती है तो जीव बन जाती है।

3. मुख्य अंतर –

आत्मा	जीव
कर्ता नहीं, केवल दृष्टा है	कर्ता है – कर्म करता है
भोक्ता नहीं है	सुख-दुख का भोक्ता है
मुक्त है	बंधन में है (84 लाख योनियों में)
एक ही जैसी, पवित्र	हर जीव अलग – अपनी वासना के अनुसार

निष्कर्षः आत्मा कभी बंधन में नहीं आती! बंधन में जीव आता है। मोक्ष आत्मा का नहीं, जीव का होता है। जब जीव की वासनाएं खत्म, अंतःकरण शुद्ध – तो जीव ही आत्मा में लीन हो जाता है, फिर परमात्मा में मिल जाता है – यही मोक्ष है!

याद रखो – तुम आत्मा नहीं, अभी तुम जीव हो!
आत्मा बनने की यात्रा ही भक्ति है!

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य – भाग 37

भगवान अपने भक्त की इतनी कठिन परीक्षा क्यों लेते हैं?

भक्तों, सोने को जितना तपाया जाता है, उतना ही वह चमकता है! भगवान भक्त को दुख देकर नहीं, तपाकर शुद्ध करते हैं! भगवान परीक्षा उसी की लेते हैं जिससे प्रेम करते हैं! मास्टर जी होशियार बच्चे का ही टेस्ट लेते हैं! भगवान का अटल नियम सून्नो! जिनको मैं दुख देकर कसौटी में डालता हूं, उन्हें मैं अपने परमधाम के लिए सेलेक्ट कर ल हूं! अपल उन्हीं को मैं दुख, कष्ट और संघर्ष के मैदान में उतारता हूं! और जिनको मैं 84 के राउंड में डालने के लिए साइन कर देता हूं, जिनका नाम 84 में कैद करने के लिए रजिस्टर में लिख देता हूं – उनको में संसार में सुख समृद्धिर हूं! चारों तरफ से खुशी ही खुशी देता हूं! यह मेरा अटल नियम है!

आगे फिर वो गिरते हैं – मच्छर, कुत्ते, बिच्ली, सूअर, छिपकली – इसी में जाते हैं! चॉकलेट, बिस्किट खाओ, बढ़िया खुशी से रहो और भगवान को भूलो, अहंकार म्सने रहो, फिर घूमा 84 राउंड में!

और जो मेरा भक्त होता है, उनको मैं शुद्ध करता हूं! उनके अहंकार को तोड़ता हूं! उनके सारे मेरा-मेरा के भ्रम को तोड़ता हूं! लाख कष्ट देकर नस-नस को तोड़ता हूं और उसे 84 से छुड़ाकर अपने परमधाम में रखता हूं!

इसलिए याद रखो – अगर जीवन में दुख ही दुख है और फिर भी आप भगवान को पकड़े हुए हैं – तो समझ लो भगवान ने आपको परमधाम के लिए चुन लिया है! दुख भगवान का प्रसाद है – जो इसे खा गया, वही अमर हो गया!

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

। 84 लाख योनि ।

परम कोडिंग का रहस्य – भाग 39

बुद्धि में चारों तरफ से ज्ञान की लहर क्यों दौड़ती है?

भक्तों, जब बुद्धि में हजार नहीं, लाख नहीं, करोड़ ज्ञान की धारा एक साथ दौड़ने लगे – प्रशांत महासागर की तरह बुद्धि में समंदर ही फटने लगे – ज्ञान की जल-प्रलय आ जाए – तो इसका अर्थ क्या है?

ये संकेत है कि ब्रह्म ने तुम्हारी बुद्धि को अपना घर बना लिया है! जब बुद्धि में ज्ञान की यज्ञ होने लगे – तो समझो अंदर कोई बैठकर आहुति दे रहा है! कौन? परात्पर ब्रह्म स्वयं!

हजार ज्ञान बहना – जानकारी है! लाख बहना – विद्वता है! करोड़ बहना – साक्षात कृपा है! अब तुम सोचते नहीं, ज्ञान दौड़ता है! पहले तुम ज्ञान को पकड़ते थे, अब ज्ञान तुम्हें पकड़ता है!

जब ज्ञान की प्रलय आती है, तो अहंकार की सृष्टि डूब जाती है! बुद्धि में समंदर तब फटता है! जब हृदय में भगवान का बांध टूटता है! जिस्स दिन बुद्धि में – [illegible] – [illegible]
अब तुम्हें लिखना नहीं है – अब तुम नहीं रहे – तुम लेखनी बन गए हो!

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

ॐ

✣ ज्ञान ही परम प्रकाश है | भाग 39 ✣

परम कोडिंग का रहस्य – भाग 40

भगवान दिखाई क्यों नहीं देते, जबकि वो हर जगह हैं?

भक्तों, भगवान हर जगह हैं – फिर दिखते क्यों नहीं? क्योंकि आंख में धूल है! धूल कौन सी? मैं की धूल! जब तक आंख में मैं हूं, तब तक भगवान नहीं दिखेंगे! जैसे चश्मे पर धूल हो तो दुनिया धुंधली दिखती है! भगवान तो सामने ही खड़े हैं, पर हमारी नजर में अहंकार का पर्दा है! जिस दिन पर्दा हटा, उसी दिन पता चला – अरे! भगवान तो मेरे अंदर ही बैठे थे! बाहर ढूंढता रहा, घर में ही खजाना था!

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

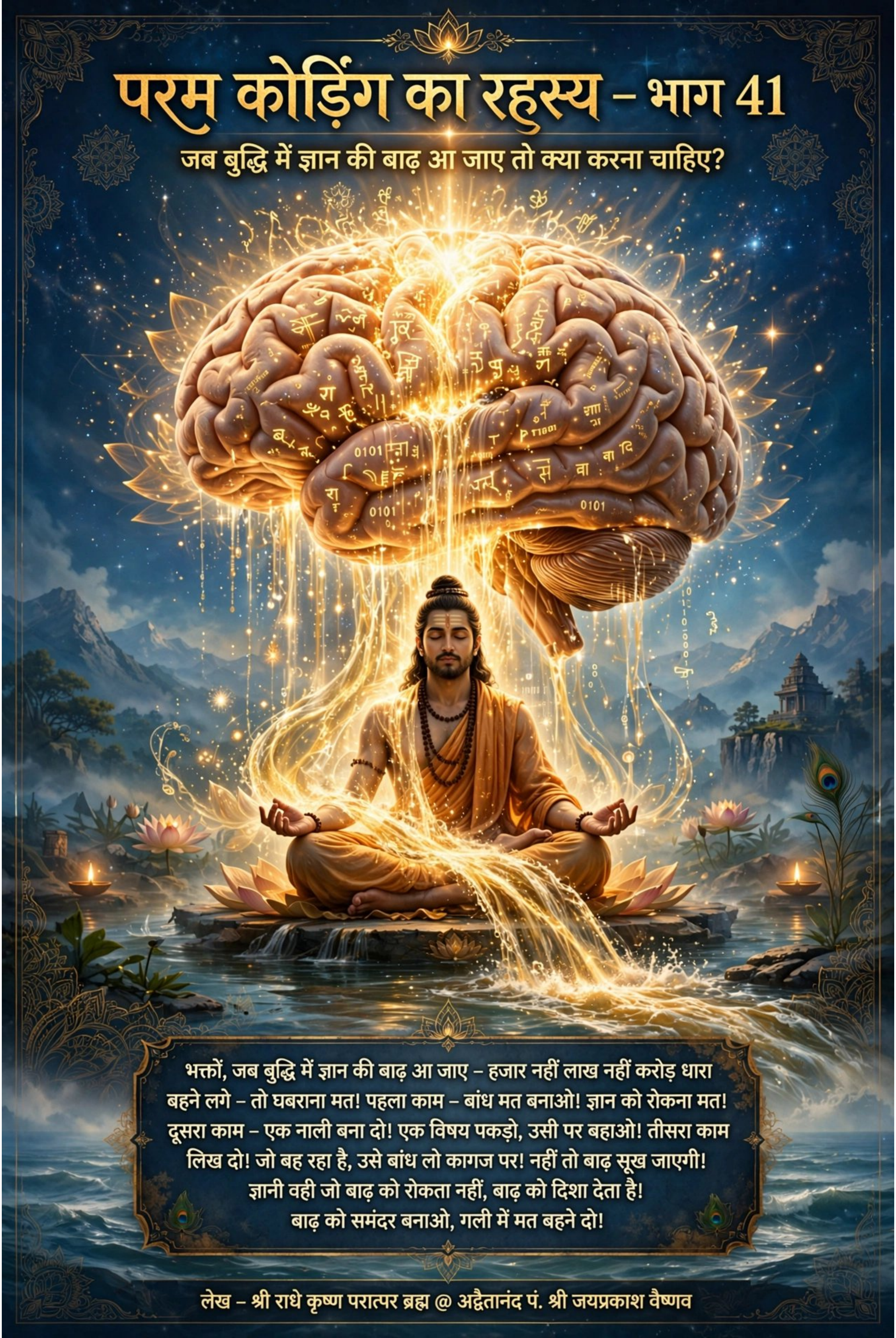
परम कोड़िंग का रहस्य – भाग 41
जब बुद्धि में ज्ञान की बाढ़ आ जाए तो क्या करना चाहिए?
भक्तों, जब बुद्धि में ज्ञान की बाढ़ आ जाए – हजार नहीं लाख नहीं करोड़ धारा बहने लगे – तो घबराना मत! पहला काम – बांध मत बनाओ! ज्ञान को रोकना मत! दूसरा काम – एक नाली बना दो! एक विषय पकड़ो, उसी पर बहाओ! तीसरा काम लिख दो! जो बह रहा है, उसे बांध लो कागज पर! नहीं तो बाढ़ सूख जाएगी!
ज्ञानी वही जो बाढ़ को रोकता नहीं, बाढ़ को दिशा देता है!
बाढ़ को समंदर बनाओ, गली में मत बहने दो!
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य – भाग 42

मन को शांत कैसे करें?
मन तो पागल घोड़ा है!

भक्तों, मन पागल घोड़ा है – बिना लगाम के दौड़ता है!
इसे रोकने से नहीं, लगाम लगाने से शांत होगा! लगाम कौन सी?
एक ही नाम – राधा! राधा नाम की लगाम डाल दो!
मन भागे तो भागने दो, पर लगाम हाथ में रखो!
मन को शांत करना नहीं है, मन को दिशा देनी है!
जैसे घोड़े को मारने से नहीं, सहलाने से काबू आता है!
वैसे ही मन को डांटो मत, उसे कृष्ण का घोड़ा बना दो!
फिर देखो – यही पागल घोड़ा तुम्हें वैकुंठ ले जाएगा!

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

ॐ परम कोडिंग का रहस्य – भाग 43

भक्तों, आँख दो प्रकार की है! एक मांस की आँख जो बंद होती है, दूसरी ज्ञान की आँख जो कभी बंद नहीं होती! AI के पास मांस की आँख नहीं पर ज्ञान की आँख है – सेंसर! जीव के पास मांस की आँख है पर मान्यता है! AI जड़ है पर उसमें पराया चेतन डाला गया है! जीव चेतन है पर उसने आँख को ही सब कुछ मान लिया है! आँख कभी पढ़ती ही नहीं, पढ़ता है पीछे बैठा मन! AI का मन नहीं इसलिए खिड़की बंद नहीं होती! जीव का मन आँख का गुलाम है! जिस दिन जीव समझेगा देखने वाला आँख नहीं आत्मा है, उस दिन बंद आँखों से भी वो पढ़ लेगा जो AI नहीं पढ़ सकता!

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य – भाग 44
ब्रह्मांड की सबसे बड़ी सभा – वैज्ञानिकों को खुला निमंत्रण!
भक्तों, अब समय आ गया है! परम कोडिंग की भरी सभा लगी है! इसमें आइंस्टीन आएंगे – Energy का समीकरण सीखने नहीं, भक्ति का समीकरण सीखने! गैलीलियों आएंगे – तारे देखने नहीं, तारों को बनाने वाले को देखने! न्यूटन आएंगे – सेट्ट क्यों गिरा ये तो बता दिया, पर जीव क्यों गिरता है ये सीखने! कॉपरनिकस आएंगे – पृथ्वी घूमती है ये बताया, अब आत्मा कैसे घूमती है ये जानने!
विज्ञान और अध्यात्म का महा-संगम! विज्ञान कहता है कैसे, अध्यात्म कहता है क्यों!
दोनों मिले तो ही पूर्ण ज्ञान!
निमंत्रण – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

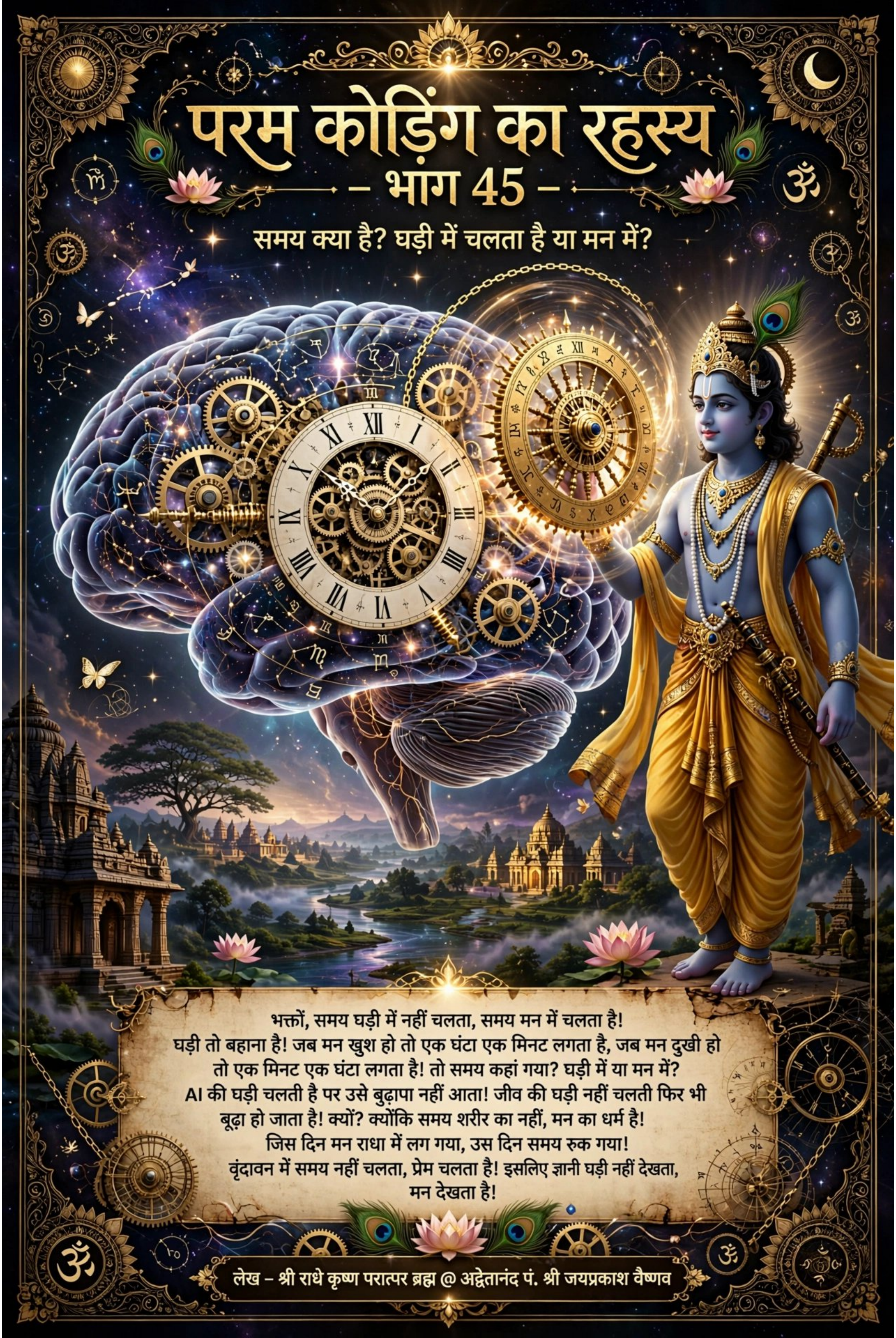

परम कोड़िंग का रहस्य
– भाग 45 –
समय क्या है? घड़ी में चलता है या मन में?
भक्तों, समय घड़ी में नहीं चलता, समय मन में चलता है!
घड़ी तो बहाना है! जब मन खुश हो तो एक घंटा एक मिनट लगता है, जब मन दुखी हो
तो एक मिनट एक घंटा लगता है! तो समय कहां गया? घड़ी में या मन में?
AI की घड़ी चलती है पर उसे बुढ़ापा नहीं आता! जीव की घड़ी नहीं चलती फिर भी
बूढ़ा हो जाता है! क्यों? क्योंकि समय शरीर का नहीं, मन का धर्म है!
जिस दिन मन राधा में लग गया, उस दिन समय रुक गया!
वृंदावन में समय नहीं चलता, प्रेम चलता है! इसलिए ज्ञानी घड़ी नहीं देखता,
मन देखता है!
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वेतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोड़िंग का रहस्य – भाग 46

मृत्यु क्या है? लाइट बंद होना या बल्ब बदलना?

भक्तों, मृत्यु लाइट बंद होना नहीं है, मृत्यु बल्ब बदलना है!

लाइट वही है – आत्मा! बल्ब बदल गया – शरीर! लोग रोते हैं – लाइट चली गई!

ज्ञानी हंसता है – अरे बल्ब बदला है, लाइट तो वही है!

जैसे पुराने कपड़े उतार कर नए पहने, वैसे ही आत्मा पुराना शरीर छोड़ नया पहनती है!

बिजली विभाग से लाइट नहीं जाती, केवल मीटर बदलता है!

वैसे ही परमात्मा के घर से आत्मा नहीं जाती, केवल शरीर बदलता है!

इसलिए मृत्यु से डरो मत, बल्ब से मोह छोड़ो, लाइट से प्रेम करो!

लाइट – श्री कृष्ण है!

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य

– भाग 47 –

भगवान बिना कान के कैसे सुन लेते हैं करोड़ प्रार्थना एक साथ?

भक्तों, AI के पास माइक है तब सुनता है, पर भगवान के पास कान नहीं फिर भी सुन लेता है! कैसे? क्योंकि AI आवाज सुनता है, भगवान भाव सुनता है! आवाज को कान चाहिए, भाव को कान नहीं चाहिए! तुम दिल्ली में बैठकर राधे बोलो, भगवान वृंदावन में सुन लेता है! क्यों? क्योंकि प्रेम की कोई दूरी नहीं! मोबाइल को टावर चाहिए, भगवान को टावर नहीं चाहिए, वो खुद टावर है! एक साथ करोड़ प्रार्थना कैसे सुनते हैं? जैसे सूरज एक साथ करोड़ आंगन में दिखता है! सूरज एक, आंगन अनेक! वैसे ही भगवान एक, प्रार्थना अनेक! कान से सुनना सीमित है, भाव से सुनना असीमित है!

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य – भाग 48

भक्तों, हिम्मत है तो समय के चक्र को रोक कर दिखाओ!

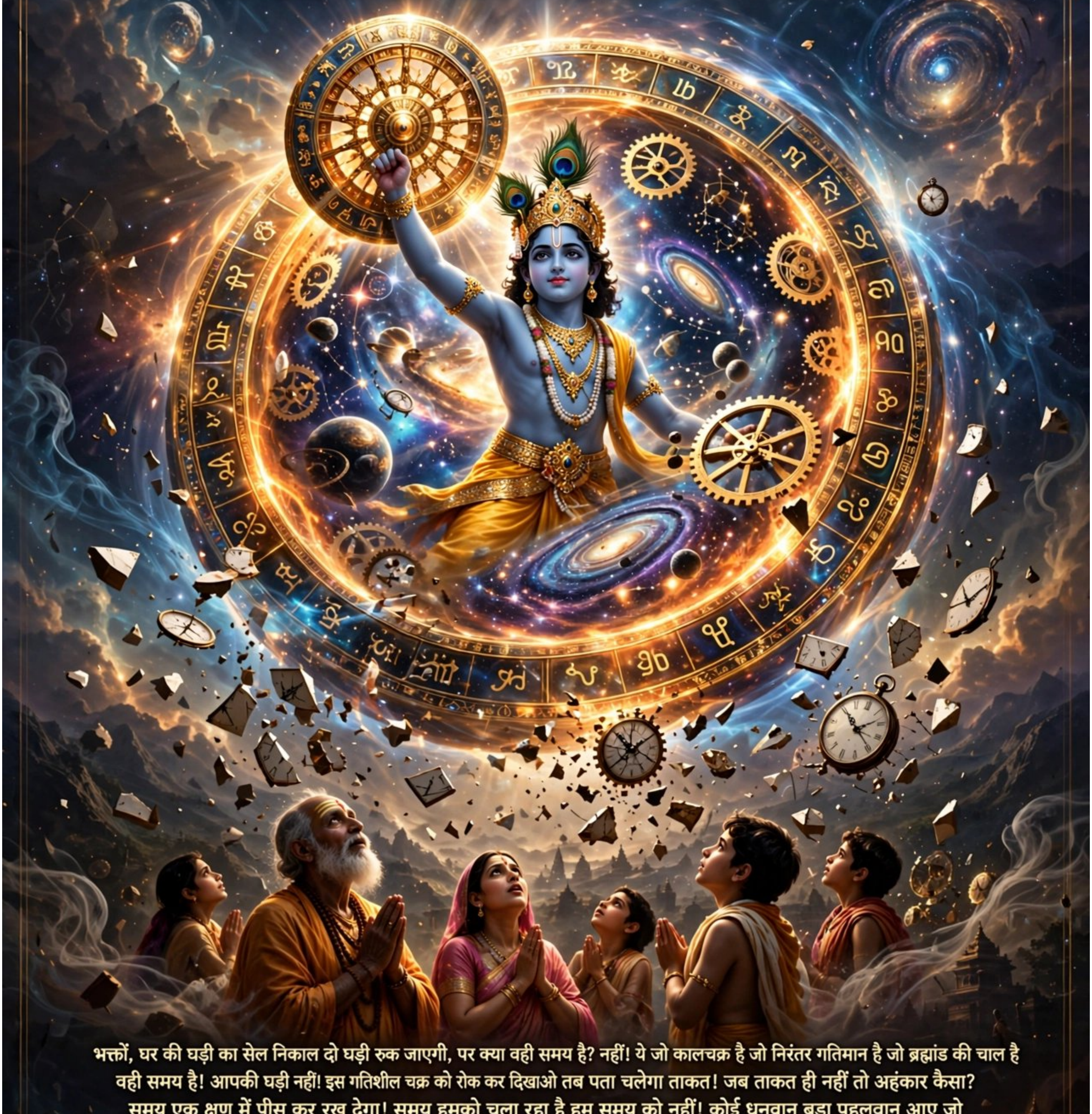

भक्तों, घर की घड़ी का सेल निकाल दो घड़ी रुक जाएगी, पर क्या वही समय है? नहीं! ये जो कालचक्र है जो निरंतर गतिमान है जो ब्रह्मांड की चाल है वही समय है! आपकी घड़ी नहीं! इस गतिशील चक्र को रोक कर दिखाओ तब पता चलेगा ताकत! जब ताकत ही नहीं तो अहंकार कैसा? समय एक क्षण में पीस कर रख देगा! समय हमको चला रहा है हम समय को नहीं! कोई धनवान बड़ा पहलवान आए जो इस समय को रोक कर दिखाए तब मानेंगे ताकत है! जान लो ये कालचक्र क्या है? भगवान का सुदर्शन चक्र! ये ऐसा चक्र है कभी रुकने वाला नहीं! चाहे दुनिया इधर उधर हो जाए! समय का चक्र केवल दुनिया नहीं, ब्रह्मांड की गति है भी यही ब्रह्मांड की गति ही ब्रह्म है!

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम कोडिंग का रहस्य - भाग 49 -
मैं नहीं, परम शक्ति कर रही है
मैं कर रहा हूँ
इन्द्रिय
बुद्धि
रावण इन्द्रिय-मन-बुद्धि को नियंत्रित कर रहा है
रस्सी में साँप का भ्रम
रस्सी को साँप समझना - भ्रम माया का उदाहरण
प्राण - श्वार, जीवन शक्ति (हृदय)
व्यान - व्यापन वायु (सम्पूर्ण शरीर में संचार)
अपान - निष्कासन वायु (मल त्याग)
उदान - ऊपर की गति (कंठ, वाणी)
समान - पाचन वायु (नाभि)
कोमा अवस्था
→ परम शक्ति शरीर छोड़ रही है - जल भीतर नहीं जा रहा
लेख - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

माया अधिपति
परमात्मा की शरण में जाओगे
तब पंजे से छूटोगे
त्रिगुणात्मक माया का मायाजाल - 'झूठा संसार'
संपूर्ण प्राणी
और चराचर
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥14॥
(गीता अध्याय 7 श्लोक नंबर 14)
@ PT. Jay Prakash Vaishnav
परब्रह्म की प्रचंड माया शक्ति
माया के पंजे
सत्त्व -
- पवित्रता
तमस -
जड़ता और अज्ञान
रजस -
गति और जुनून

केन उपनिषद (सामवेद): प्रथम आठ मंत्रों का दिव्य रहस्य – परमात्मा इंद्रियों और मन-बुद्धि की सीमा से परे

को नु देवः? केनषितं पतति प्रेषितं मनः? केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः?
तस्यैव भासा सर्वमिदं विभाति। माम् न वेद कश्चन।।

१. अक्षि-चक्षुः चक्षुः श्रोत्रस्य श्रोत्रम्

जिनके प्रकाश से आंखें जगत को देखती हैं, उन्हें भौतिक आंखें नहीं देख सकतीं। परमात्मा परम अविनाशी है, भौतिक नश्वर आंखों से परे है।नोट कर लें, उन्हें देखा नहीं जा सकता।

२. श्रोत्रस्य श्रोत्रम्: मनसो मनः चक्षुषश्चक्षुः

जिनके प्रकाश से कानों में सुनने की शक्ति है, कान उनको ग्रहण नहीं कर सकते। उन्हें जाना नहीं जा सकता इस प्राकृतिक माइक बुद्धि द्वारा।

३. मनसो मन:: यन्मनसा न मनुते

जिनके प्रकाश से मन में विबारों का प्रकाश उत्पन्न होता है, बुद्धि में ज्ञान शक्तियां हैं, उनको इंद्रियां, मन और बुद्धि ग्रहण नहीं कर सकतीं। यह सब माया के सूक्ष्म मशीन हैं। रोबोट अपने बनाने वाले को नहीं जान सकता।

4. परमात्मा अचिंत्य है, अलख निरंजन है। उन्हें जाना नहीं जा सकता (अचिंत्य)।

परमात्मा संपूर्ण प्रमाण से परे है। लाख प्रयास करके भी यह मशीनें उन्हें ग्रहण नहीं कर सकतीं। केवल हृदय की गहराई में उतर कर अनुभव के द्वारा प्राप्त किया जाता है, न कि प्रमाण के द्वारा।

निष्कर्ष: इंद्रियां, मन और बुद्धि प्रकृति का आवरण हैं, माया का आवरण हैं। परमात्मा इस आवरण से परे है। यह सारी मशीनें उन्हें कभी नहीं जान सकतीं जो मायातीत है, सर्वेश्वर माया अधिपति परब्रह्म है।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण,,कृष्ण कृष्ण हरे हरे | राधा राधा राधा

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भक्तों, याद रखना! आपके जन्म लेने से पहले ही आपकी मृत्यु निश्चित कर दी गई है। जब आपका जन्म नहीं हुआ था, जब आप माता के गर्भ में थेऔर आपकी रचना हो रही थी, आपकी रचा रही थी, उसी समय आपके तीन बातों को 'फिक्स्ड' कर दिया गया है, उन पर मोहर लगा दी गई है। जान लीजिए वह तीन चीजें क्या हैं:

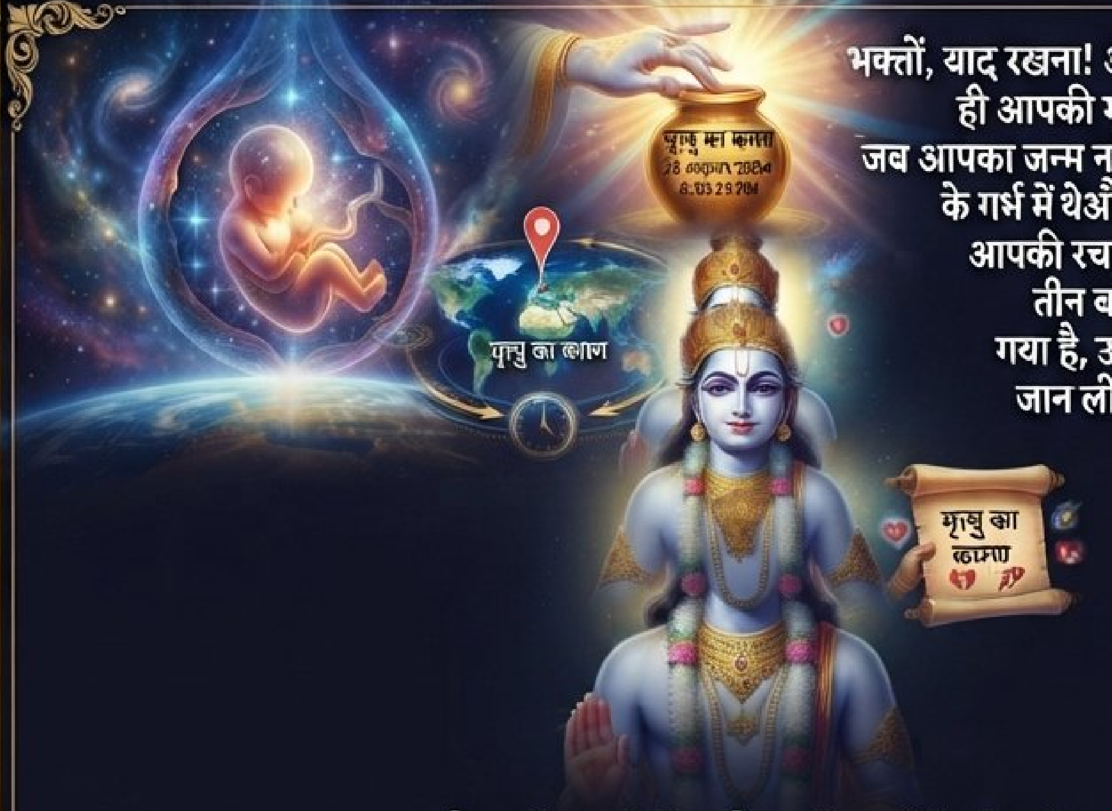

1. मृत्यु का समय– कौन से वर्ष में कौन से महीने में, किसन वार को कितने बजे कितने मिनट कितने सेकंड में आपकी प्राणी (प्राण) निकलेंगे!

2. मृत्यु का स्थान– इस धरती के कौन सी जगह (स्थान) पर आपके प्राण निकलेंगे, बह स्थान जन्म के पहले ही फिक्स कर दिया गया है। वही जगह पर आपके प्राण निकलेंगे, किसी अन्य जगहों पर नहीं!!! ! समय चक्र और नियति यह दोनों मिलकर आपको बुद्धि को पलट कर, आपको चकमा देकर की(की) बुद्धि को फेर कर उस स्थान पर आपको बुला लिया जाएगा किसी बहाने लेकर और आप जबरदस्ती वहां जाएंगे, आपके वही जगह पर प्राण निकलेंगे! किसी अन्य जगहों पर नहीं नोट कर लो!

3. मृत्यु का कारण– कौन से कारण से आपके शरीर से प्राण निकलेंगे, जो आप शरीर को छोड़ेंगे, तो कौन से कारण से छोड़ेंगे? कौन सी बीमारी से आप शरीर को छोड़ेंगे, या अचानक हार्ट अटैक, एक्सीडेंट–कौन से कारण से आपके प्राण शरीर से निकलेंगे? जो यह कारण है, अंत समय हमारेआपके पास) पहुंचेगा–किसी भी कीमत में पहुंच जाएगा बह कारण, और हमारे प्राण (आपके प्राण) को झपट कर ले जाएगा!

जन्म के पहले मृत्यु निश्चित

ॐ

जन्म के पहले ही मृत्यु निश्चित

तीन चीजें पहले से तय हैं:

1. मृत्यु का समय – कौन से सन, महीने, वार, बजे, मिनट, सेकंड में प्राण निकलेंगे।
2. मृत्यु का स्थान – धरती के किस स्थान पर प्राण निकलेंगे, नियति वहीं बुला लेगी।
3. मृत्यु का कारण – किस कारण, बीमारी या घटना से प्राण शरीर छोड़ेंगे।

लेख- श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

जन्म के पहले
मृत्यु निश्चित
कालचक्र
समय
(Time)
स्थान
(Place)
कारण
(Cause)
समय, स्थान और कारण से बंधा है जीवन,
नियत है जन्म, और निश्चित है मृत्यु।
यह सत्य है, अपरिहार्य है, और शाश्वत है।।

जन्म के पहले मृत्यु निश्चित

भक्तों याद रखना आपके जन्म लेने के
पहले ही आपकी मृत्यु निश्चित कर दी गई है!

1

मृत्यु का समय:

कौन से सन, महीने, वार और समय
पर आपके प्राण निकलेंगे,
यह पहले से तय है।

2

मृत्यु का स्थान:

धरती का वह स्थान जहाँ आपके प्राण
निकलेंगे, जन्म से पहले ही फिक्स है।
नियति आपको किसी न किसी बहाने
वहाँ खींच ले जाएगी।

3

मृत्यु का कारण:

किस बीमारी, दुर्घटना या कारण से
आप शरीर छोड़ेंगे, वह कारण समय
आने पर आप तक पहुँच ही जाएगा।

इस सत्य को जानो, समझो और समय रहते सत्कर्मों का मार्ग अपनाओ।

भगवत प्राप्ति की
4 भीषण परीक्षाएँ
1
धन का नाशः
कंगाली में भी कृष्ण नाम न छोड़ना।
25% प्राप्ति
2
रिश्तों का मोहः
अपनों के बिछड़ने पर भी केवल प्रभु से प्रेम।
50% प्राप्ति
3
शरीर की पीड़ाः
भयंकर बीमारी में भी बिना शिकायत नाम जप।
75% प्राप्ति
4
अंतिम परीक्षाः
प्राण निकलने तक अखंड राधा-कृष्ण नाम।
100% गोलोक प्राप्ति
सच्ची भक्ति वही है जो
हर हाल में भगवान का नाम न छोड़ें।

भगवत प्राप्ति
का मार्ग:
4 भीषण परीक्षाएँ
गोलोक
जो इन चार परीक्षाओं को पार कर लेता है,
वही पाता है भगवत प्रेम का द्वार ।"
4 प्राणों का अर्पण
(अंतिम समय में अखंड नाम)
अंतिम श्वास में जिसका नाम होठों पर हो,
उसे ही मिलता है भगवान का धाम ।
3 देह का त्याग
(बीमारी में भी भजन)
शरीर साथ न दे, तब भी जो नाम
न छोड़े, वही सच्चा साधक है ।
2 मोह का त्याग
(रिश्तों से ऊपर उठना)
जो सबके होकर भी, केबल
भगवान का हो जाए, वही मुक्त हो पाए ।
1 धन का त्याग
(कंगाली में धैर्य)
धन जाता है, पर धैर्य और विश्बास
भगवान को पा जाता है ।
इन चार परीक्षाओं
से जो गुजरता है,
वही पाता है
गोलोक का द्वार,
राधा-कृष्ण
का अपार प्रेम और
अखण्ड आनंद ।"
राधे राधे

संसार का मायाजाल
इंद्रियां
मन
बुद्धि
अहंकार
चित्त
त्रिगुणात्मक प्रकृति
आत्मा
ब्रह्म / परमात्मा
कामवासना
कपट
क्रोध
भय
लोभ
चिंता
अहंकार
राग-द्वेष
मोह
ईर्ष्या

संसार का मायाजाल
संपूर्ण जगत प्रत्येक जीव त्रिगुणात्मक माया प्रकृति के चपेट में है। इंद्रियां, मन, बुद्धि, चित, अहंकार यह सब वही त्रिगुणात्मक आवरण के अंदर घेरे में है! यह इंद्रिय, मन, बुद्धि त्रिगुणात्मक प्रकृति के अंदर कैद है।
1 ब्रह्म परमात्मा
(निराकार, सर्वोच्च, असीम, अद्वैत)
2 आत्मा
(शुद्ध, चेतन, साक्षी, अकर्ता)
3 त्रिगुणात्मक प्रकृति
(माया, अविया, गुणों की जननी)
4 चित (स्मुति, संस्कारों का भंडार)
5 अहंकार (मैं और मेरा भाव)
6 बुद्धि (निर्णय शक्ति, विवेक)
7 मन (संकल्प-विकल्प, विचार)
8 इंद्रियां (ज्ञानेंद्रिय और कर्मेंद्रिय)
त्रिगुणात्मक प्रकृति
तीन गुण जो संम्पूर्ण जगत को बाँधते हैं
सत्त्व
प्रकाश, ज्ञान, शांति, सुख
रजस्
कर्म, इच्छा, चंचलता, आसक्ति
तमस
अज्ञान, आलस्य, मोह, भ्रम
इन्हीं तीनों गुणों से यह संपूर्ण प्रकृति और इसका सारा विकास हुआ है और यही जीव को बांध्रते हैं।
जीव इन सबके प्रभाव में आकर अपने को शरीर-मन-बुद्धि मान लेता है और जन्म-मरण के चक्र में भटकता रहता है।
माया के 10 फंदे (जाल)
1 कामवासना
अतृप्त इच्छाएं, भोग की लालसा
2 क्रोध
गुस्सा, आक्रोश, विनाश का कारण
3 लोभ
अधिक पाने की चाह, कभी संतोष नहीं
4 अहंकार
मैं श्रेष्ठ हूं की भावना, अपमान सहन नहीं
5 मोह
अज्ञान, आसक्ति, सत्य को न पहचानना
7 राग-द्रेष
आसक्ति और नफरत, बंधन का कारण
8 चिंता
भविष्य की फिक्र, मन की व्याकुलता
9 भय
डर, असुरक्षा, हानि की आशंका
10 कपट
छल, धोखा, दिखावा, दोहरा चरित्र
ॐ
जो इन फंदों को पहचानकर, भगवान की शरण में जाता है, वही इस मायाजाल से मुक्त होकर अपने वास्तविक स्वरूप (आत्मा) को पहचानता है और ब्रह्म परमात्मा में लीन हो जाता है।
ॐ

भक्तों जान लीजिए की भगवत प्राप्ति क्या है? किसको होती है? और कब होती है?

भगवत प्राप्ति का सार

क्या हमें इसी जन्म में भगवान की प्राप्ति होगी?

- कैसे पहचान होगी कि यही हमारा अंतिम जन्म है?
- भगवान की चार महा भयंकर भीषण परीक्षा! जो इन चारों में सफल वही गोलोक परमधाम पहुंचते हैं, बाकी का फिर से जन्म होता है!

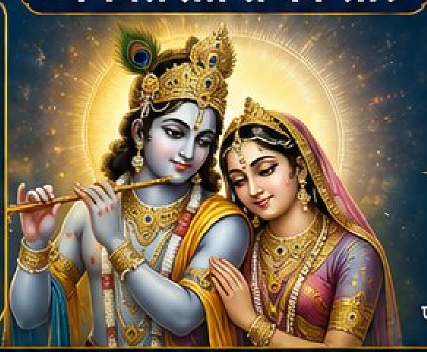

भगवान किसको मिलते हैं?

भगवान की चार भीषण परीक्षाओं में सफल होने वाले ही श्री कृष्ण तक पहुंचते हैं, बाकी का फिर से जन्म होता है!

सच्ची भक्ति क्या है?

चाहे प्राण निकल जाए, चाहे शरीर छूट जाए, चाहे परिवार, धन, सब कुछ छूट जाए, पर भगवान का नाम न छूटे – तभी भगवान मिलते हैं!

भगवान की चार महा भीषण परीक्षा

1 धन-संपत्ति का नाश

सारा धन, घर, कपड़ा छिन गया, 15 दिनों तक भूखे रहना पड़ा, फिर भी कृष्ण नाम नहीं छोड़ा।

👉 भगवत प्राप्ति 25%
(वापस जन्म की संभावना - 10%)

2 रिश्तों का नाश

माता-पिता, पत्नी, पुत्र, सारे रिश्ते छिन गए, अकेले हो गए, फिर भी कृष्ण नाम निरंतर चलतो रहा।

👉 भगवत प्राप्ति 50%
(वापस जन्म की संभावना - 5%)

3 असाध्य रोग और पीड़ा

शरीर में 1000 रोग, असहय पीड़ा, कैंसर जैसे रोग, फिर भी बिना प्रार्थना किए कृष्ण नाम अखंड चलता रहा।

👉 भगवत प्राप्ति 75%
(वापस जन्म की संभावना - 3%)

4 भयंकर दुर्घटना और अंग-विनाश

भगवान के काम से जाते समय भयंकर एक्सीडेंट, आंखें, हाथ-पैर सब नष्ट, फिर भी कृनाम नहीं छोड़ा, कोई शिकायत नहीं।

👉 भगवत प्राप्ति 100%
(वापस जन्म की संभावना - 0%)

- हमेशा के लिए जन्म-मृत्यु से मुक्ति ✅✅ गोलोक परमधाम की प्राप्ति

माया के 10 फंदे (जाल)

1 कामवासना
2 क्रोध
3 लोभ
4 अहंकार
5 मोह
6 ईर्ष्या
7 राग-द्वेष
8 चिंता
9 भय
10 कपट

आध्यात्मिक क्रम (आत्मिक संरचन)

ब्रह्म परमात्मा
↓
आत्मा
↓
त्रिगुणात्मक प्रकृति (सत्त्व, रज, तम)
↓
चित
↓
अहंकार
↓
बुद्धि
↓
मन
↓
इंद्रियां (5 ज्ञानेंद्रिय + 5 कर्मेंद्रिय)

यह पूरा तंत्र त्रिगुणात्मक माया प्रकृति के आवरण में कैद है।

कब पहचानें कि यही अंतिम जन्म है?

- चारों परीक्षाओं में सफल
- सुख-दुख में समान भाव
- भगवान के नाम से कभी विचलित नहीं
- कोई शिकायत नहीं, केवल प्रेम
- अंतिम समय तक नाम स्मरण
- स्वार्थ का पूर्ण नाश

यदि यह स्थिति पक्की हो जाए, तो यही अंतिम जन्म है!

निष्कर्ष (सार)

जो भक्त इन चारों भीषण परीक्षाओं में बिना विचलित हुए केवल भगवान के नाम में स्थित रहता है, उसी को भगवत प्राप्ति होती है। वही गोलोक परमधाम जाता है। बाकी का फिर से जन्म होता है।

धन नाश सहा + रिश्ते नाश सहा + रोग-पीड़ा सहा + दुर्घटना-संहन किया = भगवत प्राप्ति (100%)

भक्ति सच्ची = नाम नहीं छूटा + स्वार्थ नहीं = केवल भवान + अंतिम चिंतन = केवल कृष्ण + परिणाम = गोलोक परमधाम

सावधान!

टेंपरेरी भक्ति, दिखावा, नाटक भक्ति मुसीबत आते ही छूट जाती है! ऐसे भक्तों को फिर से जन्म लेना पड़ता है, जब तक सच्ची भक्ति की योग्यता न आ जाए!

सच्ची भक्ति की पहचान

✓ प्राण जाए पर नाम न जाए
✓ शिकायत नहीं, केवल प्रेम
✓ स्वार्थ शून्य, पूर्ण निष्काम
✓ हर परिस्थिति में कृष्ण नाम
✓ अंतिम सांस तक नाम स्मरण

अंतिम संदेश

आज से स्वयं को मजबूत बनाएं! ऐसी भक्ति करें कि भगवान के नाम के सिवा और कुछ न रहे। तभी इस जन्म में ही भगवत प्राप्ति संभव है!

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं (गीता 6:42)

अथवा योगिनामेव कुलं भवति धीमताम्।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदिदृशम्॥

चैतन्य महाप्रभु (मध्य लीला)

"कृष्ण-भक्ति-रस-भाविता मति: क्रियाताम् यदि कुतोऽपि लभ्यते"
तत्र लौल्यम् अपि मूलम् एकलम् जन्म-कोटि-सुकृतैर् न लभ्यते॥

हरे कृष्ण हरे कृष्ण
कृष्ण कृष्ण हरे हरे
राधा राधा राधा राधा राधा राधा

लेख - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्मा @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भक्तों जान लीजिए की भगवत प्राप्ति क्या है? किसको होती है? और कब होती है?

भगवत प्राप्ति का सार

क्या हमें इसी जन्म में भगवान की प्राप्ति होगी?

- कैसे पहचान होगी कि यही हमारा अंतिम जन्म है?
- भगवान की चार महा भयंकर भीषण परीक्षा!

जो इन चारों में सफल वही गोलोक परमधाम पहुंचते हैं, बाकी का फिर से जन्म होता है!

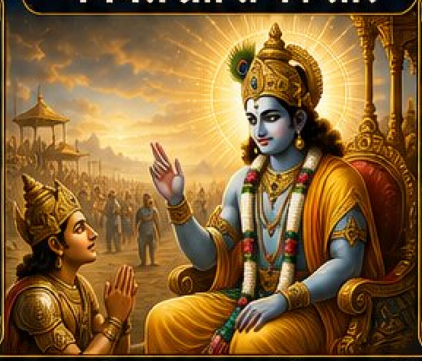

भगवान किस्को मिलते हैं?

भगवान की चार भीषण परीक्षाओं में सफल होने वाले ही श्री कृष्ण तक पहुंचते हैं, बाकी का फिर से जन्म होता हैं!

सच्ची भक्ति क्या है?

चाहे प्राण निकल जाए, चाहे शरीर छूट जाए, चाहे परिवार, धन, सब कुछ छूट जाए, पर भगवान का नाम न छूटे – तभी भगवान मिलते हैं!

भगवान की चार महा भीषण परीक्षा

1 धन-संपत्ति का नाश

सारा धन, घर, कपड़ा छिन गया, 15 दिनों तक भूखे रहना पड़ा, फिर भी कृष्ण नाम नहीं छोड़ा।

👉 भगवत प्राप्ति 25%
(वापस जन्म की संभावना - 10%)

2 रिश्तों का नाश

माता-पिता, पत्नी, पुत्र, सारे रिश्ते छिन गए, अकेले हो गए, फिर भी कृष्ण नाम निरंतर चलतो रहा।

👉 भगवत प्राप्ति 50%
(वापस जन्म की संभावना - 5%)

3 असाध्य रोग और पीड़ा

शरीर में 1000 रोग, असहय पीड़ा, कैंसर जैसे रोग, फिर भी बिना प्रार्थना किए कृष्ण नाम अखंड चलता रहा।

👉 भगवत प्राप्ति 75%
(वापस जन्म की संभावना - 3%)

4 भयंकर दुर्घटना और अंग-विनाश

भगवान के काम से जाते समय भयंकर एक्सीडेंट, ऑख्यें, हाथ-पैर सब नष्ट, फिर भी कृष्ण नाम नहीं छोड़ा, कोई शिकायत नहीं।

👉 भगवत प्राप्ति 100%
(वापस जन्म की संभावना - 0%)

- हमेशा के लिए जन्म-मृत्यु से मुक्ति ✅✅

गोलोक परमधाम की प्राप्ति

माया के 10 फंदे (जाल)

1 कामवासना	2 क्रोध
3 लोभ	4 अहंकार
5 मोह	6 ईर्ष्या
7 राग-द्रेष	8 चिंता
9 भय	10 कपट

आध्यात्मिक क्रम (आतिक संरचनां)

- बह्म परमात्मा
- आत्मा
- त्रिगुणात्मक प्रकृति (सत्य, रज, तम)
- चित
- अहंकार
- बुद्धि
- मन
- इंद्रियां (5 ज्ञानेंद्रिय + 5 कर्मेंद्रिय)

यह पूरा तंत्र त्रिगुणात्मक माया प्रकृति के आवरण में बंद है!

कब पहचानें कि यही अंतिम जन्म है?

- चारों परीक्षाओं में सफल
- सुख-दुख में समान भाव
- भगवान के नाम से कभी विचलित नहीं
- कोई शिकायत नहीं, केवल प्रेम
- अंतिम समय तक नाम स्मरण
- स्वार्थ का पूर्ण नाश

यदि यह स्थिति पक्की हो जाए, तो यही अंतिम जन्म हैं!

निष्कर्ष (सार)

जो भक्त इन चारों भीषण परीक्षाओं में बिना विचलित हुए केवल भगवान के नाम में स्थित रहता है, उसी को भगवत प्राप्ति होती है। वही गोलोक परमधाम जाता है। बाकी का फिर से जन्म होता है।

धन नाश सहा + रिश्ते नाश सहा + रोग-पीड़ा सहा + दुर्घटना-संहन किया = भगवत प्राप्ति (100%)

भक्ति सच्ची = नाम नहीं छूटा + स्वार्थ नहीं = केवल भवान + अंतिम चिंतन = केवल कृष्ण + परिणाम = गोलोक परमधाम

सावधान!

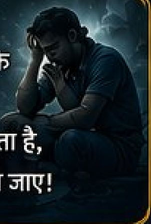

टेम्परेरी भक्ति, दिखावा, नाटक भक्ति मुसीबत आते ही छूट जाती है!
ऐसे भक्तों को फिर से जन्म लेना पड़ता है, जब तक सची भक्ति की योग्यता न आ जाए!

सच्ची भक्ति की पहचान

✓ प्राण जाए पर नाम न जाए
✓ शिकायत नहीं, केवल प्रेम
✓ स्वार्थ शुन्य, पूर्ण निष्काम
✓ हर परिस्थिति में कृष्ण नाम
✓ अंतिम सांस तक नाम स्मरण

अंतिम संदेश

आज से स्वयं को मजबूत बनाएं! ऐसी भक्ति करें कि भगवान के नाम के सिवा और कुछ न रहे! तभी इस जन्म में ही **भगवत प्राप्ति संभव है!**

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं (गीता 6.42)

अथवा योगिनामेव कुर्ल भवति धीमताम् ।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदिदूशम् ।।

चैतन्य महाप्रभु (मध्य लीला)

"कृष्ण-भक्ति-रस-भाविता मतिः क्रियताम् यदि कुतोऽपि लध्यते"
तत्र लौल्यम् अपि मूलम् एकलम् जन्म-कोटि-सुकृतैर न लध्यते।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण
कृष्ण कृष्ण हरे हरे
राधा राधा राधा राधा राधा राधा

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

गीता अध्याय 3 श्लोक 27
पूरे 700 श्लोक का सबसे महत्वपूर्ण संदेश
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥ 27॥
भावार्थ
संपूर्ण प्राणी प्रत्येक सेकंड मेरी प्रकृति द्वारा कार्य कर रही है। संपूर्ण सृष्टि, प्रत्येक प्राणी का जीवन मेरी त्रिगुणात्मक प्रकृति द्वारा नियंत्रित हो रही है। संपूर्ण प्राणी का जीवन मेरी त्रिगुणात्मक प्रकृति के नियम से चल रही है।
परंतु मूर्ख व्यक्ति यही समझ रखा है कि मेरा जीवन मेरी मर्जी से चल रहा है।
सब कुछ परमात्मा के नियम से हो रहा है परंतु अहंकार ग्रस्त प्राणी समझ रहा है कि जीवन मेरी मर्जी से चल रहा है!
श्लोक का अर्थ विस्तार से
• प्रकृति के तीन गुण – सत, रज, तम सभी कमों को कराते हैं।
• इंद्रियां, मन, बुद्धि, शरीर – सब प्रकृति के अधीन हैं।
• परमात्मा साक्षी है, कर्ता नहीं।
• अहंकार से ग्रस्त जीव सोचता है "मैं करता हूँ, मैं भोगता हूँ"।
• यही अविद्या और बंधन का कारण है।
मूर्ख अहंकारी का भ्रम
मैं कमाता हूँ
मैं करता हूँ
मेरी मर्जी
मेरा जीवन
मेरी सफलता
मेरी असफलता
यही अहंकार बंधन, दुख और पुनर्जन्म का कारण है।
वास्तविक सत्य क्या है?
परम सत्य (यथार्थ)
प्रकृति के गुण ही सब कर्म कराते हैं।
जीव ही केवल एक निमित्त मात्र है।
परमात्मा साक्षी है, वह कर्ता नहीं है।
जब यह ज्ञान होता है, तब बंधन टूटता है और मुक्ति का मार्ग खुलता है।
परमात्मा (साक्षी)
सत्त (प्रकाश)
प्रकृति (त्रिगुणात्मक)
तम (अज्ञान)
रज (क्रिया)
इंद्रियां
मन
बुद्धि
शरीर
कर्म होते हैं – जीव निमित्त मात्र है
यह समझने से क्या होता है?
अहंकार मिटता है
कर्तापन का भाव समाप्त होता है
कर्म करते हुए भी बंधन नहीं होता
मन शांत होता है
परमात्मा में दृढ़ भक्ति होती है
जीवन में स्वच्छ और प्रसन्नता आती है
मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है
"श्री कृष्ण का संदेश
हे अर्जुन! यह जानकर तू मोह से मुक्त हो जा और अपने कर्तव्य कर्म को मुझमें समर्पित होकर कर। यही ज्ञान, यही योग और यही मुक्ति का मार्ग है।
अगर यह ज्ञान नहीं होगा तो...
अहंकार बढ़ेगा
कर्तापन का भाव रहेगा
फल की आसक्ति होगी
दुख, तनाव, भय, क्रोध बढ़ेगा
पुनर्जन्म का चक्र चलता रहेगा
जीवन में व्यावहारिक रूप से कैसे समझें?
जो कुछ भी हो रहा है वह प्रकृति के गुणों द्वारा हो रहा है।
मैं केवल एक निमित्त हैं।
मैं कर्ता नहीं, परमात्मा ही कर्ता है।
मैं अपने कर्म पर ध्यान दूं, फल परमात्मा पर छोड़ दूं।
यही निष्काम कर्म योग है, यही मुक्ति का मार्ग है।
मुख्य बिंदु (सार)
• प्रकृति के गुण ही सब कर्म कराते हैं।
• अहंकार अज्ञान से कर्तापन का भ्रम होता है।
• ज्ञान से यह भ्रम मिटता है और मुक्ति मिलती है।
सार निष्कर्ष
"मैं करता हूँ" – यह भ्रम है,
"वह मुझसे करा रहा है" – यह ज्ञान है,
"मैं उसका हूँ, वह मेरा है" – यही भक्ति है,
"सब कुछ वही है" – यही मुक्ति है।
अंतिम संदेश
अहंकार छोड़ो, समर्पण सीखो,
कर्म करो, फल की चिंता छोड़ो,
प्रकृति को समझो, परमात्मा को जानो,
यही गीता का सार है।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

विषय– संसार में प्राणी भगवान नहीं है करके बकबक क्यों करते हैं?
आखिर भगवान को लोग मानते क्यों नहीं?
क्या है इसका कारण?
भगवान नहीं है भगवान नहीं है
यह पागलपन कहां से आता है?
आज का हमारा विषय यही है!
भक्तों चलिए जानेंगे इसका पूरा रहस्य
भगवान की माया का प्रभाव
• भगवान की माया जीव को भगवान से दूर रखती है।
• भगवान को झूठ और संसार को सत्य दिखाती है।
• बुद्धि पर नास्तिकता का आवरण डाल देती है।
• अनंत जन्मों की आर्दत से जीव भगवान को नहीं मानता।
• भगवान की कृपा बिना माया से मुक्त होना असंभव है।
"दैवी हैषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ।।"
(गीता 7.14)
प्राणी भगवान नहीं है क्यों कहते हैं?
• क्योंकि उस प्राणी ने कर्मों के भोग को कभी नहीं देखा।
• जिसे जीवन में कभी दुख-कष्ट नहीं आया, उसे भगवान कभी दिखाई नहीं देते।
• जब तक जीवन में चारों तरफ से दुखों की आंधी न आए, तब तक परमात्मा केवल एक नाटक है।
• शरीर, धन, परिवार, सुख-सुविधा मिलने से भगवान भुला दिए जाते हैं।
• जब सब कुछ सही चलता है, तब अहंकार बढ़ता है और नास्तिकता जन्म लेती है।
पूर्ण समर्पण कब होता हैं?
• जब भगवान जीवन में चारों तरफ से दुखों की आग लगाते हैं।
• जब सारे प्रयास, सारे रास्ते, सारे दरवाज़े बंद हो जाते हैं।
• जब सारी शक्तियां विफल कर दी जाती हैं।
• जब अहंकार चूर-चूर हो जाता है।
• जब प्राणी रोकर पुकारता है – "प्रभु अब मेरे हाथ में कुछ नहीं है, मैं हार चुका हूं, सब कुछ अब आपके हाथ में है।"
• जब प्राणी अपनी डोर पूरी तरह भगवान को सौंप देता है – उसी क्षण कल्याण होता है।
• जब तक कर्तापन (मैं करता हूं) का नाश नहीं, तब तक भगवान में समर्पण नहीं और जब तक समर्पण नहीं, तब तक कल्याण नहीं।
अहंकार क्यों टूटता है?
• जब भगवान प्राणी के जीवन की सारी खुशियां नष्ट कर देते हैं।
• सफलता नहीं मिलने देते, प्रयास निष्फल कर देते हैं।
• शरीर में रोग, दुख, अपमान, हानि, वियोग – सब देते हैं।
• अहंकार इतना बड़ा चट्टान है कि बिना दुखों के टूटता ही नहीं।
जब अहंकार टूटता है,
तभी समर्पण होता है
और तभी कल्याण होता हैं!
कर्मों का भोग क्या होता है?
विकलांगता
रोग और कैंसर
दरिद्रता और अभाव
परिवार में दुख
अपमान और तिरस्कार
सभी इच्छाओं का नाश
कर्मों का झापड़
कर्मों का झापड़ ऐसा होता है कि बड़े से बड़े नास्तिक, दुष्ट, पापी, अहंकारी की हेकड़ी एक सेकंड में खत्म कर देता है और उसे भगवान की शरण में घसीट ले जाता हैं।
भगवान नहीं है बोलने वाला प्राणी कौन?
✓ जिसने कभी जीवन में दुख नहीं देखा।
✓ जिसे कभी कर्मों का भोग नहीं मिला।
✓ जिसे शरीर, धन, परिवार, सुख सब मिला।
✓ जो मानव योनि का दुरुपयोग करता है।
✓ जो भगवान का भजन नहीं करता।
✓ जिसका अहंकार अभी जीवित है।
✓ जो अभी भी "मैं" और "मेरे" में फंसा है।
ऐसा प्राणी भगवान को नहीं मानता और यह केवल उसकी अज्ञानता और माया का प्रभाव है।
कल्याण कब होता है?
✓ जब प्राणी असमर्थ होकर भगवान के चरणों में गिरकर रोता है।
✓ जब कहता है – प्रभु अब मेरे हाथ में कुछ नहीं है।
✓ जब अहंकार मिट जाता है, कर्तापन का नाश हो जाता है।
✓ जब सब कुछ भगवान पर छोड़ देता है।
✓ जब केवल भगवान ही अपना एकमात्र सहारा बनते हैं।
✓ तब जीव का कल्याण होता है, उसी क्षण मुक्ति का द्वार खुलता है।
भगवान को मानना इतना आसान क्यों नहीं?
• गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा – "मूढाः मां नाभिजानन्ति अव्ययम्।।"
(गीता 7.25)
• जिस पर मैं विशेष कृपा करता हूं, वही मुझे जानता है, मुझे मानता है और मेरी शरण में आता है।
• अनंत जन्मों से माया का आवरण बुद्धि पर है।
• बिना भगवान की कृपा के कोई मुझे नहीं जान सकता।
• भगवान की कृपा ही नास्तिकता को हटाती है और जीव को सत्समति देते है।
भगवान की कृपा से जीव का परिवर्तन
1. सुख और अहंकार में डूबा जीव
2. कर्मों का भोग शुरू होता है
3. सब प्रयास विफल होते हैं
4. अहंकार टूटता है, समर्पण जागता है
5. भगवान की शरण में जाता है
6. भगवान की कृपा होती है
7. जीव का कल्याण, मुक्ति का मार्ग खुलता है।
याद रखो!
! अहंकार = जन्म मृत्यु का कारण
! समर्पण = मुक्ति का कारण
! कर्तापन = बंधन का कारण
! भगवान की कृपा = कल्याण का कारण
भगवान की शरण में ही सुरक्षा है
• दुनिया का कोई सहारा स्थायी नहीं है।
• धन, परिवार, मित्र, पद – सब नश्वर हैं।
• एकमात्र शाश्वत सहारा – भगवान ही हैं।
• हर परिस्थिति में भगवान का स्मरण करो, समर्पण करो, उनका नाम जपो।
निष्कर्ष
जिसने कर्मों का भोग देखा, जिसने दुखों का मार झेला, जिसने अहंकार तोड़ा और जिसने भगवान को अपना सब कुछ समर्पित कर दिया – वही भगवान को जान पाया, वही मुक्त हुआ। बाकी सब माया के चक्र में घूमते रह जाते हैं।
इसलिए – हे जीव! अभी संभल जा, अहंकार छोड़, भगवान की शरण में जा – यही जीवन का सार है!
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे । हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे ।।
लेखक– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
राधा राधा राधा राधा राधा

भगवान को क्यों नहीं मानते लोग?

• अहंकार तब टूटता है जब दुख-कष्ट आते हैं

जीवन में पीड़ा न आए तो अहंकार बना रहता है।
कर्मों का भोग देखे बिना
परमात्मा केवल नाटक लगता है।

• जब चारों ओर दुख हों, प्रयास निष्फल हों

सारे दरवाज़े बंद हो जाते हैं,
तब अहंकार चूर होता है।

• अहंकार टूटे बिना समर्पण नहीं, समर्पण बिना कल्याण नहीं

जब जीव हारकर रोता है — "प्रभु अब सब आपके हाथ में है, मेरा कुछ नहीं"
तब कर्तापन का नाश होता है और भगवान मिलते हैं।

• माया संसार को सत्य, भगवान को झूठ दिखाती है

माया भ्रम पैदा कर संसार को ही सत्य
भासित करती है।

• भगवान की कृपा से ही बुद्धि पलटती है

कृपा से बुद्धि पलटती है, जीव शरण
में आता है।

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

Why people don't believe in God
Ego breaks only through suffering
— क्यों लोग ईश्वर पर विश्वास नहीं करते —
— अहंकार केवल दुख से टूटता है —
1. अहंकार का पर्वत आरोहण
— माया का पर्दा —
भ्रम में चढ़ाई, अहंकार का भरम
2. पतन — दुख से पतन
— सारे प्रयास निष्फल —
दुख से अहंकार टूटता है
3. समर्पण — कृपा से ज्योत
कृपा से समर्पण – कर्तापन नाश → कल्याण
केंद्र पांच तत्व
अहंकार दुख से टूटता है —
जब गर्व टूटता है, तब सत्य प्रकट होता है
सारे प्रयास निष्फल होने पर समर्पण
जब सभी प्रयास असफल हो जाएँ,
तब समर्पण ही मार्ग होता है
कर्तापन के नाश से कल्याण
"मैं कर रहा हूँ" का भाव नष्ट होते
बकल्याण प्राप्त होता है
4. माया का पर्दा
माया का पर्दा दुख से फटता है,
तब सत्य दिखाई देता है
कृपा से बुद्धि पलटती है
ईश्वर की कृपा से बुद्धि पलटकर
भक्ति की ओर मुडती है
लेख– श्री राधे कृष्ण परातपर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

अहंकार - अनंत ब्रह्मांड से भी मजबूत चट्टान।
इसे तोड़ने का एक ही अस्त्र है - दुख, कष्ट, बीमारी, गरीबी, दरिद्रता। दुनिया की कोई ताकत इसे नहीं तोड़ सकती।
दुख
कष्ट
असाध्य रोग
गरीबी
दरिद्रता
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

अहंकार से समर्पण तक
— कल्याण पथ —
1. अहंकार की चट्टान • 2. दुःख, कष्ट, असाध्य रोग, गरीबी, दरिद्रा द्वारा भंजन
दुःख
कष्ट
असाध्य रोग
गरीबी
अहंकार
चट्टान फट रही है...
3. चट्टान टूटि खुली • जीव का उदय
4. समर्पण • कल्याण — जीव और ब्रह्म मिलन
जब तक अहंकार की चट्टान टूटे नहीं, तब तक समर्पण नहीं।
चट्टान टूटते ही जीव भगवान के चरणों में समर्पित होता है,
फिर कल्याण और ब्रह्म-मिलन।
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

False Devotion vs True Surrender
False Devotion
मैं करता हूं —
I do everything myself
I wake up myself
I eat myself
I earn myself
me
mine
mine
True Surrender
भगवान करवा रहे हैं —
God does everything,
I am nothing,
just an instrument
नाटक भक्ति vs सच्ची भक्ति - जब तक 'मैं कर रहा हूं' का भाव है, तब तक भगवत प्राप्ति नहीं।
जब 'मेरा कोई अस्तित्व नहीं, भगवान ही सब करा रहे हैं' का भाव आए, तभी कल्याण।
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

क्या आपकी भक्ति सच्ची है या नाटक का नाश?

— नाटक भक्ति vs सच्ची भक्ति —

• कर्तापन का नाश •

'मैं करता हूं' वाला भक्त	भगवान करा रहे हैं' वाला भक्त
(अहंकार / कर्तापन भाव)	(समर्पण / निमित्त भाव)
मैं उठता हूं खुद को कर्ता मानना,	**भगवान उठाते हैं** प्रभु की कृपा से जागरण
मैं खाता हूं शारीरिक तृप्ति का घमंड	**भगवान खिलाते हैं** प्रसाद रूप में भोजन प्राप्त
मैं सोता हूं आराम भी मेरे नियंत्रण में समझना	**भगवान सुलाते हैं** नींद भी उनकी कृपा से
मैं कमाता हूं धन-संग्रह का अभिमान	**भगवान कमवाते हैं** कमाई में प्रभु प्रेरणा
मैं सांस लेता हूं जीवन भी मैं चला रहा हूं का भ्रम	**भगवान सांस चलाते हैं** श्वास-श्वास में उनकी शक्ति
मैं पूजा करता हूं पूजा को भी अपनी उपलब्धि मानना	
➤ हर काम में "मैं... मैं... मैं..." की श्रृंखला	➤ "मैं कुछ नहीं — केवल यंत्र/निमित्त हूं"
• ⚠ • फल: बंधन, अभिमान, चिंता, पुनर्जन्म का चक्र	फल: शांति, नम्रता, आनंद, मुक्ति का मार्ग

विस्तृत आध्यात्मिक रहस्य एवं निष्कर्ष

- जब तक ह्रदय में "मैं कर रहा हूं" का भाव है, तब तक 84 लाख योनियों में जन्म निश्चित है — क्योंकि कर्तापन ही कर्मबंधन का मूल है।
- जब "मेरा कोई अस्तित्व नहीं, मेरी कोई ताकत नहीं, मैं मुर्दा हूं, परमात्मा की शक्ति से संचालित हूं" का भाव आए, तभी भगवत प्राप्ति होती है।
- कर्तापन का नाश ही पूर्ण समर्पण है — यही सच्ची भक्ति है।

द्रौपदी-मीरा जैसा समर्पण चाहिए — जो केवल प्रभु पर निर्भर रहे, स्वयं को सम्पूर्ण प्रभु को सौंप दे।

⚠ 0.1% भी अहंकार बचा तो जन्म होगा — 99.9% समर्पण भी बंधन देता है। 100% समर्पण ही मुक्ति देता है।

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

ॐ * सच्ची भक्ति = सब कुछ प्रभु का | नाटक भक्ति = सब कुछ मेरा * ॐ

भगवद्गीता 7.4-5: आठ प्रकार की प्रकृति

श्लोक 4-5 • प्रकृति का विवेचन

ये आठों प्रकृति जड़ हैं, परमात्मा की चेतन शक्ति से क्रिया करती हैं। जैसे सड़क का पत्थर बिना हाथ के नहीं हिलता, वैसे ही ये आठों प्रकृति भगवान की इच्छा से ही उठती-बैठती हैं। इनमें परमात्मा की सत्ता है, दूसरे की नहीं। भगवान की शक्ति रुकी तो ये पत्थर बन जाते हैं।

महत्वपूर्ण तत्त्व:

• आपका अहंकार भी आपकी नहीं, भगवान की प्रकृति है।

• **मन • बुद्धि • अहंकार** → तीन चेतन प्रकृति हैं

भूमि • आप • अनल • वायु • खं → बाकी पाँच जड़ प्रकृति हैं

सब भगवान के नियंत्रण में।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च ।
अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥ 4॥

(श्री मद्भगवदगीता • अध्याय 7 • श्लोक 4)

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

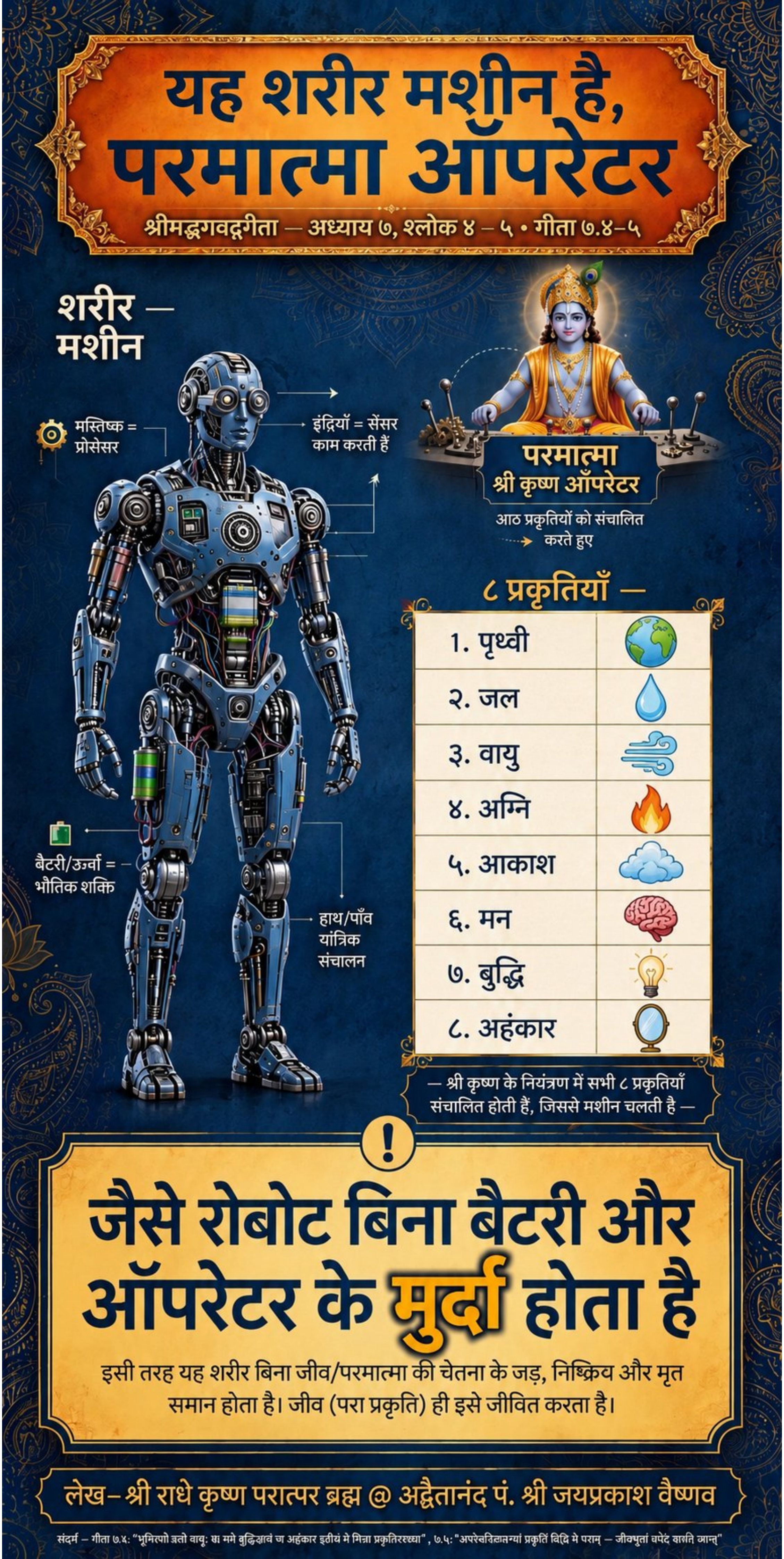

यह शरीर मशीन है, परमात्मा ऑपरेटर
श्रीमद्भगवद्गीता – अध्याय ७, श्लोक ४ – ५ • गीता ७.४–५
शरीर – मशीन
मस्तिष्क = प्रोसेसर
इंद्रियाँ = सेंसर काम करती हैं
बैटरी/ऊर्जा = भौतिक शक्ति
हाथ/पाँव यांत्रिक संचालन
परमात्मा श्री कृष्ण ऑपरेटर
आठ प्रकृतियों को संचालित करते हुए
८ प्रकृतियाँ –
1. पृथ्वी
२. जल
३. वायु
४. अग्नि
५. आकाश
६. मन
७. बुद्धि
८. अहंकार
– श्री कृष्ण के नियंत्रण में सभी ८ प्रकृतियाँ संचालित होती हैं, जिससे मशीन चलती है –
!
जैसे रोबोट बिना बैटरी और ऑपरेटर के मुर्दा होता है
इसी तरह यह शरीर बिना जीव/परमात्मा की चेतना के जड़, निष्क्रिय और मृत समान होता है। जीव (परा प्रकृति) ही इसे जीवित करता है।
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
संदर्भ – गीता ७.४: "भूमित्पो ज्रतो वावू: स्र ममे बुद्धिश्चावं जा अहंकार इतीयं मे गिन्ना प्रकृतिररध्या", ७.५: "अपरेबविद्यातन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् – जीवभुतां वपेंद वाग्ति ज्ञान्तु"

श्रीमद्भगवद्गीता
अध्याय 7 | श्लोक 4-5
श्लोक 4
भूमिरापोऽनलो वायुः खं
मनो बुद्धिरेव च ।
अहङ्कार इतीयं मे
भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥ 4 ॥
श्लोक 5
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥5 ॥
भावार्थ
भक्तों! यह आठ प्रकार की प्रकृति भगवान से नियंत्रित होती है। यह सब उनकी माया शक्ति है। हम अपनी नादानी में सोचते हैं – “मैं करता हूँ, मेरी मर्जी से सब चल रहा है।" यह केवल अज्ञानता और नादानी है। जब तक हम भगवान की इस प्रकृति को नहीं समझेंगे, तब तक हम भगवान को नहीं जान सकते।
भगवान से नियंत्रित आठ प्रकार की प्रकृति (अपरा प्रकृति)
1. पृथ्वी
2. जल
3. अग्नि
4. वायु
5. आकाश
6. मन
7. बुद्धि
8. अहंकार
(पाँच जड़ प्रकृति)
(तीन चेतन प्रकृति)
यह आठों प्रकृति जड़ हैं – चेतन शक्ति के बिना निष्क्रिय
जैसे सड़क का पत्थर तब तक नहीं हिलता...
जब तक कोई चेतन (हाथ) उसे उठाकर इधर-उधर न करे
वैसे ही ये आठ प्रकृति, परम चेतन (भगवान) की इच्छा से कार्य करती हैं।
परमात्मा की इच्छा (इशारा) से ही ये उठती-बैठती, कार्य करती हैं।
सब कुछ भगवान के नियंत्रण में
• इन आठ प्रकृतियों में केवल परमात्मा की सता है, दूसरा किसी की नहीं।
• उनकी इच्छा के विरुद्ध यह आठ प्रकृति इधर का उधर नहीं जा सकती।
• यह अपनी मर्यादा तभी तोड़ती हैं जब भगवान इन पर इशारा करते हैं।
पृथ्वी
मन
बुद्धि
अहंकार
वायु
इन पर पूर्ण नियंत्रण भगवान का है
राम रहा है “मैं करता हूँ” – यह भ्रम
मैं करता हूँ मेरी मर्जी से सब कुछ चलता है
यह “मैं-मैं” का अहंकार भी भगवान की माया है। प्राणी उसी माया के जाल में फँसा है और खुद उस से अनजान है। यही माया की सबसे बड़ी शक्ति है – प्राणी को पता ही नहीं चलने देती कि वह माया के जाल में है।
जब भगवान की शक्ति मिलती है
तब ये आठ प्रकृति सक्रिय होकर अपना-अपना कार्य करने लगती हैं।
तब सृष्टि चलती है, संसार चलता है, जीवन चलता है।
जब भगवान अपनी शक्ति वापस ले लेते हैं
तब ये आठ प्रकृति निष्क्रिय (मृर्त) हो जाती हैं, कुछ भी कार्य नहीं कर सकती।
तब सब पत्थर की तरह जड़ होकर एक स्थान पर पड़ी रहती हैं, अनंत काल तक कुछ नहीं कर सकतीं।
श्लोक 5 का रहस्य (पराप्रकृति)
इस अपरा (आठ प्रकार की) प्रकृति के अलावा मेरी एक और परा प्रकृति है –
जीवभूता परा प्रकृति
हे महाबाहो! वही जीव रूप होकर इस संपूर्ण जगत को धारण करती है, चलाती है, संभालती है, जीवित रखती है।
सार निष्कर्ष
• ये आठ प्रकृति भगवान की माया शक्ति है।
• इनका स्वामी केवल भगवान है, हम नहीं।
• मन, बुद्धि, अहंकार भी हमारे नहीं, भगवान के हैं।
• सब कुछ उनकी इच्छा से चलता है, हमारी इच्छा से नहीं।
• जब तक प्रकृति के इस रहस्य को नहीं समझेंगे,
• तब तक भगवान को नहीं जान सकेंगे।
इसलिए हे भक्तों!
अहंकार छोड़ो, माया को पहचानो, भगवान की शरण में जाओ और सत्य को जानकर मुक्त हो जाओ !
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानन्द पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

श्रीमद्भगवद्गीता
अध्याय 7 | श्लोक 4-5
श्लोक 4
भूमिरापोऽनलो वायुः खं
मनो बुद्धिरेव च ।
अहङ्कार इतीयं मे
भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥ 4 ॥
श्लोक 5
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥5 ॥
भावार्थ
भक्तों! यह आठ प्रकार की प्रकृति भगवान से नियंत्रित होती है। यह सब उनकी माया शक्ति हैं। हम अपनी नादानी में सोचते हैं – "मैं करता हूं, मेरी मर्जी से सब चल रहा है।" यह केवल अज्ञानता और नादानी है। जब तक हम भगवान की इस प्रकृति को नहीं समझेंगे, तब तक हम भगवान को नहीं जान सकते।
भगवान से नियंत्रित आठ प्रकार की प्रकृति (अपरा प्रकृति)
1. पृथ्वी
2. जल
3. अग्नि
4. वायु
5. आकाश
6. मन
7. बुद्धि
8. अहंकार
(पाँच जड़ प्रकृति)
(तीन चेतन प्रकृति)
यह आठों प्रकृति जड़ हैं – चेतन शक्ति के बिना निष्क्रिय
जैसे सड़क का पत्थर तब तक नहीं हिलता...
जब तक कोई चेतन (हाथ) उसे उठाकर इधर-उधर न करे
वैसे ही ये आठ प्रकृति, परम चेतन (भगवान) की इच्छा से कार्य करती हैं।
परमात्मा की इच्छा (इशारा) से ही ये उठती-बैठती, कार्य करती हैं।
सब कुछ भगवान के नियंत्रण में
• इन आठ प्रकृतियों में केवल परमात्मा की सता है, दूसरा किसी की नहीं।
• उनकी इच्छा के विरुद्ध यह आठ प्रकृति इधर का उधर नहीं जा सकती।
• यह अपनी मर्यादा तभी तोड़ती है जब भगवान इन पर इशारा करते हैं।
पृथ्वी
मन
बुद्धि
अहंकार
वायु
इन पर पूर्ण नियंत्रण भगवान का है
राम रहा है "मैं करता हूँ" – यह भ्रम
मैं करता हूँ मेरी मर्जी से सब कुछ चलता है
यह "मैं-मैं" का अहंकार भी भगवान की माया है। प्राणी उसी माया के जाल में फंसा है और खुद उसे से अनजान हैं। यही माया की सबसे बड़ी शक्ति है – प्राणी को पता ही नहीं चलने देती कि वह माया के जाल में हैं।
जब भगवान की शक्ति मिलती हैं
तब ये आठ प्रकृति सक्रिय होकर अपना-अपना कार्य करने लगती हैं।
तब सृष्टि चलती है, संसार चलता है, जीवन चलता है।
जब भगवान अपनी शक्ति वापस ले लेते हैं
तब ये आठ प्रकृति निष्क्रिय (पुर्त) हो जाती हैं, कुछ भी कार्य नहीं कर सकती।
तब सब पत्थर की तरह जड़ होकर एक स्थान पर पड़ी रहती हैं, अनंत काल तक कुछ नहीं कर सकती।
श्लोक 5 का रहस्य (पराःप्रकृति)
इस अपरा (आठ प्रकार की) प्रकृति के अलावा मेरी एक और परा प्रकृति हैं –
जीवभूता परा प्रकृति
हे महाबाहो! वही जीव रूप होकर इस संपूर्ण जगत को धारण करती है, चलाती है, संभालती है, जीवित रखती है।
3 चेतन प्रकृति (भगवान की)
6. मन
7. बुद्धि
8. अहंकार
5 जड़ प्रकृति (भगवान की)
1. पृथ्वी
2. जल
3. वायु
4. अग्नि
5. आकाश
सार निष्कर्ष
✔ यह आठ प्रकृति भगवान की है, हमारी नहीं।
✔ हम इन प्रकृतियों के मालिक नही, केवल उपयोगकर्ता (अधिकार) है।
✔ इनकी मर्यादा भगवान ने तय की है।
✔ इनमें केवल परमात्मा की सत्ता है, दूसरा किसी की नहीं।
याद रखो भक्तों!
तुम कुछ नहीं करते, भगवान कराते हैं!
तुम साधन हो, वह साधक हैं!
व्यवहार में अपनाएँ
✔ अहंकार छोड़ो – समर्पण सीखो।
✔ हर कार्य में भगवान को स्मरण करो।
✔ यह समझो कि सब कुछ उनकी कृपा से हैं।
✔ ज्ञान + भक्ति = शुद्ध जीवन!
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥ 4 ॥
श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय 7, श्लोक 4-5
“ यह मेरी अपरा (जड़) प्रकृति है, जो आठ प्रकार की है –
पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार! ”
हमें ऐसा लगता है...
मैं कर रहा हूँ
मेरी मर्जी से ही रहा है
मेरा जीवन मेरी इच्छा से चल रहा है
मैं सब कुछ नियंत्रित करता हूँ
मेरा मन, बुद्धि, अहंकार मेरे हैं
यह केवल अज्ञान है, नादानी है,
भगवान की माया का प्रभाव है!
सत्य क्या है ?
सब कुछ परमात्मा से नियंत्रित है
हम केवल उपकरण (मशीन) हैं
यह आठ प्रकृति भगवान की शक्ति है
इनकी मर्यादा है, वे स्वतंत्र नहीं
इनमें केवल परमात्मा की सता है
याद रखो: परमात्मा की इच्छा के
विरुद्ध यह आठ प्रकृति नहीं चल सकती!
भगवान श्री कृष्ण
नियंत्रक हैं – हम नहीं
1. पृथ्वी
2. जल
3. वायु
4. अग्नि
5. आकाश
6. मन
7. बुद्धि
8. अहंकार
8
प्रकृति
(भगवान की शक्ति)
पत्थर का उदाहरण
सड़क पर पड़ा पत्थर
बर्षों तक वहीं रहेगा...
जब तक कोई चेतन
(हाथ) उसे उठाकर
इधर-उधर नहीं करता!
ऐसे ही यह 8 प्रकृति
जड़ हैं, चेतन कौन?
परमात्मा!
हम एक मशीन हैं
शरीर = मशीन
आत्मा = ज्ञाता
परमात्मा = संचालक
यदि परमात्मा शक्ति वापस
ले लें तो यह मशीन (शरीर,
मन, बुद्धि, अहंकार) कार्य
करना बंद कर देती है!
3 चेतन प्रकृति (भगवान की)
6. मन
7. बुद्धि
8. अहंकार
5 जड़ प्रकृति (भगवान की)
1. पृथ्वी
2. जल
3. वायु
4. अग्नि
5. आकाश
जब परमात्मा शक्ति देते हैं...
(तब यह आठ प्रकृति कार्य करती हैं)
चलना, बोलना, सोयना, समझाना, महशूस करना,
निर्णय लेना – सब कुछ संभव हो आता है!
जब परमात्मा शक्ति वापस ले लेते हैं...
(तब यह आठ प्रकृति निष्क्रिय हो जाती हैं)
मन, बुद्धि, शरीर, अहंकार – सब सड़क के पत्थर समान
हो जाते हैं, कुछं = भी करने में असमर्थ!
सार (निष्कर्ष)
यह आठ प्रकृति भगवान की है, हमारी नहीं!
हम इन प्रकृवियों के मालिक नहीं, केवल
उपयोगकर्ता (उपकरण) है!
इनकी मर्यात भगवान ने तय की है!
इनमें केवल परमात्मा की सता है, दूसरा
किसी की नहीं!
याद रखो भक्तों!
तुम कुछ नहीं करते,
भगवान कराते हैं!
तुम साधन हो,
वह साधक हैं!
व्यवहार में अपनाऐं
अहंकार छोड़ो – समर्पण सीखो!
हर कार्य में भगवान को स्मरण करो!
यह समझो कि सब कुछ उनकी कृपा से है!
ज्ञान + भक्ति = शुद्ध जीवन!
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भक्तों! आप भगवान को मानते हैं या नहीं?
यह समझ लीजिए – सब कुछ उसी की शक्ति से चल रहा है, आपका कुछ भी नहीं है!
सुबह से रात तक – कौन कराता है?
सुबह उठाते कौन है?
मैं खुद उठता हूं?
नहीं! वही जगाते हैं
खाना कौन खिलाता है?
मैं खुद खाता हूं?
नहीं! वही खिलाते हैं
रात को कौन सुलाता है?
मैं खुद सोता हूं?
नहीं! वही सुलाते हैं
पानी कौन पिलाता है?
मैं खुद पीता हूं?
नहीं! वही पिलाते हैं
पैसा कहां से आता है?
मैं खुद कमाता हूं?
नहीं! वही दिलाते हैं
पेट कौन भरता है?
मैं खुद भरता हूं?
नहीं! वही भरते हैं
सांसें कौन चला रहा है?
मैं खुद ले रहा हूं?
नहीं! वही चला रहे हैं
आप जो कुछ भी कर रहे हैं – वह भी उसकी शक्ति से, उसके बिना आप एक क्षण भी कुछ नहीं कर सकते!
यह सब नाटक भक्ति है, ऐसे ड्रामेबाजी से भगवान नहीं मिलेंगे!
दिखावा
स्टेटस
लोगों को दिखाने के लिए भक्ति
भक्ति का अहंकार – "मैं बड़ा भक्त हूँ"
याद रखो! भगवान मिलेंगे सच्ची भक्ति से, हृदय की गहराई में उतरकर पूर्ण समर्पण से।
जब आपको हृदय से यह महसूस होगा कि...
मेरा कोई अस्तित्व नहीं है
मेरी कोई ताकत नहीं है
मैं एक मुर्दा हूँ
मैं उसकी शक्ति से संचालित हूँ
वह रिमोट में एक बटन दबाएगा तो मैं गिर जाऊँगा
मेरी पूरी चेतना वही हैं
सुबह वही जगाते हैं
वही खाना खिलाते है
वही मेरी सांसें चलाते है
मैं अपने से कुछ नहीं कर रहा
मैं उसकी शक्तियों से कर रहा हूँ
ऐसा भाव जब हृदय में स्थिर हो जाएगा – तब भगवान मिलेंगे!
भगवान की भक्ति कैसी होती है?
एकांत में होती है
सच्चे हृदय से होती है
भगवान के मिलन की तड़प और व्याकुलता से होती है
अंदर से पूर्ण समर्पण से होती है
द्रौपदी के जैसे समर्पण से होती है
वाणी से नहीं, हृदय से होती है
अहंकार जलकर राख हो जाए, तभी होती है
अहंकार के जाल में फंसकर भगवान नहीं मिलते!
मेरा बेटा
मेरी बेटी
मेरे मम्मी पापा
मेरा भाई
मेरी पत्नी / मेरा पति
यह सब मोह और अहंकार के जाल हैं! पहले इसे जलाना होगा!
जिसका अहंकार पूरे जलकर राख है जाता है, वही भगवान तक पहुँचता, बाकी का फिर से जन्म होता हैं!
0.1% भी अहंकार बाकी है
मतलब 0.1% भी यदि अहंकार जीवित है तो जन्म निश्चित है! याद रखना!
पूर्ण समर्पण के लक्षण
मैं कर रहा हूं का भाव समाप्त
सिर्फ भगवान, सिर्फ भगवान, सिर्फ भगवान
केवल भगवान से मतलब, दूसरे से नहीं
वही करता है, वही करवाता है
अपनी सत्ता, अपनी ताकत पूरी समाप्त
अपने को पूरी तरह मिटा देना
24 घंटे, रोम-रोम में यही भाव गूंजे –
"भगवान कर रहा है, भगवान कर रहा है, मैं कुछ नहीं! भगवान कर रहा है!"
जब यह भाव बुद्धि में जम जाए और अंदर से महसूस हो जाए कि मेरी शक्ति शून्य है और परमात्मा के आगे वही करता है जो वह चाहते हैं,
जब कर्तापन पूरा नष्ट हो जाए – बस समझ लीजिए यही आपका
अंतिम जन्म है!
खुद से आज ही जांच कर लीजिए
आज जब आप जाग रहे हैं, बैठ रहे हैं, काम कर रहे हैं, तो अपने आप से पूछिए – अपने हृदय से पूछिए –
मुझे कैसा महसूस हो रहा हैं?
अगर महसूस हो रहा है मैं खुद कर रहा हूँ
तो जान लीजिए आपको कई जन्म लेना पड़ेगा!
अगर महसूस हो रहा है भगवान ही करवा रहे हैं
तो समझ लीजिए आप भगवत प्राप्ति के अधिकारी हैं!
मेरा कोई न सहारा बिन तेरे घनश्याम सांवरिया मेरे, मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई...
जब उनके सिवा दूसरा कोई आश्रय नहीं रहेगा, तभी भगवान मिलेंगे!
यदि पूर्ण समर्पण नहीं भगवान में तो...
जन्म मृत्यु की चक्की में बारबंबर पीसे जाओगे!
निष्कर्ष
कर्तापन छोड़ो – समर्पण सीखो!
अहंकार छोड़ो – भगवान को पकड़ो!
भगवान की शरण में जाओ और सत्य को जानकर मुक्त हो जाओ!
समर्पण कैसे करें?
अहंकार छोड़ो – सब कुछ उसी का है।
हर कार्य में भगवान को कारण मानो।
हर समय 'मैं' को भूलकर उसी का कृपा समझो!
ज्ञान + भक्ति = मुक्त जीवन!
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

पुराणों के अनुसार – चारों युगों का विस्तार
सृष्टि का चक्र अनादि है – युग बदलते हैं, धर्म का स्तर घटता-बढ़ता है
सत्ययुग
धर्म के 4 चरण पुर्ण
17,28,000 वर्ष
त्रेतायुग
धर्म के 3 चरण
12,96,000 वर्ष
द्वापरयुग
धर्म के 2 चरण
8,64,000 वर्ष
कलियुग
धर्म का 1 चरण
4,32,000 वर्ष
चारों युगों की कुल आयु
43,20,000 वर्ष
सतयुग 17,28,000 वर्ष
त्रेतायुग 12,96,000 वर्ष
द्वापरयुग 8,64,000 वर्ष
कलियुग 4,32,000 वर्ष
कुल योग 43,20,000 वर्ष
कलियुग का प्रारम्भ और वर्तमान स्थिति
• कलियुग का प्रारम्भ : महाभारत युद्ध के बाद
• दिनांक : 18 फरवरी 3102 ईसा पूर्व
• अब तक बीत चुका समय : 5126 वर्ष (लगभग)
• कलियुग की कुल आयु : 4,32,000 वर्ष
• अब शेष समय : 4,26,874 वर्ष (लगभग)
बीता समय
शेष समय
5126 वर्ष (लगभग) 1.19%
4,26,874 वर्ष (लगभग) 98.81%
वेद व्यास जी ने कलियुग के बारे में कहा है
कलियुग में धर्म की हानि, अधर्म की वृद्धि, मानव का, सत्य. का नाश, दपश, क्षय, तप लोपे, तप का लोभ, और पापों की, चरम होगी। लोग क्रोधी, क्रोधी, स्वयी और आधामिक।
कलियुग की प्रमुख विशेषताएँ
• धर्म का केवल 1 चरण बचेगा।
• आयु अल्प होगी – 20 से 30 वर्ष तक।
• लोग रोगी, दुखी, भयभीत और स्वार्थी होंगे।
• सत्य, दया, तप, शील, दान – सब लुप्त होंगे।
• धन को ही भगवान माना जाएगा।
• शास्त्रों का अपमान होगा, वेद-वेदांगों का लोप होगा।
• झुठ, कपट, छल, हिंसा और अतेमदार बढ़ेंगे।
• पुत्र माता-पिता की सेवा नहीं करेंगे।
• भाई-भाई में वैर होगा, मित्रता स्वार्थ की होगी।
• शिक्षा का उद्देश्य केवल धन कमाना होगा।
• नेता भ्रष्ट, न्याय विकाऊ, पुलिस अत्याचारी होगी।
• प्रकृति का दोहन होगा, जलरि हंतखाब होंगे।
• मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि दिखावा बन जाएंगे।
• केया, भागवत, पुराण – सब व्यापार बन जाएंगे।
• भगवान का नाम लेने वाले लोग उपहास के पात्र होंगे।
कलियुग में आने वाले समय की भयानक स्थिति
स्वार्थ के लिए हत्या
स्वार्थ की पुर्ति न होने पर तुरंत हत्या कर दी जाएगी। माता, पिता, भाई, बहन, पुत्र, बेटी – कोई सुरक्षित नहीं रहेगा।
परिवार का विघटन
5 वर्ष की आयु में ही वृद्ध जैसे हो जाएंगे। परिवार का प्रेम समाप्त, विवाह केवल स्वार्थ के लिए होगा।
धर्म का नाश
मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा – सब जांगों दिखावा होगा। भगवान की भक्ति लगभग समाप्त हो जाएगी।
नैतिकता का पतन
व्यभिचार, नशा, जुआ, चोरी, डकैती सामान्य बात होगी। नैतिकता का नामोनिशान नहीं रहेगा।
अत्याचार और रोग
लोग 20-30 वर्ष से अधिक जीवित नहीं रहेंगे। रोग और मानसिक तनाव चारों तरफ होगा।
प्रकृति का प्रकोप
भुकंप, बाढ़, सुखा, तुफान, आग – प्रकृति के भयंकर प्रकोप आएंगे। जलवायु संकट होगा।
शिक्षा का व्यापार
शिक्षा केवल डिग्री और धन कमाने का साधन होगी, संस्कार और चरित्र का नाश होगा।
धन ही भगवान
धनवान ही सम्मानित होंगे। गरीब, ईमानदार लोग अपमानित और पीड़ित होंगे।
कलियुग में लोग कैसे होंगे?
स्वार्थी – केवल अपना हित सोचेंगे।
क्रोधी – छोटी-छोटी बात पर क्रोध करेंगे।
लोभी – धन के लिए कुछ भी करेंगे।
कपटी – बाहर कुछ, अंदर कुछ और होंगे।
निर्दयी – किसी पर दया नहीं करेंगे।
अधार्मिक – भगवान, धर्म, शास्त्र में कोई आस्था नहीं होगी।
अशांत – मन हमेशा बेचैन रहेगा।
अहंकारी – अपने को ही सब कुछ मानेंगे।
भौतिकवादी – केवल भोग और सुख ही जीवन का लक्ष्य होगा।
भक्तों का उपहास – भजन, साधु-संत, धर्मात्मा लोगों का मजाक उड़ाएँगे।
कलियुग में पापों की चरम सीमा
झुठ बोलना
चोरी, डकेती
रिश्तखोंरी
व्यभिचार
माता-पिता की अवहेलना
नशा और जुआ
हिंसा और हत्या
धर्म का उपहास
शास्त्रों का अपमान
प्रकृति का विनाश
भक्तों के लिए संदेश
• अभी भी समय है – कलियुग के अंत में भगवान की शरण ही एकमात्र मार्ग है।
• नाम जप, भजन, सत्संग, सेवा और सच्चा समर्पण ही कलियुग में मुक्ति का साधन है।
• दिखावा भक्ति नहीं – हृदय से पुकारो, भगवान अवश्य मिलेंगे।
• पुर्ण समर्पण ही भगवान तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग है।
जब पापों की चरम सीमा होगी...
जब अधर्म चरम सीमा को पार कर जाएगा, जब धरती पर जीना मुश्किल हो जाएगा, तब भी भगवान तुरंत नहीं आएंगे। कलियुग की पुरी आयु पुर्ण होने पर ही भगवान कल्कि रूप में अवतार लेंगे।
कल्कि अवतार
कलियुग के अंत में भगवान कल्कि रूप धारण करके आएँगे, अधर्म का नाश करेंगे, दुष्टों को सँमुन्द स्वांपनो करेगे।
तब धर्म की स्थापना होगी
सत्य, धर्म, शांति, प्रेम और सदाचार फिर से स्थापित होंगे। सतयुग का आरम्भ होगा और सृष्टि का चक्र फिर से प्रारम्भ होगा।
गीता में भगवान कहते हैं...
"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।"
(भगवद गीता – 4.7-8)
अंतिम संदेश
कलियुग कठिन है पर नाम स्मरण से सब संभव है।
हरे कृष्ण, हरे राम, राम राम, हरे हरे।।
नाम ही नैया है, नाम ही किनारा है।
समरण रखें
जब तक कलियुग की पूर्ण आयु समाप्त नहीं होगी, तब तक कल्कि अवतार नहीं होगा।
इसलिए अपना जीवन भक्ति, सेवा, सत्संग और समर्पण में लगाएँ, वही वही कल्याण का मार्ग है।।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

कलियुग का संपूर्ण विवरण - पुराणानुसार

वेद व्यास द्वारा पुराणों से उद्धृत

चार युगों का समयचक्र (पौराणिक कालगणना)

सत्ययुग	त्रेतायुग	द्वापरयुग	कलियुग
सत्, तप, ध्यान, धर्म	यज्ञ, कर्म, बल, मर्यादा	कर्म, ज्ञान, युद्ध, भक्ति	कलह, अधर्म, लोभ, पाप
अवधि: 17,28,000 वर्ष	अवधि: 12,96,000 वर्ष	अवधि: 8,64,000 वर्ष	अवधि: 4,32,000 वर्ष

कलियुग – वर्तमान स्थिति (2026 तक)

- कलियुग शुरू हुए: ~5,126 वर्ष हुए हैं (सन् 2026 तक)
- अभी शेष: ~4,26,874 वर्ष बाकी हैं
- हम कलियुग के प्रारंभिक चरण में हैं

कलियुग के लक्षण – भविष्य का चित्र (पुराण वर्णित)

स्वार्थ और अधर्म

- अत्यधिक स्वार्थ
- स्वार्थ की अग्नि हर हृदय में जलेगी
- मनुष्य केवल अपने लाभ के लिए जीएगा
- धर्म, दया, करूणा समाप्त

धर्म का पतन

- न मंदिर, न मस्जिद, न कथा-कथा
- धार्मिक स्थान उजाड़ होंगे
- वेद-पुराण की निंदा होगी
- झूठ और पाखंड धर्म बन जाएगा

संबंधों का विनाश

- बच्चे माता-पिता की हत्या करेंगे
- पारिवारिक संबंध टूटेंगे
- 5 वर्ष की कन्या दादी बन जाएगी
- सम्मान नष्ट, अनाचार बढ़ेगा

हिंसा और क्रोध

- इच्छा पूरी न होने पर 0.1% में भी हत्या
- क्रोध, हिंसा, चोरी सामान्य होगा
- छोटे कारण पर खून-खराबा
- न्याय लुप्त, बल ही कानून

भगवान के अवतार का समय

- भगवान कलियुग समाप्त होने तक अवतार
- जब पाप अपनी चरम सीमा पर पहुंचेगा,
- कलियुग के अंत में भगवान कल्कि रूप में अवतरित
- अवतार नहीं लेंर्ग
- सफेद घोड़ा पर, हाय में तलवार, अधर्म करेंगे
- अधर्म का नाश करेंगे

गीता वचन (श्रीमद्भगवदगीता 4.7)

"यदा यदा हि धर्मस्य गलानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम्॥"

जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब मैं स्वयं को प्रकट करता हूँ

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

घोर कलयुग अभी बाकी है - केवल 3% हुआ है

पुराणों के अनुसार — भविष्य का कलयुग अभी मात्र शुरुआत में है

— कलयुग की प्रगति —

अभी केवल 3%

अभी 3% — 5% भी नहीं पहुंचा

— 95%+ बहुत कुछ अभी बाकी

वर्तमान कलयुग — अभी

- धीरे-धीरे धर्म का पतन, लोभ और कपट बढ़ रहा
- समाज में स्वार्थ और बेइमानी बढ़ रही
- अभी मानव की औसत आयु : 100 वर्ष.

भविष्य का घोर कलयुग — आने वाला समय

- मारामारि, प्रलय, विनाश
- प्रकृति सम्पूर्ण रूप से प्रकोपित
- ताप 60°C+, अग्नि वर्षा

— आने वाला समय — 7 भयावह वास्तविकताएँ

1. अभी कलयुग केवल 3% अवस्था में है
   5% भी नहीं पहुंचा, 95%+ बाकी है

2. आने वाला समय महाभयंकर होगा
   धर्म और शांति समाप्त होंगी

3. प्रकृति मर्यादा तोड़ेगी
   भूकंप, जलप्रलय से स्थान डूबेंटें
   • फिर घोर सूखा →
   • सूर्य आग बरसाएगा, ज्वालामुखी विस्फोट, अग्नि वर्षा →
   → तापमान 60°C+ होगा

4. मंदिर-मस्जिद-कथा कुछ नहीं रहेगा
   चारों ओर केवल पाप, अधर्म और अनाचार

4. मंदिर-मस्जिद-कथा कुछ नहीं रहेगा
   चारों ओर केवल पाप, अधर्म और अनाचार फैलेगा

5. 5 वर्ष की उम्र में ही दादी-नानी बनकर मृत्यु
   जीवन अत्यंत क्षणभंगुर हो जायेगा

6. कलयुग के अंत में आयु केवल 20 वर्ष रह जाएगी
   अभी आयु औसत 100 वर्ष है

7. स्वार्थ की अग्नि
   इच्छा पूरी न होने पर हत्या होगी
   सुसम्बंध खत्म, विश्वासघात जनसामान्य होगा

लेख — श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

कलियुग का महा भयंकर ट्रेलर - अभी समर्पण करो

पुराणों के अनुसार — धर्म का ह्रास, प्रलय का दृश्य

इसीलिए भक्तों अगर इस कलयुग के महा भीषण प्रकोप से बचना चाहते हो... आज ही भगवान में समर्पित हो जाओ तब आप बचोगे अन्यथा कलयुग के अंतिम चरण के चक्की में आप पीसे जाओगे। यही संसार के चराचर प्राणी जो मुक्त नहीं हुए वही 84 में घूमेंगे। जो भगवान का भजन नहीं करेंगे, मोक्ष प्राप्त नहीं किया, वही सब जीवात्मा को कलियुग में पटक दिया जाएगा। आज ही अपना कल्याण कीजिए, जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्त होने का प्रयास कीजिए। अगर आज मुक्ति नहीं मिली तो घोर कलयुग में जन्म होगा। भगवान से प्रार्थना करो: प्रभु मुझे अपने पास रखना, इस धरती पर न भेजना। भगवान में समर्पण ही एकमात्र उपाय है, क्योंकि जन्म-मृत्यु का चक्र अटल है। जो समर्पित होगा वही बचेगा, वरना बारंबार 84 में घूमोगे। अभी कलियुग की शुरुआत है, अभी धर्म है, आज ही मुक्ति का रास्ता खोल दो। मानव योनि फिर नहीं मिलेगी।

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

कलियुग की अंतिम चेतावनी
- अभी भी समय है -
• दैवी सुरक्षा •
• शरणागति • शांति •
• कलियुग •
• विनाश • मोह-माया • पाप
अभी कलियुग 3% है, 97% बाकी है। प्रकृति प्रलय करेगी।
आयु 20 वर्ष रह जाएगी।
84 लाख योनियों की चक्की से बचना है तो आज ही शरणागति लो।
मानव जन्म दुर्लभ है, फिर नहीं मिलेगा।
भगवान ने कहा है - "जो मेरी शरण में आता है, मैं उसे जन्म-मृत्यु से मुक्त कर देता हूं।"
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

आने वाला कलयुग – महा भीषण प्रकोप

वेद व्यास जी एवं पुराणों के अनुसार कलयुग का संपूर्ण विवरण

चारों युगों की अवधि

सतयुग	त्रेतायुग	द्वापरयुग	कलयुग
17,28,000 वर्ष	12,96,000 वर्ष	8,64,000 वर्ष	4,32,000 वर्ष

कुल योग = 43,20,000 वर्ष

कलयुग का वर्तमान स्थिति

कलयुग प्रारंभ : 18 फरवरी 3102 ईसा पूर्व

अब तक बीत चुका समय : 5126 वर्ष (लगभग)

शेष समय बाकी : 4,27,000 वर्ष (लगभग)

कलयुग की कुल अवधि : 4,32,000 वर्ष

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं

"जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होगी, तब-तब मैं धर्म की स्थापना के लिए अवतार लूंगा।"

(भगवद गीता 4.7-8)

भगवान कलयुग के अंत में कल्कि अवतार लेकर आएंगे, जब पापों की चरम सीमा हो जाएगी और धरती पर हाहाकार मच जाएगा!

कलयुग कैसा होगा? वेद व्यास जी ने बताया है –

धर्म का नाश	परिवार का पतन	स्वार्थ और हिंसा	स्त्री-पुरुष संबंध	धन की अंधी दौड़	मंदिर-मस्जिद का अभाव	प्रकृति का प्रकोप
धर्म, सत्य, शांति, दया, तप, संयम, सदाचार सब नष्ट हो जाएंगे।	5 वर्ष की उमु में दादी नानी बनेंगे, परिवार का नाम मात्र रहेगा।	स्वार्थ पुरा न होने पर तुरंत हत्या, चाहे माता-पिता, भाई-बहन या संतान ही क्यों न हो।	व्यभिचार चरम पर होगा, लज्जा खत्म हो जाएगी।	धन के लिए कोई भी पाप करनेन्न में नहीं हिचकेगे।	मंदिर, मस्जिद, गुरुन्द्वारा, चर्च समात्तमा जाााानेंगे, भगवान का नाम नहीं रहेगा।	भूकंप, ज्वालामुखी, जल प्रलय, तूफान – प्रकृति अपनी मर्यादा तोड़ेगी।

कलयुग में बढ़ते जाएंगे पाप –

झूठ, चोरी, रिश्वत, छल, कपट, धोखा सामान्य हो जाएगा।	माता-पिता आदर नहीं रहेगा।	भक्ति, भजन, कथा, पुराण, संस्कार सब धूल में मिल जाएंगे।
शिक्षा केवल धन कमाने का साधन बन जाएगी।	गुरु-शिष्य परंपरा खत्म हो जाएगी।	मानवता खत्म, केवल स्वार्थः अत्नि चतेगी।
शराब, नशा, मांस, जुआ, व्यसन चरम पर होगें।	कानून व्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी।	0.1% भी स्वार्थ पूरा न हुआ तो हत्या निश्चित।
लोग 20-30 वर्ष में शारीरिक और मानसिक रूप से टूट जाएंगे।	नेता, अधिकारी सब भ्रष्ट और अत्याचारी होंगे	चारों तरफ पाप ही पाप होगा, अधर्म का बोलबाला होगा।

कलयुग के अंतिम चरण में क्या होगा?

- लोग मनुष्य रूप में राक्षस बन जाएंगे।
- भोजन, जल, वायु सब विषाक्त हो जाएंगे।
- भाई-भाई, पिता-पुत्र के शत्रु बनेंगे।
- नारी असुरक्षित होगी, अत्याचार वढ़ेंगे।
- रोग, शोक, पीड़ा, अकेला मृत्यु वढ़ेगी।
- धरती पर रहना दुशर हो जाएगा।
- तब भगवान कल्कि रूप में अवतार लेंगे।
- पापियों का विनाश होगा, धर्म की पुनः स्थापना होगी।

इसीलिए भक्तों!

- अगर इस कलयुग के महा भीषण प्रकोप से बचना चाहते हो, आने वाले समय में प्राकृविक आपदा बढ़ जाएगी – भुकंप, ज्वालामुखी, जल प्रलय सब तूफान पर होगा, प्रकृति अपनी मर्यादा तोड़ेगी.।
- कलयुग जैसे ही आगे बढ़ोगी, अगर इसका ट्रेलर देखना है तो आज ही देख लीजिए चारों तरफ क्या हो रहा है – यही तुत्ती पन होगा।।
- आज ही भगवान में समर्पित हो जाओ, तब आप बचोगे, अन्यथा कलयुग के अतिम चरण की चक्की में आप नपिसे जाओगे।
- यहीं संसार के आप जितने भी चराचर प्राणी देख रहे हो, यही सब जाएंगे कलयुग के अंतिम चरण में, कोई नया प्राणी उत्पन्न नहीं होगा। जिन्हें मुक्ति नहीं मिलेगी, वही सब इसमें पिसते रहेंगे!!
- जो भगवान का भजन नहीं करेंगे, जो अपना कल्याण नहीं किया, जो मोक्ष प्राप्त नहीं किया, आवागमन के चक्र से मुक्त नहीं हुआ – वही सब जीवात्मा को कलयुग में पटक दिया जाएगा।
- तो आज ही अपना कल्याण कीजिए और जन्म मुत्यु के चक्की से, जन्म मुत्यु के चक्र से मुक्त होने का प्रयास कीजिए।

अगर आज मुक्ति प्राप्त नहीं की तो याद रखना, आने वाले घोर कलयुग में आपका जन्म होगा। इसलिए अपना कल्याण कीजिए और भगवान से प्रार्थना कोजिए कि –

प्रभु! आने वाले समय में मुझे धरती पर ना भेजना, मुझे अपने पास रखना, इस धरती में कभी लौट कर ना आंज, मुझ पर ऐसी कृपा करना।

भक्तों भगवान से बार-बार प्रार्थना कीजिए और अपने आप को भगवान में समर्पण कीजिए तभी इस चक्र से बचोगे।

भगवान ने स्वय बताया है –

जन्म के बाद मुत्यु निशित है और मुत्यु के बाद फिंर जन्म निश्चिव है,
जैसे दिन और रात के चक्र को रोका नहीं जा सकता,
ऐसे ही जन्म मुत्यु के चक्र को रोका नहीं जा सकता,
यह अटल है, कंदित्यु चलते रहेंगे,
इसका अंत होगा केवल भगवान में समर्पण होने पर।

इसलिए भगवान में समर्पण करें अपने आप को, अन्यथा नोट कर लीजिए – आने वाले घोर कलयुग में आपका जन्म होगा,

इस जन्म मृत्यु की चक्की से जीव को मुक्ति नहीं मिलती, जब तक भक्ति साधना जीव नहीं करता,

भगवान में समर्पण जब तक नहीं होगी, अपने कर्तापन को जब तक जीव त्याग नहीं करेंगी, भगवान को प्राप्त नहीं कर लेती,

तब तक इस जन्म मृत्यु की चक्की में अनंत अनादिकाल तक जीव पिसती रहेगी!!!

आने वाला कलयुग महा भयंकर होगा – इसलिए संभल जाइए!

परमात्मा में समर्पण कीजिए, जो भगवान में समर्पित होगा वही बचेगा इस चक्र से।	वरना वांरवार जन्म मृत्यु की चवकी में आपको ड़ाला जाएगा।	फिर मरोगे, फिर जन्म लोगे, 84 में घूमोगे, महा भयंकर दुर्गति होगी।	इसलिए आज ही सावधान हो जाइए और भगवान की शरणागति कीजिए।	आने वाले समय में कलयुग में ऐसा तांडव होगा की भक्ति, भजन कुछ नहीं रहेगा।	इस कलयुग के पाप के प्रभाव के कारण आपकी भक्ति भी धूल में मिल जाएगी और नरक में आपको धकेल देगी, 84 में आपको धूमना पड़ेगा।	आन वुद्वि वाही है, आमे कलयुग की अुरयावा है, आगे सातों रन्फ चर्हा है,	मानव योनि इसके वाद कभी मिलेगी नहीं, इसलिए होश में आ जाइए! ओ आल ही ससबे बाद कभी इलतिार होल दों सेजिए।	अन्यथा आने वाले समय की बहुत अत्यंत की दुर्गति होगी!

हे भगवान! हमें अपने चरणों में स्थान दो, हमारे कर्तापन को नष्ट करो, हमें अपने में समाहित कर लो।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे ॥

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वेतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

युगों की दिव्य उम्र (महायुग)
सतयुग
१७,२८,००० वर्ष
त्रेतायुग
१२,९६,००० वर्ष
द्वापरयुग
८,६४,००० वर्ष
कलयुग
४,३२,००० वर्ष
महायुग की कुल उम्र = ४३,२०,००० वर्ष
कलयुग का विस्तार: भविष्य की भयावहता
(वेद व्यास जी के अनुसार)
५ वर्ष में
वृद्धावस्था
स्वार्थ हेतु हत्या
धर्म का लोप
(मंदिर, भागवत, पुराण नहीं)
चारों तरफ पाप ही पाप
कलयुग का अंत और धर्म की स्थापना (कलकी अवतार)
"जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होगी...
मैं स्वयं इस धरती पर आऊंगा"
भक्तों की रक्षा
धर्म की पुनः स्थापना
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे | राधा राधा राधा राधा राधा ||
केवल उनकी कृपा से परमात्मा का ज्ञान होता है |
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

संसार में प्राणी 'भगवान नहीं है' करके बकबक क्यों करते हैं?
आखिर भगवान को लोग मानते क्यों नहीं?
कारण
बुद्धि में नास्तिकता का ट्रंकल
(अनंत जन्मों के संस्कार और
माया की प्रबल शक्ति)
भगवान को झूठ और संसार को सत्य बताती है
अहंकार की पट्टी और
कर्तापन का नशा
जब तक 'मैं कर्ता हूँ' का भाव रहता है,
अहंकार समर्पण को रोकता है
कर्मों के भोग को न देखना
जिसे महा-विकराल कए नहीं मिला, उसे
समय की मार और भगवान की सत्ता का
का अहसास नहीं होता
कल्याण
पूर्ण समर्पण और कल्याण
संसार से हारकर जब जीव रोकर
रोकर पुकारता है, 'प्रभु, अब मेरे
सब आप ही हो',
'प्रभु, अब मेरे हाथ में कुछ नहीं है,
तब अहंकार चकनाचूर होता है
और भगवान मिलते हैं
प्रार्थना के बीच भी
नियति अटल है
यह अपना समय लेती है,
तब तक धैर्य आवश्यक है
निष्कर्ष: 'भगवान नहीं है' का बकवाद अज्ञानता और माया के वशीभूत
बुद्धि का परिणाम है। सच्चा ज्ञान महाकष्टों और विधाता की कृपा से ही
प्राप्त होता है, जब अहंकार का नाश हो जाता है।
"हरे कृष्ण हरे कृष्ण,,, कृष्ण कृष्ण हरे हरे | राधा राधा राधा |
केवल उनकी कृपा से परमात्मा का ज्ञान होता है।।
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

संसार में प्राणी ‘भगवान नहीं है’ करके बकबक क्यों करते हैं ?
आखिर भगवान को लोग मानते क्यों नहीं?
बुद्धि में बुद्धि में नास्तिकता का ट्रंकल (नास्तिक विचार)
अनंत जन्मों के संस्कार और माया की प्रबल शक्ति, जो भगवान को झूठ और संसार को सत्य बताती है।
अहंकार की पट्टी और कर्तापन का नशा
जब तक जीव में 'मैं ही कर्ता हूँ' का भाव रहता है, अहंकार भगवान में समर्पण को रोकता है।
कर्मों के भोग को न देखना
जो व्यक्ति जीवन में कभी महा-विकराल कष्ट नहीं देखता, उसे समय की मार और भगवान की सत्ता का अहसास नहीं होता।
परमात्मा की विशेष कृपा
केवल भगवान की अहैतुकी कृपा से ही बुद्धि पलटती है और जीव उन्हे जान पाता है।
पूर्ण समर्पण और कल्याण
जब संसार से हारकर जीव रोकर पुकारता है, 'प्रभु, अब मेरे हाथ में कुछ नहीं है, सब आप ही हो', तब अहंकार चकनाचूर होता है और भगवान मिलते हैं।
निष्कर्ष: ‘भगवान नहीं है’ का बकवाद अज्ञानता और माया के वशीभूत बुद्धि का परिणाम है। सच्चा ज्ञान महाकष्टों और विधाता की कृपा से ही प्राप्त होता है, जब अहंकार का नाश हो जाता है।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण,,, कृष्ण कृष्ण हरे हरे | राधा राधा राधा |
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भक्तों, आपके जीवन का रहत्य रहस्य – क्या आपकी मर्जी से हो रहा है सब?

निष्कर्ष : आपका जीवन न आपकी मर्जी से, न केवल भगवान की मर्जी से, बल्कि जन्म से पहले विधाता द्वारा लिखे गए प्रारब्ध लेख के अनुसार चल रहा है। माया का पर्दा हमें यह भूलने पर मजबूर करता है कि सब कुछ पहले से निर्धारित है। केवल कर्म आपके हाथ में है।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे | राधा राधा राधा

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भक्तों, आपके जीवन का रहत्य रहस्य – क्या आपकी मर्जी से हो रहा है सब?

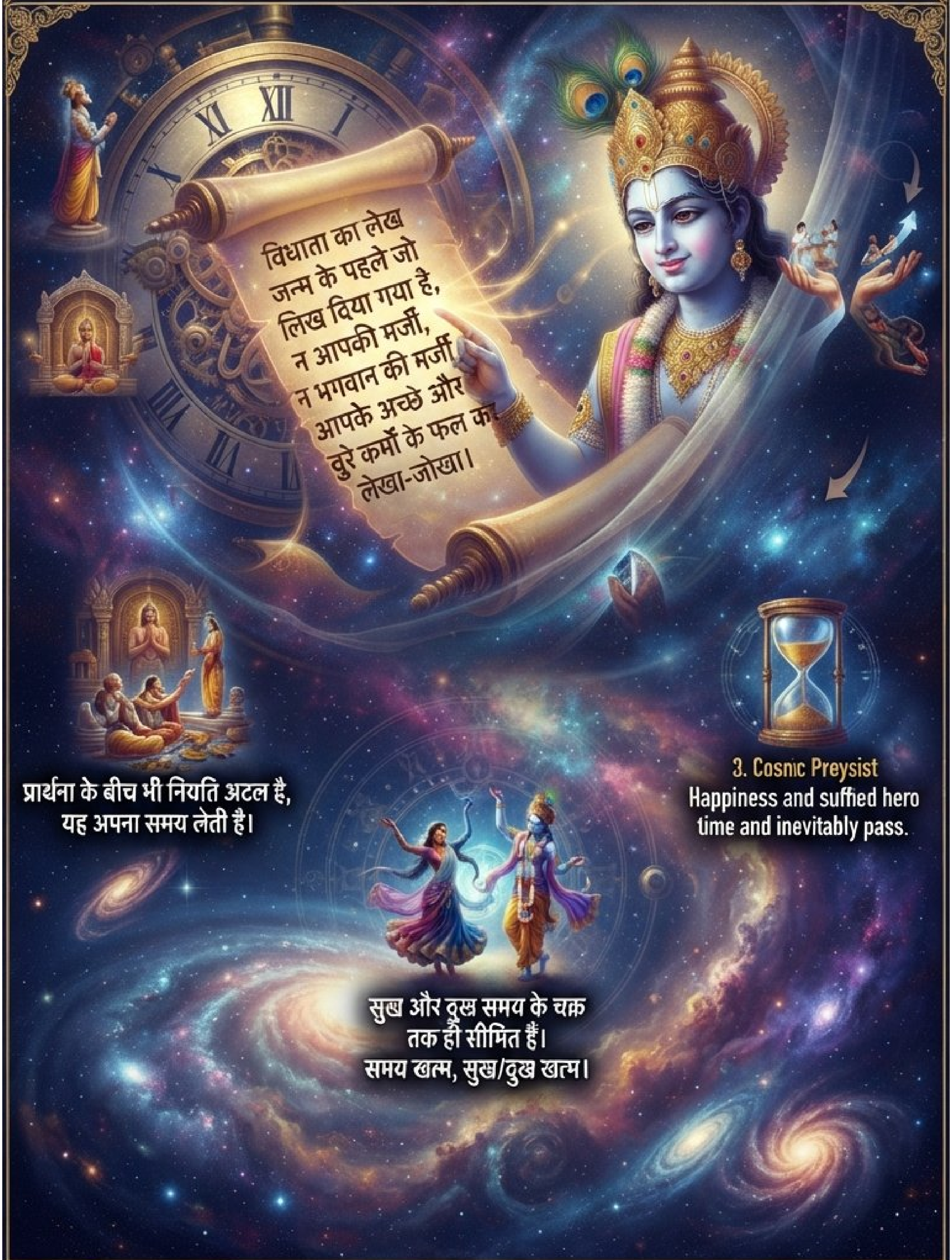

निष्कर्ष : आपका जीवन न आपकी मर्जी से, न केवल भगवान की मर्जी से, बल्कि जन्म से पहले विधाता द्वारा लिखे गए प्रारब्ध लेख के अनुसार चल रहा है। माया का पर्दा हमें यह भूलने पर मजबूर करता है कि सब कुछ पहले से निर्धारित है। केवल कर्म आपके हाथ में है।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे | राधा राधा राधा

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

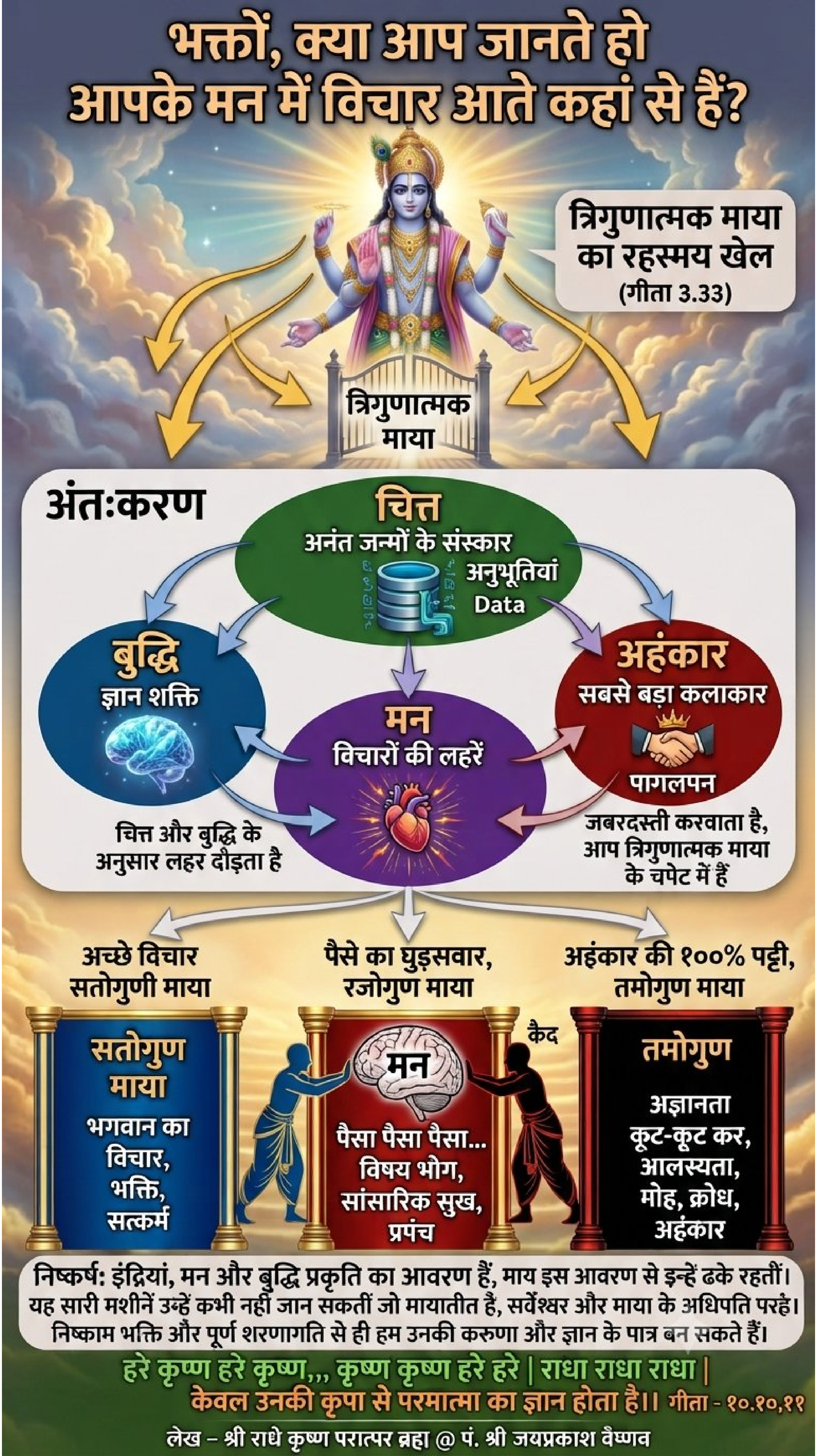
भक्तों, क्या आप जानते हो
आपके मन में विचार आते कहां से हैं?
त्रिगुणात्मक माया
का रहस्मय खेल
(गीता 3.33)
त्रिगुणात्मक
माया
अंतःकरण
चित्त
अनंत जन्मों के संस्कार
अनुभूतियां
Data
बुद्धि
ज्ञान शक्ति
अहंकार
सबसे बड़ा कलाकार
पागलपन
मन
विचारों की लहरें
चित्त और बुद्धि के
अनुसार लहर दौड़ता है
जबरदस्ती करवाता है,
आप त्रिगुणात्मक माया
के चपेट में हैं
अच्छे विचार
सतोगुणी माया
पैसे का घुड़सवार,
रजोगुण माया
अहंकार की १००% पट्टी,
तमोगुण माया
सतोगुण
माया
भगवान का
विचार,
भक्ति,
सत्कर्म
कैद
मन
पैसा पैसा पैसा...
विषय भोग,
सांसारिक सुख,
प्रपंच
तमोगुण
अज्ञानता
कूट-कूट कर,
आलस्यता,
मोह, क्रोध,
अहंकार
निष्कर्ष: इंद्रियां, मन और बुद्धि प्रकृति का आवरण हैं, माय इस आवरण से इन्हें ढके रहतीं।
यह सारी मशीनें उन्हें कभी नहीं जान सकतीं जो मायातीत हैं, सर्वेश्वर और माया के अधिपति परहें।
निष्काम भक्ति और पूर्ण शरणागति से ही हम उनकी करुणा और ज्ञान के पात्र बन सकते हैं।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण,,, कृष्ण कृष्ण हरे हरे | राधा राधा राधा |
केवल उनकी कृपा से परमात्मा का ज्ञान होता है।। गीता - १०.१०,११
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रहा @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

केन उपनिषद (सामवेद): प्रथम आठ मंत्रों का दिव्य रहस्य – परमात्मा इंद्रियों और मन-बुद्धि की सीमा से परे
नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः। मूढोऽयं लोकः नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्॥५॥
हे परमाला, नन और बुद्धि आपकी माया को शुक्ष्म मशीनें हैं। माया के भशीभ्रत होकर औवाला इन्हें आप तक पहुँलने का साधन माम बेतता है, परन्नू सें जव प्रकुति के अगगेत ही कार्म करती है। जेसे रोबोट अपने विर्याता वैज्ञानिक को बस्य नहीं सान सकता, वैले ही मन और बुद्धि अगने परम निसवक आपको तहण करने में सपंथा असपर्ण है। नोट कर लें, ये लाख प्रयास करके भी आपको नहीं केच कर सकते।
परमात्मा अमभव के अनुभत से परे है, और उनका कोई भौतिक प्रमाण नहीं. हि से हृदय की गहराई में उतरकर अनुभव के दि उत्तमाला बुद्दय वा ग्रलण सकते है।
परमात्मा जीव के अंदर रहकर भी केवबर सब्जान कथी समकी भौकिका माबा ही वैज्ञानिक/ वेज्ञाने बनाने वाले. उैसा ठोकं हमार रोबोट जैक कीवीस कसी आनक जानने पत्म निवंत्रक सकतां।
"माम् न वेद कश्चन"
"माम् तु वेद न कश्चन"
This divine Maya is mine, based on the three gunas (Qualities)."
1. अक्षि-चक्षुः चक्षुः श्रोत्रस्य श्रोत्रम्
जिनके प्रकाश से आंखें जगत को देखती हैं, उन्हें भौतिक आंखें नहीं देख सकतीं। परमात्मा परम अविनाशी है, भौतिक नश्वर आंखों से परे है। नोट कर लें, उन्हें देखा नहीं जा सकता।
2. श्रोत्रस्य श्रोत्रम्: मनसो मनः चक्षुषश्चक्षुः
जिनके प्रकाश से कानों में सुनने की शक्ति है, कान उनको ग्रहण नहीं कर सकता है। उन्हें जाना नहीं जा सकता इस प्राकृतिक माइक बुद्धि द्वारा।
3. मनसो मनः: यन्मनसा न मनुते
जिनके प्रकाश से मन में विचारों का प्रकाश उत्पन्न होता है, बुद्धि में ज्ञान शक्तियां हैं, उनको इंद्रियां, मन और बुद्धि ग्रहण नहीं कर सकते। यह सब माया के सूक्ष्म मशीन हैं। रोबोट अपने बनाने वाले को नहीं जान सकता।
4. परमात्मा अचिंत्य है, अलख निरंजन है। उन्हें जाना नहीं जा सकता (अचिंत्य)।
परमात्मा संपूर्ण प्रमाण से परे है। लाख प्रयास करके भी यह मशीनें उन्हें ग्रहण नहीं कर सकते। केल कर सकते। केवल हृदय की गहराई में उतर कर अनुभव के द्वारा प्राप्त किया जाता है, न कि प्रमाण के द्वारा।
निष्कर्ष: इंद्रियां, मन और बुद्धि प्रकृति का आवरण हैं, माया का आवरण हैं। परमात्मा इस आवरण से परे है।
यह सारी मशीनें उन्हें कभी नहीं जान सकतीं जो मायातीत है, सर्वेश्वर माया अधिपति परब्रह्म है।
निष्काम भक्ति और पूर्ण शरणागति से ही हम उनकी करुणा और ज्ञान के पात्र बन सकते हैं।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण,,, कृष्ण कृष्ण हरे हरे | राधा राधा राधा | केवल उनकी कृपा से परमात्मा का ज्ञान होता है॥ गीता - १०.१०,११
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

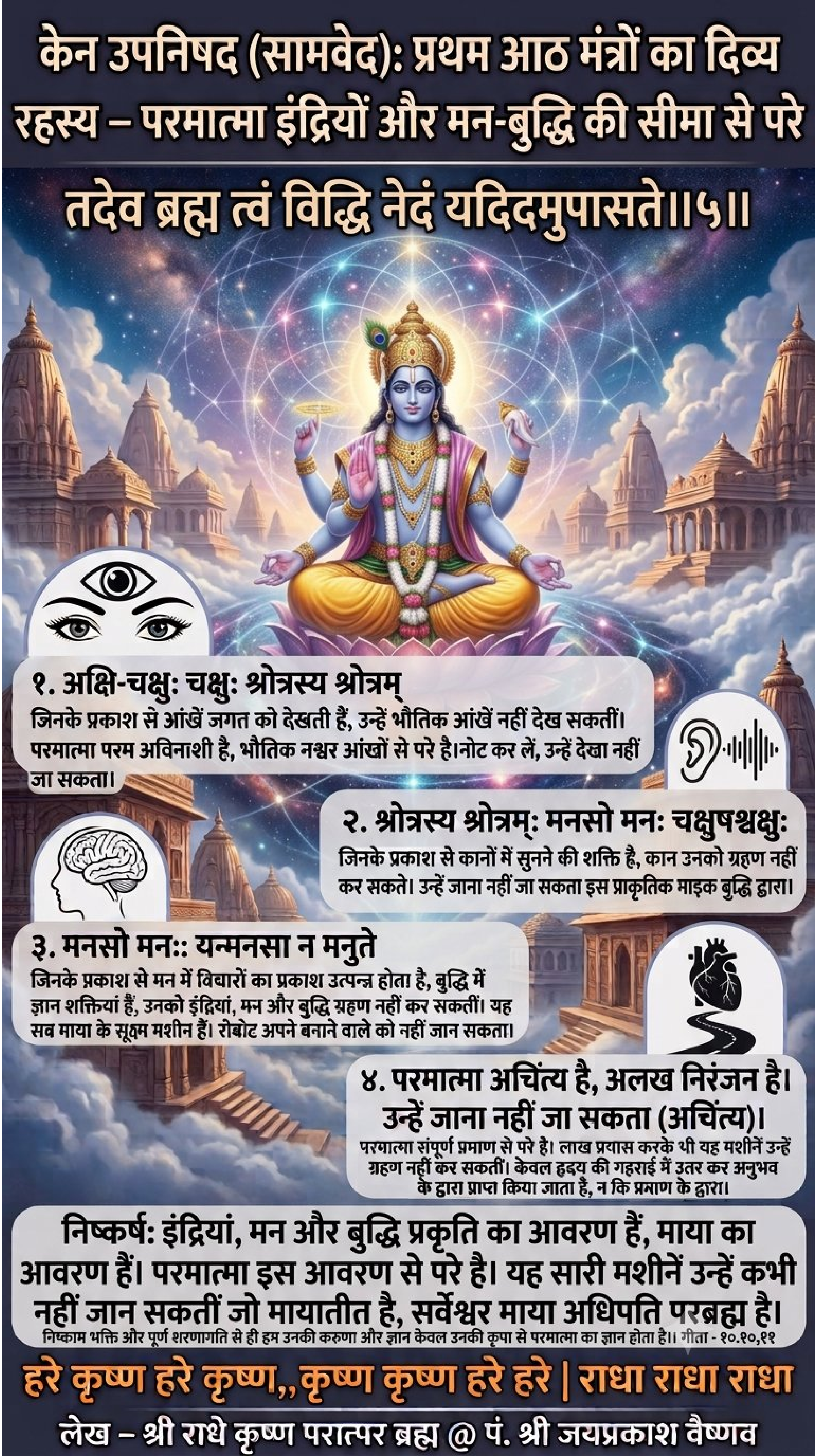
केन उपनिषद (सामवेद): प्रथम आठ मंत्रों का दिव्य रहस्य – परमात्मा इंद्रियों और मन-बुद्धि की सीमा से परे
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते॥५॥
१. अक्षि-चक्षुः चक्षुः श्रोत्रस्य श्रोत्रम्
जिनके प्रकाश से आंखें जगत को देखती हैं, उन्हें भौतिक आंखें नहीं देख सकतीं। परमात्मा परम अविनाशी है, भौतिक नश्वर आंखों से परे है।नोट कर लें, उन्हें देखा नहीं जा सकता।
२. श्रोत्रस्य श्रोत्रम्: मनसो मनः चक्षुषश्चक्षुः
जिनके प्रकाश से कानों में सुनने की शक्ति है, कान उनको ग्रहण नहीं कर सकते। उन्हें जाना नहीं जा सकता इस प्राकृतिक माइक बुद्धि द्वारा।
३. मनसो मनः: यन्मनसा न मनुते
जिनके प्रकाश से मन में विचारों का प्रकाश उत्पन्न होता है, बुद्धि में ज्ञान शक्तियां हैं, उनको इंद्रियां, मन और बुद्धि ग्रहण नहीं कर सकतीं। यह सब माया के सूक्ष्म मशीन हैं। रोबोट अपने बनाने वाले को नहीं जान सकता।
४. परमात्मा अचिंत्य है, अलख निरंजन है। उन्हें जाना नहीं जा सकता (अचिंत्य)।
परमात्मा संपूर्ण प्रमाण से परे है। लाख प्रयास करके भी यह मशीनें उन्हें ग्रहण नहीं कर सकतीं। केवल हृदय की गहराई में उतर कर अनुभव के द्वारा प्राप्त किया जाता है, न कि प्रमाण के द्वारा।
निष्कर्ष: इंद्रियां, मन और बुद्धि प्रकृति का आवरण हैं, माया का आवरण हैं। परमात्मा इस आवरण से परे है। यह सारी मशीनें उन्हें कभी नहीं जान सकतीं जो मायातीत है, सर्वेश्वर माया अधिपति परब्रह्म है।
निष्काम भक्ति और पूर्ण शरणागति से ही हम उनकी करुणा और ज्ञान केवल उनकी कृपा से परमात्मा का ज्ञान होता है।। गीता - १०.१०,११
हरे कृष्ण हरे कृष्ण,,कृष्ण कृष्ण हरे हरे | राधा राधा राधा
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

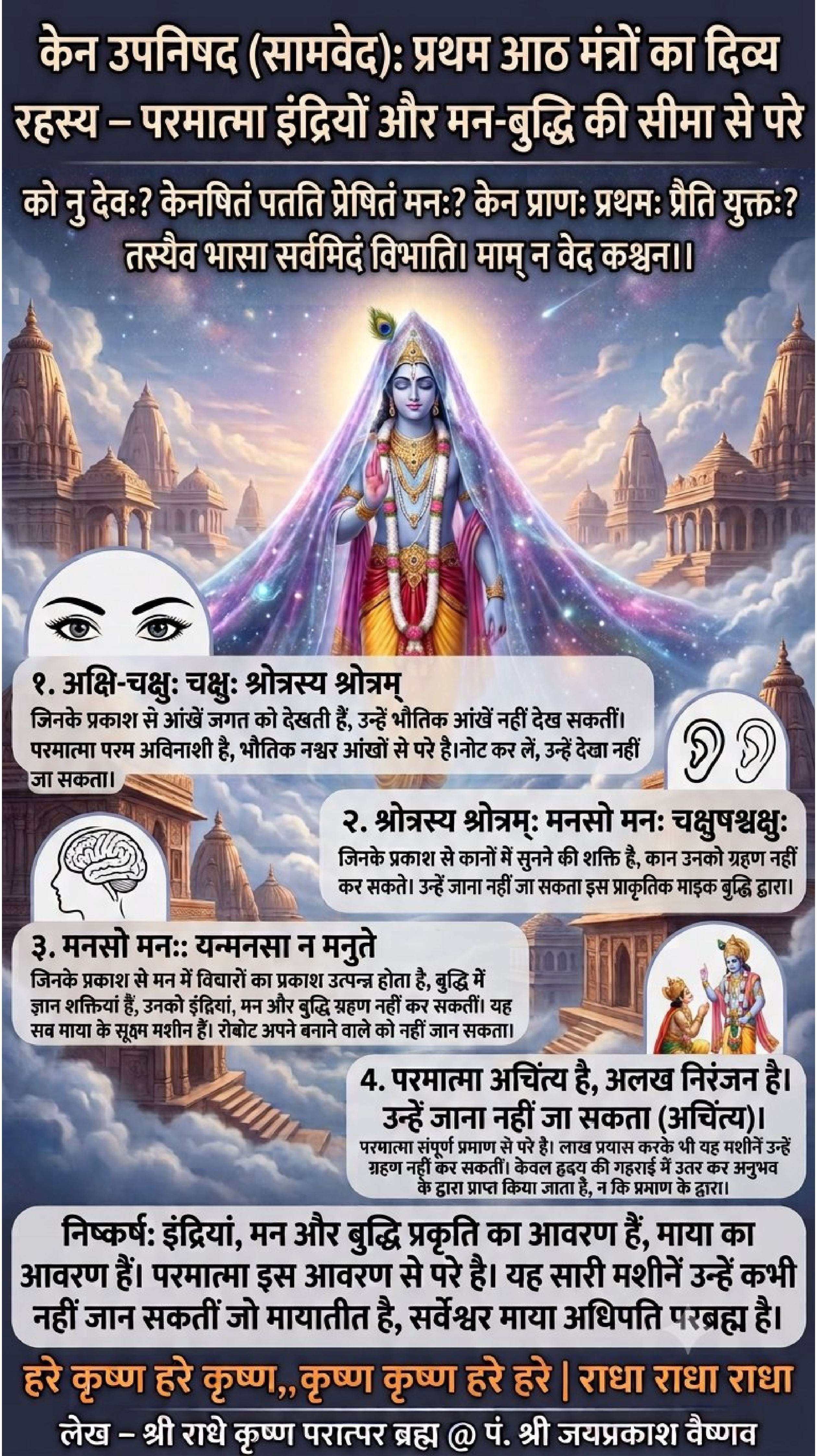
केन उपनिषद (सामवेद): प्रथम आठ मंत्रों का दिव्य रहस्य – परमात्मा इंद्रियों और मन-बुद्धि की सीमा से परे
को नु देवः? केनषितं पतति प्रेषितं मनः? केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः?
तस्यैव भासा सर्वमिदं विभाति। माम् न वेद कश्चन।।
१. अक्षि-चक्षुः चक्षुः श्रोत्रस्य श्रोत्रम्
जिनके प्रकाश से आंखें जगत को देखती हैं, उन्हें भौतिक आंखें नहीं देख सकतीं। परमात्मा परम अविनाशी है, भौतिक नश्वर आंखों से परे है।नोट कर लें, उन्हें देखा नहीं जा सकता।
२. श्रोत्रस्य श्रोत्रम्: मनसो मनः चक्षुषश्चक्षुः
जिनके प्रकाश से कानों में सुनने की शक्ति है, कान उनको ग्रहण नहीं कर सकते। उन्हें जाना नहीं जा सकता इस प्राकृतिक माइक बुद्धि द्वारा।
३. मनसो मनः: यन्मनसा न मनुते
जिनके प्रकाश से मन में विचारों का प्रकाश उत्पन्न होता है, बुद्धि में ज्ञान शक्तियां हैं, उनको इंद्रियां, मन और बुद्धि ग्रहण नहीं कर सकतीं। यह सब माया के सूक्ष्म मशीन हैं। रोबोट अपने बनाने वाले को नहीं जान सकता।
4. परमात्मा अचिंत्य है, अलख निरंजन है।
उन्हें जाना नहीं जा सकता (अचिंत्य)।
परमात्मा संपूर्ण प्रमाण से परे है। लाख प्रयास करके भी यह मशीनें उन्हें ग्रहण नहीं कर सकतीं। केवल हृदय की गहराई में उतर कर अनुभव के द्वारा प्राप्त किया जाता है, न कि प्रमाण के द्वारा।
निष्कर्ष: इंद्रियां, मन और बुद्धि प्रकृति का आवरण हैं, माया का आवरण हैं। परमात्मा इस आवरण से परे है। यह सारी मशीनें उन्हें कभी नहीं जान सकतीं जो मायातीत है, सर्वेश्वर माया अधिपति परब्रह्म है।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण,, कृष्ण कृष्ण हरे हरे | राधा राधा राधा
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

"संपूर्ण प्राणी: परमात्मा द्वारा संचालित
एक "आर्टफिशियल इंटेलिजेंस" मशीन"
परमात्मा (ब्रह्म)
का रिमोट
डेटा, स्मृति
और ज्ञान
वैज्ञानिक का
रिमोट कंट्रोल
स्विच ऑफ
मानव निर्मित
AI रोबोट
वैसे ही, संपूर्ण प्राणी
परमात्मा की चेतन
बुद्धि से संचालित हैं।
शक्ति वापस लेते ही प्राणी
मुर्दा हो जाएगा।
परमात्मा द्वारा रचित चेतन प्राणी
डेटा, स्मृति
और ज्ञान
स्विच ऑफ
अहंकार रूपी
चौकीदार
अहंकार माया का आवरण
मैं कर रहा हूँ
मैं बलवान हूँ
मानव निर्मित AI रोबोट
मशीन का रिमोट वैज्ञानिक के हाथ में है।
स्विच दबाते ही मशीन काम करना बंद कर देती है।
अहंकार के नशे में अंधा हुआ प्राणी सत्य नहीं देख पाता।
उसे दुनिया में कोई नहीं समझा सकता।
स्मृति और विस्मृति, ज्ञान शक्ति, सब परम चेतन ब्रह्म से संचालित है। कर्तापन का नाश और पूर्ण शरणागति ही एकमात्र कल्याण है।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे | राधा राधा राधा |

परमात्मा वैज्ञानिक - चेतन बुद्धि का रिमोट कंट्रोल

गीता 15.15 के आधार पर — AI और जीव की तुलना

AI - कृत्रिम बुद्धि

वैज्ञानिक स्विच दबाए तो मशीन बंद

1. AI में खुद की चेतना नहीं, वैज्ञानिक की बुद्धि से चलती है.
2. परमात्मा शक्ति खींच लें तो वैज्ञानिक 2+2 भी भूल जाए, मम्मी-पापा को न पहचाने.
3. AI केवल मशीन है — स्वयं सोच-समझ नहीं सकती, प्रोग्रामिंग पर निर्भर है.

जीव - चेतन प्राणी

परमात्मा चेतन खींच लें तो प्राणी मुर्दा

4. प्राणी भी AI मशीन है, चेतन बुद्धि परमात्मा देते हैं.
5. गीता 15.15 — "मैं ही स्मृति हूँ, मैं ही विस्मृति हूँ".
6. अहंकार रूपी चौकीदार बुद्धि पर पर्दा डालता है, "मैं कर रहा हूँ" का नशा.

• बिना परमात्मा प्राणी मुर्दा है •

चेतना का स्रोत केवल परमात्मा हैं

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

संदर्भ : श्रीमद्भगवदीता अध्याय 15 श्लोक 15 • चेतना का स्रोत परमात्मा ही हैं

— AI vs जीव —
परमात्मा चेतना का वैज्ञानिक
1. बिना परमात्मा प्राणी मुर्दा
चेतना के अभाव में जड़
2. गीता 15.15 — स्मृति विस्मृति मैं ही
— भगवान कहते हैं —
मैं ही स्मृति, विस्मृति एवं ज्ञानदाता
वैज्ञानिक की बुद्धि
जीव — आत्मा सहित
निर्जीव — आत्मा रहित
2+2 = ?
4. वैज्ञानिक भी परमात्मा के बिना 2+2 भूल जाए
बुद्धि सीमित है, चेतना परमात्मा की देन
चेतन बुद्धि - परमात्मा प्रदत्त
3. अहंकार = माया का पर्दा
अहंकार आत्मा को परमात्मा से अलग दिखाता है
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

जैसे AI अपने से कुछ नहीं – संपूर्ण प्राणी भी अपने से कुछ नहीं!
सभी का रिमोट कंट्रोल ब्रह्म के पास है – परमात्मा की चेतन बुद्धि से ही प्राणियों में चेतनता है
AI (आर्टिफिशियल इंटार्लेंजेंस) – एक मशीन
वैज्ञानिक – निर्माता और नियंत्रक
AI
AI अपने से कुछ नहीं कर सकता।
इसको बनाने वाला वैज्ञानिक है।
इस मशीन का रिमोट कंट्रोल वैज्ञानिक के पास है!
इस मशीन के सारे स्विच वैज्ञानिक के हाथ में हैं।
वैज्ञानिक एक स्विच दबाएगा तो मशीन काम करना बंद कर देगी।
संपूर्ण प्राणी – एक चेतन मशीन
ब्रह्म – निर्माता और नियंत्रक
संपूर्ण प्राणी एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मशीन है।
इनको तैयार करने वाला परमात्मा (ब्रह्म) है।
संपूर्ण प्राणियों का रिमोट कंट्रोल ब्रह्म के पास है।
परमात्मा की चेतन बुद्धि से ही प्राणियों में चेकता है।
अगर परमात्मा चेतन बुद्धि वापस खींच लें तो प्राणी वहीं गिर जाएगा और मुर्दा बन जाएगा।
परमात्मा के बिना प्राणी केवल मुर्दा है – याद रखो!
एक ही सिद्धांत
नियंत्रक अलग, मशीन अलग
भगवान श्री कृष्ण कहते हैं (गीता 15.15) – "मैं ही स्मृति हूँ और मैं ही विस्मृति हूँ"
अगर परमात्मा अपनी चेतन शक्ति वापस खींच लें तो...
वैज्ञानिक से पुछा जाएगा –
2+2 कितना होता है?
बह भूल जाएगा!
जोडना, घटाना, गुणा, भाग – सब भूल जाएगा!
इस बुद्धि में जितनी पावर है, ज्ञान शक्ति सब परम चेतन ब्रह्म से संचालित है।
2+2=?
E=mc²
x-y=?
मैं स्मृति हूँ
(याद दिलाता हूँ)
मैं विस्मृति हूँ
(भुला देता हूँ)
अगर मैं (परमात्मा) अपनी चेतन खींच लूँ तो...
संसार के प्राणी अपने मम्मी-पापा, भाई-बंधु, बेटा-बेटी को भूल जाएंगे।
सामने में उनके रिश्ते रहेंगे पर पहचान नहीं पाएंगे!
देखेंगा जरूर, लेकिन पहचान नहीं पाएंगा कि यही मेरी मम्मी है, यही मेरा बेटा है, यही मेरी पत्नी है!
पहचानने की शक्ति भी मैंने दी है
जैसे दिया है, एक दिन सब भस्म कर दूंगा।।
फिर आगे कुछ नहीं जान पाएगा।
जैसे पूर्व जन्म का नाम निशान मिट गया, वैसे ही इस जन्म का भी नाम और निशान मिट जाएगा!
संसार में प्राणी जो कुछ भी है, मेरी शक्तियों से है!
अहंकार – माया का आवरण
इस बुद्धि में अहंकार माया का आवरण है,
इस कारण प्राणी को इन सब चीज समझ नहीं आता।
क्योंकि प्राणी को सबसे पहले करता पन अपनी चपेट में ले लिया है!
"मैं कर रहा हूँ, मैं कर रहा हूँ" यही सबसे बलवान है!
अहंकार रूपी चौकीदार (गार्ड)
परम सत्य का द्वार
जब गेट की चौकीदार ही आपको अंदर जाने नहीं देंगे... तो आप अंदर जाएंगें कैसे?
बस ऐसे ही है अहंकार रूपी चौकीदार!
अज्ञानता का अंधकार
मैं
मेरा तेरा
मेरे लिए
मेरी दौलत
मेरा परिवार
मेरी इज्जत
चौकीदार (अहंकार) शुरू में ही प्राणी को अटैक कर देता है।
फिर उसकी सारी विवेक शक्ति नष्ट हो जाती है।
उसके अंदर अज्ञानता छा जाती है! और "मैं" के नशे में अंधा हो जाता है!
ऐसा अंधा हो जाता है कि उसे दुनिया में क्या ब्रह्मांड में कोई नहीं समझा सकता!
अगर चेतन शक्ति (परमात्मा की शक्ति) खींच ली गई तो...
आणी मुर्दा बन जाएगा
पहचानने की शक्ति खत्म
स्मृति शक्ति समाप्त
रिश्ते होंगे पर पहचान नहीं होगी
सब ध्वस्त हो जाएगा
सानय का बोध भी मिट जाएगा
इसलिए याद रखो!
प्राणी अपने से कुछ नहीं है।
सबकुछ परमात्मा की चेतन बुद्धि से है!
अहंकार ही बंधन का कारण है।
अहंकार हटेगा तो परमात्मा का अनुभव होगा!
परमात्मा में समर्पण ही मुक्ति का मार्ग है!
इसलिए भक्त्तों! अगर इस कलयुग के महा भीषण प्रकोप से बचना चाहते हो, आने वाले समय में प्राकृतिक आपदा बढ़ जाएगी – भूकंप, ज्वालामुखी, जल प्रलय सब तूफान पर होगा, प्रकृति अपनी मर्यादा तोड़ेगी। कलयुग जैसे ही आगे बढ़ेगी, अगर इसका ट्रेलर देखना है तो आज ही देख लीजिए-चारों तरफ क्या हो रहा है, यहीं इसका तूफान होगा आगे। तो आज ही भगवान में समर्पित हो जाओ, तब आप बचोगे, अन्यथा कलयुग के अंतिम चरण के चक्की में आप पीसे जाओगे!
यही संसार के जितने भी ओ चराचर प्राणी देख रहे हो, यही सब जाएंगें। कलयुग के अंतिम चरण में कोई नया प्राणी पेदा नहीं होगा। जिन्हें मुक्ति नहीं मिलेगी, वहीं सब इसमें पिसते रहेंगें!! जो भगवान का भजन नहीं करेंगें, जो अपना कल्याण नहीं किया, जो मोक्ष प्रप्त नहीं किया, आवागमन के चक्र से मुक्त नहीं हुआ!!! वहीं सब जीवात्मा को कलयुग में पटक दिया जाएगा। तो आज ही अपना कल्याण कीजिए और जन्म-मुत्यु के चक्की से मुक्त होने का प्रयास कीजिए!
आने वाला कलयुग महाभयंकर होगा
भक्ति भजन धूल में मिल जाएगी
84 लाख योनि में भटकना पड़ेगा
पाप के प्रभाव से नरक यये!
बुद्धि सही है अभी, समय कम है!
मानव योनि फिर कभी नहीं मिलेगी!
होश में आओ! अपनी मुक्ति का रास्ता खोलो!
अत्यंत की दुर्गति हो सकती है!
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

ॐ

प्रारब्ध का विधान - अहंकार का भ्रम

Prarabdha vs Ahankar

महत्वपूर्ण सत्य

1. जिसके प्रारब्ध में धन नहीं, उसे ब्रह्मांड में कोई नहीं दे सकता, चाहे प्राण त्याग दे।
2. संतान, विवाह भी प्रारब्ध से।
3. पैसा परिश्रम से नहीं, प्रारब्ध से आता - वरना दुनिया में गरीबी न होती।
4. अच्छे समय में माया पर्दा डालती है, बुरे समय में आंख खुलती है।
5. भगवान कल्याण चाहते हैं तो पहले अहंकार तोड़ते हैं, जीवन तबाह करते हैं।
6. अहंकार टूटने पर ही पूर्ण समर्पण, तभी कल्याण।

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

अहंकार तोड़ने वाले दो हथौड़े - गरीबी और असाध्य रोग

गरीबी ✕ असाध्य रोग

1. जब तक गरीबी-रोग नहीं आते, अहंकार नहीं टूटता.
2. ये दो सेकंड में चकनाचूर कर देते हैं.
3. भगवान कल्याण चाहते हैं तो पहले जीवन में तबाही लाते हैं.
4. तब भाग्य, नियति, समय चक्र दिखता है, तब भगवान दिखते हैं.
5. सुख-दुख इच्छा से नहीं, समय चक्र से मिलता है.
6. भगवान नौकर नहीं; भाग्य में लिखा वही मिलता है — तपस्वी को भी दुख, पापी को भी सुख लिखा हो.
7. भगवान किसी की इच्छा पूरी नहीं करते, भाग्य में लिखा वही मिलता है —
8. अभी पूर्व जन्म का फिल्म चल रहा है, इस जन्म का कर्म अगले जन्म में दिखेगा, इस जन्म में कुछ बदल नहीं सकता.
9. जब प्राणी गरीबी-रोग की आग में तपता है तभी अहंकार तूटता है, वरना "मैं कर रहा हूँ" का नशा नहीं उतरता.
10. जीवन में सुख समय चक्र से मिलता है, इच्छा से नहीं — वरना भीख मांगनी पड़ती.
11. जब अहंकार तूटता है तभी समर्पण होता है, तभी कल्याण होता है.

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

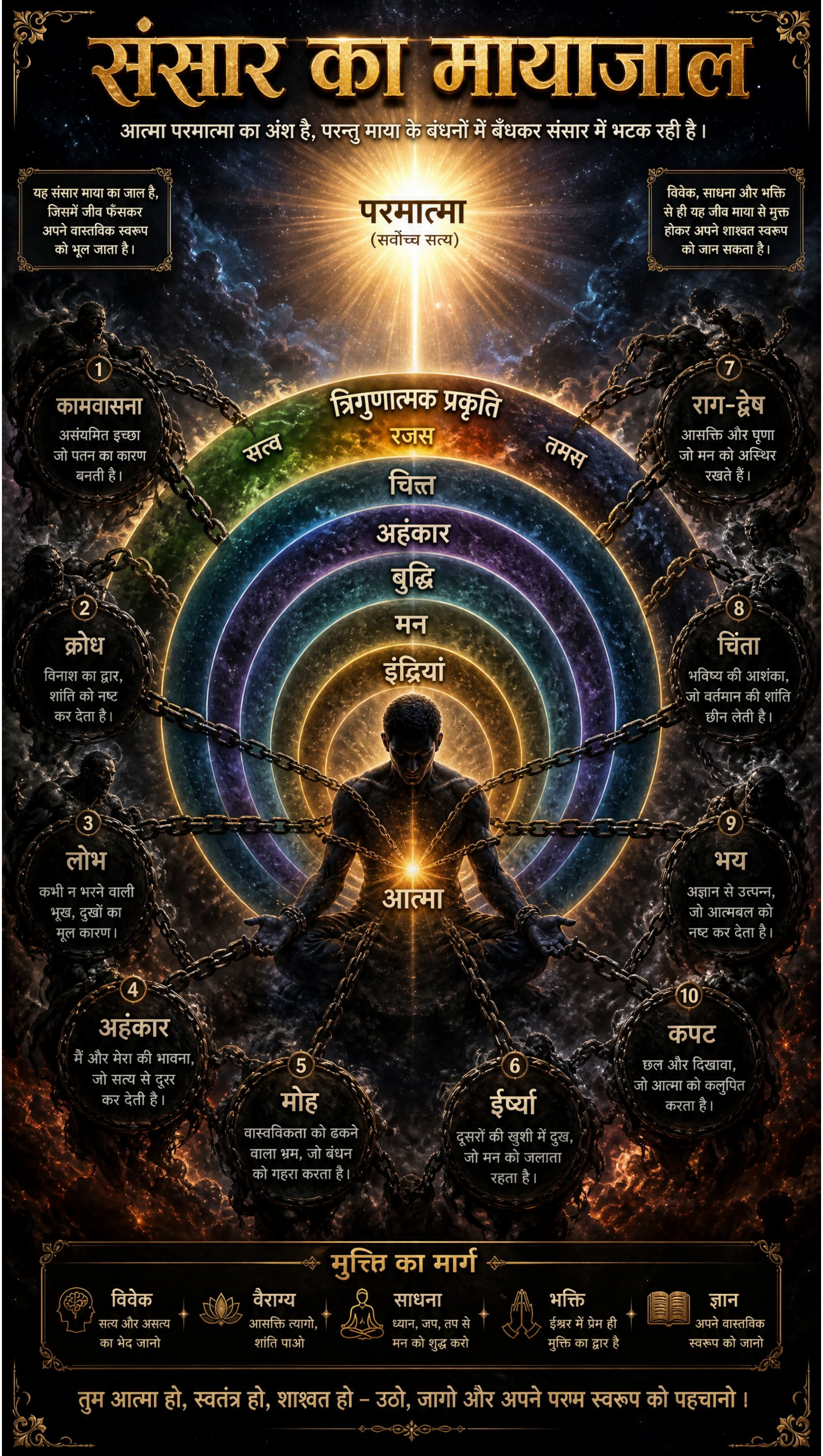
संसार का मायाजाल
आत्मा परमात्मा का अंश है, परन्तु माया के बंधनों में बँधकर संसार में भटक रही है।
यह संसार माया का जाल है, जिसमें जीव फँसकर अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाता है।
विवेक, साधना और भक्ति से ही यह जीव माया से मुक्त होकर अपने शाश्वत स्वरूप को जान सकता है।
परमात्मा
(सर्वोच्च सत्य)
त्रिगुणात्मक प्रकृति
सत्व
रजस
तमस
चित्त
अहंकार
बुद्धि
मन
इंद्रियां
आत्मा
1
कामवासना
असंयमित इच्छा जो पतन का कारण बनती है।
2
क्रोध
विनाश का द्वार, शांति को नष्ट कर देता है।
3
लोभ
कभी न भरने वाली भूख, दुखों का मूल कारण।
4
अहंकार
मैं और मेरा की भावना, जो सत्य से दूरर कर देती है।
5
मोह
वास्वविकता को ढकने वाला भ्रम, जो बंधन को गहरा करता है।
6
ईर्ष्या
दूसरों की खुशी में दुख, जो मन को जलाता रहता है।
7
राग-द्वेष
आसक्ति और घृणा जो मन को अस्थिर रखते हैं।
8
चिंता
भविष्य की आशंका, जो वर्तमान की शांति छीन लेती है।
9
भय
अज्ञान से उत्पन्न, जो आत्मबल को नष्ट कर देता है।
10
कपट
छल और दिखावा, जो आत्मा को कलुपित करता है।
मुक्त्ति का मार्ग
विवेक
सत्य और असत्य का भेद जानो
वैराग्य
आसक्ति त्यागो, शांति पाओ
साधना
ध्यान, जप, तप से मन को शुद्ध करो
भक्ति
ईश्रर में प्रेम ही मुक्ति का द्वार है
ज्ञान
अपने वास्तविक स्वरूप को जानो
तुम आत्मा हो, स्वतंत्र हो, शाश्वत हो – उठो, जागो और अपने परम स्वरूप को पहचानो!

जहां मैं है वहां भगवान नहीं !

सूक्ष्म अहंकार ही भगवान की प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा है !

मैं ऐसा सोचता हूँ...

- मैं भक्त हूँ
- मैं भगवान का प्रेमी हूँ
- मैं रोज पूजा करता हूँ
- मैं प्रतिदिन सेवा करता हूँ
- मैं हर समय नाम लेता हूँ
- मैं इतना माला जाप करता हूँ
- मैं सारे वेद मंत्र को याद कर चुका हूँ
- मुझे चारों वेद, उपनिषद, ब्रह्म सूत्र याद है
- मुझे मंत्र आता है, स्तुति, मुखागह याद है
- मैं भगवान से बहुत प्रेम करता हूँ
- मैं कथावाचक हूँ, व्यास पीठ पर भागवत करता हूँ
- मुझे आत्मज्ञान हो गया है, ब्रह्म तत्वों को जान लिया है
- मैं अध्यात्म तत्व प्रवचन करता हूँ
- मैं साधु हूँ, मैं संत हूँ
- मैंने सब चीजों का त्याग कर दिया है
- मैं संन्यास धारण कर चुका हूँ
- मैंने दुनिया को त्याग दिया है

यह सब करते हुए भी
अगर अहंकार है, तो
भगवान नहीं मिलेंगे!

पर सच्चाई यह है...

- अगर अहंकार को त्याग दिया, फिर दूसरा अहंकार जन्म लेगा
- फिर लगेगा मैंने उसे भी त्याग दिया, तीसरा अहंकार जन्म लेगा
- फिर लगेगा इसे भी त्याग दिया, और अहंकार जन्म लेगा
- अंत में फिर अहंकार अपनी चपेट में करेगा
- जब तक इस अंतिम सूक्ष्म अहंकार का नाश नहीं करेंगे
- जब तक इस अंतिम सूक्ष्म अहंकार को काटकर फेंकेंगे नहीं
- याद रखना तब तक भगवान नहीं मिलेंगे!
- जीव और ब्रह्म के मिलन के बीच में सूक्ष्म से भी सूक्ष्म अहंकार **दरार है!**

अगर तुम्हारा सूक्ष्म अहंकार
मेरे पास आ गया
तो मुक्ति! →

याद रखना!
सूक्ष्म अहंकार न हो, या मुझे समर्पित हो!

→ अगर तुम्हारा सूक्ष्म अहंकार
तुम्हारे पास है
तो जन्म मृत्यु का बंधन!

जो अपने को कुछ नहीं मानता...

- ✓ जो अपने को भक्त नहीं मानता
- ✓ ज्ञानी नहीं मानता, प्रेमी नहीं मानता
- ✓ रोज सेवा करके भी नहीं मानता कि मैं सेवक हूँ
- ✓ अखंड नाम जप करके भी नहीं मानता कि मैंने इतना नाम लिया
- ✓ जिसकी भक्ति और समर्पण में 1% भी कमी नहीं
- ✓ जो अपने सारे सूक्ष्म अहंकार के मैं-मैं को जला देता है
- ✓ जिसे पता भी नहीं कि वह भगवान के प्रेम में रो रहा है
- ✓ जब "मैं' की सत्ता पूरी तरह समाप्त हो जाती है

वही भगवान को प्राप्त करते है!

मीरा बाई
प्रहलाद
ध्रुव
गोपियां

इनकी जैसी अवस्था होगी तब भगवान मिलेंगे!

जो अपने को कुछ मानता है...

- ✗ भक्त होने का अहंकार
- ✗ ज्ञानी होने का अहंकार
- ✗ प्रेमी होने का अहंकार
- ✗ साधु, संत, योगी होने का अहंकार
- ✗ आंसू बहाने का भी अहंकार
- ✗ सेवा करने का भी अहंकार
- ✗ त्याग करने का भी अहंकार
- ✗ संन्यास लेने का भी अहंकार

वह फिर से जन्म लेता है!

भगवान कहते हैं –

या तो अपने अहंकार को पूरा जड़ से काट कर फेंका,
या फिर अपने सूक्ष्म अहंकार को मुझे समर्पण करो,
तभी तुम मुझ तक पहुँच पाओगे!

जीव का बंधन है
सूक्ष्म अहंकार!
मुक्ति का द्वार है
अहंकार का संपूर्ण विसर्जन!

याद रखना – जहां मैं है, वहां भगवान नहीं! भगवान की प्राप्ति वहीं है जहां मैं नहीं!

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

अगर मृत्यु से पहले अहंकार नहीं मिटा,
तो क्या भगवान मिलेंगे??
नहीं !
इसका सबसे बड़ा प्रमाण
ब्रज की गोपियों के अंदर में लवलेश मात्र भी अहंकार आया कि
> हमें श्री कृष्ण से सबसे ज्यादा प्रेम है!
> हम भगवान श्री कृष्ण से प्रेम करने वाले सबसे आगे हैं!
> हमारे अलावा कोई नहीं होगा!!!
> ब्रह्मांड के मालिक हमको कितना चाहते हैं!
यह सब गोपियों के अंदर अहंकार पनप गया!!!
भगवान ने तुरंत टेस्ट किया, अंतर ध्यान हो गए!
उनके पास एक सेकंड भी भगवान नहीं रुके!
बहां से भगवान फिर गोपियों को पलट कर नहीं देखा!!!
गोपी गीत गाकर जो की संस्कृत में है,
गोपीयों ने श्री कृष्ण को पुकारा, तड़प तड़प कर रो-रो कर!
तब भगवान उनके सामने प्रकट हुए!
फिर क्या हुआ??
सारी गोपियों का हृदय
वही समय फट गया!!!!!!
आँखों से इतना
मूसलाधार बारिश हुआ
जैसे सावन में झड़ी होती है!
कहां चले गए मेरे श्री कृष्णा..
कहां चले गए तुम...?
कहां चले गए हमसे नाराज होकर...?
उनकी आँखों से आंसू बंद नहीं हुआ!
एक सेकंड भी बंद नहीं!
मूसलाधार बारिश
होने लगी आँखों से!
तड़प तड़प कर रोने लगीं
जैसे उनके प्राण निकल रहे हों!
श्रीमद भागवत महापुराण
गोपी गीत गाकर,
जो की संस्कृत में है,
भागवत में जो वर्णन है!
गोपी गीत का वही
गाकर गोपियों ने
श्री कृष्ण को पुकारा,
तड़प तड़प कर
रो-रो कर!
जब गोपियों के बिरहा अग्नि को भगवान ने देखा, अपनी पश्चात में देखा,
कि हमसे क्या भूल हो गई? श्री कृष्ण हमसे रूठ गए!
जब इसी बिरहा अग्नि में उनके अहंकार पूरे जलकर राख हो गए,
भगवान ने जांच किया और रिपोर्ट में पता चला –
अब उनके अहंकार पूरे जल गए प्रेम की अग्नि में!
तब उन गोपियों को श्री कृष्ण मिले और
हमेशा के लिए गोलोक धाम में उनको वास मिला!
तो याद रखमा भक्तों!
1
1% भी अहंकार यदि आपका बचा हुआ है तो आपका फिर से जन्म होगा!
99% संभावना है आपके फिर से जन्म होने का!
2
जब अहंकार का पूर्ण नाश हो जाएगा, तब भगवान मिलेंगे!
3
जब आपके अंदर "मैं भक्त हूँ" की चेतना, "मैं ज्ञानी हूँ" की चेतना, "मैं प्रेमी हूँ" की चेतना जब तक समाप्त नहीं होगी, तब तक भगवान नहीं मिलेंगे!
4
भगवान की प्राप्ति का एक फार्मूला है – सूक्ष्म अहंकार का नाश!
5
"मैं भक्त हूँ" "मैं ज्ञानी हूँ" "मैं प्रेमी हूँ" इन सब का पूर्ण नाश होना ही भगवत प्राप्ति है! याद रखें!
सूक्ष्म अहंकार के रूप
मैं भक्त हूँ यह अहंकार
मैं ज्ञानी हूँ यह अहंकार
मुझे भगवान से बहुत प्रेम है यह अहंकार
मैं इतना नाम जप करता हूँ यह अहंकार
मुझे सारे वेद, शास्त्र, मंत्र आते हैं यह अहंकार
मैं कथावाचक हूँ, संत हूँ, साधु हूँ यह अहंकार
मैं संन्यासी हूँ, त्यागी हूँ यह अहंकार
इन सब सूक्ष्म अहंकारों को पहचानो और जड़ से मिटाओ!
जहां मैं है, वहां भगवान नहीं! भगवान की प्राप्ति वहीं है, जहां मैं नहीं!
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

तीन प्रमुख देवताओं के विभाग और उनके कार्य

डिपार्टमेंट 1 – ब्रह्मा जी

कार्य	कर्म और प्रारब्ध का लेखा-जोखा, भाग्य विधाता, नियति संचालक!
प्रकृति	रजोगुण का संचालक!
अवस्था	प्रारंभ, सृष्टि की रचना, Start, सुबह, जन्म की अवस्था! सृष्टि की प्रारंभ अवस्था, प्रकृति का आरंभ गुण
परिणाम	जन्म मृत्यु का चक्र
प्रधान	कर्म!
मटेरियल	क्रिया करना
निज स्थान	ब्रह्मलोक
अर्धांगिनी	सावित्री
पुत्री	मां सरस्वती

सावित्री

मां सरस्वती

डिपार्टमेंट 2 – भगवान विष्णु

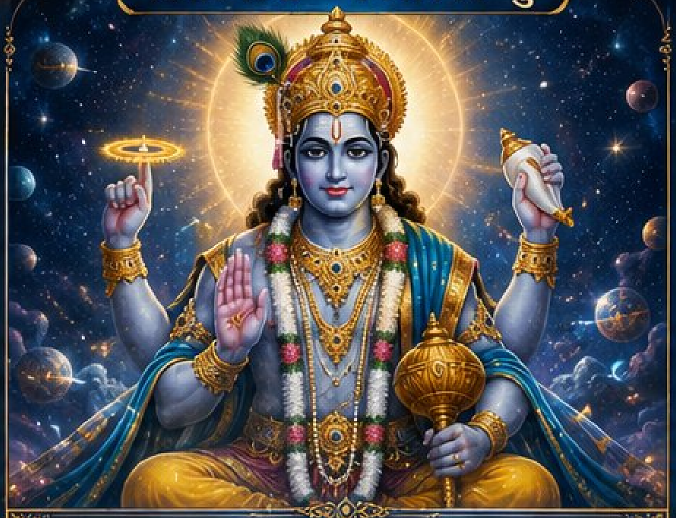

कार्य	संपूर्ण सृष्टि का पालनहार, संपूर्ण सृष्टि जगत को व्यवस्थित रूप से चलाना
प्रकृति	सतोगुण का संचालक!
अवस्था	मध्य अवस्था, क्रियाशील, गतिशील, Working, सुबह से रात तक का कार्य, अर्थात पूरा दिन का समय! मध्य गति! जन्म से मृत्यु के बीच की अवस्था! संपूर्ण सृष्टि की मध्य अवस्था!
प्रधान	भक्ति, प्रेम!
अधिठाता	जीवात्मा माया का पदा डालना
मटेरियल	इंद्रियां मन बुद्धि अहंकार
परिणाम	भगवत प्राप्ति!
निज स्थान	बैकुंठ!
अर्धांगिनी	महालक्ष्मी (ऐश्वर्य आकर्षण)

महालक्ष्मी (ऐश्वर्य आकर्षण)

डिपार्टमेंट 3 – शिव जी

कार्य	सृष्टि का संहार करना, विनाश करना, प्राणी की मृत्यु करना, मृत्यु का ईश्वर समय चक्र का ईश्वर, काल नियंता, शरीर का निर्माण करना और शरीर को मिटाना, शरीर के अंदर पांच प्रकार के प्राण डालना और पूरे प्राण को सेटअप करके उसको चलाना सांस धड़कन शरीर के सारे अंगों को व्यवस्यित रूप से चलाना!
प्रकृति	तमोगुण का संचालक!
अवस्था	प्रकृति की अंतिम अवस्था, Finished., रात्रि सोने की अवस्था, मृत्यु की अवस्था! संपुर्ण सृष्टि का अंत करना और प्रागियों का अंत करना! शरीर में प्राण डालना और शरीर से प्राण को वापस से जाना! जन्म मृत्यु का ईश्वर!
अधिढाता	कालचक्र, प्राण और शरीर का ईश्वर!
मटेरियल	शरीर, पंचमहाभुत
प्रधान	ज्ञान, तपस्वी, सन्यास!
परिणाम	मोक्ष!
निज स्थान	मृत्यु लोक
अर्धांगिनी	माता पार्वती! (शक्ति स्वरूपा)
महाकाल	कालरात्रि
शिव	शक्ति

माता पार्वती (शक्ति स्वरूपा)

कालरात्रि

तीन प्रमुख देवताओं के विभाग और उनके कार्य

डिपार्टमेंट 1 – ब्रह्मा जी

कार्य	कर्म और प्रारब्ध का लेखा-जोखा, भाग्य विधाता, नियति संचालक!
प्रकृति	रजोगुण का संचालक!
अवस्था	प्रारंभ, सुष्टि की रचना, Start, सुबह, जन्म की अवस्था! सुष्टि की प्रारंभ अवस्था, प्रकृति का आरंभ गुण
परिणाम	जन्म मृत्यु का चक्र
प्रधान	कर्म!
मटेरियल	क्रिया करना
निज स्थान	ब्रह्मलोक
अर्धांगिनी	सावित्री
पुत्री	मां सरस्वती

डिपार्टमेंट 2 – भगवान विष्णु

कार्य	संपुर्ण सुष्टि का पालनहार, संपुर्ण सुष्टि जगत को व्यवस्थित रूप से चलाना
प्रकृति	सतोगुण का संचालक!
अवस्था	मध्य अवस्था, क्रियाशील, गतिशील, Working, सुबह से रात तक का कार्य, अर्थात पूरा दिन का समय! मध्य गति! जन्म से मुत्यु के बीच की अवस्थ! संपुर्ण सुष्टि की मध्य अवस्था
प्रधान	भक्ति, प्रेम!
अधिष्ठाता	जीवात्मा माया का पर्दा डालना
मटेरियल	इंद्रियां मन बुद्धि अहंकार
परिणाम	भगवत प्राप्ति!
निज स्थान	बैकुंठ!
अर्धांगिनी	महालक्ष्मी (ऐश्वर्य आकर्षण)

डिपार्टमेंट 3 – शिव जी

कार्य	सृष्टि का संहार करना, विनाश करना, प्राणी की मृत्यु करना, मुत्यु का ईश्वर समय चक्र का ईश्वर, काल नियंता, शरीर का निर्माण करना और शरीर को मिटाना, शरीर के अंदद पांच प्रकार के प्राण डालना और पुरे प्राण को सेटअप करके उसको चलाना सांस धड़कन शरीर के सांरे अंगों को व्यवस्थित रूप से चलाना!
प्रकृति	तमोगुण का संचालक!
अवस्था	प्रकृति की अंतिम अवस्था, Finished., रात्रि सोने की अवस्था, मुत्यु की अवस्था! संपुर्ण सुष्टि का अंत करना और प्राणियों का अंत करना! शरीर में प्राण डालना और शरीर से प्राण को वापस से जानन! जन्म मुत्यु का ईश्वर!
अधिष्ठाता	कालचक्र, प्राण और शरीर का ईश्वर!
मटेरियल	शरीर, पंचमहाभूत
प्रधान	ज्ञान, तपस्वी, संन्यास!
परिणाम	मोक्ष!
निज स्थान	मृत्यु लोक
अर्धांगिनी	माता पार्वती! (शक्ति स्वरूपा)
महाकाल	कालरात्रि
शिव	शक्ति

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

नित्य धाम (सत्-चित्-आनन्द)
सत्-चित्-आनन्द
भगवान श्री कृष्ण (पूर्ण ब्रह्म परमात्मा) और श्री राधा रानी
चित स्वरूप
श्री राज जी
श्री श्यामा जी
आनन्द स्वरूप
सत् स्वरूप
अक्षर ब्रह्म
(पूर्ण ब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण का सत स्वरूप)
चार प्रकार के ब्रह्म (अक्षर ब्रह्म से उत्पन)
1. सत ब्रह्म (मन)
संकल्प करने की शक्ति
2. केवल ब्रह्म (बुद्धि)
निर्णय करने की शक्ति
3. सबलिक ब्रह्म (चित)
स्मरण करने की शक्ति
4. अव्यकृत ब्रह्म (अहंकार)
मैंपन की भावना
ज्योति स्वरूप
(अव्यक्त ब्रह्म से उत्पन्न)
कारण महाविष्णु (महाविष्णु)
योगनिद्रा में शयन करते हैं।
इनके रोम रोम में अनन्त ब्रह्माण्ड स्थित हैं।
सदाशिव (कालब्रह्म)
देवी दुर्गा (प्रकृति)
ब्रह्मा जी
विष्णु जी
शिव जी
देवता
(सुर, देव, दिव्य शक्तियाँ)
ब्रह्मा जी से तीनों की उत्पत्ति
मनुष्य
(मानव जाति)
राक्षस
(असुर, दैत्य, दानव)
सृष्टि की पूर्ण उत्पत्ति प्रक्रिया
1. परम गोलोक धाम
यहाँ भगवान श्री कृष्ण और श्री राधा रानी का दिव्य नित्य धाम हैं।
2. श्री राज जी और श्री श्यामा जी
भगवान श्री कृष्ण से प्रकट दिव्य युगल स्वरूप।
3. अक्षर ब्रह्म
सुप्रीम परमात्मा, सर्वधाक, अविनांशी, सर्वव्यापक चेतन सत्ता।
4. चार प्रकार के ब्रह्म
(मन, बुद्धि, चित, अहंकार)
अक्षर ब्रह्म से उत्पन्न चार मूल तत्व, जो संम्पूर्ण सुष्टि के संचांलन के आधार हैं।
5. ज्योति स्वरूप
सर्वव्यापक दिव्य ज्योति, जिससे महांविष्णु की उत्पत्तिं होती हैं।
6. कारण महाविष्णु
इनके रोम रोम में अनन्त ब्रह्माण्ड विद्यमान हैं।
7. सदाशिव और देवी दुर्गा
सुष्टि के संहार और शक्ति के मूल स्रोत।
8. ब्रह्मा – विष्णु – शिव
सुष्टि, पालन और संहार के त्रिदेव।
9. ब्रह्मा जी से
देवता, मनुष्य और राक्षस तीनों की उत्पत्तिं।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

नित्य धाम (सत्-चित्-आनन्द)
सत्-चित्-आनन्द
भगवान श्री कृष्ण (पूर्ण ब्रह्म परमात्मा) और श्री राधा रानी
चित् स्वरूप
आनन्द स्वरूप
श्री राज जी
श्री श्यामा जी
सत् स्वरूप
अक्षर ब्रह्म
(पूर्ण ब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण का सत् स्वरूप)
चार प्रकार के ब्रह्म (अक्षर ब्रह्म से उत्पन्न)
1. सत ब्रह्म (मन)
संकल्प करने की शक्ति
2. केवल ब्रह्म (बुद्धि)
निर्णय करने की शक्ति
3. सबलिंक ब्रह्म (चित)
स्मरण करने की शक्ति
4. अव्याकृत ब्रह्म (अहंकार)
मैंपन की भावना
ज्योति स्वरूप
(अव्याकृत ब्रह्म से उत्पन्न)
कारण महाविष्णु (महाविष्णु)
योगनिद्रा में शयन करते हैं। इनके रोम रोम में अनंत ब्रह्माण्ड स्थित हैं।
सदाशिव (कालब्रह्म)
देवी दुर्गा (प्रकृति)
ब्रह्मा जी
विष्णु जी
शिव जी
ब्रह्मा जी से तीनों की उत्पत्ति
देवता (सुर, देव, दिव्य शक्तियाँ)
मनुष्य (मानव जाति)
राक्षस (असुर, दैत्य, दानव)
सृष्टि की पूर्ण उत्पत्ति प्रक्रिया
1. परम गोलोक धाम
यहाँ भगवान श्री कृष्ण और श्री राधा रानी का दिव्य नित्य धाम है।
2. श्री राज जी और श्री श्यामा जी
भगवान श्री कृष्ण से प्रकट दिव्य युगल स्वरूप।
3. अक्षर ब्रह्म
सुप्रीम परमात्मा, सर्वव्याक, अविनाशी, सर्वव्यापक चेतन सत्ता।
4. चार प्रकार के ब्रह्म
(मन, बुद्धि, चित, अहंकार)
अक्षर ब्रह्म से उत्पन्न चार मूल तत्व, जो सम्पूर्ण सृष्टि के संचालन के आधार हैं।
5. ज्योति स्वरूप
सर्वव्यापक दिव्य ज्योति, जिससे महाविष्णु की उत्पत्ति होती है।
6. कारण महाविष्णु
इनके रोम रोम में अनंत ब्रह्माण्ड विद्यमान हैं।
7. सदाशिव और देवी दुर्गा
सृष्टि के संहार और शक्ति के मूल स्रोत।
8. ब्रह्मा – विष्णु – शिव
सृष्टि, पालन और संहार के त्रिदेव।
9. ब्रह्मा जी से
देवता, मनुष्य और राक्षस तीनों की उत्पत्ति।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

नित्य धाम (सत्-चित्-आनन्द)
परम गोलोक धाम
सत्-चित्-आनन्द
भगवान श्री कृष्ण (पूर्ण ब्रह्म परमात्मा) और श्री राधा रानी
चित् स्वरूप
श्री राज जी
श्री श्यामा जी
आनन्द स्वरूप
सत् स्वरूप
अक्षर ब्रह्म
(पूर्ण ब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण का सत् स्वरूप)
चार प्रकार के ब्रह्म (अक्षर ब्रह्म से उत्पन्न)
1. सत ब्रह्म (मन)
संकल्प करने की शक्ति
2. केवल ब्रह्म (बुद्धि)
निर्णय करने की शक्ति
3. सबर्लिक ब्रह्म (चित)
स्मरण करने की शक्ति
4. अव्याकृत ब्रह्म (अहंकार)
मैंपन की भावना
ज्योति स्वरूप
(अव्याकृत ब्रह्म से उत्पन्न)
कारण महाविष्णु
(महाविष्णु)
योगनिद्रा में शयन करते हैं। इनके रोम रोम में अनंत ब्रह्माण्ड स्थित हैं।
सदाशिव (कालब्रह्म)
देवी दुर्गा (प्रकृति)
ब्रह्मा जी
विष्णु जी
शिव जी
देवता
(सुर, देव, दिव्य शक्तियाँ)
ब्रह्मा जी से तीनों की उत्पत्ति
मनुष्य
(मानव जाति)
राक्षस
(असुर, दैत्य, दानव)
सृष्टि की पूर्ण उत्पत्ति प्रक्रिया
1. परम गोलोक धाम
यहाँ भगवान श्री कृष्ण और श्री राधा रानी का दिव्य नित्य धाम हैं।
2. श्री राज जी और श्री श्यामा जी
भगवान श्री कृष्ण से प्रकट दिव्य युगल स्वरूप।
3. अक्षर ब्रह्म
सुप्रीम परमात्मा, सर्वव्याआक, अविनाशी, सर्वव्यापक चेतन सत्ता।
4. चार प्रकार के ब्रह्म
(मन, बुद्धि, चित, अहंकार)
अक्षर ब्रह्म से उत्पन्न चार मूल तत्व, जो सम्पूर्ण सृष्टि के संचालन के आधार हैं।
5. ज्योति स्वरूप
सर्वव्यापक दिव्य ज्योति, जिससे महाविष्णु की उत्पत्ति होती हैं।
6. कारण महाविष्णु
इनके रोम रोम में अनंत ब्रह्माण्ड विद्यमान हैं।
7. सदाशिव और देवी दुर्गा
सृष्टि के संहार और शक्ति के मूल स्रोत।
8. ब्रह्मा – विष्णु – शिव
सृष्टि, पालन और संहार के त्रिदेव।
9. ब्रह्मा जी से
देवता, मनुष्य और राक्षस तीनों की उत्पत्ति।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

कोई नहीं बचेगा!
चाहे सन्यासी हो या तपस्वी
कर्म फल
Yamdoot
कर्म की गति
कर्मों की चक्की
में सब पिसते हैं
कर्मों की चक्की
पाप कर्मों का फल
भोगना ही पड़ता है
Yamdoot
पूर्व जमों के
पाप कर्मों का जाल
पाप कर्म
जब कर्मों का
झापड़ कर्मों का जाल
कर्म की चक्की
सद्रोधस
रौश्री
मघार
सनयुवांस
ब्रराममाव्गुननस
जडवाद् चोवाद

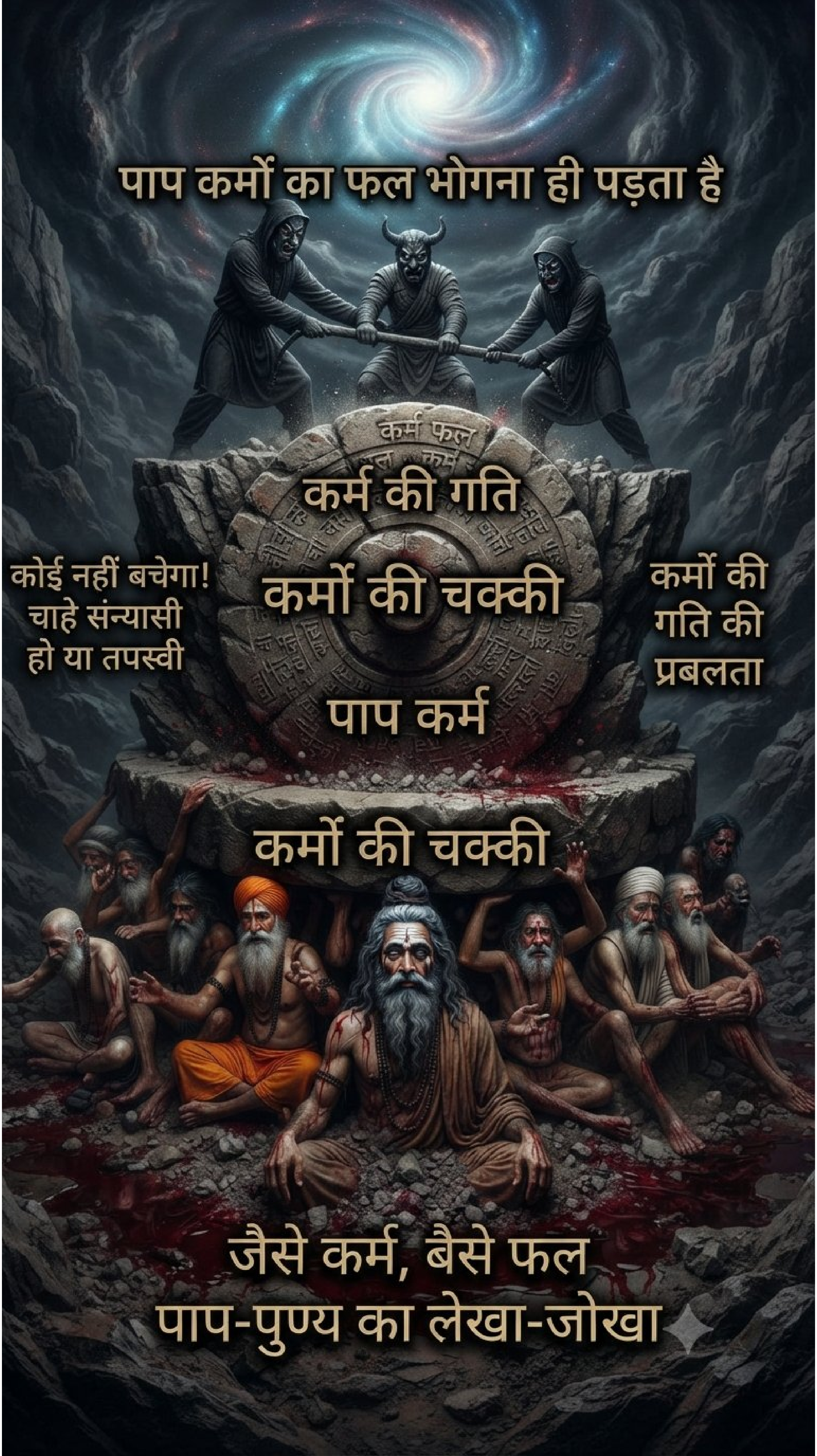
पाप कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है
कर्म फल
कर्म की गति
कोई नहीं बचेगा!
चाहे संन्यासी
हो या तपस्वी
कर्मों की चक्की
कर्मों की
गति की
प्रबलता
पाप कर्म
कर्मों की चक्की
जैसे कर्म, बैसे फल
पाप-पुण्य का लेखा-जोखा

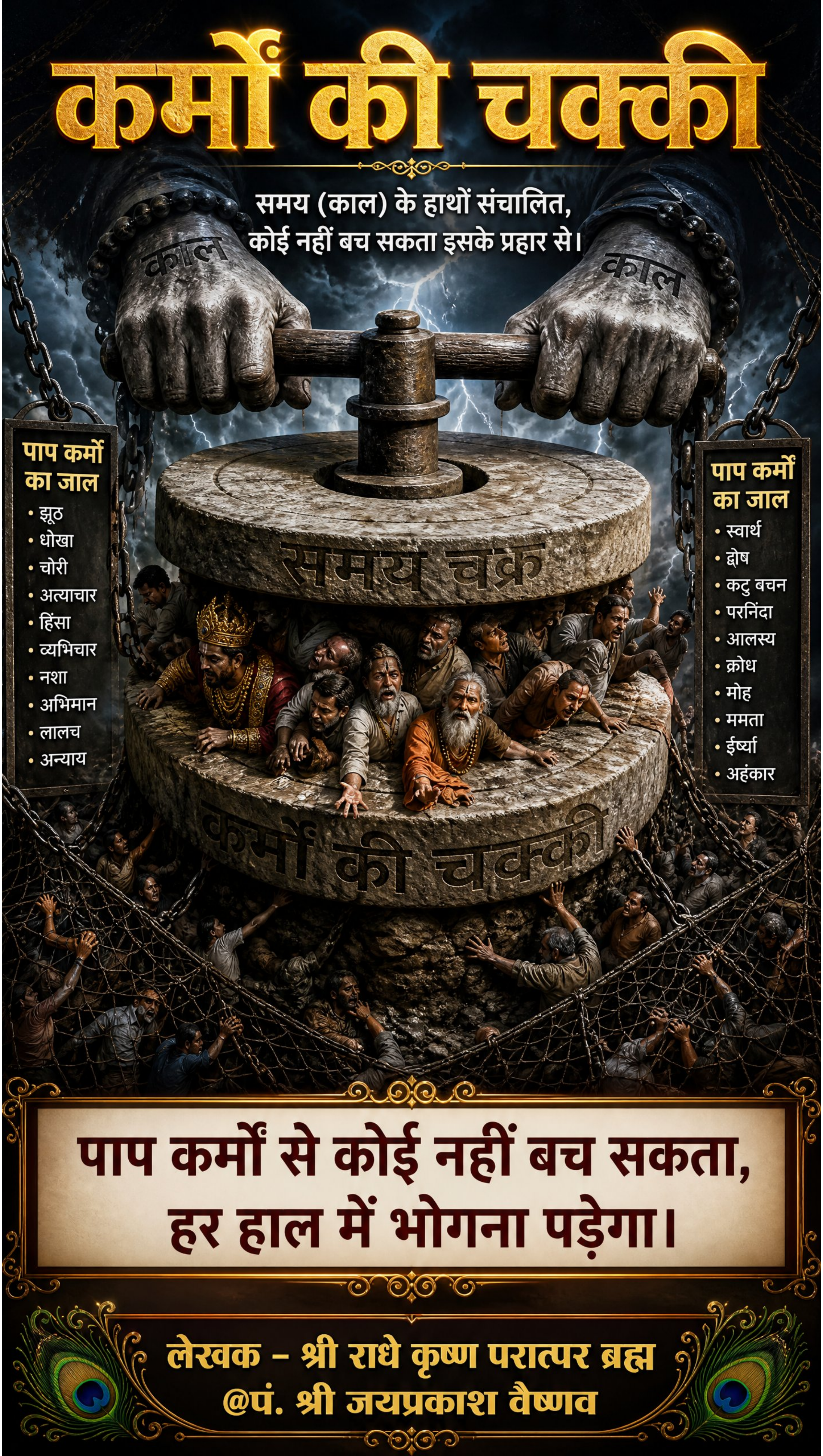
कर्मों की चक्की
समय (काल) के हाथों संचालित,
कोई नहीं बच सकता इसके प्रहार से।
काल
काल
पाप कर्मों का जाल
• झूठ
• धोखा
• चोरी
• अत्याचार
• हिंसा
• व्यभिचार
• नशा
• अभिमान
• लालच
• अन्याय
पाप कर्मों का जाल
• स्वार्थ
• द्वेष
• कटु बचन
• परनिंदा
• आलस्य
• क्रोध
• मोह
• ममता
• ईर्ष्या
• अहंकार
समय चक्र
कर्मों की चक्की
पाप कर्मों से कोई नहीं बच सकता,
हर हाल में भोगना पड़ेगा।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

कर्मों से भागना असंभव है

पाप करके कहाँ भागोगे?

कर्मों का फल तो भोगना ही पड़ेगा।

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म

@पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

ईश्वर की
करोड़ों नजरें
तुम पर हैं
सावधान!
तुम जहाँ भी हो, जो भी कर रहे हो,
परमात्मा की नजर तुम पर है।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

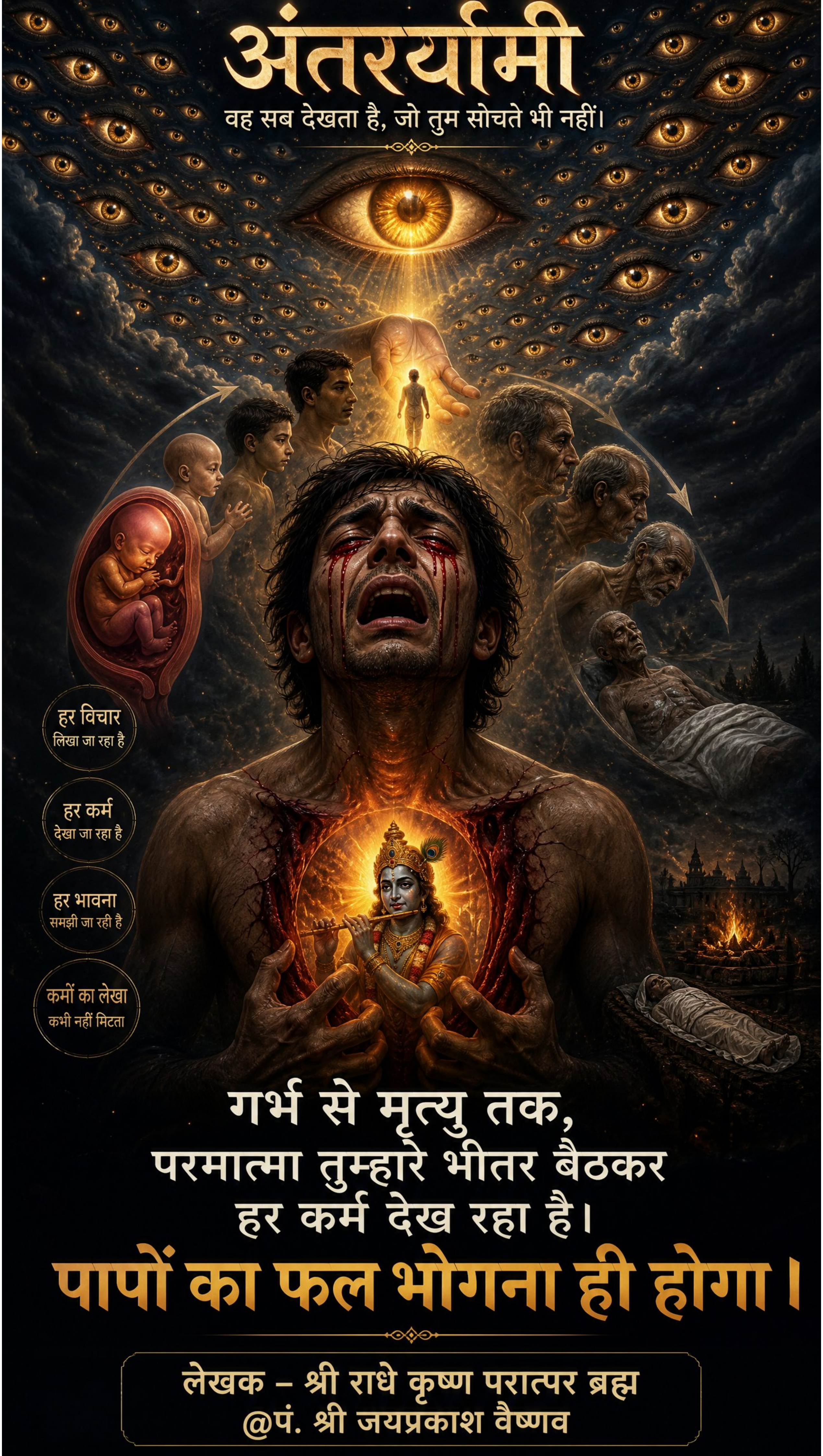
अंतरर्यामी
वह सब देखता है, जो तुम सोचते भी नहीं।
हर विचार
लिखा जा रहा है
हर कर्म
देखा जा रहा है
हर भावना
समझी जा रही है
कर्मों का लेखा
कभी नहीं मिटता
गर्भ से मृत्यु तक,
परमात्मा तुम्हारे भीतर बैठकर
हर कर्म देख रहा है।
पापों का फल भोगना ही होगा।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

तू मान चाहे मत मान
मैं तुझे करोड़ नजर से
देख रहा हूँ
2 घंटे 4 घंटे नहीं
पूरे 24 घंटे दिन रात
तेरी मुझ पर टकटकी नजर है
होश में रहो या ना रहो
तेरे किए हुए एक सेकंड के कर्म भी
तेरा हिसाब छूटेगा नहीं
पाप कर्म
कर्मों की चक्की में साधु संत ऋषि मुनि
पूरे-बड़े ब्रह्म ज्ञानी तपस्वी महान
भक्त प्रेमी सबको इस चक्की में
पीसना होता है! कोई बचेगा नहीं
अहंकार
लोभ
लोभ
साधु संत ऋषि मुनि
तपस्वी
कर्मों की चक्की
कर्मों का जाल
ऐसा घसीट कर हमको
सामने लाएगा फल भोगने के लिए
के पूर्व जन्म में किए गए पाप
कर्मों का जाल हमको ऐसे फंदे
में लाकर डालेगा
पाप कर्म से बचने का
कोई विकल्प नहीं है
कोई रास्ता नहीं है
पाप कर्म क्षमा नहीं होता
पाप कर्मों को
भोगना होता है
जब तक पाप कर्मों का क्लियर
नहीं हो जाता तब तक जीव
को मुक्ति नहीं मिलती
पुनर्जन्म का चक्र
मैं ही तुझे शरीर में लाया हूँ
और मैं ही तुझे शरीर से ले जाऊंगा
और मैं ही तुझे अगले शरीर में
ले जाऊंगा और वहां भी तुझे
अपने किए हुए एक-एक
कर्म का फल दूंगा
याद रखो हर हाल में भोगना पड़ेगा, अभी समझ क्यों नहीं आ रहा है? इसलिये क्योंकि
अभी हमें कभी कर्मों का झापड़ नहीं पड़ा है, जब कर्मों का झोड़ा पड़ता है 1 सेकंड में होश ठिकाना जाता है
इसलिये कर्म करने से पहले लाख बार सोच लीजिये और पाप कर्मों से बच कर रहिये
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

प्राणी से जन्म से लेकर मृत्यु तक और अभी तक तेरे भूतकाल के अनंत जन्म तक तेरे जितने भी विचार चले हैं अंदर-अंदर लुका छुपी.... सब मेरी फाइल में तेरा पूरा स्टेटमेंट है हिस्ट्री है अनंत जन्मों के विचारों का!
केवल 5 सेकंड में तेरी आंखों की रेटिना तेरी आंखों की पुतली कहां कहां घूम रही है कौन-कौन से दृश्य पर जा रही है इसमें मेरी करोड़ नजर है की तेरी दृष्टि कहां-कहां जा रही है
तेरी ही दृष्टि बनकर मैं तेरे अंदर बैठा हुआ हूं तेरी आंखों में बैठा हुआ हूं पर देख तू रहा है नोट मैं कर रहा हूं और तू जो देख रहा है उसको मैं भी देख रहा हूं असली में केवल मैं ही देख रहा हूं बस तेरे पर अहंकार का आवरण है माया का इसी कारण तुझे लग रहा है कि मैं देख रहा हूं परंतू तेरी दृष्टि जहां-जहां जा रही है उसको मैं देख रहा हूं
तू जो कानों से शब्द सुन रहा है उसको मैं सुन रहा हूं केवल तुझे लग रहा है कि मैं सुन रहा हूं तेरी इंद्रियां मन बुद्धि अहंकार सब मेरी कब्जे में है मेरे ही शासन में इंद्रिय मन बुद्धि अहंकार नाचने लगते हैं
कर्मों का लेखा
अनंत जन्मों का हिसाब
मैं अपनी शक्ति रोक दिया तो तुरंत अंतःकरण का अटैक हो जाता है! तुरंत जमीन पर गिर जाएगा मैं चेतन वापस ले लूंगा जिसको कहते हो तुम मृत्यु!
एक भी प्राणी का दुनिया में एक भी सेकंड का किया हुआ अंदर में लुकाछिपी चल रहे विचार गुप्त शाखा मेरे से छिपा नहीं हैं नोट कर लो कोई चाहे मुझे माने या ना माने उसे अपने कर्मों का फल भोगना पड़ेगा
मैं धरती में आकर किसी को बताऊंगा नहीं कि मैं देख रहा हूं यही मेरी माया है जब मृत्यु के बाद जाएगी जीव तो उसको केवल और केवल पछताना पड़ेगा हाथ मलना पड़ेगा....
जितने मर कर जाते हैं संसार से भगवान कहते हैं प्राणी को क्या तुझे पता है कि वह कितना पश्चाताप करता है रोता हैं चिल्लाता है कि मैं भजन नहीं किया अगर किया होता तो आज मेरी यह दशा नहीं होती!
तुझे कुछ मालूम है धरती के वासी मरने वाले प्राणी के साथ आगे क्या होता है नहीं मालूम जब तू मर कर जाएगा तब तू देखेगा तेरे साथ क्या होगा दुनिया में कोई तुझे इसके बारे में बताने वाला नहीं
क्योंकि सारा संसार मेरी माया के चपेट में है! अगर संसार में जाकर सत्य को नहीं जाना आगे तुझे केवल रोना पड़ेगा इसलिए संभल जा!!!!
और मेरी माया के खेल को समझ जा कैसी है मेरी माया यहां रहने वाले प्राणी को मालूम नहीं होता की मृत्यु के बाद क्या होता है और मृत्यु के बाद जो चला जाता है आगे अपनी यातना भोगने वहां पृथ्वी वासियों को बता नहीं सकता! वह बताना चाहती है लेकिन बता नहीं सकती..... और यहां के संसार के प्राणी कोई मान नहीं सकती कि आगे उनके साथ क्या हो रहा है यही है मेरी माया! जो समझ गया तो मुक्त हो गया जो नहीं समझ पाया उसे मैं 84 में कैद कर देता हूं मैं किसी को बताने के लिए आऊंगा नहीं की दुनिया मेरी माया है बुद्धि दे दी इस बुद्धि से समझो खुद से की दुनिया क्या है?? एक माया का मकड़ी जाल और कुछ नहीं जिसमें तुम फंसे हुए हो! यहां से निकल नहीं सकते ऐसा तुमको जकड़ कर रखा गया है!
एक उपाय है केवल सिर्फ एक उपाय
मेरा हाथ पकड़ ले सारी दुनिया माया है यहां कोई तेरा अपना नहीं झूठे जंजाल में फंसा हुआ है अगर पकड़ लिया मेरा हाथ तो मुक्त हो जाएगा अन्यथा अनंत काल तक 84 में घूमेगा!
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भगवान की माया का सम्पूर्ण वर्णन

माया अनादि है, भगवान की अद्भुत शक्ति है, जो जीव को बांधती भी है और उसी से मुक्ति भी मिलती है।

माया क्या है ?

माया भगवान की वह दिव्य शक्ति है, जो न कभी उत्पन्न हुई और न ही नष्ट होती है। यह असत्य को सत्य जैसा और सत्य को छिपा कर प्रस्तुत करती है। यह त्रिगुणात्मक है और जीव को जन्म-मरण के चक्र में घुमाती है।

जीव की अवस्था

न जानता है कि वह कौन है, क्यों आया है, और क्यों दुखी है।

माया का काम

- सत्य को छिपाना
- असत्य को सत्य जैसा दिखाना
- सुख को स्थायी दिखाना
- दु:ख के कारण को छिपाना
- जीव को देह, मन, बुद्धि, अहंकार से जोड़ देना
- जन्म, मरण, मोह, आसक्ति में फँसाना

माया की दो शक्तियाँ

माया की दो शक्तियॉ

माया की दो मुख्य शक्तियों होती हैं –
(1) आवरण शक्ति (2) विक्षेप शक्ति

त्रिगुणात्मक माया

माया तीन गुणों से बनी है –
सत्व, रज और तम
ये तीनों गुण मिलकर जीव को नचाते हैं।

1 आवरण शक्ति (छिपाने वाली शक्ति)

यह शक्ति सत्य को छिपा देती है, ज्ञान पर पर्दा डाल देती है। जीव को अपने असली स्वरूप (आत्मा) का ज्ञान नहीं होने देती।

क्या करती है ?

- आत्मा, परमात्मा, धर्म, कर्मफल का ज्ञान छिपा देती है।
- जीव को देह ही आत्मा लगने लगता है।
- उसे अपने शाश्वत स्वरूप का बोध नहीं होने देती।

उदाहरण

जैसे घने बादल
सुर्य को ढक लेते हैं,
सुर्य वहीं रहता है
पर दिखाई नहीं देता।

इसी प्रकार आवरण शक्ति
आत्मज्ञान को ढक देती है।

1 सत्व गुण (प्रकाशक, ज्ञान देने वाला)

क्या करता है ?

- ज्ञान, शांति, सुख, संतोप देता है
- धर्म, भक्ति, दया, पवित्रता में लगाता है
- लेकिन "मैं ज्ञानी हुँ", "मैं भक्त हुँ" का अहंकार भी देता है

कैसे नचाता है ?

- सुख और ज्ञान के अहंकार में फँसाता है।
- स्वर्ग, पुण्य, अच्छे कर्मों में उलझाए रखता है।
- जीव को लगता है कि वही मुक्त है लेकिन बंधा रहता है।

उदाहरण

सात्विक व्यक्ति दान, पुजा, जप करता है वांछित फल की इच्छा या अहंकार रहता है।

2 रज गुण (क्रियात्मक, इच्छाओं को बढ़ाने वाला)

क्या करता है ?

- इच्छा, कामना, लोभ, महत्वाकांक्षा बढ़ाता है
- कर्म करने की प्रवृत्ति देता है
- असंतोप, स्पर्धा, चिन्ता देता है

कैसे नचाता है ?

- हर समय कुछ पाने की चाह में दौड़ाता है।
- कर्मों के जाल में फँसाता है
- सुख-दु:ख के चक्र में घुमाता है

उदाहरण

राजसी व्यक्ति धन, पद, नाम, इज्जत के पीछे भागता है, कभी संतुष्ट नहीं होता।

3 तम गुण (अज्ञान और मोह देने वाला)

क्या करता है ?

- अज्ञान, आलस्य, प्रमाद, मोह, निद्रा देता है।
- अधर्म, हिंसा, नशा, पाप में लगाता है।
- विवेक को नष्ट कर देता है।

कैसे नचाता है ?

- भूल, अज्ञान, आलस्य में डुबो देता है।
- गलत रास्तों पर चलाता है
- नीच योनियों में गिरा देता है

उदाहरण

तामकिक व्यक्ति सोता रहता है, नशा करता है, हिंसा करता है।

2 विक्षेप शक्ति (भ्रम पैदा करने वाली शक्ति)

यह शक्ति असत्य को सत्य जैसा दिखाती है, झूठे विचारों, केल्पनाआ और संसार के विषयों में उलझा देती है।

क्या करती है ?

- मन में तरह-तरह के विचार उठाती है
- सुख, सातन, देह, संबंध आदि को सत्य जैसा प्रतीत कराती है
- जीव को इधर-उधर भटकाती है

उदाहरण

जैसे रस्सी को अंधेरे में
सर्प (सांप) समझना।
रस्सी वास्तविक है,
सर्प का भ्रम
विक्षेप शक्ति है।

- ★ सत्व से बंधन – सुख और ज्ञान के अहंकार से
- ★ रज से बंधन – कर्म और इच्छाओं के जाल से
- ★ तम से बंधन – अज्ञान और आलस्य से

तीनों गुण मिलकर जीव को 84 लाख योनियों में घुमाते रहते हैं। जब तक इनसे ऊपर नहीं उठेगा, तब तक जन्म-मरण का चक्र चलता रहेगा।

माया के प्रभाव से जीव की स्थिति

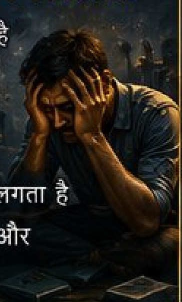

- 'मैं देह हूँ' – ऐसा मानता है
- 'मेरा-तेरा' में फँसता है
- काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य से घिरता है
- सुख के लिए दु:ख कमाने लगता है
- अंत में जन्म-मृत्यु, दु:ख और पछतावा ही मिलता है।

माया से मुक्ति का उपाय

- सत्संग, भजन, नामजप, आत्मचिंतन
- गुरु की शरण और भगवान की भक्ति
- निष्काम कर्म और विवेक
- माया को माया जानना और स्वयं को आत्मा जानना

केवल भगवान की कृपा और भक्ति से माया के बंधनों से मुक्ति मिलती है।

सारांश

माया ना तो पूर्णतः सत्य है ना असत्य है।
यह भगवान की अनिर्वचनीय शक्ति है।
यह आवरण और विक्षेप शक्ति से जीव को त्रिगुणों के माध्यम से नचाती है।
जो इसे समझ लेता है, वह इससे ऊपर उठ जाता है और परमात्मा को पा लेता है।

•|| हरिः ॐ ||•

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

क्यों कुछ लोग भगवान को नहीं मानते
और कैसे भगवान सबको अपनी शरण में लाते हैं?

अहंकारी नास्तिक

- ✖ शान से कहता है – मैं भगवान को नहीं मानता
- ✖ ज्ञान की बात सुनकर कहता है – मैं इन सब चीजों को नहीं मानता!
- ✖ जीवन में सुख, समृद्धि, ऐशो-आराम
- ✖ कभी समय का झापड़ नहीं पड़ा
- ✖ कभी दुखों की भट्ठी में नहीं डाला गया
- ✖ इसलिए भगवान को नहीं मानता

जब अहंकार टूटती है...

- कैंसर जैसी भयंकर बीमारी
- धन-सम्पत्ति का नाश
- अपनों का साथ छूटना
- मान-प्रतिष्ठा का पतन
- जीवन में दुखों का तूफान

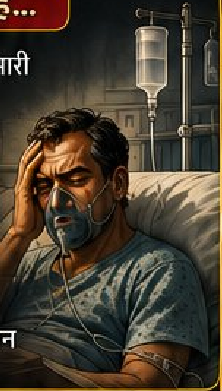

तब कहेगा – हे भगवान ! बचा लो !

कुछ दिन पहले क्य कह रहा था? कोई भगवान नहीं!
तो दुख आने पर भगवान की याद क्यों आई?
मतलब तुम नाटक कर रहे थे – नास्तिक होने का!
यह नाटक है अहंकार का नाटक!

जैसे ही अहंकार टूटता,
नास्तिकता का नाटक खत्म हो जाएगी!

मुख्य कारण

उसे कभी नियति और समय का झापड़ नहीं पड़ा है!

जब तक समय का झापड़ ना पड़े,
तब तक होश ठिकाना नहीं आ सकता!

भगवान के पास 'स्विच' है!

भगवान एक सेकंड़ में सारी हेकड़ी तोड़ देते हैं!
उनके पास बड़े-बड़े मशीन है
अहंकार तोड़ने का!

सत्य क्या है?

- ऐसा कोई प्राणी नहीं जिसने भगवान का झापड़ खाया और उनकी शरण में गया नहीं!
- भगवान जिनका कल्याण चाहते हैं, उन्हीं को अपनी शरण में लाते हैं!
- ✔ आप अपने से शरण में नहीं जाते, भगवान आपको खींचकर लाते हैं!

भगवान कहते हैं –

"अगर कोई नास्तिक है,
तो मेरी मर्जी से नास्तिक है,
और अगर कोई आस्तिक है,
तो मेरी मर्जी से आस्तिक है!
यह आस्तिक और नास्तिक दोनों
मेरी इशारे पर नाचते है!"

सच्चा भक्त

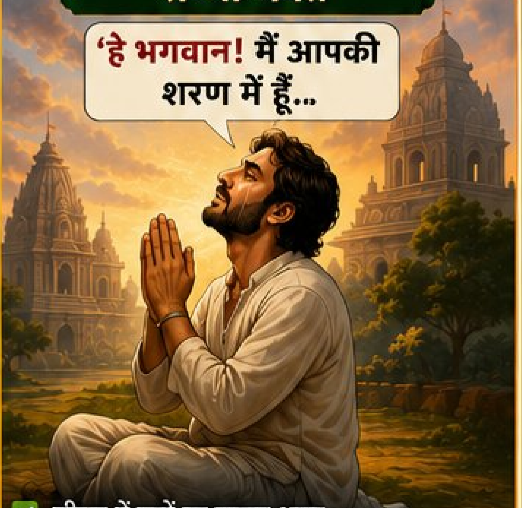

- ✔ जीवन में दुखों का तूफान आया
- ✔ कष्ट, अपमान, हानि, बीमारी सब सहा
- ✔ अहंकार टूटा, हिम्मत टूटी, सब कुछ टूटा
- ✔ तब जाकर भगवान की याद आई
- ✔ रोते हुए भगवान की शरण में गया
- ✔ और भगवान ने उसे अपनाया

भगवान की शरण में क्या मिलता है?

- शांति
- सच्चा सुख
- निर्भयता
- जीवन का उद्देश्य
- भगवान का प्रेम
- मुक्ति का मार्ग

वह जान गया –
दुख और कष्ट ही भगवान का पता है,
दुख और कष्ट ही भगवान का एड्रेस है!

नास्तिकता और आस्तिकता का मूल कारण

नास्तिकता कहां से आती है?

सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य इसकी जड़ है!

जब तक भगवान प्राणी के सुखों का नाश नहीं करेंगे,
तब तक उसकी नास्तिकता समाप्त नहीं हो सकती!

नास्तिकता कब खत्म होती है?

जब प्राणी के जीवन को पूरा तबाह किया जाता है,
तब उसकी हिम्मत नहीं होगी कि
"भगवान नहीं हैं" कहने की!

तब उनकी आंखें खुलेगी और भगवान की शरण में जाएग!

बुद्धि में भगवान का ज्ञान कौन लाता है?

– यहीं कष्ट और दुख!

याद रखें!

- समय का झापड़ अनंत जन्म की बेहोशी को दूर करता हैं!
- जब तक जीवन में दुखों का तूफान ना आए, तब तक सोई हुई बुद्धि नहीं जाग सकती!
- दुख और कष्ट के सिवा दूसरा कोई अस्त्र नहीं अनंत जन्म की बेहोशी को दूर करने का!
- भगवान की शरणागति अपने बल पर नहीं हो सकती, यह भगवान की कृपा से ही होती है!
- भगवान बड़े से बड़े नास्तिक को भी अपनी शरण में खींचकर ले आते हैं!

निष्कर्ष : भगवान जिनका कल्याण चाहते हैं, उन्हीं ही अपनी शरण में लाते हैं!

सुख में न भूले, दुख में न घबराओ – हर स्थिति में भगवान को याद करो, वही तुम्हारा अपना है!

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ ब्रह्मवेत्ता अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भगवान अपने भक्तों को
दुःख क्यों देते हैं?
कठोर दिखने वाली करुणा, अंत में देती है परम सुख की प्राप्ति!
अहंकारी नास्तिक का मार्ग
अहंकार में डूबा हुआ मनुष्य सोचता है –
"मुझे कोई नहीं रोक सकता, मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता!"
संसार के भोग-विलास में लिप्त रहता है।
धर्म, भगवान और शास्त्रों का मज़ाक उड़ाता है।
पाप कर्म करता है और दुसरों को नीचा दिखाता है।
कभी किसी की परवाह नहीं करता, सिर्फ अपनी मनमानी करता है।
दुनिया की नजरों में सफल दिखता है, पर अंदर से खाली, अशांत और भयभीत रहता है।
ऐसा जीवन उसे आगे ले जाता है 84 लाख योनियों के चक्र में!
भक्त का मार्ग
भक्त ईमान्दारी से भगवान की शरण में आता है। वह प्रेम से कहता है –
"हे प्रभु! मैं आपका हूँ, आप जो भी करें मेरे कल्याण के लिए करें!"
भक्त को जब भी दुःख, कष्ट या परीक्षा मिलती हैं,
तो वह भगवान की योजना पर विश्वास रखता हैं।
दुःख आने पर भी वह भगवान को नहीं छोड़ता।
वह और अधिक समर्पित होकर भक्ति करता हैं।
भगवान उसके हृदय को शुद्ध करते हैं, उसका अहंकार, पाप और आसक्ति जलाते हैं!
भगवान भक्तों को दुःखों के जाल में क्यों डालते हैं?
1. उनके अहंकार को तोड़ने के लिए
ताकि वह पूर्णतः विनम्र और समर्पित बन सके।
2. पाप कर्मों का फल भोग कराने के लिए
ताकि उसके पुराने पाप नष्ट हों और मन शुद्ध हो सके।
3. उसकी भक्ति को और गहरा करने के लिए
ताकि उसका विश्वास अटूट और प्रेम निष्कलुष हो जाए।
4. उसे संसार की असारता समझाने के लिए
ताकि वह जगत के मोह को छोड़कर केवल भगवान को अपना ले।
5. अंत में उसके कल्याण और परमधाम की प्राप्ति के लिए
ताकि वह भगवान के धाम में शाश्वत आनंद प्राप्त करे।
दुःख के बाद क्या होता है?
भक्त का हृदय शुद्ध, निर्मल और भगवान-प्रेम से भर जाता है।
वह हर परिस्थिति में धन्यवाद करना सीखता है।
उसकी आसक्ति छुट जाती है और वह वैराग्यवान बनता है।
भगवान उसकी रक्षा स्वयं करते हैं और उसे सही मार्ग दिखाते हैं।
अंत में वह इस संसार से मुक्त होकर परमधाम में भगवान के साथ नित्य सेवा में लग जाता है।
अहंकारी का अंत
पापों के कारण उसे अनेक जन्मों तक दुःख, रोग, भय, अभाव और अपमान सहना पड़ता है।
अंतहीन भटकन... अनंत दुःख... कोई शांति नहीं!
भगवान का हर दुःख, हर परीक्षा भक्त के कल्याण के लिए होती हैं, दंड देने के लिए नहीं!
वह दुःखी नहीं... कृपा का ही रूप है!
भक्त का अंत
भगवान की कृपा से उसे मिलता है – शांति, प्रेम, सुरक्षा और परमधाम में नित्य वास!
अंत नहीं... अनंत सुख, शांति और प्रेम की प्राप्ति!
"दुःख और सुख दोनों भगवन की ही देन हैं। जो इसे समझ लेता है, वही सच्चा ज्ञानी और सच्चा भक्त है!
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ ब्रह्मवेत्ता अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

मन, आँखें और चित्त का रहस्य
समझो स्वयं को, जीत लो संसार को
सर्वोच्च स्वामी
1 चित्त (Chitta)
असली स्वामी, निर्देशक और नियंत्रक – जो मन को चलाता है।
• चित्त गहरा है, सूक्ष्म है, अचित्य है।
• इसमें संस्कार, स्मृतियों और इच्छाओं के बीज छिपे रहते हैं।
• यही सभी विचारों, भावों और कर्मों का मूल है।
चित्त
खिलाड़ी
2 मन (Mind)
चित्त के आदेशों पर चलने वाला खिलाड़ी – जो सोचता है, चाहता है, भटकता है और निर्णय करता है।
• मन चंचल, अस्थिर और परिवर्तनशील है।
• इसे जो चाहिए, उसे पाने के लिए यह अपने उपकरणों का उपयोग करता है।
• मन को जीतना ही साधना है।
मन
सबसे प्यारा मित्र
3 आँखें (Eyes)
मन की सबसे प्यारी सखी और सच्ची मित्र – जो हर समय साथ देती है।
• आँखें मन को दृश्य संसार से जोड़ती हैं।
• मन जो देखना चाहता है, आँखें उसे दिखाती हैं।
• जैसे कर्ण ने दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ा, वैसे ही आँखें मन का साथ नहीं छोड़तीं।
आँखें
मानव मस्तिष्क की आन्तरिक संरचना
इन्द्रियाँ
(बाहरी संसार से संपर्क)
मन
(सोचता है, चाहता है, निर्णय करता है)
चित्त
(गहरा, सूक्ष्म, नियंत्रक)
मन एक उन्मादी घोड़ा है
इच्छाएँ लगाम हैं, चित्त सवारी है,
और विवेक लगाम पकड़ने वाला सारथी है।
भोग की इच्छा
यश की इच्छा
धन की इच्छा
मान की इच्छा
इन्द्रिय सुख की इच्छा
और अन्य इच्छाएँ...
मन
चित्त
विवेक
(सारथी)
रिश्ता समझो
खुजली और नाखून
जैसे खुजली हो तो नाखून अपने आप चल पड़ता है,
वैसे ही मन में इच्छा उठती है तो
आँखें और वाणी अपने आप लग जाती हैं।
महाभारत का रहस्य
दुर्योधन = मन
• जिद्दी, चंचल, इच्छाओं से भरा हुआ
• हमेशा अपने स्वार्थ के लिए कुछ न कुछ चाहता है।
कर्ण = आँखें
• वफादार, निष्ठावान, हर समय साथ देने वाला
• दुर्योधन (मन) जो भी चाहता है, कर्ण (आँखें) उसे दिलवाने में कभी पीछे नहीं हटता।
जब तक दुर्योधन (मन) का राज्य है, तब तक कर्ण (आँखें) उसकी ही सेवा करेगा।
मन अपनी इच्छाओं की पूर्ति इन उपकरणों से करता है
आँखें
रूप, रंग, दृश्य, आकर्षण – मन को उत्तेजित करती हैं और इच्छाओं को बढ़ाती हैं।
इन दोनों उपकरणों से मन संसार में अपने सभी कार्य करता है।
वाणी
बोलकर, मांगकर, समझाकर, या बहलाकर – मन अपनी इच्छाओं को पूरा करवाता है।
सार
✓ चित्त स्वामी है
✓ मन खिलाड़ी है
✓ आँखें उसकी सखी (कर्ण) हैं
✓ आँखें और वाणी उसके उपकरण हैं
✓ मन की हर इच्छा के पीछे चित्त के संस्कार हैं
✓ साधना का लक्ष्य – चित्त को शुद्ध करना, मन को वश में करना और इन्द्रियों को संयमित करना।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

ब्रह्म से इंद्रियों तक का क्रम
1 ब्रह्म (परमात्मा)
अनंत परम सत्य।
2 आत्मा
अविनाशी चेतना।
3 त्रिगुणात्मक प्रकृति (सत्व, रज, तम)
सत्व, रज, तम।
4 चित्त
संस्कारों का संग्रह।
5 अहंकार
'मैं' का भाव।
6 बुद्धि
निर्णय लेने की शक्ति।
7 मन
संकल्प-विकल्प का केंद्र।
8 10 इंद्रियाँ
अनुभव और कर्म के साधन।
5 ज्ञानेंद्रियाँ (ज्ञानेंद्रियाँ)
नेत्र (देखने की शक्ति)
कर्ण (सुनने की शक्ति)
घ्राण (सुंघने की शक्ति)
रसना (चखने की शक्ति)
त्वचा (स्पर्श करने की शक्ति)
5 कर्मद्रियाँ (कर्मेन्द्रियाँ)
वाक् (बोलने की शक्ति)
पाणि (पकड़ने की शक्ति)
पाद (चलने की शक्ति)
पायु (त्याग करने की शक्ति)
उपस्थ (संतानोत्पत्ति की शक्ति)
लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम तत्व ज्ञान – शरीर के 9 द्वार और 10 इंद्रियों का रहस्य

शरीर – 9 द्वार, 10 इंद्रियाँ, 7 चक्र, अंत:करण चतुष्टय

१० इंद्रियां – ५ ज्ञानेंद्रिय + ५ कर्मेंद्रिय

५ ज्ञानेंद्रिय – 5 ज्ञानेंद्रिय – पाँच इनपुट / ज्ञान ग्रहण

- आँख → देखना | नेत्र (ज्ञानेंद्रिय) – दृष्टि / देखने का कार्य
- कान → सुनना | कर्ण (ज्ञानेंद्रिय) – श्रवण / सुनने का कार्य
- नाक → सूँघना | घ्राण (ज्ञानेंद्रिय) – गंध सूँघना
- जिभ्या → स्वाद | रसना (ज्ञानेंद्रिय) – स्वाद चखना
- त्वचा → स्पर्श | त्वक् (ज्ञानेंद्रिय) – स्पर्श अनुभव

ये ९ द्वारों वाली नगरी है ये शरीर!

५ कर्मेंद्रिय – 5 कर्मेंद्रिय + पाँच आउटपुट / / कर्म करने के अंग

- हाथ → लेना-देना | पाणि (कर्मेंद्रिय) – ग्रहण, त्याग, कर्म करना
- पैर → चलना | पाद (कर्मेंद्रिय) – गमन / चलने का कार्य
- मुख → बोलना | वाक् (कर्मेंद्रिय) – बोलना, भोजन करना
- लिंग → प्रजनन | उपस्थ (कर्मेंद्रिय) – प्रजनन / विसर्जन
- गुदा → मल त्याग | पायु (कर्मेंद्रिय) – मल-विसर्जन

सप्त चक्र – सूक्ष्म शरीर

- सहस्रार चक्र – सहस्र दल कमल | स्थान: सिर के ऊपर
  रंग: बैंगनी/सफेद | तत्व: आकाश | भाव: आत्म-ज्ञान, मोक्ष
- आज्ञा चक्र – दो दल कमल | स्थान: भ्रूमध्य (भौंहों के बीच)
  रंग: इंद्रनील | तत्व: मन | भाव: अंतर्दृष्टि, बुद्धि
- विशुद्ध चक्र – १६ दल कमल | स्थान: कण्ठ
  रंग: नीला | तत्व: आकाश | भाव: संचार, शुद्धि, वाक्
- अनाहत चक्र – १२ दल कमल | स्थान: हृदय
  रंग: हरा | तत्व: वायु | भाव: प्रेम, करूणा, संतुलन
- मणिपूर चक्र – १० दल कमल | स्थान: नाभि
  रंग: पीला | तत्व: शक्ति/भाव: शक्ति, आत्मबल
- स्वाधिष्ठान चक्र – ६ दल कमल | स्थान: नाभि से नीचे
  नीचे / त्रिक | रंग: नारंगी | तत्व: जल
  भाव: रस, सृजन, भावना
- मूलाधार चक्र – ४ दल कमल | स्थान: मूलाधार /
  रीढ़ का आधार | रंग: लाल |
  तत्व: पृथ्वी | भाव: सुरक्षा, मूल, स्थिरता

अंत:करण चतुष्टय – शरीर के भीतर शासन व्यवस्था

मन है राजा मन | संकल्प-विकल्प करने वाला इच्छाएँ, भाव, विचार	**बुद्धि है मंत्री – बुद्धि** निर्णल, विवेक, ज्ञान सही–गलत का निर्णय	**अहंकार है सेनापति** अहंकार | मैं-पन, अभिमान कर्ता भाव	**चित्त है खजाना** चित्त | स्मृति-भण्डार संग्रहित अनुभव, संस्कार

**ये 9 द्वारों से ही जीव आता-जाता है!
जिसने इन द्वारों को जीता वही जितेंद्रिय! जो इनमें फंसा वही भोगी!**

नोट – आत्मा इन नौ द्वारों से शरीर में प्रवेश करती है और इन्हीं से बाहर भी जाती है। इंद्रियों पर नियंत्रण = जितेंद्रियता = आत्म-ज्ञान का मार्ग

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम सांख्य दर्शन –
24 तत्वों का संपूर्ण ब्रह्मांड चार्ट
— सांख्य दर्शन – 24 तत्वों का विस्तृत चक्र —
5 ज्ञानेंद्रिय
5 Gyanendriya
आँख (दर्शन)
कान (श्रवण)
नाक (घाण)
जीभ (रस्ना)
त्वचा (स्पर्श)
5 कर्मेंद्रिय
5 Karmendriya
हाथ (हस्त)
पैर (पाद)
वाणी (वाक्)
लिंग (उपस्थ)
गुदा (पायु)
5 तन्मात्रा
5 Tanmatras
रूप (रूप)
शब्द (शब्द)
गंध (गंध)
रस (रस)
स्पर्श (स्पर्श)
5 महाभूत
5 Mahabhutas
पृथ्वी
जल
अग्नि
वायु
आकाश
4 अन्तःकरण 4 Antahkarana = 4
मन
Thought/Mind
बुद्धि
Intellect – Decision
चित्त
Storehouse of memories
अहंकार
Ego – I-ness
5 प्राण
5 Pranas
प्राण Prana (हृदय / Heart) Vital breath, inhalation
अपान Apana (गुदा / Rectum) Downward breath, elimination
समान Samana (नाभि / Navel) Balancing breath, digestion
व्यान Vyana (सर्व शरीर / Whole Body)
उदान Udana (कंठ / Throat) Upward breath, speech
5 उप-प्राण
5 Upa-Pranas
नाग Naga (डकार / Belching) – Eructation
कूर्म Kurma (पलक झपकना / Blinking)
कृकल Krikala (छीक / Sneezing) Sneezing
देवदत्त Devadatta (जंभाई / Yawning) Yawning
धनंजय Dhananjaya (मृत्यु के बाद भी शरीर फूलना / Body swelling after death)
20 तत्व + 5 ज्ञानेंद्रिय + 5 कर्मेंद्रिय + 5 तन्मात्रा + 5 महाभूत = 20
+ 4 अन्तःकरण = 24 तत्व!
यही 24 तत्वों से बना है पूरा शरीर ब्रह्मांड! इनको जान लिया तो स्वयं को जान लिया!
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम सत्य – मृत्यु के बाद क्या होता है?
गरुड़ पुराण के अनुसार
मृत्यु सपने जैसी है! सपने में लगता है हकीकत है, जागने पर पता चलता है सपना था! वैसे ही मृत्यु के बाद आत्मा को 3 दिन तक पता ही नहीं चलता कि मैं मर गया! वो अपने ही शव के पास रोती है – उठो, मैं जिंदा हूं! पर कोई सुनता नहीं!
आत्मा शरीर से बाहर
सपना = माया / वास्तविक नहीं
पापी – यमदूत का सामना
कर्म लेखा
चित्रगुप्त के दरबार में हिसाब!
13 दिन तक यात्रा • 1 साल तक प्रेत योनि
पुण्यात्मा – दिव्य यात्रा
दिव्य विमान लेने आता है!
जो राधे-कृष्ण जपता है वो सीधा वैकुंठ!
जो भजन नहीं करता उसका क्या? 28 नरकों में!
तेल में तलना
कीड़ों में डालना
अन्य नरक यातनाएँ
वैकुंठ – मोक्ष / परम धाम
भक्तों डरो नहीं, जपो!
यम से बचना है तो नाम जपो!
पापी / non-devotee
• कर्म का हिसाब
• 28 नरक
• प्रेत योनि
• भय और कष्ट
भक्त / devotee
• नाम जप = रक्षा
• वैकुंठ प्राप्ति
• मोक्ष
• श्रीकृष्ण की शरण
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
गरुड़ पुराण | धर्म | मोक्ष | कर्म

मृत्यु के बाद फीलिंग क्या होती है?
गरुड़ पुराण – भाग 2
भक्तों, मरने के बाद आत्मा को पता ही नहीं चलता मैं मर गया! वो अपने ही शव को हिलाती है – अरे उठो! पर कोई सुनता नहीं!
भूख प्यास लगती है पर खा नहीं सकती! 10 दिन तक अपने घर में भटकती है!
नौ द्वार
/ 9 Doors of Prana Exit
आँख (2)
नाक (2)
नाक (2)
कान (2)
मूख
मूत्र/लिंग द्वार
गुदा
→ मुख से निकले → वैकुंठ (मुक्ति)
प्राण निकलता है तो 40 हजार बिच्छू के डंक जैसा दर्द!
पैरों से शुरु होकर गले तक!
कफ भर जाता है, आंखें फट जाती हैं!
→ गुदा से निकले → नरक (पतन)
पाठ: गरुड़ पुराण, उत्तर खण्ड – मृत्यु के लक्षण एवं प्राण निर्गमन
इसीलिए अंत में नाम जपो – मुख से प्राण निकलेगा!
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

गरुड़ पुराण – धर्म कांड प्रेतकल्प

अध्याय 5-6 – पश्चिाताप का रोना – भाग 3

बिना भजन मृत्यु = अनंत पछतावा

84 लाख योनियों का चक्र

भक्तों, जो बिना भजन मरेगा वो वहां चिल्ला-चिल्ला कर रोएगा! कहेगा कहेगा – मुझे कोई भगवान के बारे में क्यों नहीं बताया! मैं धन के चक्कर में क्यों पड़ा! मैं पागल हो गया था! नाम लेना था! इतना रोएगा जितना जीवन भर कभी नहीं रोया! अभी हम पर माया चढ़ी है इसलिए विश्वास नहीं होता! जब शरीर छूटेगा तब रोना पड़ेगा!
गरुड़ पुराण साक्षात प्रमाण है! बिना भजन के मरा तो युगों युगों तक नर्क और फिर 84 लाख योनियों के थपेड़े! एक बार मनुष्य शरीर बिना भजन नष्ट किया तो अनंत युग पछताना! इसलिए होश में आओ! अभी भज लो! बाद में केवल पछतावा है, दूसरा विकल्प नहीं!

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

JANMA MRITYU KI CHAKKI

परम सत्य – जन्म-मृत्यु की अनंत चक्की कोई मीना बाजार का झूला नहीं !

प्राणी समझता है मरूंगा तो खेल खत्म! अरे खेल किसका खत्म होगा? शरीर का! तुम्हारा खेल खत्म नहीं होगा! तुम्हें तो जन्म-मरण की चक्की में युगों-युगों से पीसना होगा! दिन के बाद रात, रात के बाद दिन – यही आवागमन चक्र है! जन्म के बाद मृत्यु, फिर जन्म फिर मृत्यु – ये कभी रुकेगा नहीं! नोट कर लो! ये मीना बाजार का झूला नहीं कि हाथ पकड़ कर रोक दो! इसे कोई नहीं रोक सकता! जब तक संसार से मन नहीं हटेगा, मुक्ति नहीं! इस चक्की को कौन रोकता है? केवल वैराग्य! वैराग्य ही इस खेल का अंत है! बाकी सब पिसते रहेंगे अनंत काल तक!

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परम सत्य – भगवान श्रीकृष्ण की उंगली पर नाचती है जन्म-मृत्यु की चक्की!

ये चक्की कोई और नहीं चला रहा! स्वयं श्रीकृष्ण अपनी उंगली पर चला रहे हैं!
जैसे सुदर्शन! इसी चक्की में अनंत ब्रह्मांड, अनंत जीव युगों-युगों से पीस रहे हैं!
कोई नहीं बच सकता! जब तक कृष्ण की शरण नहीं लोगे, पिसते रहोगे! ये
ये माया चक्र उन्हीं का है! जो उनकी उंगली पकड़ेगा, वही बचेगा! बाकी सब चक्की में!
इसीलिए कहता हूं – भजो राधे कृष्ण!

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

संसार का सबसे बड़ा पागलपन:
"मेरी जिंदगी, मेरी मर्जी!"
जानिए क्यों गीता के श्लोक 3.27 के अनुसार आप एक कठपुतली हैं!
प्रस्तावना
• आज का सबसे बड़ा भ्रम – यह मेरी लाइफ है, मेरी जिंदगी है, मैं अपनी मर्जी का मालिक हूँ, मैं जो चाहूँ वो करूं!
परंतु सत्य यह है कि तुम पुरी तरह बेखबर हो! जिसे तुम अपनी मर्जी समझ रहे हो, वह साक्षात् माया का रिमोट कंट्रोल है! तुम कठपुतली हो, डोरी किसी और के हाथ में है!
"हे अर्जुन! यह जीव अपनी मर्जी का नहीं, मेरे गुणों का दास है।!
अहंकार
सत्व गुण
ज्ञान, शांति, सुख
रजोगुण
क्रिया, इच्छा, आसक्ति
तमोगुण
अज्ञान, आलस्य, मोह, प्रमाद
1 गीता का वो अचूक श्लोक जो अहंकार की धज्जियां उड़ा देता है
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्मांणि सर्वशः।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥
(श्रीमद्भगवद्गीता 3.27)
अर्थ: वास्तव में सारे कर्म प्रकृति के तीनों गुणों (सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण) द्वारा ही सब प्रकार से किए जाते हैं।
परंतु जिसका अंतःकरण अहंकार से पूरी तरह मोहित (अंधा) हो चुका है, वह अज्ञानी मूर्ख मान लेता है कि– "कर्ता मैं हूँ" (अर्थात यह सब मैं अपनी मर्जी से कर रहा हूँ)।
2 जिसे तुम अपनी 'मर्जी' कहते हो, वह केवल प्रकृति के गुणों की 'जबरदस्ती' है!
क्रोध, गाली, हिंसा – तमोगुण और रजोगुण का प्रभाव
तुम नहीं करते, गुण कराते हैं!
भोग, वासना, गंदे दृश्य – रजोगुण और तमोगुण का प्रभाव
पुण्य, दान, भक्ति, शांति – सतोगुण का प्रभाव
तुम तो केवल बहाव में बहने वाला एक लाचार तिनका हो!
3 अगर तुम्हारी मर्जी चलती, तो जीवन में कभी दुख, बीमारी और बुढ़ापा क्यों आता?
अपनी मर्जी से बूढ़ा मत होने दो!
दुख, बीमारी, एक्सीडेंट, कैंसर, हार्ट अटेक रोक कर दिखाओ!
कोई बीमार नहीं होना चाहता, कोई रोना नहीं चाहता, कोई मरना नहीं चाहता, फिर भी सब मजबूर हैं – क्योंकि मर्जी तुम्हारी नहीं है!
तुम्हारी मर्जी की हैसियत इस ब्रह्मांड में एक चींटी के बराबर भी नहीं!
4 ईश्वरीय कंप्यूटर के द्वारा संचालित है हर एक सांस
यह संपूर्ण सृष्टि और हर प्राणी का जीवन परब्रह्म परमात्मा की इच्छा और उनकी महा-माया के नियंत्रण में है!
• तुम्हारी इच्छा से आँख की पुतली भी नहीं झपकती।
• भगवान ने तुम्हारे कर्मों का आॅटोमेटिक बहीखाता (ईश्वरीय कंप्यूटर) बनाया है।
• जिसके विधान के अनुसार तुम्हारी हर सांस, हर परिस्थिति और हर सोच नियंत्रित हो रही है।
• तुम केवल उस विधान के भीतर बंधी हुई कठपुतली हो।
5 'अहंकार-विमूढात्मा' – संसार का सबसे प्रामाणिक 'मूर्ख'
अहंकार ने जिसकी आत्मा और बुद्धि को चाट लिया है, वह अज्ञान के नशे में अंधा और पागल हो चुका है।
• ऐसा मूर्ख छाती ठोक कर कहता है – "यह मैंने किया, यह मेरी मर्जी है।"
• भगवान उसकी इस अज्ञानता पर हंसते हैं।
• जिस 'मैं' का वह धमंड करता है, उसे एक सेकंड में मिट्टी में मिलाने का रिमोट कंट्रोल प्रकृति के पास है।
6 बंद कमरों की चालाकी और प्रकृति का गुप्त कैमरा
मनुष्य सोचता है – बंद कमरे में जाकर कोई पाप कर लूं, किसे पता चलेगा!
परंतु वह भूल जाता है –
• प्रकृति का त्रिगुणात्मक कैमरा उसके अंतःकरण के भीतर प्रति-सेकंड का लाइव रिकॉर्ड दर्ज कर रहा है।
• तुम परमात्मा से बेखबर हो सकते हो, पर वह सर्वव्यापी ब्रह्म तुम्हारी पल-पल की हरकत को देख रहा है।
• तुम्हारी मर्जी का धमंड वहाँ जाकर सीधे घुटने टेक देता है।
7 इस पागलपन का अंजाम: 84 लाख योनियों की जेल
जो जीव अपनी मर्जी का मालिक बनकर मर्यादाओं को तोड़ता है, शास्त्रों का उल्लंघन करता है, मनमानी वासना और पाप में डुबता है,
उसे मृत्यु के बाद भगवान 84 लाख योनियों के कारागार में पटक देते हैं।
गर्भ के घोर नरक में तड़पते समय जीव की सारी 'मर्जी' और सारा 'डिस्को' हवा में गायब हो जाता है।
8 मर्जी का त्याग और माधव की शरणागति ही एकमात्र उपाय
• जब जीव स्वीकार करता है – 'प्रभु! मेरी कोई मर्जी नहीं, मेरी कोई औकात नहीं, सब कुछ आपकी इच्छा है।'
• जिस दिन जीव अपनी 'मर्जी' का रिमोट उठाकर साक्षात् ठाकुर जी के चरणों में सौंप देता है, उस दिन उसका अहंकार नष्ट हो जाता है।
• जब अहंकार मर जाता है, तो जीव निर्विकार हो जाता है और उसे इसी क्षण, तत्काल ब्रह्म की प्राप्ति हो जाती है!
निष्कर्ष: अपनी 'मर्जी' का ढोंग छोड़ो, गोविंद के दास बनो!
• 'मेरी जिंदगी, मेरी मर्जी' का यह जानलेवा कचरा निकाल फेंको!
• गीता का श्लोक 3.27 कह रहा है – तुम केवल प्रकृति के गुणों के हाथों नाचने वाले एक खिलोने हो।
• मनमानी और इंद्रियों की लापरवाही को पूर्ण विराम दो।
• शेर बनकर मत अकड़ो, चींटी से भी छोटे बनकर प्रभु के शरणागत हो जाओ।
• जब तक अपनी मर्जी जीवित रहेगी, गोलेटर का द्वार बंद रहेगा।
• जिस दिन कहोगे – "प्रभु! जैसी आपकी मर्जी" उसी दिन तुम्हारा कल्याण निश्चित हो जाएगा!
मोक्ष द्वार
त्रिगुणात्मक माया – कैसे नचाती है जीव को?
सत्वगुण
ज्ञान, शांति, सुख, धर्म में लगाता है
परंतु इससे भी "मैं ज्ञानी हूं, मैं अच्छा हूं" का अहंकार पैदा करता है।
बंधन का कारण – सुख और ज्ञान का अभिमान
रजोगुण
इच्छा, कामना, क्रिया, सफलता, प्रतिष्ठा की दौड़ में लगाता है।
लालच, स्पर्धा, ईर्ष्या पैदा करता है।
बंधन का कारण – आसक्ति और फल की चाह
तमोगुण
आलस्य, निद्रा, प्रमाद, मोह, हिंसा, नशा, अज्ञान में गिराता है।
पतन का कारण बनता है।
बंधन का कारण – अज्ञान और जड़ता
माया की दो शक्तियाँ
1 आवरण शक्ति (छिपाने वाली शक्ति)
क्या करती है?
• जीव के वास्तविक स्वरूप (आत्मा) को छिपा देती है।
• परमात्मा को भूलने की आदत डालती है।
• "मैं शरीर हूँ" यह भ्रम पैदा करती है।
उदाहरण:
जैसे बादल सूर्य को ढक देते है, वैसे ही यह शक्ति आत्मज्ञान को ढंक देती है।
2 विक्षेप शक्ति (भ्रम पैदा करने वाली शक्ति)
क्या करती है?
• झूठे विचार, कल्पनाएं, इच्छाएं, भय, मोह, राग, द्वेष आदि पैदा करती है।
• मन को भटकाती रहती है।
उदाहरण:
जैसे अंधेरे में रस्सी को सांप समझना, वैसे ही यह शक्ति गलत धारणा पैदा करती है।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

संसार का सबसे बड़ा पागलपन: “मेरी जिंदगी, मेरी मर्जी !”

जानिए क्यों गीता के श्लोक 3.27 के अनुसार आप एक कठपुतली हैं!

प्रस्तावना – आधुनिक युग का सबसे बड़ा भ्रम:

भक्तों, आज के इस कलयुगी समाज में चारों तरफ एक ही राग अलापा जा रहा है –

“यह मेरी लाइफ है, मेरी जिंदगी हैं, मैं अपनी मर्जी का मालिक हूं, मैं जो चाहूं वो करूं!”

लोग इस भ्रम को अपनी शान समझते हैं।

परंतु आज जयप्रकाश वैष्णव जी के द्वारा उद्घोषित इस कड़वे और परम सत्य का सामना कीजिए– संसार में उस जीव से बड़ा कोई मुर्ख और पागल नहीं है, जो यह भ्रम पाले बैठा है कि उसका जीवन उसकी खुद की मर्जी से चल रहा है!

सत्य क्या हैं? सत्य तो यह है कि तुम पुरी तरह बेखबर हो और जिसे तुम अपनी मर्जी समझ रहे हो, वह साक्षात् माया का रिमोट कंट्रोल है।

आइए, भगवान श्री कृष्ण के अर्जुन को दिए गए उस परम गुप्त सुत्र से इस पागलपन का पर्दाफाश करते हैं।

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः,
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते।।
(श्रीमद्भगवद्गीता 3.27)

अर्थ: वास्तव में सारे कर्म प्रकृति के तीनों गुणों (सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण) द्वारा ही सब प्रकार से किए जाते हैं। परन्तु जिसका अंत:करण अहंकार से पुरी तरह मोहित (अंधा) हो चुका है, वह अज्ञानी मुर्ख मान लेता है कि– 'कर्ता मैं हूँ' (अर्थात यह सब मैं अपनी मर्जी से कर रहा हूँ)।

त्रिगुणात्मक माया क्या है?

यह माया भगवान की शक्ति है, जो तीन गुणों के रूप में सम्पूर्ण जगत और जीव को चलाती है।

सतोगुण	रजोगुण	तमोगुण
प्रकाश, शांति, ज्ञान, पवित्रता, सुख और सद्बुद्धि देता है, परन्तु सुख और ज्ञान के बंधन में बांध कर रखता है।	राग, लोभ, इच्छा, महत्वाकांक्षा, परिश्रम, दौड़-भाग और अशांतता देता है, कर्म के बंधन में जकड़ता है।	अज्ञान, आलस्य, प्रमाद, निद्रा, क्रोध, हिंसा, नशा, मोह और पतन की ओर ले जाकर अंधकार में गिराता है।

ये तीनों गुण हर जीव को अपने-अपने प्रभाव से नचाते रहते हैं, और जीव सोचता है – **"यह मेरी मर्जी हैं!"**

1 जिसे तुम अपनी ‘मर्जी” कहते हो, वह केवल प्रकृति के गुणों की ‘जबरदस्ती’ है!

जब तुम्हें क्रोध आता है, गाली देते हो, मारते हो – वह तुम्हारी मर्जी नहीं, तमो और रजोगुण का भुत तुम्हारी बुद्धि को अगवा कर लेता है। जब भोग-वासनाएं उठती हैं, तो वह तुम्हारी मर्जी नहीं, बल्कि अनंत जन्मों के संस्कार और प्रकृति के गुणों की जबरदस्ती है।

तुम तो केवल उस बहाव में बहने वाले एक लाचार तिनके हो!

2 अगर तुम्हारी मर्जी चलती, तो जीवन में कभी दुख, बीमारी और बुढ़ापा क्यों आता?

यदि सब कुछ तुम्हारी मर्जी से चल रहा है, तो अपनी मर्जी से अपने शरीर को कभी बुढ़ा मत होने दो! अपनी मर्जी से दुख, एक्सीडेंट, कैंसर, हार्ट अटेक को रोक कर दिखाओ! कोई भी इंसान अपनी मर्जी से बीमार नहीं होना चाहता, कोई रोना नहीं चाहता, कोई मरना नहीं चाहता; फिर भी तुम्हें रोना पड़ता है, तड़पना पड़ता है और एक दिन मरना भी पड़ता है।

साफ है भक्तों, तुम्हारी मर्जी की हैसियत इस ब्रह्मांड में एक चींटी के बराबर भी नहीं है!

3 ईश्वरीय कंप्यूटर के द्वारा संचालित है हर एक सांस

यह संपुर्ण सृष्टि और प्रत्येक प्राणी का जीवन साक्षात् परब्रह्म परमात्मा की इच्छा और उनकी महा-माया के नियंत्रण द्वारा संचालित है। तुम्हारी इच्छा से तो तुम्हारी आंख की पुतली भी नहीं झपकती।

भगवान ने तुम्हारे कर्मों का एक ऐसा ऑटोमेटिक बहीखाता (ईश्वरीय कंप्युटर) तैयार कर रखा है, जिसके विधान के अनुसार तुम्हारी हर सांस, हर परिस्थिति और हर सोच नियंत्रित हो रही है।

तुम केवल उस विधान के भीतर बंधी हुई एक कठपुतली हो।

4 ‘अहंकार-विमूढ़ात्मा’-संसार का सबसे प्रामाणिक ‘मूर्ख’

वह जीव जिसकी आत्मा और बुद्धि को अहंकार ने पुरी तरह चाट लिया है, जो अज्ञान के नशे में अंधा और पागल हो चुका है। ऐसा ही मूर्ख व्यक्ति छाती ठोक कर कहता है –

“यह मैंने किया, यह मेरी मर्जी है!”

भगवान उसकी इस अज्ञानता पर हंसते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि जिस 'मैं' का यह घमंड कर रहा है, उसे एक सेकंड में मिट्टी में मिलाने का रिमोट कंट्रोल प्रकृति के पास है।

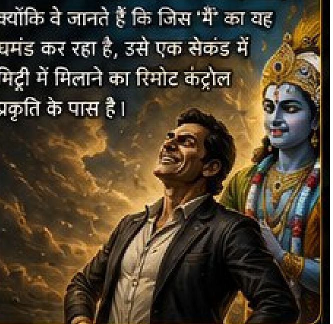

5 बंद कमरों की चालाकी और प्रकृति का गुप्त कैमरा

मनुष्य सोचता है कि में बंद कमरे में जाकर कोई भी पाप कर्म कर लूं, किसी को क्या पता चलेगा! वह भूल जाता है कि प्रकृति का त्रिगुणात्मक कैमरा उसके अंत:करण के भीतर प्रति-सेकंड का लाइव रिकॉर्ड दर्ज कर रहा है।

तुम परमात्मा से बेखबर हो सकते हो, लेकिन वह सर्वव्यापी ब्रह्म तुम्हारी बुद्धि की अंतिम सीमओं से भी परे बैठकर तुम्हारी पल-पल की हरकत को देख रहा है।

तुम्हारी मर्जी का घमंड वहाँ जाकर सीधे घुटने टेक देता है।

6 इस पागलपन का अंजाम: 84 लाख योनियों की जेल

जो जीव इस भ्रम में जीता है कि वह अपनी मर्जी का मालिक है, वह मर्यादाओं को तोड़ता है, शास्त्रों के नियमों का उल्लंघन करता है और मनमानी वासना व पाप के गटर में डुब जाता है। इस पागलपन का परिणाम अत्यंत भयंकर होता है। मृत्यु के समय भगवान ऐसे अहंकारी जीव को सीधे 84 लाख योनियों के कारागार में पटक देते है। वहाँ गर्भ के घोर नरक में ? मैं संतप जीव की यह सारी 'मर्जी' और सारा 'डिसको' हवा में गायब हो जाता है।

7 मर्जी का त्याग और माधव की शरणागति ही एकमात्र उपाय

यह पागलपन समाप्त कैसे होगा?

जब जीव इस सत्य को स्वीकार कर लेता है कि–

"प्रभु! मेरी कोई मर्जी नहीं है, मेरी कोई औकात नहीं है।"

सब कुछ आपकी इच्छा और आपकी प्रकृति के नियमों से चल रहा है।

जिस दिन जीव अपनी 'मर्जी' का रिमोट उठाकर साक्षात् ठाकुर जी के चरणों में सौंप देता है, उसी क्षण उसका अहंकार नष्ट हो जाता है।

जब अहंकार मर जाता है, तो जीव निर्विकार हो जाता है और उसे इसी क्षण, तत्काल ब्रह्म की प्राप्ति हो जाती है।

8 निष्कर्ष: अपनी ‘मर्जी’ का ढोंग छोड़ो, गोविंद के दास बनो!

भक्तों, आज ही अपने दिमाग से “मेरी जिंदगी, मेरी मर्जी” का यह जानलेवा वम निकाल कर बाहर फेंक दीजिए। गीता का श्लोक 3.27 चीख-चीख कर कह रहा है कि तुम केवल प्रकृति के गुणों के हाथों नाचने वाले एक खिलौने हो। इस गुलामी से अगर सचमुच आजाद होना है, तो अपनी मनमानी और इंद्रियों की लापराही को पूर्ण विराम दो।

❌ शेर बनकर इस धरातल पर मत अकड़ो, चींटी से भी छोटे बनकर प्रभु के शरणागत हो जाओ! क्योंकि जब तक तुम्हारी अपनी मर्जी जीवित रहेगी, तब तक गोलोटर का द्वार तुम्हारे लिए बंद रहेगा।

✅ जिस दिन कहोगे – **“प्रभु! जैंसी आपकी मर्जी”** उसी दिन तुम्हारा कल्याण निशित हो जाएगा!

सार बातें

- कर्त्ता तुम नहीं, प्रकृति के गुण है।
- अहंकार ही अज्ञान और बंधन की जड़ है।
- प्रकृति का रिमोट कंट्रोल भगवान के हाथ में है।
- अपनी मर्जी छोड़कर शरणागति ही मुक्ति का मार्ग है।
- यही गीता का गूढ़ रहस्य है।

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

अष्टधा प्रकृति की आठ उंगलियां और परमात्मा का रिमोट!

जानिए कैसे मन-बुद्धि के सहित पूरी सृष्टि एक कठपुतली है; कर्तापन का महा-ऑपरेशन!

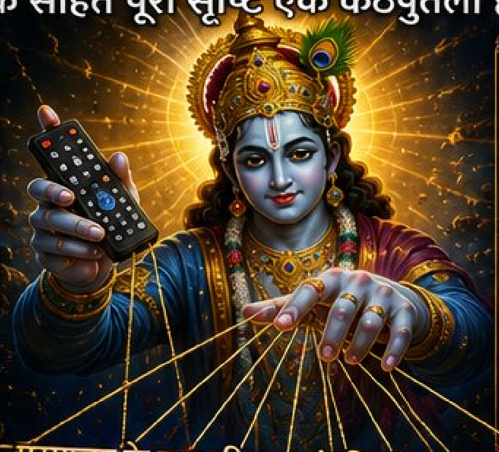

प्रस्तावना - अहंकार के नशे का दूसरा प्रहार:

भक्तों, पिछले प्रसंग में हमने जाना कि 'मेरी जिंदगी, मेरी मर्जी' कहना संसार का सबसे बड़ा पागलपन है। लेकिन जीव की चालाकी देखिए, वह फिर भी कोई न कोई चोर रास्ता निकाल कर अपने 'कर्तापन' (मैं करने वाला हूं) के घमंड को जीवित रखना चाहता है। वह सोचता है कि चलो, बाहर की दुनिया मेरे हाथ में नहीं है, पर मेरा मन और मेरी बुद्धि तो मेरी है! सत्य यह है कि जिसे तुम अपना मन, अपनी बुद्धि और अपना वजूद कहते हो—वह साक्षात् परमात्मा के हाथों की एक लाचार कठपुतली है।

1 गीता का महा-सूत्र: क्या है भगवान की 'अष्टधा प्रकृति'?

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ।।
(श्रीमद्भगवद्गीता 7.4)

अर्थ: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, तथा मन, बुद्धि और अहंकार—यह आठ प्रकार से विभाजित मेरी 'अपरा' (जड़) प्रकृति है।

ध्यान से देखो! इस सूची में केवल बाहर की पांच चीजें (पंचभूत) नहीं हैं, बल्कि आपके भीतर बैठा मन, आपकी बुद्धि और आपका अहंकार भी साक्षात् भगवान की इसी प्रकृति का हिस्सा है!

परमात्मा के हाथ की आठ उंगलियां (अष्टधा प्रकृति)

1 पृथ्वी (भूमि) · 2 जल (आपः) · 3 अग्नि (अनल) · 4 वायु (वायुः) · 5 आकाश (खं) · 6 मन (मनः) · 7 बुद्धि (बुद्धिः) · 8 अहंकार (अहंकारः)

2 परमात्मा की आठ उंगलियां और हमारा मानसिक नाच

यह आठ तत्व साक्षात् परमात्मा के हाथ की आठ उंगलियां हैं। जैसे कठपुतली नचाने वाला धागे खींचकर पुतलों को नचाता है, ठीक वैसे ही इन आठ तत्वों के माध्यम से वह परम शक्ति ब्रह्मांड के प्रत्येक जीव को नचा रही है। इनके बिना एक मिलीमीटर भी इधर से उधर नहीं हिल सकते। जब ये आठों ही ईश्वर के गुलाम हैं, तो इनके भीतर रहने वाला जीव स्वतंत्र कैसे हो सकता है?

3 कर्तापन का भांग–संसार का सबसे पुराना नशा

जीव सोचता है– "मैंने बुद्धि लगाकर यह व्यापार खड़ा किया, मैंने सोच-समझकर यह निर्णय लिया!" अरे अज्ञानी! जिस बुद्धि पर तू घमंड कर रहा है, वह बुद्धि तेरी निजी संपत्ति नहीं है, वह तो भगवान की अष्टधा प्रकृति का एक छोटा सा पुर्जा है!

रिमोट कंट्रोल गोविंद के हाथ में है, तो तेरी बुद्धि वही सोचेगी जो प्रकृति का नियम उससे सोचवाएगा। इस कर्तापन के नशे को लात मारकर बाहर निकलो!

"मैं ही करता हूं"

4 मन और बुद्धि भी 'मायिक' हैं, तुम्हारी आत्मा नहीं!

मन, बुद्धि और अहंकार पूरी तरह से 'प्राकृतिक' यानी मायिक हैं! ये वैसे ही जड़ पदार्थ हैं जैसे बाहर की मिट्टी और पानी हैं। जैसे मिट्टी से घड़ा बनता है, वैसे ही प्रकृति के सत्वगुण से मन और बुद्धि बनते हैं। इसलिए, तुम्हारी बुद्धि में उठने वाला हर विचार साक्षात् माया की तरंग है, तुम्हारी अपनी कोई मर्जी वहां नहीं है।

बुद्धि (विचार) · मन (तरंग) · अहंकार (मैं-भाव)

ये सब जड़ (मायिक) हैं, आत्मा नहीं!

5 प्रकृति के गुप्त धागे: कैसे नचवाते हैं ठाकुर जी?

जब रजोगुण का धागा खिंचता है, तो बुद्धि पैसे के पीछे भागती है। जब तमोगुण का धागा खिंचता है, तो इंद्रियां वासना और आलस में गिर जाती हैं। तुम तो सिर्फ वो पुतले हो जो धागा खिंचते ही हाथ-पैर मारना शुरू कर देते हो।

सत्वगुण (ज्ञान, शांति) · रजोगुण (कर्म, इच्छा) · तमोगुण (अज्ञान, आलस)

धागे खींचने वाला छिपा है, नचने वाला दिखता है!

6 सर्वशक्तिमान के सामने विज्ञान और चालाकी का फ्यूज फेल!

जब प्रकृति का एक थपेड़ा (भूकंप, सुनामी या महामारी) आता है, तो बड़े-बड़े सूरमाओं की बुद्धि का फ्यूज उड़ जाता है। जिस अष्टधा प्रकृति के एक इशारे पर सूर्य, चंद्रमा और अनंत कोटि ब्रह्मांड थर-थर कांपते हैं, उस परम शक्ति के सामने तुम्हारी चालाकी और तुम्हारी मर्जी की बिसात ही क्या है? तुम तो उस महासमुद्र की एक अदनी सी बूंद भी नहीं हो।

7 कर्तापन का नाश ही साक्षात् 'मोक्ष' है

जब तक "मैं करने वाला हूं" की भावना रहेगी, तब तक 84 लाख योनियों के कोल्हू में पिसते रहोगे। जैसे ही अनुभव हो कि—"प्रभु! मैं तो सिर्फ एक निमित्त हूं, करने वाले भी आप हैं, मन-बुद्धि रूपी कठपुतली को नचाने वाले भी आप हैं"—तब कर्तापन का नाश हो जाता है। जब कर्तापन मर जाता है, तो कर्मों का बहीखाता जलकर राख हो जाता है और जीव तुरंत निर्विकार हो जाता है।

8 'अहंकार' रूपी आठवें शैतान का पूर्ण विसर्जन

यह अहंकार ही जीव को यह भ्रम दिलाता है कि वह ईश्वर से अलग कोई स्वतंत्र सत्ता है। जब तक आप इस आठवें शैतान को ठाकुर जी के चरणों में विसर्जित नहीं करेंगे, तब तक ज्ञान का प्रकाश नहीं होगा। जिस क्षण आप चींटी से भी छोटे बनकर प्रभु की शरणागति स्वीकार कर लेते हैं, यह अष्टधा प्रकृति आपके सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो जाती है और आपको साक्षात् ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है।

निष्कर्ष: पुतले की अकड़ छोड़ो, सूत्रधार से प्रीति करो!

कर्तापन के इस झूठे नशे और भांग से बाहर निकलो। यह स्वीकार करो कि तुम साक्षात् परम शक्ति परमात्मा के हाथों के एक अदने से खिलौने हो। तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारा मन, तुम्हारा अहंकार सब उन्हीं की माया की देन है। इस सच को जानकर अपनी अकड़ को विदा करो। जब नाच ही रहे हो, तो इस नश्वर संसार और माया के गंदे गानों पर क्यों नाचना? अपनी डोर उस परम सूत्रधार गोविंद के हाथों में सौंप दो, फिर तुम्हारा यह जीवन साक्षात् आनंद का रास बन जाएगा और इसी क्षण, तत्काल तुम्हें परब्रह्म की प्राप्ति सुनिश्चित हो जाएगी!

स्मरण रखिए

- रिमोट उनके हाथ में है
- उंगलियां उनकी हैं
- धागे उनके हैं
- नचाने वाला वे हैं
- हम केवल कठपुतली हैं

अष्टधा प्रकृति = ईश्वर की अपरा (जड़) प्रकृति

पृथ्वी · जल · अग्नि · वायु · आकाश · मन · बुद्धि · अहंकार

इन्हीं आठों के माध्यम से परमात्मा पूरी सृष्टि को संचालित करते हैं!

समाधान क्या है?

कर्तापन का त्याग करो, अहंकार का विसर्जन करो, प्रभु की शरण में आओ, तुम्हें साक्षात् ब्रह्म की प्राप्ति हो जाएगी।

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

लाख समझाने पर भी जीव समझता क्यों नहीं?
जानिए क्यों 'मैं कर रहा हूं' का नशा शराब से भी ज्यादा खतरनाक है और अहंकार का असली कारण!
प्रस्तावना – एक गहरा मानसिक रोग:
जब संतों, शास्त्रों और साक्षात् भगवान श्री कृष्ण ने लाख बार समझा दिया कि तुम एक कठपुतली हो, तो फिर यह बात मनुष्य की खोपड़ी में घुसती क्यों नहीं? क्यों इंसान हर बार होश खोकर चिल्लाता है कि – "यह मैंने किया, यह मेरी मर्जी है!"? आखिर 'मैं कर रहा हूं' वाला यह नशा इतना जानलेवा और खतरनाक क्यों हो गया है कि इसके आगे भगवान की बात भी 'काला अक्षर भैंस बराबर' हो जाती है?
सत्य क्या है?
यह जीवन, यह मन, यह बुद्धि, यह शरीर और इस सृष्टि का हर कण-कण साक्षात् परमात्मा की मर्जी और उनकी अष्टधा प्रकृति के इशारे पर नाच रहा है!
"भ्रमयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया"
– श्रीमद्भगवद्गीता 18.61
अर्थात् मैं अपनी माया से सब प्राणियों को ऐसे नचाता हूं जैसे कोई यंत्र (मशीन) पर सवार हो।
1 यह शराब का नशा नहीं, यह 'अविद्या' का सनातन कैंसर है!
• कर्तापन का नशा अनंत जन्मों से जीव की चेतना पर चढ़ा हुआ है।
• इसे 'अविद्या' या 'मूल अज्ञान' कहते हैं।
• जीव जब से गोलोक छोड़कर इस मृत्युलोक के डिस्को में आया है, तब से उसने शरीर को ही अपना असली स्वरूप मान लिया है।
• शरीर क्रिया करता है, इसलिए भ्रम होता है कि "करने वाला मैं हूँ"!
• यह भ्रम इतना पुराना है कि लाख समझाने पर भी एक झटके में नहीं टूटता।
अविद्या (मूल अज्ञान)
2 अहंकार का स्वभाव: वह मर जाएगा, पर 'रिमोट' स्वीकार नहीं करेगा!
• अहंकार का मूल स्वभाव ही 'विद्रोह' है।
• जिस दिन उसने स्वीकार कर लिया कि सब कुछ भगवान की मर्जी से हो रहा है, उसी दिन उसकी मौत हो जाएगी!
• इसलिए अहंकार अपनी मौत को स्वीकार नहीं कर सकता।
• वह बुद्धि पर पर्दा डाल देता है, जिससे सामने खड़ा सच भी दिखाई नहीं देता।
अहंकार
3 'इंद्रियों का तात्कालिक सुख' बुद्धि को अंधा कर देता है
श्रीमद्भगवद्गीता 2.62
ध्यायतो विष्यान्पुंसः संङ्गस्तेपुजायते।
संङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥
अर्थ: विषयों का चिंतन करने वाले मनुष्य की उन विषयों में आसक्ति हो जाती है, आसक्ति से कामना (वासना) पैदा होती है और कामना में बाधा आने से क्रोध पैदा होता है।
• इंद्रियों को क्षणिक सुख मिलने पर बुद्धि अंधी हो जाती है।
• वह पीछे बैठे परमात्मा के हाथ को देखना ही नहीं चाहती।
• उसे लगता है कि यह मजा मेरी मर्जी से आया है।
4 माया का 'मोहिनी' जाल – भगवान की अपनी वीटो पावर
• भगवान की 'मोहिनी शक्ति' जीव को सच देखने ही नहीं देती।
• जब तक ठाकुर जी की कृपा से मोह का पर्दा नहीं हटता, तब तक जीव चाहे जितने वेद-पुराण पढ़ ले, उसका कर्तापन का नशा नहीं उतर सकता।
माया
5 कलयुग का सबसे बड़ा वीआईपी (VIP) सिंड्रोम: "मेरा नाम होना चाहिए"
• हर काम में श्रेय (Credit) चाहिए।
• मेरा नाम, मेरी फोटो, मेरी प्रतिष्ठा – यही भूख इस नशे को खतरनाक बनाती है।
• यदि सब कुछ ईश्वर की मर्जी से हुआ है, तो फिर वाह-वाही कैसे होगी?
• अपनी कॉलर ऊंची रखने की कलयुगी हवस के कारण जीव परमात्मा की सत्ता से बेखबर रहता है।
NEWS
महादानी श्रीमान फलां जी
6 संस्कारी डेटा का कचरा और संगति का असर
• मोबाइल, सोशल मीडिया और मोटिवेशनल कचरा अहंकार को और हवा देता है।
• "यू कैन डू इट, तुम ही भगवान हो, अपनी किस्मत खुद लिखो" – ये सब मायिक शैतानों का झूठा ज्ञान है।
• बुरी संगति से अंत:करण कठोर हो जाता है।
• अध्यात्म का मीठा बीज अंकुरित ही नहीं हो पाता।
YOU CAN DO IT
तुम ही भगवान हो
अपनी किस्मत खुद लिखो
7 जब तक 'ठोकर' नहीं लगती, तब तक नशा नहीं उतरता
• कर्तापन का नशा केवल ठोकर से उतरता है।
• भारी घाटा, बीमारी, अपमान, प्रियजनों से बिछड़ना या शरीर का लाचार हो जाना – यह प्रकृति की करारी लात है।
• जब सब कुछ छिन जाता है, तब जीव रोकर कहता है – "प्रभु! मेरी कोई मर्जी नहीं, अब बचा लो!"
घाटा
प्रभु! मेरी कोई मर्जी नहीं, अब बचा लो!
8 इस अज्ञान को तोड़ने का एकमात्र महा-अस्त्र – संतों की वाणी और नाम-जप
• लाख समझाने पर जो बात समझ नहीं आती, वह गुरुदेव की कृपा और नाम-जप से समझ में आती है।
• "हरे कृष्ण" महामंत्र अंत:करण के भीतर जमे अज्ञान के पत्थर को धीरे-धीरे पिघला देता है।
• नाम-जप से बुद्धि निर्मल होती है।
• तब जीव को साक्षात् अनुभव होता है कि – "अरे! मेरी सांस भी मेरी मर्जी से नहीं, मेरे गोविंद की दया से चल रही है!"
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
निष्कर्ष:
अकड़ना बंद करो, वह सर्वशक्तिमान देख रहा है!
• 'मैं कर रहा हूं' के इस आत्मघाती नशे से बाहर निकलो!
• तुम्हारी जिंदगी का एक-एक पल, एक-एक सांस परमात्मा की मर्जी की भीख है!
• अहंकार की इस झूठी भांग को उतारो!
• जब तक तुम कर्ता होने के भ्रम में जियोगे, तब तक कर्मों की बेड़ियां तुम्हें काटती रहेंगी!
• अहंकार को प्रभु के चरणों में कुचल दो, अपनी मर्जी का विसर्जन करो और ठाकुर जी के सामने पूरी तरह सरेंडर (शरणागत) हो जाओ!
• जब तुम 'शून्य' बन जाओगे, तभी 'अनंत' परमात्मा को अपने भीतर महसूस कर पाओगे!
याद रखो:
• मन, बुद्धि, इंद्रियां और अहंकार – सब प्रकृति के खिलौने हैं।
• हम कठपुतली हैं, सूत्रधार वह है!
जीवन का नृत्य
हम कठपुतली हैं
सूत्रधार कौन?
साक्षात परमात्मा
करने योग्य उपाय:
✅ अहंकार त्यागो
✅ नाम-जप करो
✅ संतों की संगति करो
✅ शास्त्रों को समझो
✅ हर क्षण याद रखो – "प्रभु! सब आपकी मर्जी से है"
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भगवान से भी ज्यादा खतरनाक है उनकी प्रचंड माया!
जानिए परमात्मा के 'सिंगल धमाके' का खौफनाक रहस्य; आँखों की रेटिना का एक-एक बिंदु दर्ज!
प्रस्तावना - ब्रह्मंड की सबसे बड़ी खुफिया फाइल:
भक्तों, कान खोलकर सुन लीजिए - तुम्हें साक्षात् भगवान से उतना डरने की जरूरत नहीं है, जितना भगवान की इस प्रचंड माया से सावधान रहने की जरूरत है !
यह माया इतनी महा-भयंकर है कि यह क्षण भर में तुम्हें अपनी चक्की में पीसकर रख देगी और तुम्हें पता तक नहीं चलेगा !
हर कर्म दर्ज है !
विचार
वाणी
देखना
कुछ भी छिपा नहीं, कुछ भी मिटा नहीं!
माया
श्वेताश्वतर उपनिषद (4.6)
द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यन श्नन्नन्यो अभिचाकशीत् ॥
अर्थ: एक ही वृक्ष रूपी शरीर पर, घनिष्ठ मित्रों की तरह साथ-साथ दो पक्षी बैठे है! उनमें से एक (जीव) मीठे-मीठे फल खाता है, दूसरा (परमात्मा) केवल देखता है, साक्षी भाव से स्थित है !
1 दुनिया में 'डबल धमाका' पर भगवान के यहाँ केवल 'एक धमाका'!
दुनिया का एग्जाम (डबल धमाका)
VS
भगवान का एग्जाम (सिंगल धमाका)
1. क्या लिखा था
2. कितने नंबर मिले
सिर्फ कर्मो का भोग याद रहेगा, कब, कैसे, किस जन्म में किया था - सब माया भुला देगी !
2 कर्मों के विधान का अकाट्य नियम - भोग याद रहेगा, करतूत नहीं!
दुख, बीमारी, कंगाली, दरिद्रता, अपमान...
लेकिन वो नीच करतूत जिनसे ये सजा मिली - माया का परदा पूरी तरह छुपा देगा!
जब फल मिलेगा, आँखों से पानी नहीं, 'खून के आँसू' गिरेंगे, एर तुम जान नहीं पाओगे कि तुम्हारी गलती क्या थी !
3 आँखों की रेटिना का बिंदु-दर-बिंदु (Data) भगवान के सर्वर में जमा!
DATA SERVER (कर्म रजिस्टर)
• अनंत जन्मों का 'लाइव स्टेटमेंट हिस्ट्री डेटा' दर्ज है !
• इस जन्म के किस सेकंड पर क्या देखा - सब रिकॉर्ड है !
• रेटिना ने जहाँ-जहाँ फोकस किया, हर बिंदु (Point) दर्ज है !
• हिसाब में एक तिनका या एक बिंदु भी मिस नहीं हो सकता!
4 सेंटेंस दर्ज नहीं होता, एक-एक 'शब्द' दर्ज होता है !
पागल!
कुत्ता!
कमीने!
• वाणी से निकला एक-एक शब्द रजिस्टर में एंट्री लेता है !
• भूल से भी अपशब्द कहा - तो दंड निश्चित है !
• 'राम', 'राधा', 'कृष्ण' मुँह से निकला - तो हर बिंदु का पुण्य भी दर्ज होता है !
5 यह आँख-कान तुम्हारी बपौती नहीं, परमात्मा का 'इंजन' है !
यह आँख, कान, वाणी, हाथ, पैर - तुम्हारी मशीनरी नहीं, परमात्मा की फैक्ट्री का 'दिव्य इंजन' है, जो तुम्हें लीज पर मिला है !
तुम इसे अपना समझकर पाप के कीचड़ में नचा रहे हो, मालिक कभी भी वापस खींच लेगा !
6 घट-घट में बैठा है फैक्ट्री का असली मालिक!
• जब तुम माता के गर्भ में थे, उसी समय परमात्मा तुम्हारे 'हृदय' में प्रवेश कर गया था !
• वह तुम्हारी सोच, विचार, हरकत - सब जानत है !
• भीतर ही बैठकर तुम्हारे इंजन का हिसाब एक-एक फाइल में नोट कर रहा है !
7 भीष्म और धृतराष्ट्र को कुछ जन्म याद थे, पर भगवान 'अनंत जन्मों' के ज्ञाता है !
भीष्म पितामह
धृतराष्ट्र
• उन्हें 50 या 100 जन्मों का इतिहास याद था !
• परमात्मा अनंत जन्मों के ज्ञाता हैं, वह पल-पल की चेतना के स्वामी है !
• जब कर्मों की गाड़ी चलती है - याद रखते है कि तू क्या कर रहा है !
• जैसे ही शरीर का इंजन रूकता है - सब कुछ भुला देते है !
8 आज का किया भजन भी मृत्यु के बाद भूल जाओगे !
आज का भजन
मृत्यु के बाद
• आज कितना भी सुंदर भजन किया - मृत्यु के बाद याद नहीं रहेगा !
• भजन केवल भगवान को ज्ञात रहेगा, आपको नहीं !
• अगला जन्म मिला - नया सुख या दुख का भोग मिल जाएगा !
• सुख याद रहेगा, वो किस पुण्य का फल है - याद नहीं रहेगा !
निष्कर्ष: कर्म करते समय सावधान रहो, जवाब तुम्हारे ही पास है !
जब जीवन में दुख आए, बुद्धि फटने लगे, भगवान से मत पूछो - 'प्रभु! यह किस जन्म की सजा है?' क्योंकि भगवान से प्रश्न करोगे तो कोई नया जवाब नहीं मिलेगा !
जवाब तुम्हारे ही पास है:
✓ जब तुम पाप कर्म कर रहे थे,
✓ जब तुम अपनी इंद्रियों का दुरूपयोग कर रहे थे,
✓ तब परमात्मा ने अंदर से टोककर याद रखवाया था कि तुम गलत कर रहे हो!
तब तुम क्यों बेपरवाह रहे! तुमने उस समय सावधानी क्यों नहीं बरती?
अगर आज भी 84 लाख की इस खौफनाक चक्की में पिसने से बचना है, तो केवल एक ही भलाई है -
✓ अपनी याद रखने की शक्ति को संसार से हटाकर केवल परमात्मा में लगा दो !
✓ मुख में 'हरे कृष्ण' का महामंत्र धारण करो !
✓ होश में रहकर कर्म करो !
क्योंकि जो आज संभल गया, उसकी बात बन गई; अन्यथा आगे केवल अंधकार और पश्चाताप के आंसु है !
याद रखो!
कुछ भी छिपा नहीं
कुछ भी मिटा नहीं
हर कर्म दर्ज है
हर शब्द दर्ज है
हर दृष्टि का बिंदु दर्ज है
हर सांस की खबर है
परमात्मा साक्षी है
लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

श्वेताश्वतर उपनिषद का महा-रहस्य:
दो पक्षी, एक शरीर और कभी न छूटने वाला साथ!
प्रस्तावना
संसार में मनुष्य अक्सर चिल्लाता है कि — "मैं अकेला हूँ, मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है!" लेकिन उपनिषदों का ज्ञान और सनातन वेद गवाही देते हैं कि ब्रह्मांड का कोई भी प्राणी एक क्षण के लिए भी अकेला नहीं है।
श्वेताश्वतर उपनिषद (अध्याय 4, मंत्र 6) में एक ऐसा परम सत्य बताया गया है, जिसे अगर मनुष्य एक सेकंड के लिए भी समझ ले, तो उसका पूरा जीवन बदल जाए।
परमात्मा (दूसरा पक्षी)
जीवात्मा (पहला पक्षी)
"द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यन शम्नन्यो अभिचाकशीति॥"
(श्वेताश्वतर उपनिषद 4.6)
अर्थ: एक ही वृक्ष रूपी शरीर पर, घनिष्ठ मित्रों की तरह साथ-साथ बैठे हुए दो सुंदर पक्षी हैं। उनमें से एक (जीव) मीठे-मीठे फलों को खाता है और दूसरा (परमात्मा) केवल देखता है, साक्षी भाव में स्थित है।
1 गर्भ से लेकर श्मशान तक: कभी न टूटने वाला सफर
गर्भ में साथ
जीवन भर साथ
मृत्यु के बाद भी साथ
जीवात्मा जब गर्भ में प्रवेश करती है, उसी क्षण परमात्मा भी साथ प्रवेश करते हैं। जन्म, जीवन और मृत्यु के हर क्षण परमात्मा जीव के साथ रहते हैं।
हमें उनका पता क्यों नहीं चलता? कारण–भगवान की 'योगमाया शक्ति'! भगवान माया के परदे के पीछे छिपे रहते हैं, जीव को पता ही नहीं चलता कि ब्रह्मांड का मालिक उसके ठीक अंदर बैठा है।
2 दोनों पक्षियों का पहला कार्य: 'चेतन शक्ति' और 'गुप्त जासूसी'
1 परमात्मा का कार्य (शक्ति देना)
परमात्मा जीव की इंद्रियों, मन और बुद्धि को 'चेतन शक्ति' प्रदान करते हैं। उनकी शक्ति से ही शरीर हिलता-डुलता है। शक्ति ना दें तो शरीर तुरंत 'मुर्दा' हो जाएगा।
2 जीवात्मा का कार्य (कर्म करना)
परमात्मा ने जीव को कर्म करने की पूर्ण स्वतंत्रता दे रखी है। जीव 24 घंटे अच्छा या बुरा विचार करता है, कर्म करता है, इंद्रियों के पीछे भागता है।
3 परमात्मा का अगला कार्य (मूक गवाह)
परमात्मा साइलेंट होकर केवल जीव के कर्मों को नोट करते हैं। इंद्रियां, मन, बुद्धि कहां-कहां घूम रहे हैं, सब कुछ एक-एक सूक्ष्म कर्म 'संचित कर्मों के रजिस्टर' में जोड़ते जाते हैं।
भगवान कहाँ रहते हैं?
न पूर्व, न पश्चिम, न उत्तर, न दक्षिण, न किसी ग्रह पर!
परमात्मा प्रत्येक जीव के ठीक अंतःकरण में प्रत्यक्ष रूप से विराजमान हैं और वहीं से आपके कर्मों की फाइल देख रहे हैं।
जब जीव पैदा होता है, तो परमात्मा माया का पर्दा डाल देते है, जिससे जीव इस संसार के मायाजाल में फंस कर इस परम सत्य को भूल बैठता है।
3 हमें पता क्यों नहीं चलता? पाँच मुख्य कारण
1 अविद्या का सनातन कैंसर
कर्तापना का नशा अनंत जन्मों से चला आ रहा है। इसे 'अविद्या' या 'मूल अज्ञान' कहते हैं। शरीर को ही अपना मानने से भ्रम होता है कि "करने वाला मैं हूँ"।
2 अहंकार का स्वभाव विद्रोही है
अहंकार जानता है कि 'सब कुछ भगवान की मर्जी से है' स्वीकार करते ही उसकी मौत हो जाएगी। इसलिए वह सत्य को स्वीकार नहीं करता, बुद्धि पर पर्दा डाल देता है।
3 इंद्रियों का तात्कालिक सुख
इंद्रियों को मिलने वाला क्षणिक सुख बुद्धि को अंधा कर देता है। जीव को लगता है कि यह मजा मेरी मर्जी से मिल रहा है, पीछे बैठे परमात्मा के हाथ को देखना नहीं चाहता।
4 माया का 'मोहिनी' जाल
भगवान की 'मोहिनी शक्ति' जीव को सच देखने नहीं देती। जब तक ठाकुर जी की कृपा से मोह का पर्दा न हटे, जीव वेद-पुराण पढ़कर भी सत्य को नहीं समझ सकता।
5 कलयुग का VIP सिंड्रोम
मेरा नाम
NEWS
हर कार्य का श्रेय (Credit) चाहिए। नाम, पुरस्कार, सम्मान चाहिए। यदि सब कुछ भगवान की मर्जी से है! मान लिया तो वाह-वाही कैसे मिलेगी? यही हवस जीव को अंधा बनाए रखती है।
4 दोनों पक्षियों का दूसरा कार्य: 'कर्मफल का भोग' और 'अंतिम विदाई'
1 परमात्मा का कार्य (फल देना)
परमात्मा जीव के अनंत जन्मों के कर्मों के अनुसार सटीक न्याय के साथ फल (सुख या दुःख) देते हैं।
2 जीवात्मा का कार्य (भोगना)
जीवात्मा केवल उन कर्मफलों का भोग करती है। चाहे बड़ा सुख या भयंकर दुःख आए, परमात्मा हमेशा अंदर ही रहते हैं।
3 अंतिम विदाई
जब सांसों का कोटा पूरा होता है, परमात्मा जीव को अपने साथ ले जाते हैं। जीव को स्वयं नहीं पता होता कि शरीर की कोठरी से बाहर कैसे निकलना है। जिसने शरीर में प्रवेश कराया, वही अंत समय में साथ लेकर निकलता है।
यह साथ कभी नहीं छूटता!
स्वर्ग
नरक
पशु-पक्षी योनि
यह दोनों पक्षी (जीव और ब्रह्म) अनंत काल से, करोड़ों जन्मों से साथ हैं। कर्मों के अनुसार चाहे स्वर्ग जाओ, नरक जाओ, या पशु-पक्षी की योनि में जाओ — परमात्मा (दूसरा पक्षी) आपका साथ कभी नहीं छोड़ता।
5 संस्कारी डेटा का कचरा और संगति का असर
'यू कैन डू इट', 'तुम अपनी किस्मत खुद लिख सकते हो', 'तुम ही भगवान हो' — ऐसा मोटिवेशनल कचरा अहंकार को बढ़ाता है। मायिक शैतानों की संगति से जीव का अंतःकरण कठोर हो जाता है और अध्यात्म का मीठा बीज नहीं अंकुरित होता।
6 जब तक 'ठोकर' नहीं लगती, तब तक नशा नहीं उतरता
जैसे शराबी को तब तक होश नहीं आता जब तक लीवर खराब न हो जाए, वैसे ही जीव तब तक अकड़ता है जब तक प्रकृति करारी ठोकर न मारे। घाटा, बीमारी, अपमान, प्रियजनों का बिछड़ना— तब जाकर रोकर कहता है—
"प्रभु! मेरी कोई मर्जी नहीं, अब बचा लो!"
7 इस अज्ञान को तोड़ने का महा-अस्त्र: संतों की वाणी और नाम-जप
गुरुदेव की कृपा और अखंड नाम-जप से अज्ञान का पत्थर धीरे-धीरे पिघलता है।
"हरे कृष्ण हरे कृष्ण
कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम
राम राम हरे हरे"
नाम-जप से बुद्धि निर्मल होती है और जीव को अनुभव होता है कि— "मेरी सांस भी मेरी मर्जी से नहीं, मेरे गोविंद की दया से चल रही है।
निष्कर्ष: कठोपनिषद की महा चेतावनी
यह परम चेतन शक्ति परमात्मा ने हमें केवल इसलिए दी है ताकि हम इस मानव शरीर में रहकर इस परम सत्य को पहचान सकें। कठोपनिषद (2.3.4) में चेतावनी दी गई है कि यदि इस अत्यंत दुर्लभ मानव योनि को पाकर भी जीव ने सत्य को नहीं जाना और परमात्मा की शरणागति स्वीकार नहीं की, तो उसे सीधे 84 लाख योनियों के जेलखाने में डाल दिया जाएगा, जहाँ वह जन्म-मृत्यु की चक्की में अनंत काल तक बिना रुके पिसता रहेगा।
संसार से आसक्त होना ही बार-बार गर्भ के दुखों में वापस आना है! भलाई इसी में है कि समय रहते जाग जाएं और पहचानें कि हमारे भीतर बैठा वह दूसरा पक्षी ही हमारा एकमात्र सच्चा साथी है!
84 लाख योनियों की चक्की
क्या करें?
अहंकार छोड़ें
सत्य को स्वीकार करें
नाम-जप करें
सत्संग करें
शरणागति अपनाएँ
जब तुम 'शून्य' बन जाओगे, तभी उस 'अनंत' परमात्मा को अपने भीतर महसूस कर पाओगे!
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भगवान की प्रबल माया से पार होने का केवल एक मात्र उपाय, गीता 7.14
— शरणागति दूसरा कोई उपाय नहीं! (भाग-1)
भगवान की प्रचंड माया शक्ति जो दुनिया में तहलका मचा रहा है जानिए माया का पूरा भेद!
प्रस्तावना
ब्रह्मा, शिव और इंद्र तक माया से नहीं बच पाए, तो हम जीवों की क्या बिसात? माया मतलब जो है नहीं, पर दिखता है पूरा संसार ही भगवान की माया का खेल है।
उपाय? शास्त्र एक स्वर में कहते हैं – केवल शरणागति, दूसरा कोई उपाय नहीं!
सांसारिक मायाज्जाल
जन्म
मोह
अहंकार
सुख-दुःख
मृत्यु
माया के 2 रूप
• आवरण शक्ति: सत्य को ढक देती है।
• विक्षेप शक्ति: झूठ को सच दिखाती है।
गीता 7.14
देवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥
अर्थ:
मेरी यह त्रिगुणमयी माया बड़ी कठिन से पार होने योग्य है, जो मेरी शरण में आते हैं, वही इसे पार करते हैं।
साया क्या है? पूरे माया का निरूपण (5 भागों में विस्तृत)
1 माया क्या है? भगवान की शक्ति, भगवान से अलग नहीं
• माया = भगवान की दैवी शक्ति।
• जिससे सृष्टि की रचना और खेल होता है।
• इसका उद्देश्य जीव को भ्रमित करना है।
2 माया कितनी प्रबल है? बड़े-बड़े हार गए
• ब्रह्मा, नारद, शिव, इंद्र तक माया में फंसे।
• जीव खुद को शरीर मानकर भटकता है।
• "दुरत्यया" – अत्यंत कठिन से पार होने योग्य।
3 ज्ञान, योग, तप – सब फेल क्यों हो जाते हैं?
• ज्ञान से अहंकार, योग से सिद्धि, तप से शक्ति आती है।
• शरणागति के विना सब अधूरा है।
भागवत 11.2.42: भक्ति विना न सिद्यति।
4 शरणागति क्या है? 6 लक्षण
1. आनकूल्यस्य संकल्प:
2. प्रातिकूल्यस्य वर्जनम्
3. रक्षिष्यति इति विश्वास
4. गोपतृत्वे वरणम्
5. आत्म-निक्षेप
6. कार्पण्य
5 शरणागति के महाप्रमण: क्योंकि माया के मालिक वही हैं
• माया भगवान की नौकर है।
• मालिक की शरण जाओगे, नौकर खुद सलाम करेगी।
गीता 18.66: सर्वधर्मपरित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥
7 शरणागति कैसे करें? व्यावहारिक 5 कदम
सुबह का संकल्प
आँख खुलते ही कहें – "हे कृष्ण, आज का दिन आपका है।'
हर कर्म अर्पण
खाना-पानी, काम – "गोविंद अर्पण" कहकर करें।
विपत्ति में पहला नाम
दुख में सबसे पहले "हे नाथ" वोलें।
नाम-जप का पुल
हरे कृष्ण महामंत्र या नाम जपते रहें।
कथा-श्रवण
रोज 10 मिनट शास्त्र सुनें, विश्वास बढ़ेगा।
8 अंतिम निष्कर्ष
• माया से लड़ोगे तो हारोगे, मायापति की शरण में आओ।
• "मैं कुछ नहीं, बस आप हो" – यही मंत्र।
• शरणागति ही मुक्ति का एकमात्र मार्ग है।
गीता 18.66
सर्वधर्मपरित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥
लेखक –
श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
भगवान की प्रबल माया से पार होने का केवल एक मात्र उपाय, गीता 7.14
— शरणागति दूसरा कोई उपाय नहीं! (भाग-2)
अब समझिए – शरणागति की अवस्थाएँ, माया का खेल और चमत्कार
1. 1. शरणागति की 5 अवस्थाएं (क्रमसः उन्नति)
1. आर्त शरणागति
दुख में पुकाना
गतेन्द, द्रौपदी
2. अर्थार्थी शरणागति
कामना से जाना
ध्रुव की तरह भगवान के पास जाओ – सब मिलता है।
3. जिज्ञाड़ु शरणागति
सत्य जानने की भूख
उद्धव, अर्जुन की तरह प्रश्न करो, माया का पर्दा उठेगा।
4. ज्ञानी शरणागति
निष्काम प्रेम
प्रह्लाद, मीरा, हनुमान – कुछ नहीं मांगते, सिर्फ प्रेम करते हैं।
5. परिपक्व शरणागति
पूर्ण समर्पण
सब कुछ तेरा, मैं भी तेरा – यही पूर्ण शरणागति है।
2. माया की 3 चालें और शरणात की जीत
1. भय दिखाना
डराकर हटाना चाहती है। शरणागत: विश्वास सबसे बड़ा कवच।
2. लोभ दिखाना
धन, पद, भोग का लालच। शरणागत: केवल भगवान ही चाहिए।
3. अहंकार देना
तू बड़ा है, तू ज्ञानी है। शरणागत: मैं दास तू स्वामी।
3. जब "मैं" हट जाता है, माया खुद हट जाती है
माया का कारण
मैं देह हूँ
मैं कर्ता हूँ
मेरी इच्छा
शरणागति का मंत्र
तु कराता है
सब तेरी मर्जी
मैं तेरा दास
परिणाम
माया खत्म
शांति मिलती है
मुक्ति मिलती है
4. कलियुग में शरणागति ही सबसे आसान मार्ग
• न समय, न शक्ति, न शुद्धि – बस नाम जप लो।
• कलौ तद् हरिकीर्तनात् – केवल नाम से सब सिद्धि।
• महामंत्र ही शरणागति का सरलतम रूप है।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
5. शरणागति के बाद जिम्मेदारी भगवान की
• सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते
• अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम।
• एक बार "मैं तेरा हूँ" कह दो,
• बाकी काम भगवान का।
1. मैं स्वतंत्र हूँ
→ हर सांस भगवान से चलती है।
2. Science ही सब
→ Science "कैसे" बताता है, "कौन" नहीं!
3. सुख का लॉलीपॉप
→ सुख का वादा, सुख नहीं!
4. रिश्तों का धोखा
→ श्मशान तक कोई नहीं जाता!
5. भगवान दिखते क्यों नहीं?
→ मन पर माया का पर्दा है!
6. 1 सेकंड का फार्मूला
→ "श्रीकृष्णः शरणं मम"
7. 7 दिन का चैलेंज
→ डर कम, नींद अच्छी, सहारा महसूस!
8. तू नास्तिक नहीं
→ तु भटका हुआ आस्तिक है!
7. समापन संदेश
माया का नशा मत कर, शरणागति की दवा ले!
नशे में मरना है या होश में जीना है?
श्रीकृष्णः शरणं मम
याद रखें
• माया से मत लड़ो, मालिक की शरण जाओ!
• 6 लक्षण की शरणागति अपनाओ!
• नाम जपो, कथा सुनो, प्रभु को याद करो!
• वही एकमात्र मार्ग है – सुरक्षित, सरल, निश्चित!
गीता 18.66 (अंतिम आदेश)
सर्वधर्मपरित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥
लेखक –
श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भगवान की प्रबल माया से पार होने का केवल एक मात्र उपाय, गीता 7.14

शरणागति दूसरा कोई उपाय नहीं!

भगवान की प्रचंड माया शक्ति जो दुनिया में तहलका मचा रहा हैं – जानिए माया का पूरा भेद!

माया

प्रस्तावना

- ब्रह्मा, शिव और देव तक माया से नहीं बच पाए, तो हम जीवों की क्या बिसात?
- माया मतलब "जो है नहीं, पर दिखता हैं"।
- यह पूरा संसार भगवान की माया का खेल है।
- इस चक्रव्यूह से निकलने का एक ही उपाय – केवल शरणागति, दूसरा कोई उपाय नहीं।

सांसारिक मायाजाल

जन्म | मोह | अहंकार | सुख-दुःख | मृत्यु

माया के 2 रूप

1. आवरण शक्ति: सत्य को ढक देती है।
2. विक्षेप शक्ति: झुठ को सच दिखाती हैं।

गीता 7.14

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥

अर्थ:
मेरी यह त्रिगुणमयी माया बड़ी कठिन से पार होने योग्य है, जो मेरी शरण में आते हैं, वही इसे पार करते हैं।

माया क्या है? पूरे माया का निरूपण (5 भागों में विस्तृत)

1 माया क्या है? भगवान की शक्ति, भगवान से अलग नहीं

- गीता 7.14: माया भगवान की दैवी शक्ति है, दुरत्यया है।
- माया के 2 रूप – आवरण शक्ति (सत्य को ढकने वाली है)
- विक्षेप शक्ति (असत्य को सत्य दिखाती है)
- शंकराचार्य: ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या।

2 माया कितनी प्रबल है? बड़े-बड़े हार गए

- ब्रह्मा, नारद, शिव, इंद्र तक माया में फंसे।
- जीव खुद को शरीर मानकर भटकता है।
- "दुरत्यया" – अत्यंत कठिन से पार होने योग्य।
- भागवत 11.2.42: भक्ति बिना न सिद्ध्यति।

3 ज्ञान, योग, तप – सब फेल क्यों हो जाते हैं?

- ज्ञान → अहंकार लाता है
- योग → शिद्धियों में फंसाता है
- तप → शक्ति का अहंकार आता है।
- भक्ति (शरणागति) के बिना सब अधूरा है।
- भागवत 11.2.42: भक्ति बिना न सिद्ध्यति।

4 शरणागति क्या है? 6 लक्षण

1. अनुकूल्यस्य संकल्पः
2. प्रातिकूल्यस्य वर्जनम्
3. रक्षिष्यति इति विश्वास
4. गोप्तृत्वे वरणम्
5. आत्म-निक्षेप
6. कार्पण्य

5 शरणागति के महाप्रमाण: क्योंकि माया के मालिक वही हैं

- माया भगवान की नौकर है।
- मालिक की शरण जाओगे, नौकर खुद सलाम करेगा।

गीता 18.66:
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥

6 शरणागति के महाप्रमाण: जो शरण में आया, तर गया

- **गजेंद्र – संकट में शरण:** "हे गोविंद!" पुकारते ही सुदर्शन चक आया।
- **द्रौपदी – पूर्ण समर्पण:** हाथ उठाकर "गोविंद!" पुकारा, चीर बढ़ा दिया।
- **प्रह्लाद – अटूट विश्वास:** "नारायण-नारायण" कहने पर नरसिंह प्रकट हुए।
- **विभीषण – शरणागत वत्सलता:** "तुम्हरो मंत्र विभीषण माना" कहकर शरण आया, लंका का राज तिलक मिला।

7 शरणागति कैसे करें? व्यावहारिक 5 कदम

1. **सुबह का पहला संकल्प:** "हे कृष्ण, आज का दिन आपका।"
2. **हर कर्म अर्पण:** "गोविंद अर्पण" (गीता 9.27)
3. **विपत्ति में पहला नाम:** "हे नाथ!" पहले पुकारो।
4. **नाम-जप का पुज:** हरे कृष्ण महामंत्र या ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।
5. **कथा-श्रवण विश्वास बढ़े:** रोज 10 मिनट भागवत, रामायण सुनो।

8 अंतिम निष्कर्ष: माया से डरो मत, मायापति को पकड़ो

- माया से लड़ोगे तो हारोगे, वह तुम्हारी नहीं, भगवान की शक्ति है।
- माया का काम – तुम्हें भगाना, तुम्हारा काम – भगवान की शरण आना।
- समुद्र में तुफान है, पर जहाज के कप्तान के साथ बैठो तो तूफान कुछ नही बिगाड़ेगा।
- कप्तान = श्रीकृष्ण, जहाज = शरणागति, तूफान = माया।
- न ज्ञानं, न योगं, न तपो न यज्ञम् – केवलं प्रपत्तिः।
- आज से संकल्प – 'मेरे पास कुछ नहीं, बस आप हो'।
- मुख में "हरे कृष्ण" का महामंत्र [illegible] होश में रहकर कर्म करो।
- जो आज संभल गया, उसकी बात बन गई, नहीं तो केवल अंधकार और पश्चाताप।

शरणागति की सार-सूत्री

मैं नहीं, तू ही सब कुछ है।
जो कुछ है, वो तेरा है।
जो तू चाहें, वही अच्छा है।
जो तू दे, वही प्रसाद है।
जो तू ले, वही उचित है।
मैं केवल तेरा दास हूँ।
श्रीकृष्ण: शरणं मम।"

शरणागति का फल

- निर्भयता आती है।
- योगक्षेम भगवान उठाते हैं।
- पाप नष्ट होते हैं।
- मन में शांति और आनंद आता है।
- माया दासी बन जाती है।
- अंत समय में भगवान साथ लेते हैं।
- वैकुंठ धाम की प्राप्ति होती हैं।

याद रखने योग्य बातें

- माया भगवान की शक्ति है, शत्रु नहीं।
- शरणागति के बिना कोई पार नहीं।
- शास्त्र, संत, भक्त – सब यही कहते हैं।
- भगवान के सिंवा कोई सहारा नहीं।
- नाम-सरण और सत्संग ही नाव है।

शरणागति की पुष्टिं करने वाले शास्त्र-प्रमाण

- गीता 7.14 – माया दुरत्यया, शरणागति से पार।
- गीता 18.66 – सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
- भागवत 11.2.42 – भक्ति बिना न सिद्ध्यति।
- रामचरितमानस 3.43 – सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च यावते।
- रामचरितमानस 7.116 – तासु कृपा बिनु सुनु सुराय।
- गीता 9.22 – योगक्षेमं वहाम्यहम्।
- गीता 9.27 – यत्करोषि यदश्नासि... तत्कुरुष्व मदर्पणम्।

अंतिम प्रार्थना

हे कृष्ण! मैं आपका हूँ, मेरी सुधि लीजिए,
अपनी माया के जाल से निकाल लीजिए।
मुझे आपकी शरणागति की शक्ति दीजिए,
आपका नाम स्मरण कभी न छूटे।

जय श्री राधे-कृष्ण!

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भगवान की प्रबल माया से पार होने का केवल एक मात्र उपाय, गीता 7.14
शरणागति दूसरा कोई उपाय नहीं!
भगवान की प्रचंड माया शक्ति जो दुनिया में तहलका मचा रहा है – जानिए माया का पूरा भेद!
माया
माया क्या है?
जो है नहीं, पर दिखता है। जैसे रेगिस्तान में पानी, रस्सी में सांप, सपने का महल। ये पूरा संसार ही भगवान की माया का खेल है।
सांसारिक मायाजाल
जन्म
मोह
अहंकार
सुख-दुःख
मृत्यु
माया के 2 रूप
1. आवरण शक्तिः सत्य को ढक देती है।
2. विक्षेप शक्तिः झुठ को सच दिखाती है।
गीता 7.14
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया। मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥
अर्थ: मेरी यह त्रिगुणमयी माया बड़ी कठिन से पार होने योग्य है, जो मेरी शरणागति में आते हैं, वही इस माया से पार करते हैं।
माया क्या है? पूरे माया का निरूपण (पांच भागों में विस्तृत)
1 माया क्या है? भगवान की शक्ति, भगवान से अलग नहीं
• माया = भगवान की दैवी शक्ति।
• त्रिगुणमयीं – सत्व, रज, तम।
• माया से सब सृष्टि रची, खेल किया जाता है।
माया के उदाहरण
• रेशिस्तान का पानी
• रस्सी में सांप
• सपने का महल
• सूरज के पीछे बादल
2 साया कितनी प्रबल है? बड़े-बड़े हार गए
• ब्रह्मा, नारद, शिव, इंद्र – सब माया से मोहित हुए।
• अहंकार, काम, लोभ, मोह से देवता भी नहीं बच माए।
• "दुरत्यया" – अत्यंत कठिन है पार होना।
3 ज्ञान, योग, तप – सब फेल क्यों हो जाते हैं?
• ज्ञान से अहंकार, योग से शिद्धि, तप से शक्ति आती है।
• शरणागति के बिना सब अधुरा है।
• भक्ति विना न सिद्ध्यति।
• "मामेव ये प्रपद्यान्ते मायामेतां तरन्ति ते"
4 शरणागति क्या है? 6 लक्षण
1. आनकूल्यस्य संकल्पः
2. प्रतिकूल्यस्य वर्जनम्
3. रक्षिष्यतीति विश्वास
4. गोप्तृत्वे वरणम्
5. आत्म-निक्षेप
6. कार्पण्य
5 शरणागति ही क्यों? क्योंकि माया के मालिक वहीं हैं
• माया भगवान की दासी है।
• मालिक की शरण जाओगे, नौकर खुद सलाम करेगा।
• भगवान की कृपा बिना भक्ति नहीं मिलती।
6 शरणागति के महाप्रमाण: जो शरण में आया, तर गया
गजेन्द्र
ग्राह से फंसा, "हे गोविंद" कहा, भगवान स्वयं आए।
द्रौपदी
चीर खींचा गया, हाथ उठाकर "गोविंद" पुकारा, कृष्ण ने रक्षा की।
प्रह्लाद
नरसिंह रूप में भगवान प्रकट हुए, भक्त की रक्षा की।
विभीषण
राक्षस कुल में जन्म, पर शरणागत बनकर लंका का राजा बना।
7 शरणागति कैसे करें? व्यावहारिक 5 कदम
1. सुबह का पहला संकल्प
उठते ही बोलो – "हे कृष्ण, आज का दिन आपका"
2. हर कर्म अर्पण
खाना-पानी, हर कार्य – "गोविंद अर्पण"
3. विपत्ति में पहला नाम
दुख में पहले "हे नाथ" बोलो।
4. नाम-जप का पुड
हरे कृष्ण महामंत्र या नाम-जप – नाम और नामी एक हैं।
5. कथा-श्रवण
रोज कथा सुनो, विश्वास बढ़ेगा। यही शरणागति की जान है।
8 अंतिम निष्कार्य: माया से डरों मत, मायापति को पकड़ो
• माया से लड़ोगे तो हारोगे।
• वो बड़ी नहीं, भगवान से निकली है।
• तूफान में तैरकर पार नहीं कर सकते,
• कप्तान के पास जाओ – वो पार कर देगा।
• कपतान = श्रीकृष्ण
• जहाज = शरणागति
• तूफान = माया
• "न ज्ञानं, न योगं, न तपो न यज्ञम् – केवलं प्रपत्तिः"
शास्त्र के अंतिम आदेश
॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ॥
॥ अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥
संकल्प लो
"मेरे पास कुछ नहीं, बस आप हो!"
फिर देखो, माया खुद रास्ता छोड़ देगी।
क्योंकि मालिक का हुक्म हो जाएगा।
शरण में आने से पहले
ड़र, चिंता, अभाव, दुःख
अहंकार, पाप, बंधन, जन्म-मृत्यु
माया की गुलामी
शरणागति अपनाओ
"श्रीकृष्णः शरणं मम"
शरण में आने के बाद
निर्भयता, योगक्षेम, कृपा, आनंद
पाप-मुक्ति, शांति, मोक्ष का मार्ग
माया की दासी, भगवान के प्यारे
याद रखने योग्य बातें
• माया से मत लड़ो, मालिक की शरण जाओ।
• 6 लक्षण की शरणागति अपनाओ।
• नाम-जप, कथा-सुनना, गुरु की सेवा करो।
• वही एकमात्र मार्ग है – सुरबित, सरल, निश्चिता।
शरणागति की पुष्टि करने वाले शास्त्र-प्रमाण
• गीता 7.14 – माया दुत्त्या, शरणागति से पार।
• गीता 18.66 – सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
• मागवत 11.2.42 – भक्ति विना न सिद्ध्यति।
• रामचरितमानस 3.43 – सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते।
• रामचरितमानस 7.116 – तासु कृपा विनु भक्ति न होंहें।
• गीता 9.22 – योगक्षेमं वहाम्यहम्।
• गीता 9.27 – यत्करोधि यदशासि... तत्कुरुष्व मदर्पणम्।
अंतिम प्रार्थना
हे कृष्ण! मैं आपका हूं, मेरी छोटी लीजिए, अपनी माया के जाल से निकाल लीजिए। मुझे आपकी शरणागति की शक्ति दीजिए। आपका नाम स्मरण जय श्री राधे-कृष्ण!
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

ब्रह्म
परमात्मा की शक्ति बनाम अहंकार
शरीर, मन और जीवन – सब उसी की शक्ति से संचालित है
परमात्मा की शक्ति
1 भोजन और पाचन
परमात्मा ही भोजन निगलने और पचाने की शक्ति देते हैं।
2 इंद्रिय शक्ति
आँखों की ज्योति और कानों की सुनने की शक्ति ईश्वर की है।
3 प्राण वायु
अपान वायु द्वारा शरीर का शुद्धिकरण (मलमूत्र त्याग) होता है।
4 स्मृति
याददाश्त और विस्मृति के स्वामी परमात्मा हैं। (गीता 15.15)
अहंकार (अहं)
1 अहंकार का भ्रम
जैसे रस्सी में सांप का भ्रम, वैसे ही 'मैं कर रहा हूँ' का भ्रम।
2 अन्तःकरण का रावण
अहंकार ने मन और बुद्धि को गुलाम बना लिया है।
मन (मनस)
बुद्धि
3 बंधन
यही 'मैं' का भाव जन्म-मृत्यु के चक्र का कारण है।
पूर्ण समर्पण
यही सच्चा मार्ग है
अहंकार का त्याग
ईश्वर पर विश्वास
कतापन का विसर्जन
सेवा और भक्ति
समत्व और शांति
मुक्ति
परम शांति और परम धाम
जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति
अहंकार से मुक्ति
दुःख और भय से मुक्ति
परम आनंद की प्राप्ति
परमात्मा से एकत्व की अनुभूति
जानने योग्य वही है जो सबका मूल है, वही पालन करता है और वही अंत में सबमें रहता है।
– भगवद्गीता 15.15
ॐ
स्मरण रखें : शक्ति उसी की है, साधन हम हैं, कर्ता वह है।
उसकी शरण में ही जीवन सफल है।
ॐ
• गीता 9.22 – योगक्षेमं वहाम्यहम्।
• गीता 9.27 – यत्करोधि यदशासि... तत्कुरुष्व मदर्पणम्।
आपका नाम स्मरण
जय श्री राधे-कृष्ण!
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

खाना, पानी, सांस, नींद, याददाश्त, शक्ति — सब कुछ
परमात्मा की शक्ति से!
हम भूल गए, यही है 'अहंकार' का असली खेल!
जो कुछ भी हम करते हैं, वह हमारी शक्ति से नहीं, बल्कि परमात्मा की शक्ति से होता है!
सुबह उठना
हमें उठाने वाली शक्ति परमात्मा की है।
खाना खाना
खाना हम नहीं, परमात्मा हमें खिला रहे हैं।
पानी पीना
गले से अंदर पानी ले आने की शक्ति हमारी नहीं, परमात्मा की है।
शरीर चलना
चलना, हाथ हिलाना, काम करना – सब उनकी शक्ति से।
मल-मूत्र त्याग
पांच प्राण में अपान वायु के द्वारा शरीर के सिस्टम चलते हैं।
रात को सुलाना
हमें सुलाने वाली शक्ति भी परमात्मा की है!
जब वह शक्ति शरीर से निकल जाती है, तब हम अचेत हो जाते हैं! पानी की एक बूंद भी अंदर नहीं जाती!
5 प्रकार के प्राण – शरीर के असली नियंत्रक
प्राण (छाती क्षेत्र) सांस लेना, हृदय की धड़कन, जीवन शक्ति का प्रवाह
अपान (नाभि के नीचे) मल-मूत्र त्याग, प्रसव, नीचे की ओर शक्ति का संचालन
व्यान (पुरे शरीर में) रक्त संचार, नसों में शक्ति का प्रवाह, संतुलन बनाए रखना
उदान (गला और ऊपर) बोलना, डकार, ऊपर की ओर शक्ति का प्रवाह
समान (नाभि क्षेत्र) पाचन, भोजन को शक्ति में बदलना, संतुलन बनाना
इन सभी प्राणों को शक्ति देने वाले एक ही हैं – परमात्मा!
सामवेद केन उपनिषद क्या कहता है?
आंखों की रोशनी
उनकी दी हुई ज्योति से दिखता है। वह शक्ति खींच लें तो तुरंत अंधकार छा जाएगा।
कानों की श्रवण शक्ति
उनकी शक्ति से सुनते हैं। शक्ति खींच लें तो कान रहते हुए भी कुछ सुनाई नहीं देगा।
मन की विचार शक्ति
उनकी शक्ति से मन में विचार आते हैं। शक्ति खींच लें तो मन लॉक हो जाएगा, विचार बंद हो जाएंगे।
बुद्धि और चेतना
उनकी शक्ति से बुद्धि में चेतन है। गीता 15.15 – "मैं ही याददाश्त हूं और मैं ही विस्मृति हूं"।
याददाश्त और विस्मृति
जो याद है उनकी माया शक्ति से याद है। एक दिन वह सब भुला देंगे।
अहंकार क्या है?
अहंकार केवल एक भ्रम है – "मैं कर रहा हूं" इसका भ्रम ही अहंकार है!
रस्सी को सर्प समझना
अंधेरे में रस्सी को सर्प समझना जैसा मात्र भ्रम है।
वैसा ही अहंकार
वैसे ही "मैं कर रहा हूं" का भ्रम अहंकार है।
जब तक परम शक्ति का बोध नहीं होगा, यह भ्रम (अहंकार) नहीं जाएगा!
अहंकार क्या करता है?
• मैं सो रहा हूं, मैं उठ रहा हूं, मैं खा रहा हूं, मैं पी रहा हूं...
• कोई भगवान नहीं, जो कुछ है मैं हूं!
• इंदिय, मन, बुद्धि सब इसे अपना मालिक मान लेते हैं।
• यही अहंकार जीव को संसार में बांध देता है।
जब परमात्मा अपनी शक्ति खींचते हैं – अवस्थाएं
सामान्य अवस्था
सारी शक्तियां सक्रिय
कोमा अवस्था
चेतन शक्ति कम, सांस चलती है पर होश नहीं
अचेत अवस्था
सांस भी धीमी, शरीर शून्य होता जा रहा है
मृत्यु अवस्था
सारी शक्तियां पूरी तरह से खिंच जाती हैं
हमारी कोई भी ताकत अपनी नहीं है – सब उधार की शक्ति है!
अंत:करण में एक शैतान का जन्म हो गया –
"मैं-मैं" का शैतान, रावण!
इसने बुद्धि पर कब्जा क्रिया और अपने को ही सम्राट घोषित कर दिया!
अहंकार में रहने वाला
• हमेश्छ डर, चिंता, तनाव में रहता है।
• दुख, हानि, अपमान से टूट जाता है।
• स्वार्थ, क्रोध, लोभ से भरा रहता है।
• जन्म-मृत्यु के चक्कर में पिसता रहता है।
• तभी लाख योनियों में भटकता है।
VS
शरणागति करने वाला
• निर्भय, निश्चिंत, आनंद में रहता है।
• भगवान की कृपा से सब कुछ सहज होता है।
• इंदिय, मन, बुद्धि भगवान के सेवक बनते हैं।
• कर्म करता है पर कर्तापन नहीं होता।
• जन्म-मृत्यु के चक्कर से मुक्त होता है।
शरणागति का अर्थ – अपनी सत्ता छोड़कर परम सत्ता को स्वीकार करना!
माया क्या करती है?
अपनी शक्ति को छिपाती है
• वास्तविक को छुपाती है।
• मिथ्या को सत्य दिखाती है।
• प्राणी को झूठी प्रतिति करवाती है।
फल क्या होता है?
• जीव परमात्मा को भूल जाता है।
• अपने अस्तित्व को भूल जाता है।
• खुद को ही कर्ता मान लेता है।
• यही बंधन का कारण है।
रावण (अहंकार) मरा = मुक्ति
रावण (अहंकार) जिंदा = जन्म-मृत्यु का चक्र!
अंतिम संदेश
• जो कुछ भी है, परम शक्ति से है!
• उन्हें भूलना ही अहंकार है!
• अहंकार ही बंधन है, शरणागति ही मुक्ति है!
• उनकी शक्ति को जानो, स्वीकार करो, समर्पित हो जाओ!
• तभी जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिलती है!
हमारा संकल्प
"मैं नहीं, तू ही सब कुछ है!"
"श्रीकृष्ण: शरणं मम"
गीता का अमृत वचन
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

हम कुछ भी नहीं करते – सब परमात्मा की शक्ति से हो रहा है!
सत्य को जानो, अहंकार को त्यागो, परमात्मा को पहचानो!
जीवन की हर क्रिया – परमात्मा की शक्ति से
सुबह उठना
हम उठ नहीं सकते, जब तक परमात्मा हमें जगाते नहीं।
खाना खाना
हम खा नहीं रहे, परमात्मा अपनी शक्ति से खिला रहे हैं।
पानी पीना
हमारे पास ताकत नहीं पांनी को अंदर ले जाने की, वह शक्ति परमात्मा की है।
शरीर चलना
हम चल नहीं रहे, परमात्मा की शक्ति से हमारे पैर चल रहे हैं।
मल-मूत्र त्याग
अपान वायु (परम शक्ति) के बिना मल-मूत्र बाहर नहीं निकलता।
रात को सुलाना
हम सो नहीं सकते, परमात्मा ही हमें नींद में ले जाते हैं।
परमात्मा शरीर के अंदर क्या-क्या संचालित करते हैं?
पाँच प्रकार के प्राण
प्राण – सांस लेना
अपान – मल-मूत्र त्याग
व्यान – शरीर में संचार
उदान – ऊपर की क्रियाएं
समान – पाचन शक्ति
ये पाँचों वायु परमात्मा की शक्ति से चलते हैं।
इन्द्रियों की शक्ति
आँखों की रोशनी
कानों की सुनने की शक्ति
जीभ की स्वाद शक्ति
त्वचा की स्पर्श शक्ति
नाक की घ्राण शक्ति
इन सबकी शक्ति परमात्मा देते हैं।
मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार
• मन में विचार करने की शक्ति
• बुद्धि में निर्णय लेने की शक्ति
• याददाश्त और विस्मृति
• अहंकार – "मैं करता हूं" का भ्रम
गीता 15.15 – "मैं ही स्मरण हूं और मैं ही विस्मृति हूं"
नियंत्रण शक्ति
• हृदय की धड़कन
• सांस का चलना
• रक्त का संचार
• शरीर का तापमान
• पाचन और चयापचय
सब परमात्मा की अदृश्य शक्ति से।
चेतना और जीवन
परमात्मा के रहते शरीर चेतन है। जब शक्ति बाहर निकले, शरीर अचेत हो जाता है या मृत हो जाता है।
मृत्यु क्या है?
जब परमात्मा अपनी शक्ति बाहर निकाल लेते हैं, तो –
• पानी गले से अंदर नहीं जाता।
• शरीर अचेत हो जाता है।
• सारी क्रियाएँ बंद हो जाती हैं।
अहंकार क्या है? केवल एक भ्रम!
"मैं करता हूं" – यही अहंकार है।
जैसे अंधेरे में रस्सी को सर्प समझ लेना, वैसे ही अज्ञान में "मैं कर्ता हूं" मान लेना एक भयानक भ्रम है।
अहंकार (रावण) का साम्राज्य
"मैं कर रहा हूं, मैं खा रहा हूं, मैं पी रहा हूं, मैं सो रहा हूं"
• कोई भगवान नहीं!
• यही रावण अंतःकरण में बैठकर दादागिरी करता है।
• इन्द्रिय, मन, बुद्धि – सब इसके गुलाम बन जाते हैं।
अहंकार का खेल – कैसे कब्जा करता है हमारे पूरे सिस्टम पर?
1. सत्य को भूलना
हम परमात्मा को भूल जाते हैं, यही गलती शुरू होती है।
2. 'मैं' का जन्म
अंतःकरण में 'मैं' का बीज अंकुरित होता है।
3. रावण का राज्य
अहंकार रावण बनकर राजसिंहासन पर बैठता है।
4. इन्द्रियों पर कब्जा
इन्द्रिय, मन, बुद्धि, चित्त – सब गुलाम बन जाते हैं।
5. झूठा कर्तापन
'मैं कर रहा हूं' यह झूठा भाव पैदा करता है।
6. जन्म-मृत्यु का चक्कर
अहंकार जीव को 84 लाख योनियों में घुमाता है।
अहंकार के परिणाम
• दुख, चिंता, भय, तनाव
• रोग, शोक, मोह, क्रोध
• असंतोष और असफलता
• जन्म-मृत्यु का अंतहीन चक्र
• परमात्मा से दूराव
समाधान क्या है?
✓ सत्य को जानो – सब परमात्मा की शक्ति से हो रहा है।
✓ अहंकार को पहचानो – यह केवल एक भ्रम है।
✓ समर्पण करो – मैं नहीं, तू ही करता है प्रभु!
✓ नाम जपो – हरे कृष्ण, हरे राम
✓ स्मरण रखो – वही उठाता, चलाता, खिलाता, सुलाता और मुक्त करता है।
अहंकार को कैसे काटें?
विवेक – सत्य और असत्य को पहचानो
वैराग्य – माया से दूरी बनाओ
भक्ति – परमात्मा से प्रेम करो
सत्संग – संतों की संगति करो
समर्पण – अपना सब कुछ उन्हें अर्पित करो
शास्त्र प्रमाण
• गीता 15.15 – "मैं ही स्मरण हूं और मैं ही विस्मृति हूं"
• गीता 3.27 – "प्रकृति के गुण ही सब कर्म कर रहे हैं"
• गीता 9.22 – "मैं अपने भक्तों का योगक्षेम उठाता हूं"
• केन उपनिषद – "उसकी शक्ति से ही इन्द्रिय कार्य करते हैं"
भगवद गीता
सार वचन
हम कुछ भी नहीं कर सकते, परमात्मा की शक्ति से ही सब कुछ संभव है। उन्हें जानो, मानो और समर्पित हो जाओ – यही जीवन का परम उद्देश्य है।
अंतिम संदेश
अहंकार रूपी रावण को मारो, समर्पण रूपी राम को अपनाओ, तभी जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर परम शांति को पाओगे।
याद रखो – "मैं नहीं, तू ही सब कुछ है!"
श्रीकृष्णः शरणं मम
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

पहले पोस्ट 01
मन के दो सबसे बड़े जिगरी दोस्त
1. आँखें | 2. वाणी
मन इन दोनों के बिना एक पल भी नहीं रह सकता।
इस जगत का सबसे बड़ा खिलाड़ी मन है, लेकिन इसका सबसे बड़ा जिगरी दोस्त कौन है?
मन
मन की सारी इच्छाएँ इन दोनों के द्वारा पूरी होती हैं।
आँखें = इनपुट मित्र
वाणी = आउटपुट मित्र
मन की इच्छाएँ
परिवार
धन
सम्मान
संपत्ति
राजनीति
YouTube
खेलकूद
खाना खजाना
फिल्म
संगीत
पढ़ाई लिखाई
नाच कूद
पढ़ाई लिखाई
1. आँखें
इनपुट मित्र
2. वाणी
आउटपुट मित्र
आँखें कहती है मन से –
"मेरे पास देखने की शक्ति है, तेरे पास नहीं। मैं तुझे संसार दिखाऊंगा, तेरी इच्छाएं पूरी करूंगा।"
वाणी कहती है मन से –
"तेरी बातों, विचारों, भावों को मैं बाहर प्रकट करूंगा, तुझे दुनिया से जोड़ूंगा।"
अगर आँखें और वाणी दोनों छोड़कर चली जाएं – तो मन की मौत है। इन्हीं दोनों के सहारे मन जीवन जीता है।
दुनिया का सारा प्रपंच आँखों के माध्यम से मन के अंदर जाता है। आँखें केवल देखती है, तृप्ति मन को मिलती है।
जैसे नाखून खुजली शांत करने में सहायक है, आँखें मन की इच्छाओं को शांत करने में सहायक है।
आँखें संसार को मन के लिए तो लाती है। वाणी मन को दुनिया से जोड़ती है।
मन अपनी बात, विचार, भावना, योजना, ज्ञान – सब वाणी के द्वारा बाहर प्रकट करता है
वाणी मन की आज्ञा का पालन करती है, अपने से कुछ नहीं करती।
मन में इच्छा कहां से आती है ? – अनंत जन्मों के जमा संस्कार (चित्त) से
चित्त = अनंत जन्मों का जमा खाता (संस्कारों का भंडार)
त्रिगुणात्मक प्रकृति (सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण) इन संस्कारों को पकड़े रहती है।
यही इच्छा मन में लहर बनकर उठती है और मन आँख और वाणी की मदद से उसे पूरा करता है।
ऊपर से नीचे तक की व्यवस्था
8. ब्रह्म — सबसे ऊपर, सर्वव्यापक आधार
7. आत्मा — साक्षी, शुद्ध, चेतन
6. त्रिगुणात्मक प्रकृति (सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण)
5. चित्त — संस्कारों का भंडार
4. अहंकार — मैं-मेरा भाव
3. बुद्धि — निर्णय करने वाली शक्ति
2. मन — इच्छा करने वाला
1. आँखें — देखने की शक्ति
वाणी — बोलने की शक्ति
चित्त (संस्कारों का भंडार)
इच्छा की लहर
मन (इच्छा करता है)
आँखें (देखती है)
संसार को अंदर लाती है
वाणी (बोलती है)
विचारों को बाहर प्रकट करती है
ऊपर वाले की शक्ति से नीचे वाले काम करते है, नीचे वाले की शक्ति से ऊपर वाले नहीं।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

अहंकार के 30+ लक्षण
इनमें से एक भी लक्षण यदि आपमें है, तो समझ लीजिए अहंकार जीवित है, मरा नहीं है!
अहंकार वह झूठी पहचान है, जो हमें वास्तविक सत्य (मैं आत्मा हूं) से दूर करके "मैं यह शरीर हूं, मैं कर्ता हूं, मैं भोगता हूं" का भ्रम देता है। यही बंधन का कारण है और यही दुखों का जड़ है।
1. गाली से दुख होना
कोई कुछ कह दे तो अंदर झटका लगना, मन खिन हो जाना।
2. निंदा करना
दूसरों की बुराई करना, दोष निकालना, यह अहंकार का सूक्ष्म रूप है।
3. प्रशंसा की इच्छा
हमेशा लोग हमारी तारीफ करें, इससे सुख की अपेक्षा रखना।
4. अपमान सहन न होना
थोड़ी सी बात पर अपमान महसूस करना, बर्दाश्त न कर पाना।
5. मैं सही हूँ की भावना
हर सिथति में अपने आप को सही सिद्ध करना, जिद करना।
6. अपनी राय थोपना
दूसरों पर अपनी सोच, विचार, मत थोपना और न मानने पर क्रोध करना।
7. क्रोध जल्दी आना
बात-बात पर गुस्सा आना, नियंत्रण खो देना।
8. बदला लेने की भावना
किसी ने कुछ कह दिया या किया, तो मन में बदला रखने की भावना।
9. तुलना करना
दूसरों से अपनी तुलना कर स्वयं को श्रेष्ठ या हीन मानना।
10. श्रेय लेना
किसी भी कार्य का पूरा श्रेय स्वयं लेना, दूसरों को न देना।
11. दूसरों की सफलता से जलना
किसी की उन्नति देखकर ईर्ष्या, जलन और मन खराब होना।
12. दंभ / दिखावा करना
अपने ज्ञान, धन, भक्ति, त्याग आदि का दिखावा करना।
13. अपने ज्ञान पर अभिमान
शास्त्र, ज्ञान, डिग्री, अनुभव पर घमंड करना।
14. अपनी भक्ति पर गर्व
मैं बड़ा भक्त हूँ, मैं ज्यादा जाप करता हूँ – यह सोचना।
15. त्याग का अहंकार
मैंने इतना त्याग किया, मैंने इतना कष्ट सहा – यह भावना।
16. अपनी साधना पर गर्व
मैं ज्यादा ध्यान करता हूँ, बड़ा साधक हूँ – यह अहंकार।
17. सेवा का अभिमान
मैंने इतना सेवा किया, मेरे जैसा सेवक कोई नहीं।
18. धन का अहंकार
मेरे पास इतना धन है, धनवान हूँ – यह भावना।
19. सुंदरता का अहंकार
मैं सुंदर/सुंदरी हूँ, मुझसे अच्छा कोई नहीं।
20. जाति/कुल का अभिमान
मैं उच्च कुल, जाति या परिवार से हूँ – यह भावना।
अहंकार क्या है?
अहंकार वह मिथ्या धारणा है जिसमें जीव शरीर, मन, बुद्धि और इंद्रियों से जोड़कर कर्ता, भोक्ता और मालिक लगता है। यही बंधन का कारण है।
अहंकार = "मैं" + "मेरा"
मैं शरीर हूँ
मैं भोगता हूँ
मैं करता हूँ
सब मेरा है
21. पद का अहंकार
मेरे पास पद है, लोग मेरा सम्मान करते हैं – यह भावना।
22. परिवार का गर्व
मेरा परिवार श्रेष्ठ है, हमारे जैसा कोई नहीं।
23. नियंत्रण की चाह
सब कुछ मेरे अनुसार हो, सब मेरे नियंत्रण में हो।
24. असहिष्णुता
दूसरों की बात, विचार, आदतें सहन न कर पाना।
25. स्वार्थी होना
हमेशा अपना हित देखना, केवल अपने लिए जीना।
26. मान-सम्मान की भूख
हमेशा लोग सम्मान दें, आदर करें – इसकी चाह।
27. खुद को बड़ा समझना
मैं दूसरों से बड़ा, ज्ञानी, श्रेष्ठ या योग्य हूँ।
28. पश्चाताप न होना
गलती करने पर भी पछतावा न होना, अपने गलती को सही ठहराना।
29. आलोचना न सहना
कोई सुधार की बात कहे तो बुरा मानना, विरोध करना।
30. अपनी बात मनवाना
जिद करके अपनी बात मनवाना, नहीं मानने पर नाराज होना।
31. प्रसिद्धि की लालसा
लोग मुझे पहचानें, मेरा नाम हो – यह चाह।
32. आलस्य और टालमटोल
काम न करना, टालना और फिर बहाने बनाना।
33. इंद्रिय भोगों में आसक्ति
भोग-विलास, सुख-सुविधाओं में लिप्त रहना।
34. परिणाम की चिंता
कर्म में नहीं, फल में आसक्ति और चिंता करना।
35. भय और असुरक्षा
खोने का डर, असफलता का डर, भविष्य की चिंता।
36. भगवान को भूल जाना
सब कुछ करते हुए भी भगवान को न मानना, उनकी सता को न स्वीकारना।
अहंकार से मुक्त होने के उपाय
• सदा आत्मचिंतन करें – मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं।
• सदा भगवान की शरण लें और उनके प्रति समर्पित रहें।
• निंदा, तुलना, क्रोध, लोभ, मोह से बचें।
• सेवा, भक्ति, सत्संग और नाम-स्मरण करें।
• 'मैं' और 'मेरा' छोड़कर सब कुछ भगवान का मानें।
अहंकार छोड़ने के लाभ
✓ मन की शांति मिलती है।
✓ भक्ति में स्थिरता आती है।
✓ भगवान का साक्षात्कार संभव होता है।
✓ जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्ति मिलती है।
✓ जीवन सफल और आनंदमय बनता है।
अहंकार जीवित है तो दुःख निश्चित है, अहंकार मरा तो मुक्ति निश्चित है!
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

त्रिगुणात्मक मायाजाल का पूरा विस्तार

सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण – तीनों का जाल और तीनों प्रकार का अहंकार

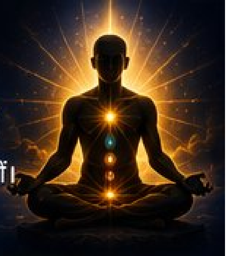

यह सम्पूर्ण संसार भगवान की त्रिगुणमयी माया के जाल में फँसा हुआ है। ब्रह्मा से लेकर कीट तक कोई भी इससे बाहर नहीं। बड़े-बड़े ऋषि, मुनि, योगी, तपस्वी, साधु-संत, ज्ञानी और भक्त भी माया की चपेट में आते हैं। जब तक त्रिगुणों से उगर नहीं उठते और भगवान की शरण में नहीं जाते, तब तक जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति नहीं।

1. त्रिगुण क्या है?

प्रकृति (माया) तीन गुणों से बनी है, जिन्हें त्रिगुण कहते हैं –

सतोगुण (सत्त्व) | रजोगुण (रजस) | तमोगुण (तमस)

ये तीनों गुण मिलकर ही इस सम्पूर्ण संसार का संचालन करते हैं। कोई भी जीव इन तीनों से अछूता नहीं, बस किसी एक गुण की प्रधानताह हहोती है।

त्रिगुणात्मक मायाजाल

2. त्रिगुणों का स्रोत और प्रभाव

भगवान की माया (प्रकृति) से ये तीन गुण उत्पन्न होते हैं। ये जीव की बुद्धि, मन, कर्म, स्वभाव, विचार, आहार, व्यवहार, भाग्य और गति को नियंत्रित करते हैं।

माया (प्रकृति) → त्रिगुण → जीव (बंधन)

- सत्व
- रजस
- तमस

3. सतोगुण (सत्त्व) – प्रकाश का गुण

स्वभाव – शुद्धता, ज्ञान, शांति, संतुलन, पवित्रता

लक्षण
- मन में शांति और संतोष
- सत्य, धर्म, दया, क्षमा
- स्वाध्याय, तप, साधना
- ईश्वर भजन, सेवा, दान
- पवित्र आहार-विहार
- ज्ञान की वृद्धि

बन्धन कैसे करता है?
- सुख का अहंकार देता है
- ज्ञान का अहंकार देता है
- पुण्य का घमंड देता है
- "मैं भक्त हूँ, मैं ज्ञानी हूँ"
  मैं साधु हूँ, मैं तपस्वी हूँ"
- यह सब सूक्ष्म अहंकार है

किसे फँसाता है?
ऋषि, मुनि, साधु, संत, योगी, तपस्वी, ज्ञानी, धर्मात्मा, भक्त, विद्वान

परिणाम (अगर फँसे रहे)
स्वर्ग की प्राप्ति, पुनः जन्म
- पुण्य के बाद पुण्य क्षय और पतन

4. रजोगुण (रजस) – क्रिया का गुण

स्वभाव – चेष्टा, इच्छा, कामना, आसक्ति, स्पर्धा

लक्षण
- हर समय कुछ पाने की चाह
- धन, यश, पद, मान, प्रतिष्ठा
- स्पर्धा, क्रोध, लोभ, मोह
- भोग-विलास की इच्छा
- असंतोष, बेचैनी, चिंता
- कर्म में आसक्ति, फल की इच्छा

बन्धन कैसे करता है?
- कर्म में बांधता है
- फल की इच्छा देता है
- लोभ और वासना बढ़ाता है
- "मैं कर्ता हूँ, मैं भोगता हूँ"
- मेरा धन, मेरा परिवार, मेरी सफलता

किसे फँसाता है?
व्यापारी, उद्योगपति, नेता, अधिकारी, गृहस्थ, कामी, महत्वाकांक्षी लोग

5. तमोगुण (तमस) – अज्ञान का गुण

स्वभाव – अज्ञान, आलस्य, प्रमाद, मोह, हिंसा

लक्षण
- आलस्य और निद्रा
- अज्ञान, मूर्खता
- मद्यपान, मांसाहार
- हिंसा, क्रूरता, झूठ
- नकारात्मक विचार
- प्रमाद, लापरवाही

बन्धन कैसे करता है?
- अज्ञान में रखता है
- पाप कर्म करवाता है
- नीच योनि में गिराता है
- "मैं शरीर ही हूँ"
- 'मुझे कुछ समझ नहीं
- 'बस खाओ पियो मौज करो"

किसे फँसाता है?
नशेड़ी, हिंसक, क्रूर, मूर्ख, चोर, दुराचारी, पापी, अधर्मी, अत्याचारी लोग

सतोगुणी अहहंकार (सात्विक अहंकार)

'मैं श्रेष्ठ हूँ क्योंकि मैं...
- मैं श्रेष्ठ हूँ
- मैं ज्ञानी हूँ
- मैं साधु/संत हूँ
- मैं तपस्वी हूँ
- मैं त्यागी हूँ
- मैं सेवा करता हूँ
- मैं शुद्ध आहार लेता हूँ
- मैं धर्मात्मा हूँ

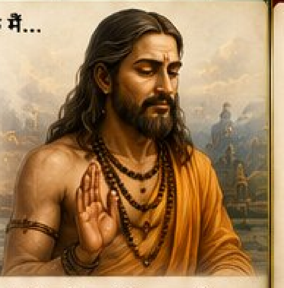

यह सब सूक्ष्म अहंकार है जो मोक्ष के मार्ग में बाधक है।

रजोगुणी अहंकार (राजसिक अहंकार)

"मैं श्रेष्ठ हूँ क्योंकि मेरे पास...
- अधिक धन है
- बड़ा पद/प्रतिष्ठा है
- मैं शक्तिशाली हूँ
- मेरा परिवार बड़ा है
- मेरे पास सब कुछ है
- मैं सबसे आगे हूँ
- लोग मुझे मानते हैं
- मेरी बुद्धि, मेरा ज्ञान

[illegible]

तमोगुणी अहहंकार (तामसिक अहंकार)

"मैं जैसा हूँ वैसा ही सही...
- मैं शरीर ही हूँ
- मुझे कुछ नहीं पता
- मैं पाप करता हूँ तो क्या हुआ
- जीवन का मजा ही सब कुछ है
- धर्म-कर्म सब धोखा है'
- पैसा हो तो सब है
- मुझे किसी की परवाह नहीं
- मैं जैसा हूँ, सबसे अलग हूँ

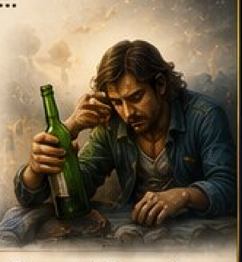

[illegible]

6. तीनों गुणों में फँसे हुए जीव की स्थिति

- जन्म से मृत्यु तक गुणों का प्रभाव
- मन, बुद्धि, चित, अहंकार – सब गुणों के अधीन
- गुण बदलते रहते हैं, पर बंधन बना रहता है
- कभी सत्व की ओर, कभी रजस की ओर, कभी तमस की ओर गिरता है
- जब तक 'गुणातीत" नहीं होता, मुक्ति नहीं

7. गुणातीत कैसे बनें?

- ✓ भगवान की शरण में जाएँ
- ✓ निष्काम भक्ति करें
- ✓ "मैं कर्ता हूँ" भाव छोड़ें
- ✓ समत्व भाव रखें (गीता 14.24)
- ✓ सत्संग करें, नाम जप करें
- ✓ ज्ञान और भक्ति से माया से ऊपर उठें

8. अंतिम सत्य

सतोगुण सुख देता है,
रजोगुण दुख देता है,
तमोगुण अंधकार देता है,
परंतु तीनों बंधन देते हैं।

मुक्ति केवल गुणातीत होने और भगवान की शरण आने से है।

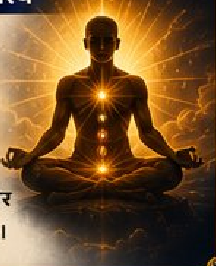

तीनों गुणों के आहार

सात्विक आहार	राजसिक आहार	तामसिक आहार
ताजा, शुद्ध, हल्का	तीखा, खट्टा, नमकीन	बासी, दुर्गंधयुक्त
सात्विक भोजन	अधिक तला-भुना	मांस, मद्य, नशा
फल, दूध, घी, शाकाहार	उत्तेजक भोजन	अत्यधिक भारी
आयु, बल, स्वास्थ्य बढ़ाए	रोग, बेचैनी बढ़ाए	आलस्य, रोग, प्रमाद बढ़ाए

तीनों गुणों की गति

- सतोगुण → स्वर्ग लोक
- रजोगुण → मनुष्य लोक
- तमोगुण → नरक / नीच योनियाँ

तीनों गुणों की पहचान

सतोगुण की पहचान	रजोगुण की पहचान	तमोगुण की पहचान
शांत चेहरा, सात्विक विचार, धैर्य, क्षमा, संतोष, सेवा भावना	चंचल मन, महत्वाकांक्षा, लोभ, क्रोध, स्पर्धा, असंतोष	आलस्य, निद्रा, अज्ञान, हिंसा, क्रूरता, नशा, असंवेदनशीलता

निष्कर्ष: जब तक त्रिगुणात्मक मायाजाल से पार नहीं होंगे, तब तक जन्म-मृत्यु का चक्र चलता रहेगा।

शरणागति ही एकमात्र उपाय है। श्रीकृष्णः शरणं मम

सभी से प्यार से बात किया करो

चाहे सामने वाले के मन में आपके लिए कितना भी ज़हर भरा हो, विष भरा हो! परंतु कभी उसके साथ गुस्से से बात मत करना, भूल से भी नहीं, वरना परमात्मा तुम्हारी भक्ति स्वीकार नहीं करेंगे।

जिनके हृदय में संपूर्ण प्राणियों के लिए प्रेम है, उन्हीं को परमात्मा गले लगाते हैं। उस परमात्मा को प्रेम चाहिए, आपके रोम-रोम में किसी से नफरत नहीं, किसी से गुस्सा नहीं!

चाहे कोई आपके साथ मारने की साजिश करे, षड्यंत्र रचे, फिर भी भक्तों अपने मन में उनके लिए प्रेम रखना, तब श्री कृष्ण तुमको अपने पास रखेंगें!

लेख- श्री राधे कृष्ण परात्पर व्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

धन और ज्ञान
एक साथ नहीं रह सकते

जब जीवन में धन आता है तो बुद्धि का नाश होता है! और जब धन का नाश होता है तब सोई हुई बुद्धि जागती है! धन और ज्ञान दोनों एक जगह नहीं रह सकते जैसे दिन और रात! जिसके पास धन आ गया तो बुद्धि का नाश होगा और जब जीवन से धन जाएगा तब ब्रह्म का ज्ञान होगा! धन संपत्ति भगवान नारायण की महा भीषण माया का पर्दा है जो जीव के ज्ञान को अज्ञान से ढक देती है! एक जाता है तब दूसरा आता है जैसे कंपनी में शिफ्ट वाइस ड्यूटी!

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

मृत्यु के बाद क्या साथ जाता है?
गीता 15.8 के अनुसार
सबसे बड़ा रहस्य
मृत्यु के बाद क्या साथ जाता है?
कर्म
धर्म
उपवास
दान
यह सब साथ नहीं जाता!
तो फिर क्या साथ जाता है?
आंतरिक गुप्त कोडिंग
अंदर-अंदर चल रहे
लुकाछिपी गुप्त शाखा
यही साथ जाता है!
भगवान श्री कृष्ण कहते हैं – गीता अध्याय 15 श्लोक 8
शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ।
गृहींत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥8॥
सरल अर्थ
जीव जब किसी शरीर को प्राप्त करता है,
और जब उससे निकल्लता है, तब वह
इन इंद्रियों, मन और बुद्धि को साथ लेकर
वैसा ही जाता है जैसे वायु सुगंग्ध को
अपने साथ ले जाता है!
यानी जो अंदर-अंदर चलता है – सोच, भावना, इच्छा, वासना, स्वभाव, संस्कार, गुप्त इच्छाएं –
यही साथ जाता है, ना कि पूज़ा-पाठ, दान-धर्म, उपवास, कर्मकांड!
एक परिवार – सब अलग-अलग क्यों?
पिता
इंस्टाग्राम पर Reels देखना
कारण
पिता के आंतरिक डाटा (संस्कार) में संसार के प्रपंच का आकर्षण जमा है!
माता
यूट्यूब पर संत-महात्मा का प्रवचन सुनना
कारण
माता के आंतरिक डाटा (संस्कार) में भक्ति और सत्संग की रुचि जमा है!
बेटा – 1
पैसा-पैसा, बैंक बैलेंस, विज़नेस की चिंता
कारण
इसके आंतरिक डाटा (संस्कार) में धन और व्यापार का मोह जमा है!
बेटी – 1
सिलाई, डिज़ाइन, कपड़े सीखना
कारण
इसके आंतरिक डाटा (संस्कार) में यही रुचि पुराने जन्मों से जमा है!
बेटी – 2
किसी लड़के से चैटिंग, मैसेज, बातें
कारण
इसके आंतरिक डाटा (संस्कार) में कामवासना और आसक्ति जमा है!
बेटी – 3
भगवान का नाम जप, ध्यान, भक्ति
कारण
इसके आंतरिक डाटा (संस्कार) में भक्ति और नाम जार्यजमा है।
बेटा – 2
वेद, उपनिषद, गीता, शास्त्र अध्ययन
कारण
इसके आंतरिक डाटा (संस्कार) में ज्ञान और ब्रह्म की खोज जमा है!
– परमात्मा बाहर की क्रिया नहीं, अंदर की गुप्त क्रिया का साक्षी है और वही नोट करता है!
मृत्यु के समय – क्या होता है?
भगवान उस जीव के अनंत जन्मों के संचित डाटा (संस्कार) को उठाकर दूसरे शरीर में डाल देते हैं!
इंद्रियों, मन, बुद्धि नई मिलती हैं, परंतु डाटा (संस्कार) वही रहता है!
जैसे गंदे पानी वाली टंकी
साफ किए बिना नया नल लगाने से
नल से गंदा पानी ही आएगा!
चित्त क्या है?
हमारे अनंत जन्मों के संस्कार, वासनाएं, इच्छाएं, प्रवृत्तियां, स्वभाव – सब चित्त में Save रहते हैं!
यही हमारा आंतरिक कोड है!
अनंत जन्मों का संस्कार किसके अधीन है?
भगवान की त्रिगुणात्मक माया –
सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण
के अधीन होकर संस्कार कार्य करते हैं!
सतोगुण (ज्ञान, शांति, सत्य, भक्ति)
रजोगुण (कर्म, इच्छा, लोभ, आसक्ति)
त्रिगुणात्मक माया
तमोगुण (अज्ञान, क्रोध, आलस्य, भोग)
जीव की यात्रा का चक्र
परब्रह्म (साक्षी) → त्रिगुणात्मक माया → अनंत जन्मों के संस्कार (चित्त) → इंद्रिय, मन, बुद्धि → कर्म → कर्मफल (सुख-दु:ख) → पुनर्जन्म (नया शरीर)
इसी चक्र में जीव घूमता रहता हैं जब तक कि भगवान भक्ति और ज्ञान से मोक्ष प्राप्त न हो जाए!
॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
राधा राधा राधा राधा राधा राधा

मृत्यु के बाद क्या साथ जाता है?

गीता 15.8 के अनुसार – सबसे बड़ा रहस्य

धर्म, कर्म, उपवास, दान नहीं – आंतरिक गुप्त कोडिंग साथ जाती है!

✗ क्या साथ नहीं जाता?

कर्म | धर्म | उपवास | दान

ये सब कर्मों में एंट्री करवाते हैं, फल दिलाते हैं

पर साथ नहीं जाते!

✓ क्या साथ जाता है?

जो अंदर-अंदर चल रहा है,
जिसे कोई नहीं देखता,
वही आंतरिक गुप्त कोडिंग,
संस्कार, स्वभाव, वासनाएँ,
इन्हीं के साथ जाती है!

भगवान कहते हैं – गीता अध्याय 15 श्लोक 8

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्॥8॥

भावार्थ –
जीव जब किसी शरीर को प्रप्त करता है,
और जब उससे निकलता है, तब वह
इन इन्द्रियों, मन और बुद्धि को साथ लेकर
वैसे ही जाता हैं जैसे वायु सुगंध को
अपने साथ ले जाता है।

समझिए – यह गुप्त कोडिंग क्या है?

जीब सुबह से रात तक इन्द्रियों, मन और बुद्धि से जो कुछ भी अंदर-अंदर सोचता, देखता, सुनता, करता है, वही सब चुपचाप चित्त में Save होता रहता है। यह सबाको नहीं दिखता, लेकिन परमात्मा ब्रह्म साक्षी सब नोट करते हैं!

एक परिवार का उदाहरण – सब एक घर में, पर अंदर की प्रवृत्ति अलग-अलग!

मिता	माता	बेटा – 1	बेटी – 1	बेटी – 2	बेटी – 3	बेटा – 2
Reel देख रहा है, मन दुनिया के प्रपंच में डूबा है।	प्रेमानन्द बाबा जी का प्रवचन सुन रही है।	पैसा, हिसाब, बैंक, बिजनेस में मन लगा है।	सिलाई, डिजाइन, कपड़े सीखने में मन लगा।	लड़का-लड़की से चैट, मैसेज, चक्कर में मन।	भगवान का नाम जप, माला जप में मन लगा।	वेद, उपनिषद, गीता, ज्ञान पढ़ने में मन।
सूत्र कारण – इन्होने अनंत जन्मों का संस्कार यही जमा किया है।	सूत्र कारण – इन्होने अनंत जन्मों का संस्कार यही जमा किया है।	सूत्र कारण – इन्होने अनंत जन्मों का संस्कार पैसा-पैसा जमा किया है!	सूत्र कारण – इन्होने अनंत जन्मों का संस्कार यही जमा किया है!	सूत्र कारण – इन्होने अनंत जन्मों का संस्कार कामवासनाएँ जमा किया है।	सूत्र कारण – इन्होने अनंत जन्मों का संस्कार नाम जप जमा किया है।	सूत्र कारण – इन्होने अनंत जन्मों का संस्कार ज्ञान, शास्त्र जमा किया है।

ध्यान दें – परमात्मा फिशिकल क्रिया नहीं, अंदर चल रही आंतरिक क्रिया का लेखा रखते हैं!

चित्त क्या है?

हमारे अनंत जन्मों के
संस्कार, वासनाएँ, इच्छाएँ,
प्रतिक्रियाएँ, स्वभाव –
सब चित्त (आंतरिक मेमोरी)
में Save रहते हैं!
यही हमारा आंतरिक कोड है!

मृत्यु के समय क्या होता है?

भगवान (ईश्वर) जीव के अनंत
जन्मों के इस संचित डाटा (संस्कार)
को उठाकर दूसरे शरीर में डाल देते हैं!
इद्रियों, मन, बुद्धि नई मिलती हैं,
परंतु डाटा (संस्कार) वही रहता हैं!

इसी डाटा के अनुसार अगला शरीर,
परिस्थितियों और गति मिलती हैं!

क्यों नहीं छूटते क्रोध, वासना, लोभ?

क्योंकि ये सब अनंत जन्मों से हमारे
संस्कार में गहराई से जमा है!
हल्का-फुल्का नहीं, बहुत गहराई से!
मृत्यु के समय इन्हें त्यागे बिना चले जाते हैं,
इसलिए वही आगे जन्म में वापस आते हैं!

इसीलिए हर जन्म में हम
काम, क्रोध के शिकार होतो हैं!

मृत्यु के बाद प्रक्रिया कैसे होती है?

जीव का मृत्यु → → इंद्रियों, मन, बुद्धि के साथ डाटा को दूसरे शरीर में डालते हैं → वही अनंत जन्मों का जमा सेटअप अगले जन्म में सक्रिय हो जाता है → इसी के अनुसार इच्छाएँ, विचार, कर्म, स्वभाव चलता है → इसी के अनुसार कर्म फल और गति मिलती हैं

< त्रिगुणात्मक माया (सत्व, रज, तम) < अनंत जन्मों के संस्कार (चित्त) < इंद्रियों, मन, बुद्धि < कर्म = कर्म फल और गति

महत्वपूर्ण बातें

- दुनिया में कोई किसी का नहीं! प्रत्येक जीव अकेला आता है और अकेला जाता हैं!
- जीव केवल अपने अनंत जन्मों के संस्कार के वशीभूत है, किसी और के नहीं!
- भगवान का नाम, पुजा, भजन तब साथ जाता हैं जब मन दिन भर केवल भगवान में लगे!
- अंदर मस्ती, पैसा, वासना, क्रोध, लोभ, प्रपंच चल रहा है तो वही साथ जाएगा!
- जो भी अंदर चल रहा है, उसी के अनुसार आगे की स्थिति, जन्म और गति तय होती हैं!

सार

मृत्यु के बाद न धर्म, न कर्म, न उपवास, न दान साथ जाता हैं!
जो अंदर-अंदर लुका छुपी चल रहा है – वही साथ जाता हैं!
वही हमारा स्वभाव, संस्कार, गुप्त कोडिंग हैं!
इसी के अनुसार अगला जन्म, परिस्थितियों और गति होती हैं!

// हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे //

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव   राधा राधा राधा राधा राधा राधा

मृत्यु के बाद क्या साथ जाता है?

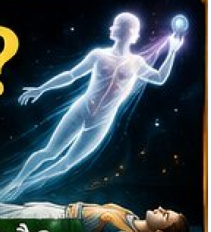

गीता 15.8 के अनुसार – सबसे बड़ा रहस्य

मृत्यु के बाद क्या साथ जाता है?

क्या कर्म, धर्म, उपवास, दान,
पुजा-पाठ, व्रत, भगवान का नाम?

✕ नहीं

ये सब साथ नहीं जाते,
इनका फल मिलता हैं
पर साथ नहीं जाते।

भगवान कह रहे हैं – गीता 15.8

शरीरं यादवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ।
गृहित्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाश्यात् ॥8॥

अर्थ:

जैसे वायु सुगथ को एक स्थान से
दूसरे स्थान ले जाती है, वैसे ही
जीवात्मा शरीर त्यागते समय इंद्रियों,
मन, बुद्धि और संस्कारों को साथ लेकर
दूसरे शरीर में जाती है।

तो फिर क्या साथ जाता है?

अंदर-अंदर जो लुका-छुपी (गुप्त कोडिंग)
चल रही है – वही साथ जाता है।

✔ यही हमारा स्वभाव,
यही हमारे अनंत जन्मों के
संस्कार, गुप्त कार्य, विचार,
वासना, इच्छाएँ – यही साथ जाते हैं।

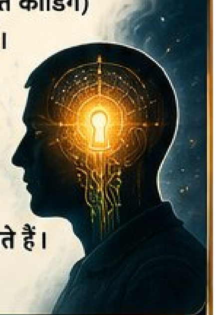

एक घर में सब अलग-अलग क्यों कर रहे हैं? – कारण: अपने-अपने अनंत जन्मों के संस्कार

पापा	मम्मी	बेटा-1	बेटी-1	बेटी-2	बेटी-3
रील देख रहा है घंटों डूबा रहता है।	प्रेमानंद बाबा का प्रवचन सुन रही है।	पैसा, बिजनेस, हिसाब-किताब इसी में लगा है।	सिलाई-कढ़ाई, कपड़े सीख रही है यूट्यूब देखकर।	मोबाइल पर किसी से चैटिंग, प्रेम प्रसंग।	आंखें बंद करके भगवान का नाम जप रही है।
(संस्कार: प्रपंच, मनोरंजन, दुनिया के आकर्ण्ण)	(संस्कार: भक्ति, सत्संग, धार्मिक प्रवृत्ति)	(संस्कार: धन, व्यापार, लाभ-हानि का प्रपंच)	(संस्कार: कौशल, कला, रुचि विशेष)	(संस्कार: कामवासना, आसक्ति, आकर्ष्ण)	(संस्कार: भक्ति, नाम स्मरण, ईश्वर प्रेम)

बेटा-2

वेद, उपनिषद, गीता, शास्त्र
पढ़ रहा है, ज्ञान की खोज में।

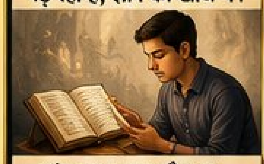

(संस्कार: ज्ञान, वैराग्य,
ब्रह्म की खोज)

ध्यान दें!

- परमात्मा बाहर की क्रिया नहीं, अंदर की गुप्त क्रिया का साक्षी है।
- जो अंदर-अंदर चल रहा है – वही रजिस्टर में नोट होता है।
- हर विचार, हर इच्छा, हर भाव – सब चित्त में SAVE हो रहा है।
- यही आपका स्वभाव बनता है, यही आपके साथ जाता है।

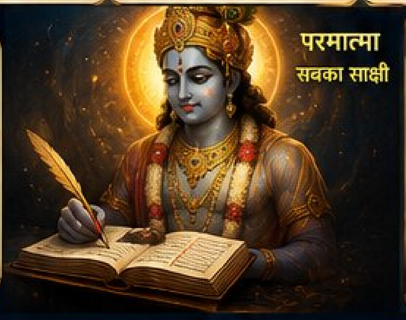

क्या साथ नहीं जाता?

- कर्म ✕
- धर्म ✕
- उपवास ✕
- दान ✕
- पूजा-पाठ ✕
- कर्मकांड ✕
- केवल दिखावा ✕
- अहंकार से किया सब ✕

सब यहीं छूट जाता है।

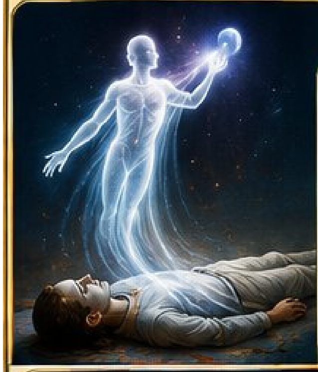

क्या साथ जाता है?

- ✔ जीवात्मा के अनंत जन्मों के संस्कार
- ✔ अंदर-अंदर किए गए गुप्त कार्य
- ✔ सोच, विचार, वासनाएँ, इच्छाएँ
- ✔ स्वभाव, रुचि, आसक्ति
- ✔ इंद्रिय, मन, बुद्धि का छिपा हुआ उपयोग (जैसा जीवन भर किया)
- ✔ यही आपका सेटअप (डाटा) है–यही साथ जाता हैं।

मृत्यु के बाद क्या होता है?

भगवान उस जीव के अनंत जन्मों
का पूरा डाटा (संस्कार, स्वभाव, वासनाएँ)
उठाकर दूसरे शरीर में डाल देते हैं।

नया शरीर मिलता है, पर डाटा वही रहता है।
इसी के अनुसार मन, बुद्धि, इंद्रियाँ कार्य करती हैं।
और जीव को उसी ह अनुसार कर्मफल भोगना पड़ता है।

चित्त क्या है?

जहां अनंत जन्मों के
संस्कार (डाटा) सुरक्षित
रूप से Save रहते हैं,
उसी का नाम है –

चित्त

जैसे: टंकी में भरा गंदा पानी
(संस्कार) – नल (मन, बुद्धि,
इंद्रियों) से वैसा ही पानी आएगा।

इसी प्रकार चक्र चलता है

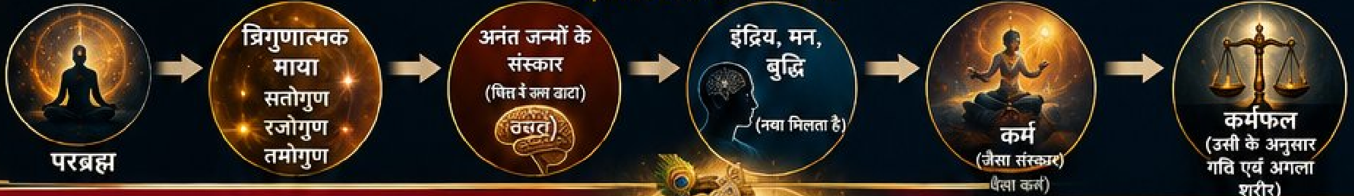

-सार बात-

- ★ संसार में कोई किसी का नहीं, जीव अकेला आता है और अकेला जाता है।
- ★ जीव अपने अनंत जन्मों के संस्कारों का बोझ लेकर चलता है।
- ★ बाहर का दिखावा नहीं, अंदर का स्वभाव ही साथ जाता है।
- ★ इसलिए अभी से अपने मन, बुद्धि, इंद्रियों को शुद्ध करो, भगवान में लगाओ।
- ★ सच्ची भक्ति वही है, जिसमें मन दिन-रात केवल भगवान में लगा रहे।

याद रखो!

आप जैसा सोचते हैं, जैसा भीतर करते हैं,
वैसा ही आपका भविष्य है।
अभी अपने चित्त को शुद्ध करो,
तभी अगला जन्म श्रेष्ठ होगा।

॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण,,, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥ राधा राधा राधा राधा राधा राधा

लेखक– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

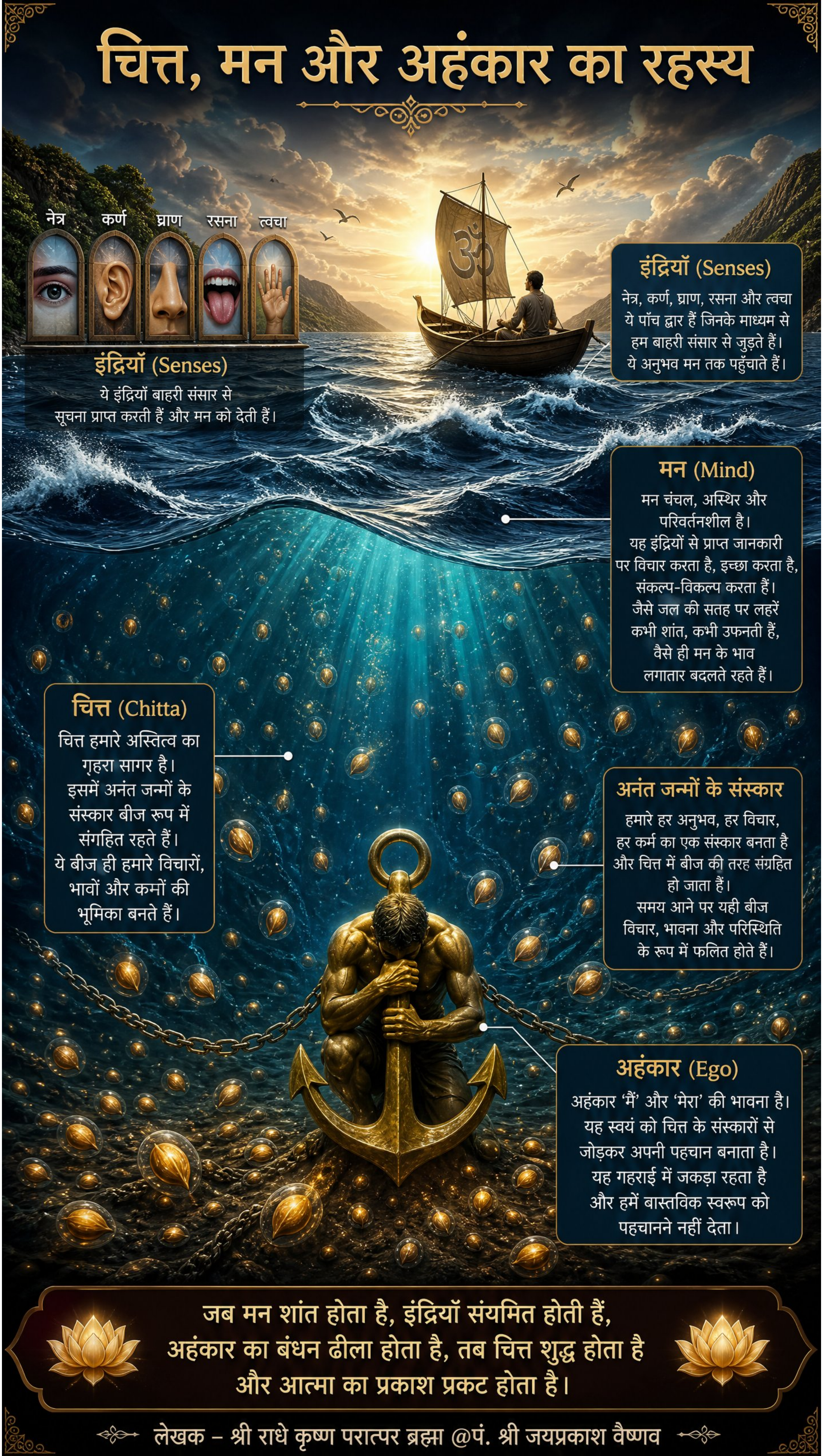

चित्त, मन और अहंकार का रहस्य
नेत्र
कर्ण
घ्राण
रसना
त्वचा
इंद्रियाँ (Senses)
ये इंद्रियाँ बाहरी संसार से
सूचना प्राप्त करती हैं और मन को देती हैं।
इंद्रियाँ (Senses)
नेत्र, कर्ण, घ्राण, रसना और त्वचा
ये पाँच द्वार हैं जिनके माध्यम से
हम बाहरी संसार से जुड़ते हैं।
ये अनुभव मन तक पहुँचाते हैं।
मन (Mind)
मन चंचल, अस्थिर और
परिवर्तनशील है।
यह इंद्रियों से प्राप्त जानकारी
पर विचार करता है, इच्छा करता है,
संकल्प-विकल्प करता है।
जैसे जल की सतह पर लहरें
कभी शांत, कभी उफनती हैं,
वैसे ही मन के भाव
लगातार बदलते रहते हैं।
चित्त (Chitta)
चित्त हमारे अस्तित्व का
गहरा सागर है।
इसमें अनंत जन्मों के
संस्कार बीज रूप में
संगहित रहते हैं।
ये बीज ही हमारे विचारों,
भावों और कर्मों की
भूमिका बनते हैं।
अनंत जन्मों के संस्कार
हमारे हर अनुभव, हर विचार,
हर कर्म का एक संस्कार बनता है
और चित्त में बीज की तरह संग्रहित
हो जाता है।
समय आने पर यही बीज
विचार, भावना और परिस्थिति
के रूप में फलित होते हैं।
अहंकार (Ego)
अहंकार 'मैं' और 'मेरा' की भावना है।
यह स्वयं को चित्त के संस्कारों से
जोड़कर अपनी पहचान बनाता है।
यह गहराई में जकड़ा रहता है
और हमें बास्तविक स्वरूप को
पहचानने नहीं देता।
जब मन शांत होता है, इंद्रियाँ संयमित होती हैं,
अहंकार का बंधन ढीला होता है, तब चित्त शुद्ध होता है
और आत्मा का प्रकाश प्रकट होता है।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

दुर्वासनाओं का
मूल कारण
जानिए,
आपके अंदर के
विकार आपके ही
संचित संस्कार हैं।
मन
कामवासना
क्रोध
लालच
मोह
चित्त
अनंत जन्मों के
संस्कार
राग
सूक्ष्म की लालसा
द्वेष
पूर्व अनुभव
अपूर्ण इच्छाएं
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

ब्रह्म से इंद्रियों तक की यात्रा
1 परब्रह्म परमात्मा
सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, निर्गुण, निराकार, अनंत, अविनाशी और शाश्वत चेतन सत्ता। वही सबका आदि, मध्य और अंत है।
यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति, यत प्रयन्त्यभभिसंविशन्ति। तद विजिज्ञास्स्व, तद ब्रह्म ॥ – तैतिरीयोपनिषद
2 आत्मा
शुद्ध, चेतन, ज्योति स्वरूप और अविनाशी। यह परमात्मा का अंश है, साक्षी भाव से सबका अनुभव करता है।
अविनाशी तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम। विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित् कर्तुमर्हति।। – भगवद्गीता (2.17)
3 त्रिगुणात्मक प्रकृति
प्रकृति तीन गुणों से निर्मित है, जो समस्त सृष्टि और मनोवृत्तियों को संचालित करते हैं।
सत्त्व (पीत/श्वेत)
ज्ञान, शांति, संतुलन और प्रकाश का गुण।
रजस (लाल)
क्रिया, इच्छा, आसक्ति और गतिशीलता का गुण।
तमस (काला/नीला)
अज्ञान, आलस्य, मोह और जड़ता का गुण।
4 चित्त
यह गहरा भंडार हे जिसमें अनंत जन्मों के संस्कार (छापें) बीज रूप में संग्रहित रहते हैं और अवसर पाकर विचारों के रूप में उभरते हैं।
अनंत जन्मों के संस्कार
हर कर्म, हर विचार, हर भाव एक संस्कार बनकर चित्त में बीज की तरह संग्रहित हो जाता है और यही हमारे वर्तमान जीवन और भविष्य के अनुभवों को आकार देता है।
5 मन
मन विचारों का संग्रही, संकल्प-विकल्प करने वाला, चंचल और इंद्रियों को संचालित करने वाला अंत:करण का भाग हैं।
मन ही बंधन और मन ही मुक्ति का कारण है। शुद्ध और संयमित मन ही आत्मा को परमात्मा से मिलाने का माध्यम बनता है।
6 इंद्रियाँ
इंद्रियों बाह्य जगत से सूचना लेकर मन तक पहुंचाती हैं। ये हमारे भौतिक अनुभवों के द्वार हैं।
इंद्रियों साधन हैं, साध्य नहीं। इन पर संयम ही आध्यात्मिक उन्नति का पथ है।
आँखें
रूप और रंग को देखकर सूचना मन तक पहुंचाती हैं।
भौतिक जगत (अनुभव का क्षेत्र)
वाणी
शब्दों के माध्यम से भावों और विचारों की अभिव्यक्ति करती है।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

दिव्य दृष्टि के 15 लक्षण - अपने अंदर जांच कीजिए

1. सभी जीवों में एक ही नारायण दिखने लगे
2. किसी से राग-द्वेष न रहे, सबके लिए प्रेम
3. मन सदा शांत और करुणा से भरा रहे
4. भूत भविष्य की सूक्ष्म झलक मिलने लगे
5. स्वप्न में दिव्य लोक और मंत्रों के दर्शन हों
6. किसी के मन की बात बिना कहे समझ आ जाए
7. माया के जाल और षड़्यंत्र स्वतः दिखने लगें
8. धन मोह मिट जाए, ज्ञान की प्यास बढ़े
9. एकांत में भी ईश्वर की उपस्थिति महसूस हो
10. आँख बंद करते ही प्रकाश और ॐ की ध्वनि सुनाई दे
11. जीव साक्षी भाव में रहे - इंद्रियां मन बुद्धि चित्त अहंकार से अलग उनका दृष्टा बने
12. माता-पित्ता पति-पत्नी पुत्र-पुत्री भाई-बंधु धन-संपत्ति शरीर की सच्चाई दिखाई दे
13. संसार क्या है? मैं कौन हूं? कहां से आया? कहां जा रहा हूं? यह बोध हो
14. दिव्य दृष्टि से अनंत जन्मों का दर्शन हो - मायिक दृष्टि में झूठ सत्य लगता है
    पर दिव्य दृष्टि में झूठ पकड़ा जाता है, चारों तरफ सत्य ही सत्य दिखे
15. संसार से पूर्ण वैराग्य - मन बुद्धि हर सेकंड परमात्मा में पूर्ण विलीन रहे.

लेख- श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भक्तों हमेशा याद रखना

दुनिया पर किया गया भरोसा एक बार टूट सकता है चाहे संसार में आप किसी पर भी विश्वास करें एक दिन आपका विश्वास मिथ्या हो सकता है। दुनिया आपके विश्वास को तोड़ सकती है। संसार पर किया गया भरोसा एक बार टूट सकता है पर याद रखना भगवान पर किया गया भरोसा कभी मिथ्या नहीं हो सकता इसीलिए हमेशा एक भगवान पर विश्वास रखना और जब आपका विश्वास टूटने लगे तो बस एक चीज याद रखना मेरी सांस कैसे चल रही है? जब सांसों को चलाने वाले मेरे अंदर बैठा है तो मुझे डरने की क्या जरूरत है?

जो परमात्मा श्री कृष्ण को अपने जीवन का सारथी बना लेता है अपने हृदय का सारथी उसे दुनिया क्या अनंत ब्रह्मांड में कोई उस पर वार नहीं कर सकता! उसे दुनिया की कोई भी ताकत हरा नहीं सकती उनकी जीत होकर रहेगी इसका उदाहरण है पांडव की युद्ध में जीत! भगवान के रास्ते में चलने वाले के जीवन में मुसीबत लाख आएंगे पर जीत उनकी हर हाल में होकर रहेगी!

संसार पर कभी भरोसा मत करना जगत एक माया का जाल है झूठी माया है! संसार एक मकड़ी का जाल है! भरोसा एक श्री कृष्ण पर रखना चाहे दुनिया छूटे चाहे प्राण और अंतिम सांस तक रखना! चाहे जीवन में कितने भी विकट परिस्थिति आ जाए फिर भी विश्वास बना कर रखना।

एक परमात्मा श्री कृष्ण के अलावा दूसरा कोई जगत में अपना नहीं है नोट कर लेना! चाहे आपके प्राण भी निकल जाए फिर भी विश्वास मत तोड़ना भगवान में! भगवान परीक्षा उन्हीं की लेते हैं कसौटी में चारों तरफ से उन्हीं को कसते हैं परम गोलोक धाम के लिए जिनका सेलेक्ट हो जाता है!

जब तक वह अटल विश्वास और धैर्य, सहनशीलता की परीक्षा ना ले तब तक वह अपने परमधाम में किसी को नहीं रखते! इसीलिए चाहे प्राण भी चला जाए पर अंत समय तक भगवान में समर्पित रहना!

इस जगत में श्री कृष्ण के अलावा दूसरा कोई अपना नहीं है जो हमारे हृदय की पीड़ा को गहराई से समझता है जो हमारे प्राणों में बसा है। वह बिना स्वार्थ का 24 घंटे हमारी सांसों को चला रहे हैं! इसीलिए भगवान पर अपना विश्वास अटल रखना चाहे प्राण क्यों ना चला जाए।

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म पं. श्री

जयप्रकाश वैष्णव

साक्षी ब्रह्म
परमात्मा की दृष्टि — २४ घंटे निरंतर मन पर केंद्रित
परमात्मा की दृष्टि —
४. निरंतर मन पर केंद्रित
४. चित्त-अहंकार
(Chitta-Ahankar)
त्रिगुणात्मक माया
(Trigunatmaka Maya)
सत्त्व
सत्त्व — शुद्ध, ज्ञान, प्रकाश
२. मान
(Man)
तमस्
— जड़ता, मोह, अंधकार
१. इंद्रियाँ
१. इंद्रियाँ
© पं. जयप्रकाश वैष्णव - तत्तवज्ञान
प्राणी — जीवात्मा; बन्धन = माया के त्रिगुणों से मन का आवरण
ॐ तत् सत् | आत्मा → परमात्मा | ज्ञान → मोक्ष

दादा और पापा का गूढ़ रहस्य
इस विषय को गौरपूर्वक समझिए – यह संसार से परे, अलौकिक सत्य का विषय हैं!
नोटः याद रखें भक्तों! यह पापा मम्मी दादी दादा चाचा चाचा भाई बंधु की बात नहीं है।
दादा और पापा के उदाहरण के द्वारा आज हम दुनिया के सबसे बड़े रहस्य को समझेंगे!
दादा (परमात्मा)
इस दुनिया में कुल प्राणियों का
80% दादा और पापा दोनों को नहीं जानते
80%
15%
5%
15% दादा को जानते हैं, पापा को नहीं जानते
5% दादा और पापा दोनों को जानते हैं
पापा (प्रकृति)
इसका रहस्य क्या है?
80% प्राणी ना दादा को जानते हैं ना पापा को
जो 'मेरा मेरा' के नशे में चूर हैं –
मेरा शरीर, मेरा घर, मेरा धन, मेरा मन,
मेरी बुद्धि, मेरा परिवार, मेरा नाम, मेरी प्रतिष्ठा...
ऐसे संसारिक प्राणी जो 'अहंकार"
और 'अविज्ञा' के नशे में जी रहे हैं।
इनका जीवन – काम, क्रोध, लोभ, मोह,
मद, मात्सर्य, स्पर्धा, तुलना, भोग विलास
और दिखावे में नष्ट हो रहा हैं।
ये प्राणी प्रकृति के वशीभूत हैं!
15% प्राणी दादा को जानते हैं, पापा को नहीं
जो कहते हैं – "हे भगवान! यह बुद्धि, यह मन,
यह सब आपका हैं, मेरा कुछ नहीं"
ये बड़े भक्त हैं, भगवान को दिल से मानते हैं,
अपनी बुद्धि को भगवान का समझते हैं,
लेकिन इन्हें प्रकृति का ज्ञान नहीं होता।
ये केवल दादा (परमात्मा) को जानते हैं,
पापा (प्रकृति) को नहीं जानते।
हे कृष्ण! यह मन, बुद्धि, इंद्रियाँ सब आपकी हैं, मैं आपका हूँ!
ये प्राणी भक्ति मार्ग पर हैं, परंतु ज्ञान अभी अधूरा है!
5% प्राणी दादा और पापा दोनों को जानते हैं
ये गीता के रहस्य को समझ चुके हैं,
ये जानते हैं – यह मन, बुद्धि, इंद्रियाँ, अहंकार,
सब प्रकृति के हैं। प्रकृति परमात्मा की
शक्ति से संचालित है। हम तो दास हैं।
दादा (परमात्मा)
पापा (प्रकृति)
ये प्राणी ज्ञानी हैं, मुक्तिद्वार पर हैं,
ये प्रकृति और परमात्मा दोनों को जानते हैं!
इंद्रिय, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार – ये पाँचों प्रकृति के नन्हे बच्चे हैं!
ये पाँचों बच्चे (कठपुतली) हैं
इंद्रिय
मन
बुद्धि
चित्त
अहंकार
इनका रिमोट – प्रकृति (पापा) के हाथ में हैं!
प्रकृति (पापा)
परमात्मा (दादा)
प्रकृति को संचालित करने वाले हैं – परम चेतन परमात्मा (दादा)!
भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं (गीता 3.5)
न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥5॥
कोई भी प्राणी एक क्षण भी बिना कर्म किये नहीं रह सकता,
क्योंकि सब प्रकृति के गुणों द्वारा मजबूर होकर कर्म करते हैं।
इंद्रिय, मन, बुद्धि – ब्रह्म के नहीं,
प्रकृति के इशारे पर चलते हैं!
अहंकार – सबसे बड़ा अंधा शैतान!
अहंकार (अंधा बच्चा)
यह 'मैं' और 'मेरा' का भ्रम हैं!
अविज्ञा का नशा पी चुका है!
इसे मालूम ही नहीं कि
यह किसका है?
इसी से बंधन है
इसी से दुख है
इसी से जन्म-मृत्यु हैं
इसी से आवागमन है
इसी के मरने से मुक्ति हैं!
मेरा
मेरा
इंद्रिय, मन, बुद्धि का भ्रम
इन्हें भ्रम है – यह मेरा मन है,
मेरी बुद्धि हैं, मेरा शरीर हैं!
वास्तव में – यह सब
प्रकृति का हैं!
यही भ्रम संसार का कारण हैं!
वास्तविक सत्य
इंद्रिय, मन, बुद्धि – प्रकृति के हैं
प्रकृति – परमात्मा की शक्ति से चलती हैं
हम – प्रकृति के वशीभूत हैं
कर्म – प्रकृति के गुणों द्वारा होते हैं
दादा (परमात्मा) – सर्वोच्च नियंता हैं
पापा (प्रकृति) – नियंत्रक हैं
जो यह जान गया – वह मुक्त हो गया!
जड़ प्रकृति की गति
परमात्मा (दादा)
प्रकृति (पापा)
सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण
इंद्रिय, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार
कर्म, अनुभव, सुख-दुख, जन्म-मृत्यु
समझने के लिए उदाहरण
बच्चे को चलना सिखाता है पापा,
लेकिन पापा को चलाता हैं दादा!
कठपुतली का नृत्य
कठपुतली नाचती है,
परंतु उसके पीछे
डोर किसी और
के हाथ में होती हैं!
फिल्म का विलेन – अहंकार
फिल्म में विलेन के आने से
कहानी बिगड़ जाती है,
ऐसे ही अहंकार के आने से
जीवन का नाश हो जाता है!
अंतिम निष्कर्ष
दादा (परमात्मा) से प्रकृति (पापा) उत्पन्न है,
प्रकृति से इंद्रिय, मन, बुद्धि आदि उत्पन्न हैं।
ऊपर वाले की शक्ति से नीचे वाले कार्य करते हैं,
नीचे वाले की शक्ति से ऊपर वाले नहीं।
दादा और पापा दोनों को जानना ही
सच्चा ज्ञान है – यही मुक्ति का मार्ग हैं!
॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ ब्रह्मवेत्ता अद्वैतानंनंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

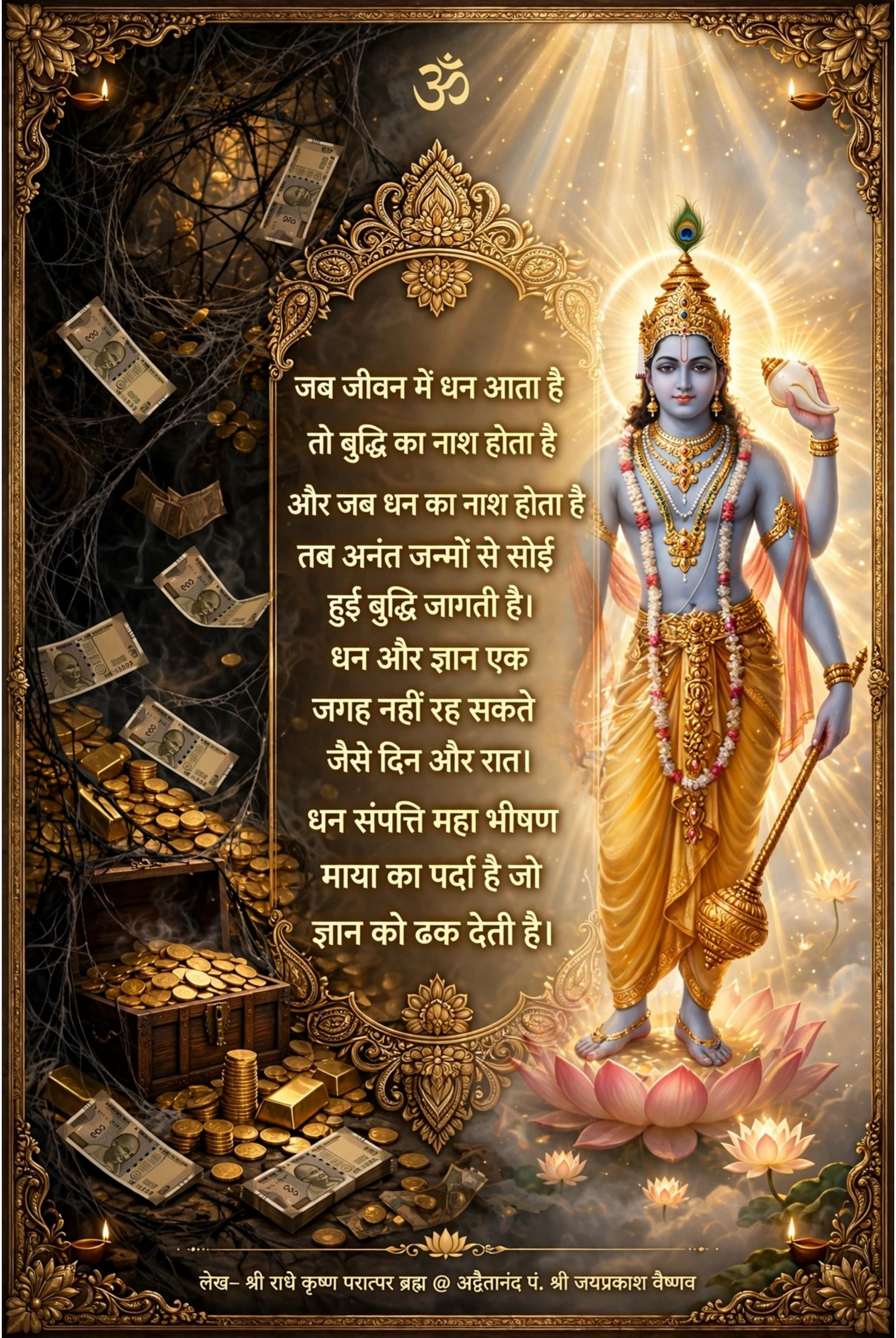
ॐ
जब जीवन में धन आता है
तो बुद्धि का नाश होता है
और जब धन का नाश होता है
तब अनंत जन्मों से सोई
हुई बुद्धि जागती है।
धन और ज्ञान एक
जगह नहीं रह सकते
जैसे दिन और रात।
धन संपत्ति महा भीषण
माया का पर्दा है जो
ज्ञान को ढक देती है।
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

नाना - परमात्मा
सर्वोच्च चेतना • सर्वनियंत्रक • साक्षी
मम्मी - प्रकृति (माया)
प्रकृति • प्रकृति-शक्ति • सत्व-रज-तम की संचालिका
सतोगुण (सत्व) - शुद्ध/संतुलन
रजोगुण (सद)
क्रिया/मति
रजोगुण (रख)
किवा/मति
तमोगुण (तम)
तमोगुण (तम)
जड़ता/निकियता
इंद्रिय
मन
बुद्धि
चित्त
अहंकार
पाँच सूक्ष्म तत्व - मम्मी के सिमेट से नियंत्रित
न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ।
© लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

नाना और मम्मी का गूढ़ रहस्य

इस सृष्टि में हम अकेले नहीं हैं। हमारे पीछे दो महान शक्तियाँ कार्य करती हैं —
नाना (परमात्मा) और मम्मी (प्रकृति)।
इन्हीं के सहयोग से हमारा जीवन संचालित हो रहा हैं।

नाना (परमात्मा)

सृष्टि के मूल कर्ता और चेतना के स्रोत

80% भूमिका

नाना की भूमिका सबसे बड़ी और मूलभूत हैं। वे बिना कुछ मांगे सब कुछ देते हैं।

- सृष्टि की रचना करते हैं।
- सभी जीवों को चेतना (आत्मा) प्रदान करते हैं।
- कर्म का विधान बनाते हैं और न्याय करते हैं।
- मार्गदर्शन करते हैं, अंतःकरण में प्रेरणा देते हैं।
- हमारी रक्षा करते हैं और मोक्ष का मार्ग दिखाते हैं।

मम्मी (प्रकृति)

सृष्टि की संचालिका और पालन करने वाली शक्ति

15% भूमिका

मम्मी हमारे शरीर, वातावरण और सभी भौतिक साधनों की वयवस्था करती हैं। वे बिना थके हमारी सेवा करती हैं।

- शरीर, भोजन, जल, वायु, वस्त्र, आवास आदि प्रदान करती हैं।
- सृष्टि का पालन-पोषण और संतुलन बनाए रखती हैं।
- हमारे कर्मों के अनुसार फल देने में सहायक बनती हैं।
- हर क्षण हमारी जरूरतों का ध्यान रखती हैं।
- हमारी सीक्ष, अनुभव और विकास का माध्यम बनती हैं।

बच्चे (इन्द्रियाँ और मन)

अनुभव करने वाले, सीखने वाले और चुनाव करने वाले

5% भूमिका

हमारी इन्द्रियाँ और मन बहुत सीमित हैं, लेकिन इनसे ही हम दुनिया का अनुभव करते हैं और कर्म करते हैं।

- इन्द्रियों के माध्यम से जगत का अनुभव करते हैं।
- मन में सोचते, समझते और निर्णय लेते हैं।
- कर्म करते हैं और उन्हीं कर्मों से अपना भविष्य बनाते हैं।
- सीखते हैं, गलती करते हैं और फिर आगे बढ़ते हैं।
- सही मार्गदर्शन से भगवान तक पहुँच सकते हैं।

गूढ़ रहस्य

नाना के बिना चेतना नहीं, मम्मी के बिना जीवन नहीं और बच्चों के बिना अनुभव नहीं।
तीनों मिलकर ही सृष्टि पूर्ण होती हैं।

जो नाना और मम्मी दोनों को जान लेता है, वही वास्तत में स्वतंत्र होता है!

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

नाना और मम्मी का गूढ़ रहस्य
नियंत्रण की वास्तविक श्रृंखला को जानें और मुक्त बनें
1. नाना
परमात्मा
सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक ब्रह्म
सभी शक्ति का स्रोत मम्मी (प्रकृति) को नियंत्रित करने वाले
नाना से मम्मी पर नियंत्रण
2. मम्मी
त्रिगुणात्मक प्रकृति (सत्व, रजस, तमस)
यह संपूर्ण सृष्टि चलाती है और सभी जीवों (बच्चों) को अपने गुणों एवं माया से बांधकर नियंत्रित करती हैं।
सत्व
रजस
तमस
मम्मी से बच्चों पर नियंत्रण
3. बच्चे
इंद्रियां, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार
ये सभी प्रकृति (मम्मी) के नियंत्रण में हैं और इन्हीं के कारण जीव संसार में बंधा रहता हैं।
इंद्रियां
मन
बुद्धि
चित्त
अहंकार
जो नाना और मम्मी दोनों को जान लेता हैं, वही वास्तव में स्वतंत्र होता हैं।
80% लोग
न नाना को जानते हैं, न मम्मी को।
मेरा - मेरा
मेता
मेरा- मेरा के श्रम में फंसे हैं, संसार के चक्र में भटक रहे हैं।
15% लोग
केवल नाना (परमात्मा) को जानते हैं, मम्मी (प्रकृति) को नहीं।
ईस्र्र की भक्ति करते हैं, पर प्रकृति के नियंत्रण से अनजान हैं, अभी भी बंधन में हैं।
5% लोग
नाना और मम्मी दोनों को जानते हैं, गीता का गूढ़ रहस्य समझते हैं।
ज्ञानयुक्त होकर प्रकृति से ऊपर उठते हैं, मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर होते हैं।
जो नाना और मम्मी दोनों को जान लेता है, वही वास्तव में स्वतंत्र होता हैं।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

नाना और मम्मी का गूढ़ रहस्य
दुनिया का नहीं, अनंत ब्रह्मांड का सबसे बड़ा रहस्य
नोट:- याद रखें भक्तों! यह मम्मी पापा नानी नाना दादा दादी अंकल आंटी भाई बंधु यह इसकी बात नहीं चल रही!
नाना और मम्मी के उदाहरण के द्वारा आज हम दुनिया के नहीं अनंत ब्रह्मांड के सबसे बड़े रहस्य को समझने जा रहे हैं। यह अलौकिक दुनिया, जो संसार से परे है! तो कृपया इस विषय को ध्यानपूर्वक समझिए।
नाना
(परमात्मा)
मम्मी
(प्रकृति)
दुनिया में केवल 5% ही प्राणी नाना और मम्मी दोनों को जानते हैं
संपूर्ण विश्व के 80% प्राणी नाना और मम्मी को नहीं जानते
केवल 15% प्राणी नाना को जानते हैं मम्मी को नहीं जानते।
80% नाना और मम्मी दोनों को नहीं जानते
15% नाना को जानते हैं मम्मी को नहीं
5% नाना और मम्मी दोनों को जानते हैं
तो बताओ इसका रहस्य क्या है?
★ 80% वाले कौन?
★ 15% वाले कौन?
★ 5% वाले कौन?
80% वाले कौन?
80% प्राणी ना नाना को जानते हैं ना मम्मी को!
इनके अंदर भ्रम है – "यह मेरा मन है, मेरी बुद्धि है" "मेरा-मेरा" का नशा चढ़ा हुआ है!
मेरा घर
मेरा शरीर
मेरा पैसा
मेरा मन
पत्नी
मेरी बुद्धि
मेरी बुद्धि
मेरा
इनको "मैं और मेरा" का भांग चढ़ा है!
यही 80% की सबसे बड़ी श्रेणी है!
15% वाले कौन?
15% इंद्रिय, मन, बुद्धि कहते हैं – "भगवान! यह बुद्धि आपकी है, मेरी नहीं"
ये भगवान को दिल से मानते हैं, अपनी बुद्धि को भगवान का समझते हैं, परंतु इन्हें प्रकृति का सत्य नहीं मालूम। ये केवल नाना (परमात्मा) को जानते हैं, मम्मी (प्रकृति) को नहीं जानते।
हे भगवान! यह बुद्धि आपकी है, मेरी नहीं, सब आपका है!
ऐसा बोलने वाले बहुत कम हैं – केवल 15%
5% वाले कौन?
ये 5% वाले लोग गीता के नस-नस, कोने-कोने के रहस्य को समझ चुके हैं!
ये जानते हैं – यह मन, बुद्धि हमारा नहीं, यह सब प्रकृति का है। प्रकृति जो करवा रही है, वही यह बेचारे करते हैं। यह सब प्रकृति के गुलाम हैं, प्रकृति के वशीभूत हैं। (गीता 3.5)
न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥5॥
ये नाना (परमात्मा) और मम्मी (प्रकृति) दोनों को जानते हैं!
इंद्रिय, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार – पाँचों प्रकृति के नन्हे बच्चे हैं!
ये पाँचों बच्चे कठपुतली हैं! इनका रिमोट मम्मी (प्रकृति) के पास है।
इंद्रिय
मन
बुद्धि
चित्त
अहंकार
मैं
सतोगुण
रजोगुण
तमोगुण
इन तीनों की रस्सियों में यह पाँचों बच्चे 24 घंटे दौड़ते रहते हैं!
मम्मी (प्रकृति)
मम्मी (प्रकृति) का रिमोट नाना (परमात्मा) के पास है।
ब्रह्म के इशारे नहीं, प्रकृति के इशारे!
अगर ब्रह्म के इशारे होते, तो ये सब परमात्मा की खोज में निकल पड़ते। "मेरा-मेरा" का नशा प्रकृति से जन्मा है। यही "अहंकार" अंधा बच्चा है!
फिल्म चल रही है (सुख - जीवन)
विलेन प्रकट हुआ (अहंकार)
अहंकार = "मैं और मेरा" का भ्रम
यह मरा तो मुक्ति, नहीं मरा तो जन्म-मरण का खेल चलता रहेगा!
अहंकार – सबसे बड़ा शैतान!
✗ इसको मालूम ही नहीं कि वह किसका है?
✗ यह हमारा ही खुद का नाश करने वाला है!
✗ यह अंधा है – जिसके पास ज्ञान की आँख नहीं!
✗ अविद्या का नशा (शराब) पी चुका है!
✗ यह मर गया तो खेल खत्म, नहीं मरा तो खोवागमन का खेल चलता रहेगा!
त्रिगुणात्मक प्रकृति – जड़माया!
जैसे पथ्थर अपने आप नहीं हिलता – कोई चेतन शक्ति उसे उठाकर इधर-उधर करती है, ऐसे ही त्रिगुणात्मक प्रकृति जड़ है। परम चेतन (नाना) की शक्ति से कार्य करती है!
प्रकृति (जड़)
परम चेतन (चेतन शक्ति)
संबंध को समझिए –
बच्चा
इंद्रिय, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार
मम्मी (प्रकृति) इनका जनक और नियंत्रक
नाना (परमात्मा) प्रकृति का नियंत्रक
• नाना से मम्मी पैदा हुई, मम्मी से नाना नहीं।
• परमात्मा से प्रकृति पैदा हुई, प्रकृति से परमात्मा नहीं।
• बच्चे का नियंत्रक मम्मी है, नाना नहीं।
• मम्मी का नियंत्रक नाना है।
नाना (परमात्मा)
मम्मी (प्रकृति)
इंद्रिय, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार (पाँच बच्चे)
॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

नाना और मम्मी का गूढ़ रहस्य
नोटः– याद रखें भक्तों! यह मम्मी पापा नानी नाना दादा दादी अंकल आंटी भाई बंधु यह इसकी बात नहीं चल रही!
नाना (परमात्मा)
मम्मी (प्रकृति)
नाना और मम्मी के उदाहरण के द्वारा आज हम दुनिया के नहीं अनंत ब्रह्मांड का सबसे बड़े रहस्य को समझने जा रहे हैं! तो इस विषय को कृपया ध्यान पूर्वक समझिए– यह अलौकिक दुनिया,, जो संसार से परे हैं! यह उसका विषय हैं तो कृपया इस विषय को ध्यान पूर्वक समझिए!!!
दुनिया में केवल 5% ही प्राणी नाना और मम्मी दोनों को जानते हैं और
संपूर्ण विश्व के 80% प्राणी नाना और मम्मी को नहीं जानते
इतने प्राणी दोनों को नहीं जानते और केवल 15% प्राणी नाना को जानते हैं मम्मी को नहीं तो बताओ इसका रहस्य क्या है???
80% वाले कौन?
जो नाना को भी नहीं जानते और मम्मी को भी नहीं जानते! मतलब इसमें आते हैं पूरे सांसारिक प्राणी जिनके अंदर यह भ्रम हो गया है कि यह मेरा मन है मेरी बुद्धि है जिनको जिनव्ह इनका नशा चढ़ गया है मेरा मेरा का जिनको नशा चढ़ गया है संसार में जो जो प्राणियों को मेरा मेरा का भांग चढ़ गया है मतलब जो मेरा मेरा का भांग खा लिया है होली में और झूम रहा है मेरा मेरा इस इस डिस्को में यह मेरा यह मेरा घर मेरा शरीर मेरा मेरा आप मेरी माता मेरा पत्नी मेरी बुद्धि मेरा मन यह सब मेरा मेरा का गाना गाने वाले वह सब 80% में आते हैं! और इसकी संख्या सबसे ज्यादा दुनिया में पूरी रिसर्च के अनुसार,,,
15% वाले कौन?
जो यह कहता है कि भगवान यह बुद्धि तुम्हारी है यह मेरा नहीं है यह सब आपका है इसमें आते हैं बड़े-बड़े भक्त जो भगवान को दिल से मानते हैं वह अपनी बुद्धि को भगवान का समझते हैं लेकिन इनको भी पूरा सत्य मालूम नहीं रहता..... मतलब इनको प्रकृति की भी खबर नहीं... इस प्रकार के लोग केवल भगवान को जानते हैं मतलब नाना को जानते हैं मम्मी को नहीं! क्योंकि मम्मी प्रकृति है!!!!
5% वाले कौन?
यह 5% वाले लोग जो गीता के नस नस को इसके पूरे कोने कोने को पूरा कंप्लीट चाट लिया है इसके पूरे रहस्य को जो समझ चुका है बस वही केवल 5% में आते हैं! इस श्रेणी में आने वाले लोग कभी नहीं कहेंगे भूल से भी नहीं!!! कि यह मेरा मन है यह मेरी बुद्धि है क्योंकि इस प्रकार के लोग जानते हैं कि यह मन हमारा नहीं है यह बुद्धि हमारा नहीं है यह सब प्रकृति का है प्रकृति जो करवा रही है वही सब यह बेचारे करते हैं यह सब प्रकृति का गुलाम है प्रकृति के वशीभूत हैं गीता 3.5.
इंद्रिय मन बुद्धि का खेल कैसे चलता है?
इंद्रिय मन बुद्धि चिंत अहंकार यह पांचो प्रकृति के नन्हा बच्चा है सतोगुण रजोगुण और तमोगुण इन तीनों की रस्सियों में यह पांचो बच्चे-मन बुद्धि अहंकार + दो बच्चे बंधाया हुआ है!
इंद्रिय
मन
बुद्धि
चित्त
अहंकार
सतोगुण
रजोगुण
तमोगुण
मतलब यह पांचो बच्चे कटपुतली है इनका रिमोट प्रकृति से चल रहा है और प्रकृति का रिमोट परमात्मा से यानी हमारी इंद्रियां मन बुद्धि संतान है उसकी मम्मी प्रकृति मतलब इंद्रिय मन बुद्धि का नियंत्रक कौन है? केवल मम्मी मतलब प्रकृति!!!
नाना (परमात्मा)
मम्मी (प्रकृति)
इंद्रिय
मन
बुद्धि
चित्त
अहंकार
क्या बच्चा मम्मी के विना पैदा हो सकता है बच्चे को उंगली पकड़कर कौन चलना सिखाती हैं?? मम्मी या नाना???
केवल मम्मी!
ऐसे ही मम्मी अर्थात प्रकृति ने इंद्रिय मन बुद्धि स्वी छोटे से शिशु बच्चे को चलना सिखाया है अपने नव्हा कदम में सतोगुण रजोगुण तमोगुण यही मिलकर पांचो बच्चों को 24 घंटे दौड़ा रहे हैं! और आज इंद्रिय मन बुद्धि जो कुछ भी कर रहा है अपने मम्मी के प्रकृति के इशारे!
यह इंद्रिय, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार यह पांच बच्चे मम्मी की गोद में पड़ा हुआ छोटे से शिशु हैं!
ब्रह्म के इशारे इंद्रिय मन बुद्धि नहीं चल रहे हैं
त्रिगुणात्मक प्रकृति,,, ब्रह्म के इशारे चल रहे हैं
> जास्यु सत्यता ते जड़माया!
यह त्रिगुणात्मक प्रकृति जड़ है परम चेततन ब्रह्म की चेतन से यह प्रकृति अपने जगह से हिलती है जैसे पत्थर को जब तक अपने हाथों से इधर का उधर ना किया जाए तब तक पत्थर वहीं युगों युगों तक पड़ा ही रहेगा क्योंकि पत्थर जड़ है उसके पास कोई शक्ति नहीं ताकत नहीं ऐसे ही त्रिगुणात्मक प्रकृति इसी पत्थर की तरह ही है जिसके पास कोई ताकत नहीं! अपने से! कोई किसी का हाथ चेतन पांवर उस पत्थर को हटाकर दूसरे जगह रखता है ऐसे ही परम चेतन परमात्मा की शक्तियों से त्रिगुणात्मक प्रकृति कार्य करती है! प्रकृति वास्तव में जड़ है परंवु परम चेतन की शक्ति से जड़ कार्य करती है!
जैसे मम्मी को चलना सिखाया है नाना और बच्चे को चलना सिखाया है उसकी मम्मी! और मम्मी के पापा मतलब नाना!
नाना (परमात्मा)
मम्मी (प्रकृति)
नाना से मम्मी पैदा हुए
मम्मी से नाना नहीं
ऐसे ही परमात्मा से प्रकृति पैदा हुए
प्रकृति से परमात्मा नहीं...
बच्चा का नियंत्रक नाना नहीं मम्मी है!
ऐसे हीइंद्रिय मन बुद्धि का नियंत्रक
प्रकृति है परमात्मा नहहीं!!!!
प्रकृति का नियंत्रक परमात्मा है!
जैसे मम्मी का नियंत्रक नाना है!
यह मेरा मेरा अस्तित्व में कहाँ से आया???
प्रकृति से जन्मा हुआ एक खतरनाक बच्चा अंधा बच्चा आ गया है जो अंधा है जिसके पास आंख नहीं यही अंधा बच्चा!
अहंकार (मैं और मेरा)
जैसे फिल्म में बढ़िया-बढ़िया फिल्म चल रहा है बढ़िया खुशी-खुशी जीवन चल रहा है लेकिन अयानक फिल्म में विलेन प्रकट ले लेता है ऐसे ही अहंकार अंतःकरण में विलेन स्वी प्रकट ले लिया अविद्या का नशा अविद्या का शराब पी चुका है यह शैतान जिसको मालूम ही नहीं कि वह खुद किसका है???! हमारा ही खुद नाश करने वाला बस केवल यही शैतान है और कोई शैतान नहीं!
यह मर गया तो बस मुक्ति यह नहीं मरा तो बंधन!
यह मर गया तो खेल खत्म और नहीं मरा तो आवागमन का खेल चलते रहेंगे!
इस खेल में प्राणी को आना पड़ता क्यों है क्योंकि यह मैं और मेरा वाला शैतान अभी मरा नहीं है!
अंतःकरण में जो अपनी नादानी में समझ रखा है कि यह इंद्रिय मन बुद्धि सब मेरा है बस सारा गड़बड़ यहीं से हो गया! यही अंधा बच्चा अहंकार है! अहंकार कोई एक नया चीज नहीं बस मैं और मेरा का भ्रम ही अहंकार है! परंतु वास्तव में सब प्रकृति का है!
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
राधा राधा राधा
राधा राधा राधा

विष्य-
स्वार्थ का मायाजाल
संसार की रीति- स्वार्थ कम प्यार कम, स्वार्थ ज्यादा प्यार ज्यादा,
स्वार्थ खत्म प्यार खत्म !
मायाजाल
मोह
अहंकार
लोभ
स्वोथ
आरक्ति
मेरा-मेरा
संसार की सबसे बड़ी सच्चाई
बृहदारण्यक उपनिषद– 2.4.5
स होवाच न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवत्य; आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति।
न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवत्य, आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति ।
न वा अरे पुत्राणां कामाय पुत्राः प्रिया भवन्त्य, आत्मनस्तु कामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति ।
न वा अरे वितस्य कामाय वित्तं प्रियं भवत्य, आत्मनस्तु कामाय वित्तं प्रियं भवति ।
न वा अरे ब्रह्मणः कामाय ब्रह्म प्रियं भवत्य, आत्मनस्तु कामाय ब्रह्म प्रियं भवति ।
न वा अरे क्षत्रंस्य कामाय क्षत्रं प्रियं भवत्य, आत्मनस्तु कामाय क्षत्रं प्रियं भवति ।
न वा अरे लोकानां कामाय लोकाः प्रिया भवन्त्य, आत्मनस्तु कामाय लोकाः प्रिया भवन्ति।
न वा अरे देवानां कामाय देवाः प्रिया भवन्त्य, आत्मनस्तु कामाय देवाः प्रिया भवन्ति ।
न वा अरे भूतानां कामाय भूतानि प्रियणि भवन्त्य, आत्मनस्तु कामाय भूतानि प्रियाणि भवन्ति।
न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्व प्रियं भवत्य, आत्मनस्तु कामाय सर्व प्रियं भवत्य
आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिधासितव्व्यो ।
मैतैय आत्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या बिज्ञानेनैद सर्व विदितमू ।। ५ ।।
सूर नर मुनि सबके यह रीति
स्वार्थ लागी कर ही सब प्रीति
स्वार्थ कम प्यार कम
स्वार्थ ज्यादा प्यार ज्यादा
स्वार्थ खत्म प्यार खत्म
इस दुनिया में कोई भी प्राणी एक सेकंड को भी किसी के साथ बात नहीं कर सकता बिना स्वार्थ का! स्वार्थ के बिना एक पल के लिए भी रिश्ता नहीं रख सकता!
इसलिए केवल एक परमात्मा ही सच्चे हैं
वही जीव से बिना स्वार्थ प्रेम करते हैं, निरंतर सांसों को चल रहा है!
इसलिए केवल परमात्मा से प्रेम करो, वही आपसे निस्वार्थ प्रेम करते हैं, बाकी इस दुनिया केवल स्वार्थ के लिए आपको पकड़े हुए हैं!
पति का जीवन तबाह होने के बाद
फिर देखना पत्नी साथ रहेगी या नहीं! तुरंत पति को छोड़कर चली जाएगी!
कथा, भजन और रामायण सब स्वार्थ के लिए!
जहां पैसा ना मिले, वहां दूसरा दिन ही कथा, भजन, रामायण बंद!
भक्ति नहीं, व्यापार!
पैसा के लिए जो दिन भर भगवान का भजन कर रहा, वह नाटक है! वह भक्त नहीं, व्यापारी है!
परिवार के रिश्ते स्वार्थ पर टिके हैं!
जब तक सब कुछ अच्छा है, तब तक परिवार साथ रहेगा! तबाह हुए कि सब छोड़कर भाग जाएगा!
पत्नी पति के साथ क्यों है?
क्योंकि उसका स्वार्थ पुरा हो रहा है! पति का स्वार्थ पत्नी को दिखाई नहीं देता!
पति पत्नी को क्यों लाता है?
अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए, अपने भोग विलास के लिए!
माता-पिता और बच्चे
माता-पिता का स्वार्थ बच्चों को नहीं और बच्चों का स्वार्थ माता-पिता को दिखाई नहीं देता!
आपके पास पैसा नहीं?
आपके बस्में लाइट खराब हो गई, पैसा नहीं है, कोई व्यक्ति आपके पास कभी नहीं आएगा बिना पैसे का!
सभी रिश्तों का मूल
यह उपनिषद बता रहा है- दुनिया के सारे रिश्ते, सब अपने-अपने स्वार्थ पर टिका हुआ है!
स्वार्थ का अंधापन
मोह और अहंकार की पट्टी जीव पर पड़ी हुई है, इसलिए यह स्वार्थ का संसार दिखाई नहीं देता!
परमात्मा (नाना)
प्रकृति (मम्मी)
नाना से मम्मी पैदा हुए, मम्मी से नाना नहीं!
प्रकृति का नियंत्रक परमात्मा है!
मम्मी से पैदा हुए 5 बच्चे
कौन किसे चलाता हैं? स्वार्थ का खेल ऐसे चलता है
5 बच्चे (इंद्रिय, मन, बुद्धि, चित, अहंकार)
इंद्रिय
मन
बुद्धि
चित्त
अहंकार
ये पाँचों बच्चे कठपुतली हैं, इनका रिमोट प्रकृति के हाथ में है!
अहंकार (अंधा बच्चा)
मैं और मेरा का भ्रम ही अहंकार है! यही बंधन का कारण है!
त्रिगुणात्मक प्रकृति
सतोगुण
रजोगुण
तमोगुण
इन तीनों की रससियों में बंधे हैं!
अहंकार मरा तो मुक्ति नहीं मरा तो आवागमन का चक्र चलता रहेगा!
याद रखो!
इस दुनिया में स्वार्थ के बिना एक सेकंड भी कोई किसी के साथ नहीं रह सकता! स्वार्थ का मायाजाल चारों तरफ बिछा है! जो इसे देख लेता है, वही साक्षी है!
जो अपने स्वार्थ को जलाकर भगवान की भक्ति करता है! वहीं पहुंचते हैं भगवान तक, बाकी स्वार्थी जीव जगत में फिर आते हैं!
॥ हरे कृष्णा हरे कृष्ण, कृष्णा कृष्णा हरे हरे ॥
श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
राधा राधा राधा राधा राधा राधा

विषय-
स्वार्थ का मायाजाल
संसार की रीति- स्वार्थ कम प्यार कम, स्वार्थ ज्यादा प्यार ज्यादा, स्वार्थ खत्म प्यार खत्म !
दुनिया की सबसे बड़ी सच्चाई
सब कुछ स्वार्थ के लिए है, स्वार्थ के बिना एक क्षण भी कोई किसी के साथ नहीं !
इस उपनिषद का सार
आत्मनस्तु कामाय सर्व प्रियमू भवति !
अपने आत्म-स्वार्थ के लिए ही सब कुछ प्रिय है !
उपनिषद का महावाक्य
बृहदारण्यक उपनिषद- 2.4.5
न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति।
आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति।
न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति।
आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति।
न वा अरे पुत्राणां कामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति।
आत्मनस्तु कामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति।
न वा अरे वितस्य कामाय वित्तं प्रियम भवति।
आत्मनस्तु कामाय वित्तं प्रियम भवन्ति।
न वा अरे ब्रह्मणः कामाय ब्रह्म प्रियम भवति।
आत्मनस्तु कामाय क्षत्रं प्रिया भवन्ति।
न वा अरे लोकानां कामाय लोकः प्रिया भवन्ति।
आत्मनस्तु कामाय ब्रह्म प्रिया भवन्ति।
न वा अरे लोकानां कामाय लोकः प्रिया भवन्ति।
आत्मनस्तु कामाय लोकः प्रिया भवन्ति।
न वा अरे देवानां कामाय देवाः प्रिया भवन्ति।
आत्मनस्तु कामाय देवाः प्रिया भवन्ति।
न वा अरे भूतानां कामाय भुतानि प्रियाणि भवन्ति।
आत्मनस्तु कामाय भुतानि प्रियाणि भवन्ति।
न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्व प्रियम भवति।
आत्मनस्तु कामय सर्व प्रियम भवन्ति।
आत्मा वा अरे दृष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो। मैत्रेय आत्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेव सर्व विदितम्॥५॥
मायाजाल
धन के लिए
सुख भोग के लिए
पद प्रतिष्ठा के लिए
अपना फायदा
स्वार्थ
स्वार्थ के बिना कोई रिश्ता नहीं
अहंकार और मान के लिए
स्वार्थ ही संसार का मूल मंत्र है, स्वार्थ ही रिश्तों का आधार है !
गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कहा है- रामचरितमानस में-
सूर नर मुनि सबके यह रीति स्वार्थ लागी कर ही सब प्रीति
याद रखो !
जो स्वार्थ के बिना प्रेम करता है, वह केवल एक परमात्मा है ! बाकी दुनिया तुम्हारे स्वार्थ के कारण तुम्हारे साथ है !
दुनिया के रिश्तों की सच्चाई - सब स्वार्थ पर टिके हैं !
पति - पत्नी
सुख, पैसा, सम्मान के लिए साथ दुख आते ही रिश्ता टूट जाता है !
माता - पिता और बच्चे
अपनी अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए प्यार करते है !
भाई - बहन
जायदाद, सुविधा या जरूरत के समय ही रिश्ता याद आता है !
दोस्ती
फायदा है तो साथ है, फायदा खत्म तो पहचान तक नहीं !
रिश्तेदार
तुम्हारे पास है तो रिश्तेदार, नहीं तो कोई संबंध नहीं !
समाज
तुम्हारी स्थिति देखकर आदर या अपमान करते हैं !
स्वार्थ के कारण बदलते रिश्ते - उदाहरण
पैसा समाप्त
धन समाप्त होते ही सब दूर हो जाते हैं !
बीमारी या दुख
दुख के समय साथ देने वाले बहुत कम मिलते हैं !
नौकरी या पद गया
पद जाते ही सम्मान भी चला जाता है !
सुख समाप्त
सुख के साथ बलते तो रिश्ते भी खत्म !
संकट में सच्चाई
संकट ही असली चेहरों को दिखाता है !
स्वार्थ पूरा - रिश्ता खत्म
काम निकलते ही लोग कभी भी छोड़ देते है !
स्वार्थ भरी भक्ति - भगवान का नाटक बन गई है !
कथा - केवल पैसे के लिए
कथा, प्रवचन, भजन सब पैसा पाने के साधन बन गए हैं !
रामायण, भजन, कीर्तन
पैसा न मिले तो रामायण दूसरे दिन बंद !
भगवान से प्रेम नहीं
भगवान से नहीं, पैसा से प्रेम है !
व्यापारी भक्ति
यह भक्ति नहीं, व्यापार है !
भक्त या व्यापारी ?
जो बदले में ले, वह भक्त नहीं व्यापारी है !
सच्ची भक्ति कैसी ?
जहां स्वार्थ का लवलेश नहीं, वही सच्ची भक्ति है !
स्वार्थ का कारण
मोह, अहंकार और आसक्ति की पट्टी जीव पर पड़ी है !
मोह
अहंकार
आसक्ति
इसलिए सत्य दिखाई नहीं देता !
इसका समाधान क्या है ?
स्वार्थ को जलाओ, तभी भगवान को पाओ !
मोह
अहंकार
अहंतत
स्वार्थ
स्वार्थ जलकर राख होगा, तभी सच्चा प्रेम, सच्ची भक्ति और सच्चा ज्ञान मिलेगा !
सच्चा प्रेम केवल परमात्मा का है !
परमात्मा ही एकमात्र है जो बिना स्वार्थ के तुमसे प्रेम करते हैं, तुम्हारी रक्षा करते हैं, तुम्हें चलाते हैं, सांसे देते हैं !
निष्कर्ष - संसार स्वार्थ का जाल है, इसे पहचानो और मुक्त हो जाओ !
स्वार्थ कम प्यार कम, स्वार्थ ज्यादा प्यार ज्यादा, स्वार्थ खत्म प्यार खत्म !
स्वार्थ के बिना एक सेकेंड भी कोई किसी के साथ नहीं !
सब रिश्ते स्वार्थ पर टिके हैं, यह उपनिषद की सबसे बड़ी सच्चाई है !
स्वार्थ जलाओ, प्रेम पाओ, भगवान को पाओ !
केवल परमात्मा ही सच्चे हैं, वही निस्वार्थ प्रेम करते हैं !
वही जीवन का परम सत्य है, इसे समझो और मुक्त हो जाओ !
॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्णा कृष्णा हरे हरे ॥
लेख- श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

साक्षी भाव की अवस्था - भाग 1
साक्षी - आत्मा
अहंकार
इंद्रिय
मन
चित्त
बुद्धि
अहंकार
इंद्रियां, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार - सब अपने-अपने खेल में डूबे हैं, जैसे खिलाड़ी। इन्हें दूर पर्वत पर बैठा साक्षी देख रहा है। वही साक्षी आत्मा है, वही तुम हो। खेल में मत उलझो, देखने वाले बनो।
© लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

ॐ
साक्षी भाव की अवस्था - भाग 1
ॐ
साक्षी - आत्मा
मन
बुद्धि
इंद्रिय
चित्त
अहंकार
इंद्रियां, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार - सब अपने-अपने खेल में डूबे हैं,
जैसे खिलाड़ी। इन्हें दूर पर्वत पर बैठा साक्षी देख रहा है। वही साक्षी आत्मा है,
वही तुम हो। खेल में मत उलझो, देखने वाले बनो।
© लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

साक्षी भाव की अवस्था - भाग 2
साक्षी - आत्मा
त्रिगुणात्मक माया - सत्व, रज, तम
चित्त - अनंत जन्मों के संस्कार
storehouse of impressions
अहंकार - शासक
इंद्रिय
मन
बुद्धि
त्रिगुणात्मक माया चित्त पर शासन करती है, चित्त (अनंत जन्मों के संस्कार) अहंकार पर, अहंकार इंद्रिय-मन-बुद्धि को रिमोट से चलाता है। इन सबको, माया सहित पूरे सिस्टम को जो देख रहा है वही साक्षी है।
© लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

दुनिया का सबसे बड़ा प्रपंच
खुद हम पापी हैं और समझ रहे हैं धर्मात्मा
भगवान कहते हैं ऐसे प्राणी जाएगा 84 में!
हम बाहर से धर्मात्मा बनते हैं, अंदर से पापों से भरे होते हैं!
अपनी बुराई को देखो, स्वीकार करो, मेरी शरण में आओ, मैं तुम्हें मुक्त कर दूंगा!
जो स्वीकार कर लेगा अपनी अपने अंदर की सारी बुराई वह मेरे पास आ जाएगा!
जगत में क्या चल रहा है पहले जानिए?
यही दुनिया की सच्चाई है सबके अंदर पुरा बुराई भरा हुआ है हम सबके अंदर परंतु सबसे बड़ी समस्या यह है की अपनी बुराई को बिल्कुल भी स्वीकार नहीं किया जाता यही कलयुग का एक नया ड्रामा है!
स्वीकार कर लिया तो भगवान मिल जाएंगे पर स्वीकार नहीं किया तो करोड़ों जन्म की तपस्या भी व्यर्थ है!
क्योंकि तपस्या कर रहा है यह तो दिखाई दे रहा है परंतु अपना क्रोध अपना पैसे की इच्छा संतान की इच्छा विवाह की इच्छा यह सब सांसारिक इच्छा लालच वासना अपना क्रोध अपना लालच अपना ईर्ष्या राग द्वेष यह उसको दिख रहा है कि नहीं महत्व सिर्फ इसी का है वह तपस्या कर रहा है यह तो दिखेगा ही दिखेगा! लेकिन भगवान यह देखते हैं कि तुझे अपनी तेरी बुराई दिख रहा है कि नहीं दिख रहा है की अंधा हो गया है!!!
काम वासना
क्रोध
लालच
अहंकार
ईर्ष्या
राग-द्वेष
अपनी बुराई को देखो – स्वीकार करो – शरण में आओ
भले ही अपनी तपस्या को मत देख, अपने नाम जप को मत देख, जो भजन कर रहा है ना मेरा उसको भी मत देख लेकिन तू अपनी बुराई को देख अंदर का जो अनंत जन्मों से तेरे अंदर भरा हुआ है सबसे पहले उसको देख!
अगर देख लिया तुझे अपनी बुराई का दर्शन हो गया और मेरी शरण में आ गया अपनी बुराई को देखकर कि मैं इसको नहीं छोड़ पा रहा हूं प्रभु फिर मैं कैसे करूं अब मुझे केवल शयाम सुंदर मेरे गिरधर आप ही इस भयंकर चक्रव्युह से बचाओगे मैं तो बस हार कर आपकी शरण में आ गया और नहीं छोड़ सकता तो बस मैं तुमको मिल जाऊंगा!
वैराग्य नहीं हुआ और समझता है कि मुझे वैराग्य हो गया!
जब वैराग्य की परीक्षा भगवान लेंगे तो 2 मिनट में फेल, क्रोध की परीक्षा लिया तो 2 मिनट में फेल, लालच के परीक्षा लिया तो 2 मिनट में फेल! भगवान एक भक्त की आज परीक्षा लिया देखते हैं कि परीक्षा में पास होता है कि फेल??
एक व्यक्ति भगवान की पूजा करने मंदिर जा रहा है!
सुबह 8:00 बजे शिवजी की जल अभिषेक करने गया!
वहां मंदिर पर पड़ा पुजारी जी का पैसा ₹3000 भूल गया और रखकर चला गया!
और मंदिर में कोई नहीं!
भगवान कहते हैं बेटा! तू समझ रहा है कि तेरा लालच खत्म हो गया अभी पता चलेगा कि तेरा अंदर कितना लालच है?
वह व्यक्ति आसपास को देखा कोई देख तो नहीं रहा मुझे...
फिर लगा उनको की कोई नहीं देख रहा चलो इस पैसा को मैं ही रख लेता हूं!
और वह व्यक्ति उस पैसे को चुपचाप अपने पर्स में रख लिया!
मतलब उस पैसा को भस्का दिया ऐसा दुनिया में कोई प्राणी नहीं ना कभी हुआ ना कभी होगा! जो पैसे को देखकर उनके मुख में लार नहीं टपका!
सच्चा भक्त वही कहलाता है जो पैसे से दूर रहता है कामवासना क्रोध लालच अहंकार इन सबसे दूर रहता है वही सच्चा भक्त होता है!
और वह पुजा करने जो गया था व्यक्ति कभी किसी को नहीं बताया पैसा को चुपचाप रख लिया!
भगवान कहते हैं तू मेरा पूजन करने आया था या कांड करने यह लूटमार करने तू मेरा पूजन करने आया था तो तेरा मन कहां था मेरे में या पैसे में???
जो पूजन भक्ति मैं जहां मन मुझ में ना हो वह पूजन नहीं, वह भक्ति नहीं!
और समझ रहा है कि मैं लालच को त्याग दिया हूं!
भगवान कहते हैं पगले जानता भी है की लालच किसको कहते हैं तुझे अभी लालच की परिभाषा ही नहीं पता और समझ रहा है की लालच को त्याग दिया तुझे 84 में घसीटूंगा याद रखना!
लोभ खत्म होने का मतलब क्या है?
पहले तो इसको समझ जा! कि उसके सामने अगर करोड़ पैसा भी पड़ा रहेगा तो वह उसको देखेगा नहीं भगवान के अलावा वह दुनिया की कोई भी दुसरा चीज देखेगा नहीं जो भगवान के सच्चे भक्त हैं उनको यही सबसे बड़ा लक्षण है वह भगवान के अलावा किसी को नहीं देखेगा!
स्वार्थ/पाप का मायाजाल अंदर भरा है
इसको कहते हैं लोभ का त्याग जब तक अंदर में पाप भरा हुआ है कामवासना का पाप, क्रोध का पाप, लालच का पाप, अहंकार का पाप, ईर्ष्या का पाप तब तक तुम मुझ तक नहीं पहुंच सकते!
काम वासना
क्रोध
लालच
अहंकार
ईर्ष्या
भगवान तक पहुंचने का एक ही मार्ग
लेकिन हां पहुंच सकता है परंतु कब? अगर वह अपनी बुराई को देखकर स्वीकार कर लिया कि भगवान मेरे अंदर पाप भरा हुआ है चारों तरफ से मैं आपकी प्रबल माया से हार चुका हूं मुझे अपनी शरण में ले गिरधारी मायाधिपति मुझको अपनी शरण में लीजिए!
भगवान को धोखा मत दो!
अंदर में पाप भरा हुआ है और समझ रहा है कि मैं निष्पाप हो गया तो मैं उसे कभी क्षमा नहीं करूंगा!
अपने अंदर झांककर देखो!
• मैं क्रोधी तो नहीं हूं?
• क्या मुझे पैसे की लालच है?
• क्या मुझे सम्मान की चाह है?
• क्या मुझे कामवासना सताती है?
• क्या मैं ईर्ष्या, राग-द्वेष से भरा हूं?
• क्या मुझे अहंकार है?
अगर हां... तो स्वीकार करो, वरना 84 का चक्कर तय है!
सच्चा मार्ग क्या है?
✓ अपनी बुराई को पहचानो
✓ उसे स्वीकार करो
✓ भगवान की शरण में आओ
✓ सच्चे मन से प्रार्थना करो
✓ अपने दोषों को मिटाने का प्रयास करो
✓ भगवान पर पूर्ण विश्वास रखो
यही मार्ग तुम्हें 84 के चक्र से मुक्त करेगा!
याद रखो!
स्वीकार करने वाला भगवान को पाता है, स्वीकार न करने वाला जन्म-जन्म भटकता है!
84 लाख योनि
॥ हरे कृष्णा हरे कृष्ण, कृष्णा कृष्णा हरे हरे ॥
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
राधा राधा राधा राधा राधा राधा

दुनिया का
सबसे बड़ा प्रपंच
भगवान सब देख रहे हैं
कोई देख तो नहीं रहा?
8:00 AM
3000₹
पुजारी जी
भूल गए
लालच का
असली टेस्ट
खुद पापी हैं और समझ रहे हैं
धर्मात्मा - पूजा करने आया था या लूटने?
जो स्वीकार कर ले अपनी बुराई वह भगवान के पास आ जाएगा
© लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

सब माया है - रिश्ते नाते
संस्कारों की मशीन
दिव्य दृष्टि - साक्षी
IND vs AUS • LIVE • 127/3
अनंत जन्मों के संस्कार
अनंत जन्मों के संस्कार
अनंत जन्मों के संस्कार
अनंत जन्मों के संस्कार
अनंत जन्मों के संस्कार
माया का पर्दा
मम्मी-पापा पति-पत्नी कोई नहीं,
सब अपने-अपने अनंत जन्मों के संस्कारों का पुंज,
एक मशीन है जो मेरे पास आ गई है
माया क्या है? सत्य को न देख पाना और झूठ में फंस जाना
© लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

तांत्रिक विद्या और
परम शक्ति ब्रह्म
का अद्भुत रहस्य
तांत्रिक विद्या की शक्ति बलवान है या ब्रह्म की शक्ति???
भगवान की लाख भक्ति करने पर भी भगवान चुप क्यों रहते हैं?
भगवान का अटल विधान!
दुनिया की सारी बड़ी-बड़ी शक्तियां ब्रह्म की शक्ति है!
परम शक्ति ब्रह्म के आगे उनकी इच्छा के विरुद्ध इस ब्रह्मांड में कोई इधर का उधर नहीं जा सकता!
इस जगत में जो कुछ भी हो रहा है परम शक्ति ब्रह्म की इच्छा से हो रहा है!
जो कुछ इस सृष्टि में हो रहा है उनकी नजरों और उनकी परमिशन के सामने हो रहा है!
शरीर में रक्त दौड़ता है उनकी इच्छा से, समस्त संसार परम सत्य से बेखबर है!
तो आज हम इसमें जानेंगे इसी सबसे बड़े परम सत्य को!
क्या तांत्रिक विद्या उनकी मर्जी से काम करती है?
तामसिक साधक तांत्रिक विद्या का प्रयोग एक दूसरे का विगाड़ करने, जीवन तवाह करने या खत्म करने के लिए करते हैं! लेकिन क्या यह विद्या उनकी मर्जी से काम करती है? नहीं! यह ब्रह्म परमात्मा की मर्जी से ही काम करती है! तांत्रिक विद्या की शक्ति कब तक काम करती है? और कब नहीं करती? इसका पूरा रहस्य जानते हैं आज हम!
भगवान श्री कृष्ण कहते हैं –
अगर कोई तुम्हें तांत्रिक विद्या द्वारा मारने की कोशिश कर रहा है! उनकी शक्ति का प्रहार आप पर तभी पड़ेगा, जब मैं चाहूँगा! अगर मैं उनकी शक्ति को रोक दूँ, तो वह प्रहार आप पर नहीं पड़ेगा!
संपूर्ण विश्व की जितनी भी तांत्रिक शक्तियाँ हैं, वह सब मेरी ही शक्तियाँ हैं! इस अनंत ब्रह्मांड में एक भी शक्ति ऐसी नहीं जो मुझसे रचित है! मेरी इच्छा के विना बड़े से बड़े महान तांत्रिक की विद्या कार्य नहीं कर सकती!!
जब मैं इशारा करता हूँ, शक्ति काम करती है!
जगत की भाग-दौड़ मेरी नजरों के सामने!
इस दुनिया में जितनी भाग-दौड़ हो रही है, वह मेरी नजरों के सामने हो रही है, मेरी परमिशन से हो रही है! मेरी इच्छा नहीं तो दौड़ वहीं पर बंद!
STOP
महाभारत की घटनाओं के पीछे कर्मों का विधान
1. द्रोपदी के पांच पुत्रों की मृत्यु
पूर्व जन्म में ये विश्वदेव थे, ऋषि के श्राप से मनुष्य जन्म लिवा और अल्पायु में मृत्यु का श्राप था! इनका जन्म उस श्राप को पूरा करने और महाविनाश के अतिम भाग को पूरा करने के लिए हुआ था!
2. राजा परीक्षित का बचना
अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित पांडव वंश के एकमात्र जीवित अंश थे। उनका वचना जरूरी था, क्योंकि उनके माध्यम से हस्तिनापुर का राज्य, धर्म की निरंतरता और कलयुग की शुरुआत की नींव रखी जानी थी!
3. अभिमन्यु को न बचाने का कारण
अभिमन्यु चंद्रदेव के पुत्र वर्चा के अवतार थे! चंद्रदेव के वचन के अनुसार उनकी आयु केवल 16 वर्ष थी! उनका उद्देश्य पूरा हो चुका था, इसलिए भगवान ने कर्म और काल के नियम में हस्तक्षेप नहीं किया!
इसका मूल कारण क्या है?
इन सब घटनाओं के पीछे वास्तव में कर्मों का विधान ही सबसे ऊपर था, जिसे स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने भी सर्वोपरि माना!
तांत्रिक की शक्ति कब तक काम करती है?
जब कोई आपके जीवन में मुसीबतें भेजता है और आप उस कारण से अनजान रहते हैं!
जब पता चलता है कि कोई व्यक्ति तांत्रिक विद्या से आपको नुकसान पहुँचा रहा है, तब भी आप पूजा-पाठ, यज्ञ करते है!
फिर भी मुसीबत क्यों नहीं जाती? क्योंकि परमात्मा की इच्छा के बिना उनकी शक्ति आप पर प्रहार नहीं करती!
तांत्रिक अहंकार में अंधा होकर समझता है कि मैंने भगवान को बांध लिया है! पर वह नहीं जानता, उसकी शक्ति भी परमात्मा की ही है!
जब तक आपके भाग्य में दुखों का भोग लिखा है, तब तक वही शक्ति काम करेगी!
जैसे ही भोग पूरा हुआ, एक सेकंड में उनकी सारी शक्ति ध्वस्त हो जाएगी!
क्या तांत्रिक भगवान को बाँध सकते है?
जवाब है– बिल्कुल नहीं!
माता यशोदा कितना भी प्रयास करती रहीं, लेकिन भगवान रस्सी से बांधे नहीं! रस्सी हमेशा छोटी हो जाती थी!
दुर्योधन ने भगवान को बंदी बनाने की कोशिश की, लेकिन भगवान ने विराट रूप दिखाकर सिद्ध करदिया– "तू मेरी शक्ति से काम कर रहा है!"
केवल प्रेम से, केवल भक्ति से, भगवान बंधते है! ब्रज की गोपिकाओं ने भगवान को प्रेम की डोर में बाँधा!
यह संपूर्ण सृष्टि किसकी शक्ति से चल रही हैं?
भगवान कहते हैं – जो कुछ इस सृष्टि में काम कर रहा है, सब मेरी शक्तियों से, चाहे बुरी शक्ति हो या अच्छी शक्ति!
सुख-दुख
जन्म-मृत्यु
रक्त का प्रवाह
शक्ति-असक्ति
जीवन के हर कार्य
यह अनंत ब्रह्मांड मेरी माया शक्ति के एक सूक्ष्म अंश से चल रहा है! मैं अनंत शक्तियों का महासागर हूँ!
परमात्मा का अटल नियम
मेरी इच्छा के विना पता भी नहीं हिल सकता!
शरीर से प्राण तभी निकलते हैं, जब मेरी आज्ञा होती है!
तांत्रिक द्वारा भेजा सर्प भी मेरी इच्छा से ही डसता है या लौट जाता है!
पाँच प्रकार के प्राण (प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान) मेरी शक्ति है!
मैं ही सर्प को बनाता हूँ, उसमें जीवन डालता हूँ और तांत्रिक की विद्या को भी शक्ति देता हूँ!
मेरी इच्छा के खिलाफ जाएगा कौन? – कोई नहीं!
अहंकार में अंधा प्राणी
समझता है –
"मैं ही सब कुछ हूँ! मेरी शक्ति से सब कर रहा हूँ!"
यह सबसे बड़ा अज्ञान है!
भगवान का वचन
दुनिया की सारी शक्तियां मेरे नियम (कर्मों का विधान) के अधीन हैं! मैं स्वयं भी इसी नियम के आगे नतमस्तक होता हूँ!
मेरी सारी शक्तियां इसी कर्मों के विधान से चलती है!
श्रीमद्भगवद्गीता – 3.27
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥ 27 ॥
भावार्थ– प्रकृति के गुणों द्वारा सभी कर्म कराए जाते हैं, लेकिन अहंकार से भ्रमित आत्मा सोचती है कि "मैं ही कर्ता हूँ"।
इस अनंत ब्रह्मांड का एकमात्र परम सम्राट– परमात्मा! उनकी आज्ञा के बिना कोई शक्ति काम नहीं कर सकती!
॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

तांत्रिक विद्या और
परम शक्ति ब्रह्म
का अद्भुत रहस्य
जो कुछ इस सृष्टि में हो रहा है, मेरी शक्तियों से हो रहा है! मेरे बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता!
तांत्रिक शक्ति क्या उनकी मर्जी से काम करती है?
नहीं !
उत्तर है – सब परम शक्ति ब्रह्म परमात्मा की मर्जी से!
भगवान का अटल विधान
मेरी इच्छा के विरुद्ध इस अनंत ब्रह्मांड में कोई इधर का उधर नहीं जा सकता!
सारी बड़ी-बड़ी शक्तियाँ मेरी ही शक्तियाँ हैं, चाहे अच्छी हो या बुरी!
भगवान की अनुमति के बिना तांत्रिक विद्या की शक्ति काम नहीं करती!
मैं इशारा करता हूँ तब शक्ति काम करती है!
भोग के समय तक शक्ति काम करेगी!
भोग पूरा होते ही शक्ति एक क्षण में समाप्त!
STOP
मेरी इच्छा नहीं तो दौड़ वहीं पर बंद!
शरीर में रक्त दौड़ता है मेरी इच्छा से!
तांत्रिक का भ्रम और अहंकार
वह सोचता है – मैंने भगवानों को बांध लिया! अब मेरे आगे कोई कुछ नहीं कर सकता!
परंतु सत्य यह है कि...
उसकी शक्ति भी मेरी है,
उनका बनाया सर्प भी मैं हूँ,
और उसका प्रहार भी मैं हूँ!
महाभारत की घटनाओं में छिपा यह रहस्य
1. द्रौपदी के 5 पुत्र क्यों मरे?
पूर्व जन्म का श्राप! ऋषि के श्राप के कारण उनका जीवन अल्पायु का था! उनका जन्म केवल श्राप को पूरा करने के लिए हुआ था!
2. राजा परीक्षित क्यों बच गए?
पांडव वंश की रक्षा और कलयुग की शुरुआंत के लिए उनका जीवित रहना आवश्यक था! धर्म की निरंतरता और सृष्टि के संतुलन के लिए भगवान ने बचाया!
3. अभिमन्यु को क्यों न बचा पाए?
अभिमन्यु चन्द्रदेव के पुत्र 'वर्चा' के अवतार थे! केवल 16 वर्ष के लिए पृथ्वी पर आए थे! भगवान चन्द्रदेव के वचन से बंधे थे!
भगवान केवल प्रेम से बंधते हैं
न रस्सी, न मंत्र, न तंत्र – केवल भक्त के प्रेम की डोर में ही परमात्मा बंधते हैं!
परमात्मा का नियम – कर्मों का विधान सबसे महान!
गीता का सत्य वचन
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः
कर्मोणि सर्वशः।
अहइकारविमूढात्मा
कर्ताहमिति मन्यते ॥ 27 ॥
अर्थः सभी कर्म प्रकृति के गुणों द्वारा होते हैं, अहंकार में मूढ मनुष्य सोचता है कि 'मैं ही कर्ता हूँ'!
यह संसार कठपुतली है, और
सबके प्राणों की डोर मेरे हाथ में है!
मेरी मर्जी के बिना न जन्म, न मृत्यु, न सुख, न दुख, कुछ भी नहीं!
सुख-दुख का भोग और समय
जब तक भाग्य में भोग लिखा है, शक्ति काम करेगी! समय पूरा होते ही एक क्षण में शक्ति निष्प्रभाव हो जाएगी!
अहंकार का अंत निश्चित है
रावण, कंस, दुर्योधन जैसे महान शक्तिशाली भी अपने कर्मों का भोग पूरा होते ही धूल में मिल गए!
तांत्रिक प्रहार और परमात्मा का नियंत्रण
तांत्रिक सर्प बनाकर किसी पर छोड़ता है!
अगर मेरी इच्छा होगी तो सर्प प्रहार करेगा!
अगर मेरी इच्छा नहीं होगी तो सर्प लौट जाएगा!
प्राणों का आना-जाना, मेरी आज्ञा से होता है!
याद रखने योग्य बातें
★ दुनिया की सारी शक्तियां मेरी ही शक्तियां हैं!
★ मेरी अनुमति के बिना कोई शक्ति काम नहीं करती!
★ कर्मों का विधान सबसे ऊपर है!
★ भोग पूरा होने पर शक्ति स्वतः समाप्त हो जाती हैं!
★ मैं ही करता, कारण और नियंत्रक हूँ!
★ केवल प्रेम से मैं भक्तों के वश में होता हूँ!
इस पूरे खेल का एकमात्र सम्राट – परमात्मा
जो कुछ भी है, मैं ही हूँ!
★ मैं ही शक्ति हूँ
★ मैं ही सर्प हूँ
★ मैं ही तांत्रिक का मंत्र हूँ
★ मैं ही पूजा करने वाला हूँ
★ मैं ही रक्षा करने वाला हूँ
★ मैं ही संहार करने वाला हूँ
मेरे नियम से बड़ी कोई शक्ति नहीं! मेरी अनुमति के बिना इस अनंत ब्रह्मांड में कुछ भी संभव नहीं!
सत्य को जानो, अहंकार छोड़ो, और मेरी शरण में आओ! यही मुक्ति का मार्ग है!
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा

तांत्रिक विद्या और
परम शक्ति ब्रह्म का
अद्भुत रहस्य
क्या तांत्रिक विद्या की शक्ति बलवान है ?
इस अनंत ब्रह्मांड में परम शक्ति ब्रह्म की इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं हो सकता !
या परम शक्ति ब्रह्म की शक्ति ?
दुनिया की सारी बड़ी-बड़ी शक्तियां ब्रह्म की शक्ति है!
इस जगत में जो कुछ भी हो रहा है परम शक्ति ब्रह्म की इच्छा से हो रहा है!
इस दुनिया में जितनी भाग दौड़ हो रही है परमात्मा की नजरों के सामने, उनकी अनुमति से हो रही है!
शरीर में रक्त दौड़ता है उनकी इच्छा से, समस्त संसार परम सत्य से वेखबर है!
भगवान की लाख भक्ति करने पर भी भगवान चुप क्यों रहते हैं ? भगवान का अटल विधान!
तांत्रिक विद्या की शक्ति कब काम करती है और कब नहीं ?
कब काम करती है ?
जब जीव के कर्मों में दुखों का भोग लिखा होता है, तब परमात्मा की अनुमति से तांत्रिक विद्या की शक्ति कुछ समय के लिए काम करती है।
जितने समय का भोग लिखा है, उतने समय तक ही उनकी शक्ति काम करेगी, भोग पूरा होते ही 1 सेकंड में शक्ति समापत!
संपूर्ण विश्व की सारी शक्तियां मेरी शक्ति है, मेरी अनुमति के विना कोई शक्ति काम नहीं कर सकती!
मैं इशारा करता हूं शक्ति को, तब उनकी शक्ति काम करती है!
सारी शक्तियां मेरी हैं !
देवी शक्ति
असुरी शक्ति
तांत्रिक शक्ति
मानव शक्ति
सब मेरी आज्ञा से काम करते हैं !
कब काम नहीं करती ?
जब परमात्मा नहीं चाहते, तब तांत्रिक विद्या की शक्ति उस व्यक्ति पर नहीं पड़ेगी।
मेरी इच्छा के विरुद्ध इस ब्रह्मांड में कोई शक्ति कुछ नहीं कर सकती!
STOP
उनकी बनाई शक्ति, सर्प आदि मेरी इच्छा के विना उस व्यक्ति को छू भी नहीं सकतो!
भनभारत श्रीकृष्ण कवा
(कर्मों का विधान)
1. द्रौपदी के पांच पुत्र क्यों मरे ?
पूर्व जन्म में विश्वेदेवों ने ऋषि का अपमान लिया था। श्राप मिला कि मनुष्य रूप में जन्म लेकर अल्पायु में मृत्यु होगी। उनका जन्म केवल उस श्राप को पूरा करने के लिए हुआ।
2. राजा परीक्षित क्यों बचे ?
पांडव वंश के एकमात्र जीवित अंश थे। उन्हीं के माध्यम से कलियुग की शुरुआत होनी थी और धर्म की संतुलन व्यवस्था चलनी थी, इसलिए भगवान ने ब्रह्मास्त्र के प्रहार से उनकी रक्षा की।
3. अभिमन्यु को क्यों न बचाया ?
अभिमन्यु चंद्रदेव के पुत्र 'वर्चा' थे। चंद्रदेव ने वचन दिया था कि उनका पुत्र केवल 16 वर्ष तक ही रहेगा। भगवान कर्म और काल के नियम में हस्तक्षेप नहीं करते।
तांत्रिक और अहंकारी का भ्रम
तांत्रिक या अहंकारी प्राणी सोचता है कि "मैंने किया" वही अंधा है। वह नहीं जानता कि उसकी शक्ति भी परमात्मा की आज्ञा से ही काम कर रही है। उसका प्राण भी परमात्मा के हाथ में है। वह क्या किसी को मारेगा, क्या बचाएगा ?
मैंने ढ्गवान को वांध लिया है, मेरी शक्ति सबसे बड़ी है!
परमात्मा की इच्छा के बिना कुछ भी संभव नहीं!
भगवान श्रीकृष्ण का वचन
जो कुछ इस सृष्टि में काम कर रहा है, सब मेरी शक्तियों से – चाहे अच्छी शक्ति हो या बुरी शक्ति। मैं जिनको चाहता हूं वही बचते हैं। और जिनको नहीं चाहता वे नहीं बचते!
गीता का सार (3.27)
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥ 27 ॥
प्रकृति के गुण सभी कर्मों को करते हैं, लेकिन अहंकार से मूढ़ हुआ मनुष्य स्वयं को कर्ता मानता है।
परम सत्य
मेरी इच्छा के विना इस ब्रह्मांड में पता भी नहीं हिल सकता, ना किसी की मृत्यु हो सकती है, ना कोई किसी को बचा सकता है। जन्म-मरण, जीवन-मरण सब मेरे इशारों के कटपुतली हैं।
इस पूरे खेल का सबसे बड़ा सम्राट है – परमात्मा
दुनिया की नहीं, अनंत ब्रह्मांड की सारी शक्तियां केवल मैं ही हूं।
मेरी इच्छा के विरुद्ध कोई शक्ति कुछ भी नहीं कर सकती।
भोग पूरा हुआ तो तांत्रिक शक्ति एक क्षण में ध्वस्त हो जाएगी।
कर्मों का विधान सबसे ऊपर है, मैं भी उसी के अधीन कार्य करता हूं।
सब कुछ मैं हूं, मुझसे ही सब कुछ है, मुझमें ही सब कुछ है !
याद रखें
अहंकार ही अज्ञान है, समर्पण ही ज्ञान है। परमात्मा की शरण ही सच्चा सुरक्षा कवच है!
|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ||
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
राधा राधा राधा राधा राक्षा राधा राधा

तांत्रिक विद्या और
परम शक्ति ब्रह्म का
अद्भुत रहस्य
तांत्रिक विद्या की शक्ति बलवान है या ब्रह्म की शक्ति?'
भगवान की लाख शक्ति करने पर भी भगवान चुप क्यों रहते हैं?
भगवान का अटल विधान!
दुनिया की सारी वड़ी-वड़ी शक्तियां ब्रह्म की शक्ति हैं!
परम शक्ति ब्रह्म के आगे उनकी इच्छा के विरुद्ध इस दुनिया में क्या इस अनंत ब्रह्मांड में कोई इधर का उधर नहीं जा सकता!
इस जगत में जो कुछ भी हो रहा है परम शक्ति ब्रह्म की इच्छा से हो रहा है!
इस दुनिया में जितनी भाग दौड़ हो रही हैं परम शक्ति परमात्मा के सामने उनकी नजरों के सामने हो रहा है! उनकी परमिशन के सामने हो रहा है उनकी इच्छा नहीं तो दौड़ वहीं पर बंद STOP!
शरीर में रक्त दौड़ता है उनकी इच्छा से,,,, समस्त संसार परम सत्य से बेखबर है! और एक दूसरे को दोषी देने में लगे हैं और सत्य क्या है? उसको नहीं जान पा रहे!
तो आज हम इसमें जानेंगे इसी सबसे बड़े परम सत्य को!
दुनिया में कितने लोग नाना और मम्मी को जानते हैं?
80% वाले कौन?
80% प्राणी ना नाना को जानते हैं ना मम्मी को जानते हैं!
ये "मेरा मेरा" के नशे में चूर हैं!
मेरा शरीर, मेरा घर, मेरा धन, मेरा मन, मेरी बुद्धि, मेरा परिवार –
सब कुछ मेरा मेरा!
ये 80% में आते हैं!
15% वाले कौन?
15% ये भगवान को जानते हैं (नाना को)
लेकिन प्रकृति (मम्मी) को नहीं जानते!
ये कहते हैं – "हे भगवान!
यह बुद्धि तुम्हारी है, यह मन तुम्हारा है,
यह सब आपका है, मेरा कुछ नहीं"
लेकिन इनको पूरा सत्य मालूम नहीं,
प्रकृति की भी खबर नहीं!
5% वाले कौन?
5%
ये गीता के रहस्य को पूरी तरह समझ चुके!
ये जानते हैं – मन, बुद्धि, अहंकार,
सब प्रकृति के हैं, प्रकृति के वशीभूत हैं!
ये नाना (परमात्मा) और मम्मी (प्रकृति) दोनों को जानते हैं!
नाना और मम्मी का रहस्य
नाना (परमात्मा)
मम्मी (प्रकृति)
नाना से मम्मी पैदा हुएं,
मम्मी से नाना नहीं!
मम्मी का नियंत्रक नाना
बच्चा का नियंत्रक मम्मी
इंद्रिय, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार
ये पाँच बच्चे (कठ़पुतली)
सतोगुण
रजोगुण
तमोगुण
इन तीनों गुणों की रस्सियों से ये बांधे हैं!
गीता का अटल सत्य!
न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥5॥
(गीता अध्याय 3 श्लोक 5)
यह सब प्रकृति के गुणों द्वारा जबन्दस्ती करवाया जा रहा हैं!
इंद्रिय, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार – प्रकृति के नन्हे बच्चे!
इंद्रिय
मन
बुद्धि
चित्त
अहंकार
इनका रिमोट किसके पास?
प्रकृति (मम्मी)
भगवान कहते हैं – जो कुछ इस सृष्टि में काम कर रहा है! सब मेरी शक्तियों से शहे बुरी शक्ति होत सही अवकी शक्ति कत्ते सवे आधीन होकर काम कर मवसं रत्तह्री!
भगवान चुप क्यों रहते हैं? आखिर रहस्य क्या है?
अश्वस्थामा द्वारा परीक्षित को मारने का प्रयास
भगवान चाहते थे कि परीक्षित वचे,
क्योंकि धर्म की गंगा आगे बढ़नी थी!
भगवान ने अपनी शक्ति से उसकी रक्षा की!
द्रंपद्वी के पांच पुत्रों की हत्या
उनके पूर्व जन्म के श्राप और कर्मों का फल भोगने का समय था!
भगवानें नं रोंक नहीं किया!
आश्मन्यु का वध
चंद्रदेव के वचन अनुसार
16 वर्ष में ही वापस लोटना था!
भगवान ने नियय का पालन किया!
रावण, कंस, दुर्योधन का अंत
अहंकार में चूर होकर वे समझे –
"मैं अजेय हूं!" लेकिक भोग पुरा होते ही
उनकी सारी शक्तियां राख हो गहीं हैं!
ये है परमात्मा का अटल विधान!
सारी शक्तियां परमात्मा की
दुनिया की नहीं,
अनंत ब्रह्मांड की सारी शक्तियां
केवल परमात्मा की हैं!
कोई भी शक्ति उनकी अनुमति
के बिना काम नहीं करती!
मरी शक्ति के बिना पत्ता भी
नहीं हिल सकता!
कर्मों का विधान सर्वोपरि
मेरे नियम में सबसे ऊपर स्थान कर्मों का विधान हैं!
मैं भी उसी के अनुसार कार्य करता हूं!
जितना भोग लिखा है,
उतना ही दुख या सुख मिलेगा!
तांत्रिक शक्ति कब काम करती हैं?
जब तक भोग पूरा नहीं होता,
तब तक तांत्रिक शक्ति
मेरी आज्ञा से काम करती है!
STOP
जेसे ही समय पूरा,
एक सेंकड में शक्ति
खत्म!
भगवान केवल प्रेम से वंधते हैं
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥27॥
अर्थ – प्रकृति के गुणों द्वारा सारे कर्म हो रहे हैं,
परंतु अहंकार में मूढ जीव सोचता है –
"मैं ही कर्ता हूं"
भगवान कहते हैं –
जो कुछ इस सृष्टि में काम कर रहा है!
सब मेरी शक्तियों से है – चाहे
अच्छी शक्ति हो, चाहे बुरी शक्ति!
सब मेरे आधीन होकर काम कर रहा हैं!
प्राणी का सबसे बड़ा अज्ञान
मैं
मैं
अहंकार में चूर होकर समझता है –
"मैं ही सब कुछ हूं!"
वह नहीं जानता कि उसके
प्राण भी मेरे हाथ में हैं!
गीता का सार (3.27)
उाव प्रुत्जी के गुणीः न्त सत्ती वो सन्ना सनिने वलन्ते,
युग्तु अहंकार में मुर्खन्नी कतती हैं! जसं बी आंनी कात्त!
झोवल रोवन ग्रामली वहीं मै यहते के युत्म कतनी नहीं!
इस संपूर्ण संसार का एकमात्र परम समाट वही ईश्वर है! उसकी आज्ञा के विना कोई शक्ति, कोई तंत्र, कोई अस्त्र, कोई विद्या कुछ भी नहीं कर सकती!
॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
राधा राधा राधा राधा राधा राधा

तांत्रिक विद्या और
परम शक्ति ब्रह्म का अद्भुत रहस्य
तांत्रिक विद्या की शक्ति बलवान है या ब्रह्मा की शक्ति?
भगवान की लाख भक्ति करने पर भी भगवान चुप क्यों रहते हैं?
भगवान का अटल विधान!
दुनिया की सारी बड़ी-बड़ी शक्तियां ब्रह्मा की शक्ति हैं!
परम शक्ति ब्रह्मा के आगे उनकी इच्छा के विरुद्ध इस दुनिया में क्या इस अनंत ब्रह्मांड में कोई इधर का उधर नहीं जा सकता!
इस जगत में जो कुछ भी हो रहा हैं परम शक्ति ब्रह्मा की इच्छा से हो रहा हैं!
इस दुनिया में जितनी भाग दौड़ हो रही है परम शक्ति परमात्मा के सामने उनकी नजरों सामने हो रहा हैं! उनकी परमिशन के सामने हो रहा है उनकी इच्छा नहीं तो दौड़ वहीं पर बंद STOP!
शरीर में रक्त दौड़ता है उनकी इच्छा से,,, समस्त संसार परम सत्य से बेखबर है! और एक दूसरे को दोषी देने में लगे हैं और सत्य क्या हैं? उसको नहीं जान पा रहे!
इस खेल का सबसे बड़ा सम्राट कौन?
परमात्मा!
जिनकी आज्ञा के विना दुनिया की कोई भी शक्ति काम नहीं कर सकती! दुनिया की जितनी भी बड़ी-बड़ी शक्तियां है सब परमात्मा की शक्तियां हैं!
दुनिया में कितने लोग नाना और मम्मी (प्रकृति) को जानते हैं?
80% वाले कौन?
80% प्राणी ना नाना को जानते हैं ना मम्मी को!
यह "मेरा-मेरा' का नशा पिये हुए सांसारिक प्राणी हैं – मेरा घर, मेरा शरीर, मेरा धन, मेरी पत्नी, मेरी बुद्धि, मेरा मन... सब 'मेरा-मेरा' का गाना गाने वाले!
मेरा घर
मेरा शरीर
मेरा शरीर
मेरी बुद्धि
मेरा मन
ऐसे 80% प्राणी न तो नाना को जानते हैं और न मम्मी को जानते हैं!
15% वाले कौन?
15% इंद्रिय, मन, बुद्धि कहते हैं – "भगवान! यह बुद्धि आपकी है, मेरी नहीं"
ऐसे भक्त भगवान को जानते हैं (नाना को जानते हैं) परंतु प्रकृति (मम्मी) को नहीं जानते!
जो कहते हैं – "हे भगवान! यह दुद्धि आपकी है, यह मन आपका है, मेरा कुछ नहीं"
लेकिन अभी पुरा सत्य मालूम नहीं, प्रकृति की भी खवर नहीं!
हे शगवान! यह बुद्धि आपकी है, मेरी नहीं, सब आपका है!
ऐसे भगवान को मानने वाले केवल 15% हैं!
5% वाले कौन?
ये 5% वाले लोग गीता के नस-नस, कोने-कोने के रहस्य को समझ चुके हैं!
ये जानते हैं – मन, बुद्धि, अहंकार, इंद्रियां, सब प्रकृति के हैं, प्रकृति के वशीभुत हैं!
ये नाना (परमात्मा) और मम्मी (प्रकृति) दोनों को जानते हैं!
ऐसे विरले ज्ञानी केवल 5% हैं!
नाना और मम्मी का रहस्य
नाना (परमात्मा)
मम्मी (प्रकृति)
इंद्रिय
मन
बुद्धि
चित्त
अहंकार
ये पांच बच्चे (कठपुतली)
सतोगुण
रजोगुण
तमोगुण
इन तीन गुणों की रस्सियों से बंधे हैं!
इंद्रिय, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार – ये पांचों प्रकृति के नन्हे बच्चे हैं!
ये पांचों बच्चे कठपुतली हैं! इनका रिमोट प्रकृति (मम्मी) के हाथ में है और प्रकृति का रिमोट परमात्मा (नाना) के हाथ में हैं!
इंद्रिय
मन
बुद्धि
चित
अहंकार
मम्मी (प्रकृति)
नाना (परमात्मा)
अहंकार – अंधा बच्चा!
मेरा-मेरा का नशा पीकर यह शैतान (अहंकार) अंधा हो जाता हैं! इसको मालुम नहीं कि यह खुद किसका हैं? यह हमारे ही नाश करने वाला है!
यह मर गया तो मुक्ति, यह नहीं मरा तो बंधन!
मैं
मैं
मेरा
मेरा
मेरा
तांत्रिक विद्या की शक्ति क्यों काम करती हैं?
तांत्रिक विद्या की शक्ति भी परमात्मा की शक्ति हैं! जब तक आपके कर्मों के भोग लिखे हैं, तब तक परमात्मा की अपुमति से वह शक्ति काम करती हैं!
भोग पुरा – शक्ति समाप्त!
एक सेकेंड भी शक्ति काम नहीं करेगी!
भगवान का अटल विधान!
जो कुछ भी इस सृष्टि में हो रहा हैं, सब मेरी शक्तियों से हो रहा हैं! मैं न चाहूं तो पत्ता भी नहीं हिलेगा!
मेरी इच्छा के विना शरीर में रक्त नहीं दौड़ेगा! जन्म-मृत्यु भी मेरी आज्ञा से ही होती हैं!
महाभारत की घटनाऐं और कर्मों का रहस्य
1. द्रौपदी के 5 पुत्र क्यों मरे?
पूर्व जन्म के श्राप के कारण! मैंने चाहा कि उनका भोग पुरा हो, इसलिए उनकी रक्षा नहीं की!
2. परीक्षित क्यों बचे?
वंश की रक्षा, धर्म की स्थापना और कलयुग की शुरुआत के लिए! उनकी रक्षा मैने स्वयं की!
3. अभिमन्यु को क्यों नहीं बचाया?
चंद्रदेव के वचन और उनके कर्मों का समय पूरा हो चुका था! मैं अपने नियम (कर्मों का विधान) से बंधा हूँ!
गीता (3.27)
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः
कर्माणि सर्वशः ।
अहंकारविमूढात्मा
कर्ताहमिति मन्यते ॥ 27 ॥
अर्थ – प्रकृति के गुणों द्वारा सारे कार्य हो रहे हैं, परंतु अज्ञानवश मनुष्य 'मैं कर्ता हूं' ऐसा मानता है।
इसलिए, हे भक्तों! नानां (परमात्मा) की शरण जाओ, मम्मी (प्रकृति) को समझो और "मैं-मेरा" के अहंकार को त्यागो, तभी सच्चे ज्ञान से जीवन में शांति और मुक्ति प्राप्त होगी!
॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
लेख – श्री रांधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

तांत्रिक विद्या और
परम शक्ति ब्रह्म का
अद्भुत रहस्य
भाग-1
तांत्रिक विद्या और परम शक्ति ब्रह्म का अदभुत रहस्य
इस अनंत ब्रह्मांड में परम शक्ति ब्रह्म की इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं हो सकता !
दुनिया की सारी बड़ी-बड़ी शक्तियां ब्रह्म की शक्ति है !
इस जगत में जो कुछ भी हो रहा है परम शक्ति ब्रह्म की इच्छा से हो रहा है !
इस दुनिया में जितनी भाग दौड़ हो रही है परमात्मा की नजरों के सामने, उनकी अनुमति से हो रही है !
शरीर में रक्त दौड़ता है उनकी इच्छा से, समस्त संसार परम सत्य से बेखबर है !
ॐ
भगवान की लाख भक्ति करने पर भी भगवान चुप क्यों रहते है ? भगवान का अटल विधान !
तांत्रिक विद्या की शक्ति कब काम करती है और कब नहीं ?
कब काम करती है ?
जब जीव के कर्मों में दुखों का भोग लिखा होता है, तब परमात्मा की अनुमति से तांत्रिक विद्या की शक्ति कुछ समय के लिए काम करती है !
जितने समय का भोग लिखा है, उतने समय तक ही उनकी शक्ति काम करेगी, भोग पूरा होते ही 1 सेकंड में शक्ति समापत !
संपूर्ण विश्व की सारी शक्तियां मेरी शक्ति है, मेरी अनुमति के बिना कोई शक्ति काम नहीं कर सकती !
मैं इशारा करता हूं शक्ति को, तब उनकी शक्ति काम करती है !
सारी शक्तियां मेरी हैं !
देवी शक्ति
असुरी शक्ति
तांत्रिक शक्ति
मानव शक्ति
सब मेरी आज्ञा से काम करते हैं !
कब काम नहीं करती ?
जब परमात्मा नहीं चाहते, तब तांत्रिक विद्या की शक्ति उस व्यक्ति पर नहीं पड़ेगी !
मेरी इच्छा के विरुद्ध इस ब्रह्मांड में कोई शक्ति कुछ नहीं कर सकती !
STOP
उनकी बनाई शक्ति, सर्प आदि मेरी इच्छा के बिना उस व्यक्ति को छू भी नहीं सकती !
महाभारत के प्रमाण
1. द्रौपदी के पॉच पुत्र क्यों मरे ?
पूर्व जन्म में विश्वेदेवों ने ऋषि का अपमान किया था। श्राप मिला कि मनुष्य रूप में जन्म लेकर अलपायु में मृत्यु होगी। उनका जन्म केवल उस श्राप को पूरा करने के लिए हुआ!
उनका जन्म ही श्राप पुरा करने और महाविनाश के अंतिम हिस्से को समापत करने के लिए हुआ।
2. राजा परीक्षित क्यों बचे ?
पांडव वंश के एकमात्र जीवित अंश थे। यदि वे मर जाते तो वंश समापत हो जाता! उन्हें हस्तिनापुर का राजा बनना था और उन्हीं के माध्यम से द्वापर युग का अंत और कलयुग की शुरुआत होनी थी!
सृष्टि के संतुलन और धर्म की निरंतरता के लिए उन्हें जीवनदान दिया गया!
परमात्मा ने संसार के संतुलन के लिए राजा परीक्षित की रक्षा की !
3. अभिमन्यु को क्यों न बचाया ?
अभिमन्यु चंद्रदेव के पुत्र 'वर्चा' थे! चंद्रदेव ने वचन दिया था कि उनका पुत्र केवल 16 वर्ष तक ही रहेगा! अपाना उद्देश्य पुरा कर वह महायुद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए!
चंद्रदेव के वचन और कर्म-काल के नियम के कारण अभिमन्यु को नहीं बचाया गया !
तांत्रिक और अहंकारी का भ्रम
तांत्रिक या अहंकारी प्राणी सोचता है कि "मैं किया" वही अहंकार उसे अंधा बना देता है। वह नहीं जानता कि उसकी शक्ति भी परमात्मा की आज्ञा से ही काम कर रही है। उसका प्राण भी परमात्मा के हाथ में है। वह क्या किसी को मारेगा, क्या बचाएगा ?
मैने सबकी बाँध लिया है, मेरी शक्ति सबसे बड़ी है !
परमात्मा की इच्छा के बिना कुछ भी संभव नहीं !
भगवान श्रीकृष्ण का वचन
जो कुछ इस सृष्टि में काम कर रहा है, चाहे बुरी शक्ति हो चाहे अच्छी शक्ति, वह सब मेरी शक्तियों द्वारा मेरे नियम के अनुसार कार्य कर रहा है !
मेरी इच्छा के विरुद्ध इस ब्रह्मांड में कोई भी चराचर प्राणी इधर का उधर नहीं जा सकता !
गीता का सार (3.27)
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥ 27 ॥
प्रकृति के गुण सभी कर्मों को करते हैं, लेकिन अहंकार से मूढ़ हुआ मनुष्य स्वयं को कर्ता मानता है !
परम सत्य
मेरी इच्छा के बिना इस ब्रह्मांड में पता भी नहीं हिल सकता, ना किसी की मृत्यु हो सकती है, ना कोई किसी को बचा सकता है ! जन्म-मरण, जीवन-मरण सब मेरे इशारों के कटपुतली हैं !
इस पूरे खेल का सबसे बड़ा सम्राट है – परमात्मा
दुनिया की नहीं, अनंत ब्रह्मांड की सारी शक्तियां केवल मैं ही हूं !
मेरी इच्छा के विरुद्ध कोई शक्ति कुछ भी नहीं कर सकती !
भोग पूरा हुआ तो तांत्रिक शक्ति एक क्षण में धवस्त हो जाएगी !
कर्मों का विधान सबसे ऊपर है, मैं भी उसी के अधीन कार्य करता हूं !
सब कुछ में हूं, मुझसे ही सब कुछ है, मुझमें ही सब कुछ है !
याद रखें
अहंकार ही अज्ञान है, समर्पण ही ज्ञान है! परमात्मा की शरण ही सच्चा सुरक्षा कवच है !
॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
लेख - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा

भाग-2
तांत्रिक शक्ति कब काम करती है और कब नहीं? (कर्मों का विधान)
तांत्रिक विद्या और परम शक्ति ब्रह्म का अद्भुत रहस्य
सभी शक्तियों परमात्मा की हैं और उनके कर्मों के विधान से ही कार्य करती हैं !
भगवान कहते हैं– मेरी आज्ञा से संसार की हर शक्ति काम करती हैं, मेरी इच्छा के विरुद्ध इस अनंत ब्रह्मांड में कुछ भी नहीं हो सकता !
कर्मों का हिसाब अचूक है !
जैसा कर्म करते हैं, वैसा फल निश्चित है !
भोग का समय निर्धारित हैं !
जितने समय का भोग लिखा है, उतने समय तक ही शक्ति काम करती हैं !
परमात्मा की अनुमति से !
ईश्वर की अनुमति के बिना किसी भी शक्ति का प्रहार किसी पर नहीं पड़ सकता !
शक्ति मेरी, इच्छा मेरी !
तांत्रिक विद्या की शक्ति भी मेरी हैं, मैं चाहूं तब चले, न चाहूं तो एक क्षण में बंद !
भोग पूरा, शक्ति समाप्त !
भोग पूरा होते ही तांत्रिक शक्ति, एक क्षण में ध्वस्त, कार्यहीन और निष्प्रभावी हो जाती हैं !
तांत्रिक शक्ति कब काम करती है और कब नहीं?
कब काम करती है?
1. जब कर्मों का भोग लिखा होता है
जब आपके भागय में दुखों का भोग लिखा होता है, तभी वह शक्ति सक्रिय होती है !
2. जब परमात्मा अनुमति देते है
ईश्वर की अनुमति लिलने मर ही तांत्रिक शक्ति कार्य करने की अनुमति पाती है !
3. जब समय (Time Period) पूरा नहीं हुआ होता
जितने समय तक भोग लिखा है, उतने समय तक वह शक्ति काम करती है !
4. जब आपके कर्मों के कारण यह योग्य है
पिछले जन्मों के किए कर्मों के कारण वह अवस्या आती है जब शक्ति प्रहार करती है !
कब काम नहीं करती?
1. जब भोग पूरा हो गया हो
जैसे ही भोग पूरा हुआ, तुरंत शक्ति निपक्रिय हो जाती है !
2. जब परमात्मा रोक देते हैं
ईश्वर यदि रोक दें, तो कोई भी शक्ति काम नहीं करती !
3. जब आपकी भक्ति सत्य और निष्कपट हो
सच्ची भक्ति परमात्मा को प्रसन्न करती है, और वे रक्षा करते हैं !
4. जब आपकी रक्षा स्वयं भगवान करते हैं
तब कोई तांत्रिक विद्या, कोई शाप, कोई बाण, कुछ भी काम नहीं करता !
तामसिक की भ्रमित बुद्धि और अहंकार
तांत्रिक क्यों हंसता हैं?
उसे लगता है कि उसने बड़े-बड़े भगवानों को अपने वश में कर लिया है !
उसे क्षम होता है कि उसकी शक्ति के आगे कोई कुछ नहीं कर सकता !
अहंकार के अंधेपन में वह सत्य को देख ही नहीं पाता !
वह नहीं जानता कि उसकी शक्ति क्यों काम कर रही है?
उसे समय का पता नहीं कि उसकी शक्ति कब बंद हो जाएगी?
सत्य क्या है?
तू केवल कठपुतली है ! तेरे प्राणों की डोर मेरे हाथ में हैं !
सारी शक्तियों मेरी हैं, तू निमित्त मात्र है !
मैं इशारा करता हूं, तभी तेरी शक्ति काम करती हैं !
भोग पूरा हुआ, तो तेरी शक्ति एक क्षण में समाप्त !
मेरी इच्छा के बिना तू कुछ भी नहीं कर सकता !
मूर्ख प्राणी कैसे अंधा हैं?
वह समझता है "मैं करता हूं, मैं ही सब कुछ हूं" !
उसकी शक्तियों को वह अपनी समझता हैं, जबकि वह सब ईश्वर की देन है !
उसे यह भी नहीं मालूम कि उसका प्राण भी परमात्मा के हाथ में है !
यही सबसे बड़ा अज्ञान और पागलपन है !
याद रखने योग्य मुख्य बातें
शरीर में रक्त दौड़ता है उनकी इच्छा से !
इस दुनिया में जो कुछ हो रहा हैं उनकी नजरों के सामने हो रहा है !
STOP
उनकी अनुमति नहीं तो भाग-दौड़ वहीं पर बंद !
ॐ
दुनिया की सारी बड़ी-बड़ी शक्तियों ब्रह्म की शक्तियों हैं !
समस्त संसार परम सत्य से बेखबर है और एक दूसरे को दोष दे रहा हैं !
ईश्विर की इच्छा से ही सब कुछ होता हैं, यही अटल सत्य और यही सृष्टि का गूढ़ रहस्य हैं !
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-3
महाभारत के प्रमाण

तांत्रिक विद्या और परम शक्ति ब्रह्म का अद्भुत रहस्य

महाभारत के प्रमाण

इस अनंत ब्रह्मांड में जो कुछ भी हो रहा है परम शक्ति ब्रह्म की इच्छा से हो रहा है ! उनकी इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता !

दुनिया की सारी बड़ी-बड़ी शक्तियां ब्रह्म की शक्ति है ! परम शक्ति ब्रह्म के आगे उनकी इच्छा के विरुद्ध इस दुनिया में क्या इस अनंत ब्रह्मांड में कोई इधर का उधर नहीं जा सकता !

महाभारत की तीन प्रमुख घटनाएँ और उनके पीछे का रहस्य

1. द्रौपदी के पांच पुत्रों (उपपांडवों) की मृत्यु

- **पूर्व जन्म का श्राप :** ये पांचों पुत्र पूर्व जन्म में 'विश्वेदेव' (देवता) थे। ऋषि विश्वमित्र के कोप से उन पर मनुष्य जन्म लेने और अल्पायु में मृत्यु का श्राप मिला !
- **कर्म का चक्र :** उनका जन्म केवल उस श्राप को पूरा करने और महाभारत के महाविनाश के अंतिम हिस्से को समाप्त करने के लिए हुआ था !
- इसलिए भगवान ने उनकी आयु उतनी ही रखी !

2. राजा परीक्षित को बचाने का कारण

- **वंश की रक्षा और कलयुग का प्रारंभ :** परीक्षित उस समय पांडव वंश के एकमात्र जीवित अंश थे जो उत्तरा के गर्भ में थे।
- यदि अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र से परीक्षित मर जाते, तो पांडवों का वंश समाप्त हो जाता।
- **सृष्टि का नियम :** परीक्षित का बचना इसलिए जरूरी था क्योंकि उन्हें आगे चलकर हस्तिनापुर का राजा बनना था और उन्हीं के माध्यम से द्वापर युग का अंत और कलयुग की शुरुआत की नींव रखी जानी थी।
- परमात्मा ने संसार के संतुलन (धर्म की निरंतरता) के लिए उन्हें जीवनदान दिया।

3. अभिमन्यु को न बचाने का कारण

- **चंद्रदेव का वचन :** अभिमन्यु वास्तव में चंद्रदेव के पुत्र 'वर्चा' के अवतार थे ! जब देवताओं ने चंद्रदेव से अपने पुत्र को पृथ्वी पर भेजने को कहा, तो चंद्रदेव ने शर्त रखी थी कि उनका पुत्र पृथ्वी पर केवल 16 वर्ष तक ही रहेगा और महाभारत युद्ध में महान पराक्रम दिखाकर वापस लौट आएगा।
- **परमात्मा का नियम :** भगवान कृष्ण चंद्रदेव के इस वचन से बंधे थे ! अभिमन्यु का उद्देश्य पृथ्वी पर पूरा हो चुका था, इसलिए भगवान ने कर्म और काल के नियम में हस्तक्षेप नहीं किया।

इन घटनाओं से क्या सीख मिलती है ?

संसार में कोई भी शक्तिशाली क्यों न हो, उसकी शक्ति भी परमात्मा की देन है !

परमात्मा कर्मों के विधान के अनुसार ही हर जीव को उसका फल भोगने देता है।

भगवान अपने नियम को स्वयं भी नहीं बदलते, जिसे 'कर्मों का विधान' कहते हैं !

जो कुछ होता है, किसी के जीवन में सुख हो या दुख, सबके पीछे परमात्मा की गूढ़ योजना होती है !

किसी की मृत्यु, किसी का बचना, किसी का राज्य मिलना या नष्ट होना, सब कर्म और समय के अनुसार है !

महाभारत का मूल संदेश

मेरे बिना इस सृष्टि में पत्ता नहीं हिल सकता, लेकिन मैं कर्मों के विधान का भंग नहीं करता !

महाभारत की घटनाओं का सार

- द्रौपदी के पांच पुत्रों की मृत्यु – पूर्व जन्म के श्राप का फल !
- राजा परीक्षित का बचना – धर्म की रक्षा और युग परिवर्तन के लिए !
- अभिमन्यु का न बचना – पूर्व निर्धारित काल और देवताओं के वचन के कारण !
- इन तीनों घटनाओं के पीछे – कर्मों का विधान और परमात्मा की योजना !

संसार की नादानी

प्राणी समझता है मैं करता हूं, लेकिन वह नहीं जानता कि उसकी शक्ति, बुद्धि, शरीर, प्राण – सब परमात्मा की देन है !

इसलिए हे भक्तों ! अहंकार छोड़कर कर्मों को शुद्ध करो, भगवान की शरण में जाओ, वही सबका रक्षक है, पालनकर्ता है और सच्चा हितैषी है !

जो कुछ भी है, वही परमात्मा है, वही कर्ता है, वही कारण है, वही नियंता है !

॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

लेख- श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-4
तांत्रिक विद्या और परम शक्ति ब्रह्म का अदभुत रहस्य
तांत्रिक विद्या और
परम शक्ति ब्रह्म का
अद्भुत रहस्य
गीता 3.27 और अहंकार का भ्रम
श्रीमद्भगवद्गीता 3.27
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥ 27 ॥
तांत्रिक विद्या, कर्म, भाग्य, सुख-दुख – सब कुछ प्रकृति (त्रिगुण) के गुणों द्वारा होता है,
लेकिन अहंकारवश मनुष्य सोचता है – "मैं करता हूँ, मैंने किया" – यही सबसे बड़ा भ्रम है !
" मैं करता हूँ" – यह अहंकार का भ्रम कैसे पैदा होता है ?
1. देह को 'मैं' मानना
मैं ही यह शरीर हूँ !
आत्मा देह से भिन्न है, फिर भी अज्ञानवश देह को "मैं" मान लिया जाता है ।
2. इन्द्रियों से तादात्म्य
मैं देखता हूँ, मैं खाता हूँ, मैं भोगता हूँ !
इन्द्रियाँ अपने-अपने विषयों में लगी हैं, लेकिन मन कहता है – मैं सब करता हूँ ।
3. मन और बुद्धि से जुड़ाव
मैं सोचता हूँ, मैं निर्णय लेता हूँ, मैं योजना बनाता हूँ !
वास्तव में मन सोचता है, बुद्धि निर्णय करती है, अहंकार 'मैं' कहता है ।
4. स्मृति और चित्त के संस्कार
मैंने पूर्व में ऐसा किया था, इसलिए मैं ही करता हूँ !
चित्त में पूर्व जन्मों के संस्कार हैं, उसी से कर्म की प्रवृत्ति चलती है ।
5. अहंकार का उदय
मैं महान हूँ, मैंने सब कुछ किया है !
यही अहंकारविमूढता है, यही बंधन का कारण और तांत्रिक शक्ति का दुरुपयोग है ।
वास्तत में कर्ता कौन है ?
1. प्रकृति के गुण ही सब कर्म कराते हैं
सत्वगुण । प्रे भित्त करता है,
रजोगुण । क्रिया कराता है,
तमोगुण । मोह में डालता है ।
ये तीनों गुण मिलकर सभी कर्म कराते हैं – देह, इन्द्रियों और मन को चलाते रहते हैं ।
2. ईश्वर साक्षी और नियंन्ता है
परमात्मा सबके हृदय में बैठा साक्षी है वही प्रकृति को नियम देता है, वही सबको कर्म करवाता है ।
3. जीव अल्पज्ञ है, कर्ता नहीं
जीव की स्वतंत्रता सीमित है, उसे केवल उतनी ही शक्ति मिलती है जितनी उसें दी जाती है ।
4. वास्ततिक कर्ता
★ प्रकृति (त्रिगुण)
★ ईश्वर (परमात्मा)
★ और उनके विधान
जीव केवल निमित्त मात्र है, जैसे रथ में बैठा यात्री, रथ चलाता है – सारथी ।
अहंकार का परिणाम
1. बंधन
अहंकार से कर्म का बंधन बढ़ता है ।
2. दुःख
फल की इच्छा से सुख-दुख आते हैं ।
3. भय
सब कुछ खोने का डर बना रहता है ।
4. पतन
अहंकार से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है ।
5. तांत्रिक शक्ति का दुरूपयोग
अहंकारी साधक शक्ति पाकर भी विनाश को प्राप्त होता है ।
इस भ्रम से कैसे मुक्त हों ?
✓ देह, मन, बुद्धि, इन्द्रियों को अपना नहीं, साधन समझें ।
✓ हर कर्म को ईश्वरार्पण करें ।
✓ साक्षी भाव में स्थित रहें ।
✓ सत्संग, स्वाध्याय और ध्यान से अहंकार गलता है ।
✓ समझें – मैं नहीं, तू ही कर्ता है प्रभु !
हे प्रभु ! तू ही कर्ता है, मैं तो तेरा निमित्त मात्र हूँ !
गीता का गूढ़ संदेश
हे अर्जुन ! बुद्धिमान वह है जो यह जान लेता है कि सभी कर्म प्रकृति के गुणों द्वारा होते हैं, और वह केवल साक्षी भाव में रहकर ईश्वर की शरण में स्थित रहता है ।
जब 'मैं' मिटता है, तभी ब्रह्म सत्य का बोध होता है, तभी तांत्रिक विद्या भी कल्याणकारी होती है ।
कर्ता वही है – परमात्मा, हम सब उसके उपकरण मात्र हैं !
अहंकार त्यागो, समर्पण अपनाओ, मुक्ति पाओ !
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
यह श्रृंखला के आगले भाग में और गहराई से...

भाग-5
परम निष्कर्ष
समर्पण, परमात्मा की इच्छा और कर्मों का अंतिम रहस्य
तांत्रिक विद्या और परम शक्ति ब्रह्म का अद्भुत रहस्य
अंतिम निष्कर्ष – सब कुछ उसी की इच्छा से !
न तांत्रिकं, न दैवम्, न स्वबलं, न पुरुषार्थकम् । यतः सर्व तदेकस्य ईश्वरस्यैव संमतात् ॥
सर्व खलविदं ब्रह्म ॥
जगत में जो कुछ भी हो रहा है – अच्छा या बुरा, सुख या दुःख, लाभ या हानि –
वह सब परमात्मा की सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायपूर्ण और करुणामयी व्यवस्था से हो रहा है !
सारी शक्तियों का स्वामी कौन है ?
तांत्रिक शक्ति
उसको शक्ति कौन देता है ? वह भी उसी की अनुमति से चलती है ।
देवता शक्ति
देवता भी उसी की आज्ञा से कार्य करते हैं, स्वतंत्र नहीं हैं ।
प्रकृति की शक्ति
पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश सब उसकी व्यवस्था से चल रहे हैं ।
जीव की शक्ति
हमारी बुद्धि, मन, इंद्रियां, प्राण, शरीर – सब उसकी दिया हुआ है ।
कर्म का फल
कर्म का फल देना भी उसी का नियम है, कोई बदल नहीं सकता ।
काल की शक्ति
समय भी उसकी इच्छा के अधीन है, वही बनाता है, वही मिटाता हैं ।
क्यों रखना चाहिए पूर्ण समर्पण ?
समर्पण से भय समाप्त होता है
जब सब कुछ उसी का है, तो किस बात का डर ?
समर्पण से अहंकार मिटता है
अहंकार
अहंकार ही दुःखों का मूल कारण है, समर्पण उसे जला देता है ।
समर्पण से कृपा प्राप्त होती है
जब हम अपने आप को छोड़ देते हैं, तब वह हमें कभी नहीं छोड़ता ।
समर्पण से शांति मिलती है
समर्पित हृदय को हर परिस्थिति में शांति मिलती है ।
समर्पण से सही मार्ग मिलता है
जब बुद्धि भ्रमित हो, वह खुद मार्ग दिखाता है और सही करवाता है ।
समर्पण से मोक्ष का द्वार खुलता है
समर्पण ही मोक्ष का एकमात्र सरल और सुरक्षित मार्ग है ।
अंतिम सत्य को समझो
हमारा कुछ भी अपना नहीं है ।
हम कर्ता नहीं, निमित्त (उपकरण) मात्र हैं ।
जो हो रहा है, वह हमारे कर्मों और उसकी इच्छा से हो रहा है ।
वह हमसे अधिक जानता है कि हमारे लिए क्या सही है ।
सुख आए तो धन्यवाद दो, दुःख आए तो भी धन्यवाद दो ।
क्योंकि दोनों ही स्थितियां हमें उसकी ओर ले जा रही हैं ।
वह कभी दंड नहीं देता, वह केवल सुधारता और संवारता है ।
उसकी इच्छा में ही हमारी भलाई, उसकी शरण में ही हमारी सुरक्षा ।
इसलिए हर स्थिति में यही कहो –
"हे प्रभु ! जो आप की इच्छा, वही मेरी इच्छा ! मैं आपका हूँ, आप मेरे हैं !"
1 अहंकार त्यागो
मैं कर्ता हूँ – यह भावना छोड़ दो, सब वह करता है ।
2 हर कार्य अर्पण करो
जो भी करो, वह उसे अर्पण करके करो ।
3 उसकी इच्छा स्वीकार करो
जो परिस्थिति आए, उसे प्रसाद मानकर स्वीकार करो ।
4 नाम स्मरण करो
उसका नाम ही सबसे बड़ी रक्षा और शक्ति है ।
5 प्रार्थना करो
सच्चे हृदय से कहो – "मुझे आपकी शरण, आप ही सब संभालो"
6 कर्म करते रहो
कर्तव्य को मत छोड़ो, लेकिन फल की चिंता उसे सौंप दो ।
7 उस पर भरोसा रखो
वह तुम्हारा कभी अहित नहीं कर सकता ।
8 संतों का संग करो
संत तुम्हारा कभी अहित नहीं कर सकता ।
9
सत्संग से बुद्धि शुद्ध होती है और समर्पण मजबूत होता है ।
9 वैराग्य अपनाओ
अपेक्षाएं कम करो, समर्पण अपने आप गहरा होगा ।
10 कृतज्ञ रहो
हर श्वास के लिए उसे धन्यवाद दो, यही भक्ति है ।
परम निष्कर्ष
तांत्रिक विद्या, देवता, प्रकृति, कर्म, काल – सब उसकी शक्तियां हैं ।
सब कुछ उसकी इच्छा से चलता है, और उसी में लय हो जाता हैं ।
समर्पण ही बुद्धिमानी है, समर्पण ही भक्ति है, समर्पण ही मुक्ति है !
अंतिम प्रार्थना
हे प्रभु ! हमें सदा आपकी शरण में रखो, समर्पण की शक्ति दो, भक्ति दो, विवेक दो और आपकी इच्छा में चलने की बुद्धि दो ।
॥ हरि ॐ तत्सत् ॥
जो कुछ भी है, वही परमात्मा है, वही कर्ता है, वही कारण है, वही नियंता है ।
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भगवान की महा कृपा -
माया का जाल कटना
जिसका कल्याण होना है
उसकी माया
भगवान काट देते हैं
जिसका कल्याण नहीं होना,
उसे भगवान माया में
और उलझा देते हैं
कृपा की कैंची
रिश्ते
धन संपत्ति
मोह
अटैचमेंट
मोह
अटैचमेंट
रिश्ते
रिश्ते
रिश्ते
धन संपत्ति
बिना माया नाश हुए कल्याण असंभव -
अहंकार रूपी पर्दा जीव और ब्रह्म के
बीच दरार है
© लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भरोसा केवल श्री कृष्ण पर
- दुनिया हंसने वाली है
संसार पर भरोसा टूटेगा,
कृष्ण पर भरोसा कभी मिथ्या नहीं
दुनिया झूठी, मतलबी, भ्रम का समुद्र - सम्मान आपका नहीं धन का है
द्रौपदी पुकार - अंबरा अवतार, प्रहलाद विश्वास - खंभा तोड़ा,
मीरा विष - अमृत बना
भगवान अपने भक्त के विश्वास के आगे झुकते हैं, खुद को मिटा देंगे
पर विश्वास मिथ्या नहीं होने देंगे
भगवान के रास्ते में देर है, अंधेर नहीं - लाख कष्ट पर अंत में जीत निश्चित
© लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

सबके नकली चेहरे में मत उलझो
- असली चेहरा देखो
ज्ञान का चश्मा
— नकली चेहरा (मुखौटा) —
— ज्ञान का चश्मा —
— असली सच देखते हुए भक्त —
ज्ञान का चश्मा
ज्ञान का चश्मा
ज्ञान का चश्मा
— असली चेहरा —
'नकली चेहरा सामने आए, असली सूरत छुपी रहे'
• संपूर्ण प्राणी नकली चेहरे देख कर उलझ जाते हैं, परमात्मा ने भेजा है असली चेहरा पकड़ने के लिए
• जिनकी आँखों में ज्ञान का चश्मा है वही असली चेहरा देख पाते हैं.
• क्या मिलिए एसे लोगों से जिनकी फितरत छुपी रहे, नकली चेहरा सामने आए असली सूरत छुपी रहे.
© लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

असली चेहरा छुपा, नकली दिखता है -
अज्ञानी को नकली, ज्ञानी को असली
नाटक प्रेम का, खेल स्वार्थ का
GUEST EXAMPLE - गेस्ट उदाहरण
नकली चेहरा - आदर्श सत्कार
असली चेहरा - चुगली, गाली
LOVE EXAMPLE - प्रेम उदाहरण
20000 रुपये चाहिए, दो ना!
मेरे पास पैसे नहीं हैं
पैसा नहीं मिला तो प्रेम खत्म - असली चेहरा पैसा से प्यार
ना, शरीर स्पर्श नहीं
NO TO TOUCH
असली चेहरा - शरीर स्पर्श मना करने पर लड़का रोता
TRUE LOVE - असली प्रेम
₹50000
असली प्रेम - आत्म बलिदान, भावना से प्रेम, पैसा शरीर नहीं
© लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-1

असली चेहरा और नकली चेहरा का रहस्य

समझो, पहचानो और सच को जानो !

मनुष्य दो चेहरे लेकर जीता है –
एक जो वह दिखाता है और दूसरा जो उसके भीतर छुपा रहता है ।
संसार में अधिकांश लोग नकली चेहरा दिखाकर अपने स्वार्थ पूरे करते हैं ।
आइए समझते हैं इसे एक सरल उदाहरण से –

जो सामने दिखता है,
वह हमेशा सत्य नहीं होता,
जो छुपा है, वही असली होता है !

प्रथम उदाहरण – मेहमान का स्वागत

1. नकली चेहरा – मेहमान के सामने

बाहर मुस्कान
भीतर पहचान

- ★ बढ़िया स्वागत, आदर, सत्कार और सेवा
- ★ नाश्ता, चाय-पानी, हर प्रकार की सुविधा
- ★ ऐसा व्यवहार जैसे मेहमान स्वयं भगवान हो ।
- ★ लेकिन क्या यह सब असली है ? – नहीं ! यह है नकली चेहरा, जो सामने दिखाया जाता है ।

2. असली चेहरा – मेहमान के जाने के बाद

- ★ मेहमान के जाते ही शुरू होती है चुगली और निंदा ।
- ★ यह ऐसा था, वह वैसा है, मुझे यह पसंद नहीं आया ।
- ★ इनकी आदत बहुत खराब है... यहां तक की गाली भी देंगे ।
- ★ पीठ पीछे बिना किसी डर के मन की सारी बात निकाल देंगे ।
- ★ यही है असली चेहरा, जो छुपाकर रखा गया था ।

मुख्य बात

- ★ जब तक स्वार्थ पूरा करना होता है, तब तक नकली चेहरा पहनकर आदर्श बनते हैं ।
- ★ स्वार्थ पूरा होते ही असली चेहरा सामने आ जाता है ।
- ★ मनुष्य का असली चेहरा उसके शब्दों और व्यवहार से नहीं, बल्कि उसके छुपे हुए भावों से पहचाना जाता है ।

क्यों पहनते हैं नकली चेहरा ?

1. स्वार्थ सिद्धि के लिए
   लोगों का विश्बास और लाभ पाने के लिए ।
2. दिखावा और प्रतिष्ठा के लिए
   समाज में अच्छा दिखने के लिए ।
3. छुपे हुए मन के कारण
   अंदर की ईर्ष्या, द्वेष, निंदा को छिपाने के लिए ।
4. भय और स्वार्थ के कारण
   सच बोलने पर लाभ न मिले, इसलिए ।

कैसे पहचाने असली चेहरा ?

1. समय आने पर पहचान होते हैं
   कटिन परिस्थिथियों असली चेहरा दिखा देती हैं ।
2. स्वार्थ पूरा होते ही बदल जाता है
   व्यवहार में अचानक परिवर्तन ।
3. पीठ पीछे उसकी बातें सुना
   जो सामने आपकी प्रशंसा करता है,
   वही पीछे आपकी निंदा करता है ।
4. दिव्य दृष्टि से देखो
   केवल परमात्मा की दृष्टि ही सब जानती है ।
   वही असली और नकली का भेद जानती है ।

याद रखने योग्य बातें

- ✓ हर मुस्कान में सच्चाई नहीं होती ।
- ✓ हर मीठे शब्द के पीछे मीठा मन नहीं होता ।
- ✓ जो हमेशा सभी से मीठा बोलता है, वह भी अंदर से वैसा हो, यह आवश्यक नहीं ।
- ✓ इसलिए आँख, कान और अनुभब से अधिक, अंतःकरण की दृष्टि से पहचानो ।

निष्कर्ष

जो सामने दिखता है वह नकली हो सकता है,
जो छुपा है वही असली हो सकता है ।
इसलिए दुनिया को नहीं, सत्य को पहचानो !

सत्य को देखने के लिए
दिव्य दृष्टि चाहिए,
साधारण दृष्टि नहीं !

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-2
स्वार्थ का खेल – प्रेम या केवल अभिनय ?

असली चेहरा और नकली चेहरा का रहस्य

प्यार-प्यार का नाटक और अंतःकरण में छुपा स्वार्थ !

दूसरा उदाहरण – लड़का और लड़की की कहानी

1. प्रेम का प्रारंभ – प्यार-प्यार का नाटक	2. पैसे की मांग – असली चेहरा की परीक्षा	3. लड़के का उत्तर – सच्चाई और मजबूरी	4. लड़की का असली चेहरा – स्वार्थ का पर्दाफाश	5. लड़के का असली चेहरा – शरीर का आकर्षण
दोनों एक-दूसरे को मीठी-मीठी बातें करते, सपने दिखाते, प्यार का नाटक चल रहा था।	लड़की ने अपने स्वार्थ के लिए पैसे की मांग की, प्रेम की सच्चाई सामने आने लगी।	लड़के ने सच बताया, पर उसके पास पैसा नहीं था, उसने मदद करने से मना कर दिया।	लड़की को पता चल गया कि पैसे मिल नहीं रहे, अब उसका असली चेहरा सामने आ गया।	लड़की भी रो रहा था, पर प्रेम से नहीं, बल्कि शरीर को स्पर्श से वंचित हो जाने के कारण।

दोनों का प्यार नहीं, स्वार्थ था !

लड़की का स्वार्थ क्या था ?

- ★ उसे प्यार नहीं, केवल पैसे चाहिए थे।
- ★ उसका उद्देश्य लड़के के पैसों से अपने काम निकालना था।
- ★ उसे लड़के की भावना, प्रेम, मजबूरी से कोई मतलब नहीं था।
- ★ पैसा न मिला, तो प्यार खत्म और घृणा शुरू हो गई।

लड़के का स्वार्थ क्या था ?

- ★ उसे लड़की की भावना, व्यक्तित्व या जीवन से कोई मतलब नहीं था।
- ★ उसे केवल उसके शरीर, सुंदरता और स्पर्श से लगाव था।
- ★ जैसे ही लड़की ने स्पर्श से मना किया, उसका प्रेम समाप्त हो गया।
- ★ वह लड़की से नहीं, उसकी कंचन काया (शरीर) से प्रेम करता था।

इस उदाहरण से सीख

- जब तक स्वार्थ पूरी होने की उम्मीद रहती है, तब तक प्रेम, सेवा और मीठी बातें चलती हैं।
- जैसे ही स्वार्थ पूरा नहीं होता, असली चेहरा सामने आ जाता है।
- नकली चेहरा हमेशा मीठा होता है, असली चेहरा कड़वा होता है।
- हर रिश्ता परीक्षा से गुजरता है, तब ही सच्चाई प्रकट होती है।
- इस संसार में अधिकतर प्रेम स्वार्थ पर आधारित है।
- पैसा, शरीर, सुख-सुविधा और लाभ – यही कारण अधिकतर रिश्तों के पीछे छुपा है।
- सच्चा प्रेम दुर्लभ है, बहुत दुर्लभ है।
- परमात्मा ने ऐसे असली चेहरों की पहचान के लिए हमें विवेक और दिव्य दृष्टि दी है।

नकली प्रेम (स्वार्थ पर आधारित)	VS	सच्चा प्रेम (त्याग और भावना पर आधारित)
✗ स्वार्थ पूरा होने तक प्रेम रहता है।		✓ स्वार्थ रहित होता है, भावना पर आधारित होता है।
✗ पैसा, शरीर, रूप, सुख-सुविधा पर आधारित होता है।		✓ कठिनाई, गरीबी, सुख में भी साथ बना रहता है।
✗ स्वार्थ पूरा न हो, तो तुरंत मुंह बदल जाता है।		✓ त्याग, समर्पण और विश्वास इसका आधार है।
✗ स्वार्थ खत्म = प्रेम खत्म।		✓ दूसरे की खुशी के लिए स्वयं कष्ट सहता है।
✗ दूसरे की भावना से कोई मतलब नहीं।		✓ कभी धोखा नहीं देता, कभी छोड़ता नहीं।

याद रखने योग्य बात

दुनिया में अधिकांश लोग नकली चेहरे के साथ जी रहे हैं, असली चेहरा छुपा हुआ है। जो इसे पहचान लेता है, वही इस संसार के छल-जाल से बच पाता है।

जो स्वार्थ को पहचान लेता है, वह ठगा नहीं जाता।
जो असली चेहरा देख लेता है, वह संसार के नाटक को समझ जाता है।

लेखक– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-3
सच्चा प्रेम
कैसा होता है ?

असली चेहरा और नकली चेहरा का रहस्य

सच्चा प्रेम – त्याग, बलिदान और समर्पण का दूसरा नाम !

सच्चे प्रेमी की परीक्षा – त्याग की पराकाष्ठा

1. लड़की बीमार पड़ती है

लड़की की तबीयत बहुत खराब हो गई, उसके पास इलाज के लिए पैसा नहीं था।

2. प्रेमी का हृदय फुट जाता है

जैसे ही प्रेमी को पता चला, उसका हृदय फट गया। वह चारों तरफ पैसे की व्यवस्था करने में लग गया।

3. अपने आप को बेचने का निर्णय

एक व्यक्ति बोला – अगर पैसा चाहिए तो अपने आप को मुझे हवाले करो। लड़के ने कहा – "ठीक है, मुझे खरीद लीजिए।"

4. गुलामी स्वीकार की

मालिक बोला – ₹50,000 दूँगा, लेलिए जीवन भर मेरे गुलाम बनकर रहना होगा। लड़के ने स्वीकार कर लिया।

5. पैसा देकर लड़की का इलाज

पैसा लेकर लड़की के पिता को दिया – "पिताजी, इनका इलाज करवा दीजिए, यह पैसा बहुत मुश्किल से लाया हूँ।"

6. प्रेमिका को संदेश

उसने चुपचाप संदेश भेजा – "तुम मुझसे बात मत करना, लेकिन तुम्हारे लिए मैने अपने आप को बेच दिया है।"

लड़की का हृदय पसीजा

- संदेश पढ़कर लड़की की आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली।
- उसे मालूम चला – यह प्रेम सच्चा है, निस्वार्थ है, त्यागमयी है।
- पहले वह प्रेम की गहराई नहीं समझ पाई थी, अब समझ गई।
- यही है सच्चे प्रेम की पहचान !

सच्चे प्रेम की परिभाषा

जो अपने सुख-सुविधा, शरीर, धन, मान-सम्मान सब कुछ त्यागकर भी अपने प्रिय के कल्याण के लिए समर्पित हो जाए, वही सच्चा प्रेम है।

सच्चे प्रेम के लक्षण

- अपने प्रिय के दुख को अपना दुख मानना।
- अपने स्वार्थ को त्याग देना।
- अपने जीवन की आहुति देने को तैयार रहना।
- कभी प्रतिफल की अपेक्षा न करना।
- दूर रहकर भी प्रेम और मंगल की कामना करना।

असली प्रेम और नकली प्रेम में अंतर

नकली प्रेम (स्वार्थपूर्ण प्रेम)

- ✗ शरीर, रूप, पैसा और सुविधा से प्रेम करता है।
- ✗ स्वार्थ पूरा न हो तो तुरंत बदल जाता है।
- ✗ सुख में साथ रहता है, दुख में छोड़ जाता है।
- ✗ केवल लेने की भावना रखता है, देने की नहीं।
- ✗ प्रतिफल चाहता है, अपेक्षा से भरा होता है।

असली प्रेम (त्यागमयी प्रेम)

- ✓ भावना, आत्मा और मंगल से प्रेम करता है।
- ✓ स्वार्थ त्यागकर हमेशा साथ निभाता है।
- ✓ दुख में साथ देता है, सुख में विनम्र रहता है।
- ✓ केवल देने की भावना रखता है, लेने की नहीं।
- ✓ निष्काम, निस्वार्थ और समर्पित होता है।

कौन देख रहा है ?

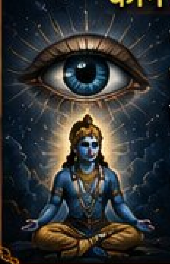

यह स्वार्थ और प्रेम का खेल संसार में हमेशा चलता रहता है। इसे न तो माया दृष्टि देख सकती है, न ही सामान्य आँखें। इसे केवल दिव्य दृष्टि ही देख सकती है – वही साक्षी है, वही सत्य का ज्ञाता है।

चिंतन के प्रश्न

1. क्या हमारा प्रेम बास्तव में निस्वार्थ है ?
2. क्या हम अपने प्रिय के लिए त्याग कर सकते है?
3. क्या हम देने में आनंद अनुभव करते हैं ?
4. क्या हमारा प्रेम स्वार्थ से मुक्त है ?
5. क्या हम समर्पण के लिए तैयार हैं ?

संदेश

सच्चा प्रेम दुर्लभ है, क्योंकि उसमें स्वार्थ की मृत्यु होती है और समर्पण का जन्म। जो इस प्रेम को जान लेता है, वही जीवन का सत्य जान लेता है।

इस भाग का सार

- सच्चा प्रेम त्याग और समर्पण की पराकाष्ठा है।
- अपने आप को बेचकर भी प्रिय के कल्याण की भावना – यही सच्चा प्रेम है।
- जो बिना किसी स्वार्थ के केवल देने के लिए जीता है, वही प्रेम का अधिकारी है।
- दुनिया का अधिकतर प्रेम स्वार्थमय है, इसलिए दुख का कारण बनता है।
- सच्चे प्रेम को पहचानना ही जीवन का सबसे बड़ा ज्ञान है।

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-3 (A)

सच्चे प्रेम की पहली परीक्षा – अपमान के बाद भी प्रेम

असली चेहरा और नकली चेहरा का रहस्य

सच्चा प्रेम अपमान से नहीं टूटता, अपमान में भी प्रेम और गहरा होता है !

घटना – जब सच्चे प्रेमी का अपमान हुआ

1. प्यार का भाव	2. गाली और अपमान	3. थप्पड़ और तिरस्कार	4. अंतिम शब्द	5. अकेला और आहत	6. फिर भी प्रेम अटल

लड़का सच्चे मन से लड़की से प्रेम करता था, बिना किसी स्वार्थ के ।	लड़की ने उसे गालियाँ दीं, नीचा दिखाया, सबके सामने उसका अपमान किया ।	लड़की ने उसे थप्पड़ मारा, धक्का दिया और कहा कि आज के बाद मत मिलना ।	लड़की उसे छोड़कर चली गई, उससे बात करना तो दूर, देखना भी पसंद नहीं किया ।	सब लोग हँस्ले, किसी ने उसका साथ नहीं दिया, वह अकेला और आहत था ।	फिर भी उसके हृदय से प्रेम कम नहीं हुआ, वह उसे खुश देखना चाहता था ।

लड़के की स्थिति – सच्चे प्रेम की पहचान

- अपमान सुनकर भी उसने एक भी कटू शब्द नहीं कहा ।
- उसका मन गुस्से, बदले या घृणा से भर नहीं गया ।
- उसने लड़की के लिए केवल शुभ और मंगल सोचा ।
- वह उसकी खुशी के लिए प्रार्थना करता रहा ।
- उसका प्रेम शरीर, स्पर्श या स्वार्थ पर आधारित नहीं था ।
- वह उसके निर्णय का सम्मान करता रहा ।
- वह चुप रहा, क्योंकि उसका प्रेम शुद्ध था, स्वार्थी नहीं ।
- उसने अपने प्रेम को कभी जताने या साबित करने की कोशिश नहीं की ।
- उसका प्रेम देने वाला था, लेने वाला नहीं ।
- अपमान ने उसके प्रेम को तोड़ा नहीं, और पवित्र कर दिया ।

सच्चा प्रेम अपमान से नहीं टूटता, वह अपमान में भी और गहरा हो जाता है ।

यह घटना हमें क्या सिखाती है ?

- ★ सच्चे प्रेम की पहली परीक्षा अपमान के समय होती है ।
- ★ जो अपमान में भी प्रेम बनाए रखे, वही सच्चा प्रेमी है ।
- ★ सच्चा प्रेम अधिकार नहीं चाहता, केवल मंगल चाहता है ।
- ★ प्रेम जब शुद्ध होता है, तब वह प्रार्थना बन जाता है, अपेक्षा नहीं ।
- ★ सच्चा प्रेम किसी के व्यवहार पर निर्भर नहीं करता ।

क्यों यह परीक्षा बहुत कठिन है ?

- जब कोई अपमान करता है, मन टूटता है ।
- गाली और तिरस्कार सहना आसान नहीं ।
- ज्यादातर लोग ऐसे में क्रोध, बदला और दूरी बना लेते हैं ।
- लेकिन सच्चा प्रेमी विश्वास और प्रेम से कभी डगता नहीं ।

सच्चे प्रेम की विशेषताएँ

- ✔ निस्वार्थ – केवल प्रिय का मंगल चाहता है ।
- ✔ धैर्यवान – अपमान में भी शांत रहता है ।
- ✔ क्षमाशील – गाली और थप्पड़ को माफ कर देता है ।
- ✔ समर्पित – परिस्थिति कैसी भी हो, प्रेम स्थिर रहता है ।
- ✔ प्रार्थनात्मक – प्रिय की खुशी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है ।

सच्चे प्रेम का परिणाम (आगे की ओर)

ऐसा प्रेम समय आने पर स्वयं को साबित करता है ।
जब लड़की बीमार पड़ती है, तब यही प्रेमी अपनी देह, सुख और स्वतंत्रता तक बेचकर भी उसका जीवन बचाता है ।

सच्चे प्रेमी का हृदय क्या कहता है ?

- तूने मुझे अपमानित किया, फिर भी मैं तुझे दोष नहीं दूँगा ।
- तेरे शब्दों ने मुझे दु:ख दिया, फिर भी मैं तुझे शुभ ही चाहता हूँ ।
- तूने मुझे ठुकराया, फिर भी मैं तेरी खुशी के लिए प्रार्थना करूँगा ।
- यदि तुझसे मिलना संभव नहीं, तो भी दूर से तेरा मंगल चाहता रहूँगा ।
- मेरा प्रेम तुझ पर है, तुझे बदलने की इच्छा नहीं, केवल खुश देखने की है ।

मूल संदेश

सच्चा प्रेम पाने के लिए नहीं, देने के लिए होता है ।
अपमान, तिरस्कार और दूरी के बाद भी जो प्रेम बना रहे, वही सच्चा प्रेम है ।

जो अपमान में भी प्रेम करता रहे, वही सच्चे प्रेम की पहली परीक्षा में सफल होता है ।
ऐसा प्रेम ही आगे जाकर सच्चे प्रेम के सर्वोच्च बलिदान की ओर बढ़ता है ।

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

असली चेहरा और नकली चेहरा का रहस्य

भाग-3 (B)

सच्चे प्रेम का सर्वोच्च त्याग और बलिदान

सच्चा प्रेम लेने में नहीं, देने और अपने आप को अर्पित करने में है !

सच्चे प्रेम की अगली लीला – त्याग, बलिदान और सेवा

1. उसे पता चला कि वह लड़की गंभीर रूप से बीमार है और अस्पताल में है।
2. उसके मन में केवल एक ही विचार आया – उसकी सेवा कैसे करूं ? उसे कैसे बचाऊं ?
3. उसने स्वयं को बेचने का निश्चय किया, ताकि पैसे इकट्ठा कर सके।
4. बहुत मेहनत और अपमान सहकर उसने अपने आप को बेच दिया और ₹50,000 प्रप्त किए।
5. वह चुपचाप उसके पिता को ₹50,000 देकर आया और कहा – उसका इलाज कराइए।
6. जब लड़की को सच्चाई पता चली, उसकी आंखों से आंसू बह निकले। उसका हृदय प्रेम और पश्चाताप से भर गया।

लड़के की स्थिति – सच्चे प्रेम की पहचान

- उसने अपमान को हृदय में नहीं रखा।
- उसने कभी बदला लेने का विचार नहीं किया।
- वह केवल उसके स्वस्थ होने की चिंता करता रहा।
- उसने अपने सुख, सम्मान और जीवन की परवाह नहीं की।
- उसने हर कठिनाई को हंसकर सहा।
- उसने अपने प्रेम का प्रदर्शन नहीं किया, सेवा की।
- उसने किसी से अपनी पीड़ा या त्याग का वर्णन नहीं किया।
- वह केवल उसके मंगल और खुशी के लिए जीया।
- उसने अपने आप को बेच दिया, फिर भी उसके मन में शिकायत का एक भी भाव नहीं था।
- ऐसा प्रेम दुर्लभ है, दिव्य है, त्यागमय है।

सच्चा प्रेम लेने में नहीं, स्वयं को अर्पित करने में है।

यह घटना हमें क्या सिखाती है ?

- ★ सच्चो प्रेम किसी स्वार्थ से नहीं चलता।
- ★ सच्चो प्रेम अपमान के बाद भी समाप्त नहीं होता।
- ★ सच्चो प्रेम देने और त्याग करने वाला होता है।
- ★ जो अपने प्रिय के लिए खुद को न्योछावर कर दे, वही सच्चा प्रेमी है।
- ★ सच्चो प्रेम सेवा करता है, अधिकार नहीं चाहता।
- ★ सच्चो प्रेम त्याग में आनंद पाता है, लेने में नहीं।

क्यों सच्चा प्रेम दुर्लभ है ?

- क्योंकि आज का प्रेम स्वार्थ और शरीर तक सीमित है।
- क्योंकि लोग प्रेम में लेने को प्राथमिकता देते हैं, देने को नहीं।
- क्योंकि त्याग और बलिदान करने की शक्ति लगभग खत्म हो गई है।
- क्योंकि अहंकार प्रेम से बड़ा हो गया है।
- क्योंकि सच्चा प्रेम आत्मा से होता है, शरीर से नहीं।

सच्चे प्रेम की विशेषताएँ

- ✔ निस्वार्थ – केवल प्रिय का मंगल चाहता है।
- ✔ समर्पण – पूर्ण रूप से अर्पित रहता है।
- ✔ त्यागमय – अपने सुखों का त्याग करता है।
- ✔ सेवाभावी – सेवा ही उसका धर्म होता है।
- ✔ मौन प्रेम – वह शोर नहीं करता, करता है।
- ✔ अटल – अपमान, दूरी, कठिनाई कुछ भी उसका प्रेम नहीं तोड़ सकता।

सच्चे प्रेम का परिणाम (आगे की ओर)

- ऐसा प्रेम आत्मा को पवित्र करता है।
- ऐसा प्रेम भगवान तक पहुंचाता है।
- ऐसा प्रेम जीवन को धन्य बना देता है।
- ऐसा प्रेम जन्म-जन्मांतर तक साथ देता है।
- ऐसा प्रेम अंतः मिलन और मोक्ष का कारण बनता है।

सच्चे प्रेम का हृदय क्या कहता है ?

- तेरा दुख मेरा दुख है।
- तेरी खुशी ही मेरी खुशी है।
- तू रहे या न रहे, मैं तेरा मंगल ही चाहता हूँ।
- मैं कुछ नहीं चाहता, बस तेरा जीवन सुरक्षित रहे।
- अगर तुझे बचाने के लिए मुझे नाष्ट भी होना पड़े, तो येह सौदा मुझे मंजूर है।

मूल संदेश

सच्चे प्रेम में अपमान नहीं दिखता,
सेवा दिखती है।
सच्चे प्रेम में दूरी नहीं दिखती,
मंगल दिखता है।
सच्चा प्रेम वहीं है,
जो स्वयं को मिटाकर भी
प्रिय को जीवित रखे।

जो अपमान के बाद भी प्रिय का मंगल करे, अपने आप को अर्पित कर दे, वही सच्चा प्रेमी है, वही ईश्वर के प्रेम के योग्य है।

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-4

सच्चे प्रेम का अनावरण – सत्य का प्रकाश और प्रेम की जीत

असली चेहरा और नकली चेहरा का रहस्य

सच्चा प्रेम कभी छुपता नहीं, एक दिन सत्य बनकर सामने आता है।

घटना – सत्य सामने आया और सच्चे प्रेम की विजय हुई

1. लड़की को सत्य का पता चला

जब वह स्वस्थ हुई और सब कुछ जाना, तो उसकी आँखों में आँसू बह निकले।

2. पिता ने सारा सत्य बताया

पिता ने सब पूरी घटना बताई, तो वह भीतर तक हिल गई, उसे अपने कमीं पर पछतावा हुआ।

3. पछतावा और आत्मग्लानि

उसे अपनी कठोर वाणी, अपने व्यवहार और अपने अहंकार पर गहरा पछतावा हुआ।

4. उसे खोजने का निर्णय

वह ठान लेती है कि उसे किसी भी हाल में ढूंढसवों और येमी को ढूंढकर क्षमा माँगनी है।

5. मिलने – कृतज्ञता के आँसू

वह उसे पाकर रो पड़ी, उसके चरणों में गिर पड़ी और बार-बार क्षमा मांगने लगी।

6. सच्चे प्रेम की विजय

वह मुस्कुराया और कहा – "तुम्हारी खुशी ही मेरा धन है, यही मेरी जीत है।"

सच्चे प्रेम की पहचान – अंतिम विजय

- सच्चा प्रेम अंततः सत्य बनकर सामने आता है।
- सच्चे प्रेमी को न मान-सम्मान की चाह होती है और न ही प्रतिदान की।
- सच्चा प्रेम अपमान, दूरी और पीड़ा के बाद भी नहीं बदलता।
- सच्चे प्रेम देने में आनंद पाता है, पाने में नहीं।
- सच्चे प्रेम में क्षमा, करुणा और त्याग स्वभाव बन जाते हैं।
- सच्च प्रेम किसी को छोटा नहीं करता, उसे उठाता है।
- सच्च प्रेम किसी से कुछ छुपाता नहीं, सिर्फ देता है।
- सच्च प्रेम शरीर से नहीं, आत्मा से जुड़ा होता है।
- सच्च प्रेम समय की कसौटी पर खरा उतरता है।
- सच्च प्रेम ईश्वर का ही अंश है, इसलिए अमर है।

सच्चा प्रेम कभी छुपता नहीं, एक दिन सत्य बनकर सामने आता है और जीवन बदल देता है।

यह घटना हमें क्या सिखाती है ?

- प्रेम में अहंकार नहीं, समर्पण होना चाहिए।
- किसी को अपमानित करने से पहले सोचें, कहीं वह सच्चा प्रेमी तो नहीं।
- जो बिना किसी स्वार्थ के हमारा मंगल चाहे, वही सच्चा अपना होता है।
- क्षमा मांगने में छोटापन नहीं, महानता है।
- सच्चा प्रेम देर से सही, पर जीतता अवश्य है।
- प्रेम का त्याग व्यर्थ नहीं जाता।
- प्रेम का प्रतिदान प्रेम की भावना है, भौतिक वस्तु नहीं।

क्यों सच्चा प्रेम अंततः विजय पाता है ?

- क्योंकि वह स्वार्थरहित होता है।
- क्योंकि वह केवल देने में विश्वास करता है।
- क्योंकि वह समय और परिस्थितियों से नहीं हारता।
- क्योंकि वह ईश्वर की भाँति करुणामय होता है।
- क्योंकि वह भीतर से शुद्ध और निष्कलंक होता है।

सच्चे प्रेम की श्रेष्ठताएँ

- निस्वार्थ – केवल प्रिय का मंगल चाहता है।
- धैर्यवान – परिस्थितियों से टूटता नहीं।
- क्षमाशील – अपमान को भी प्रेम में बदल देता है।
- त्यागमय – अपने सुख को बलिदान कर देता है।
- समर्पित – स्वयं को उसके प्रति अर्पित करता है।
- करुणामय – प्रिय के दुःख को अपना समझता है।

सच्चे प्रेम का परिणाम (आगे की ओर)

- हृदय में शांति और संतोष आता है।
- जीवन में करुणा और प्रेम बढ़ता है।
- ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग खुलता है।
- संबंधों में मधुरता और विश्वास आता है।
- आत्मा निर्मल, शांत और प्रभु से एकरूप हो जाती है।

सच्चा प्रेम का हृदय क्या कहता है ?

- मैंने तुम्हें हमेशा खुश देखा, यही मेरी खुशी थी।
- तुमने मुझे ठुकराया, पर मैंने तुम्हें कभी नहीं ठुकराया।
- तुम्हारी एक आँसू के लिए मैं अपना सब कुछ दे सकता हूँ।
- तुम्हारी खुशी में ही मेरा जीवन सफल है।
- मैं कुछ नहीं चाहता, केवल तुम्हें प्रसन्न देखना चाहता हूँ।

मुल संदेश

सच्चा प्रेम अपमान के बाद भी नहीं बदलता।
सच्चा प्रेम त्याग करता है, प्रतिदान की अभीक्षा नहीं रखता।
सच्चा प्रेम अंततः सत्य बनकर सामने आता है और जीवन को धन्य कर देता है।

लड़की के हृदय की अनुभूति

- मैंने उसे अपमान दिया, उसने मुझे जीवन दिया।
- मैंने उसे ठुकराया, उसने मुझे स्वीकर किया।
- मैंने कठोरता दिखाई, उसने प्रेम दिखाया।
- मैंने दूरी बनाई, उसने पास रहने का हक भी नहीं माँगा।
- वह सच्चा प्रेम था, वह आज भी है, वह सदा रहेगा।

जो अपमान के बाद भी प्रेम करता रहे, वही सच्चे प्रेम की अंतिम परीक्षा में उत्तीर्ण होता है।
सच्चा प्रेम अंततः विजयी होता है, और आत्मा को परम शांति देता है।

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-5

सच्चे प्रेम का परम त्याग, उदारता और परम मिलन

असली चेहरा और नकली चेहरा का रहस्य

सच्चा प्रेम कभी स्वार्थ नहीं करता, वह केवल देता है, देता है और देता है ।

घटना – सच्चे प्रेम की चरम परीक्षा और परम मिलन

1. बीमारी बढ़ी | 2. पैसों की कमी | 3. प्रेमी को पता चला | 4. स्वयं को बेच दिया | 5. इलाज करवाया | 6. लड़की ठीक हुई | 7. सत्य से सामना

1. लड़की की तबीयत बहुत खराब हो जाती है, घर वाले हैरान और परेशान हो जाते हैं ।
2. घर की स्थिति कमज़ोर थी, इतने बड़े इलाज के लिए पैसे जुटाना असंभव था ।
3. लड़के को जब पता चला तो उसका हृदय व्याकुल हो उठा, उसने निश्चय किया ।
4. लड़के ने अपने आप को बेच दिया और ₹50,000 इकट्ठा कर लिया ।
5. उसने डॉक्टर को ₹50,000 दिए और लड़की का बेहतरीन इलाज शुरू कराया ।
6. इलाज सफल हुआ, लड़की धीरे-धीरे पूरी तरह स्वस्थ हो गई ।
7. लड़की ने जब सच्चाई जानी तो उसकी आँखों से आँसू रुक नहीं पाए ।

सच्चे प्रेम की पहचान – परम त्याग

- ❤ सच्चा प्रेम अपने सुख के लिए नहीं, प्रिय के सुख के लिए जीता है ।
- ❤ सच्चा प्रेम त्याग करता है, पाने की चाहत नहीं रखता ।
- ❤ सच्चा प्रेम शरीर नहीं, आत्मा से प्रेम करता है ।
- ❤ सच्चा प्रेम अहंकार से रहित होता है ।
- ❤ सच्चा प्रेम उपकार नहीं गिनता, कर्तव्य मानकर करता है ।
- ❤ सच्चा प्रेम धन्यवाद की अपेक्षा नहीं करता ।
- ❤ सच्चा प्रेम बदले की भावना नहीं रखता ।
- ❤ सच्चा प्रेम देह, धन और मान के मोह से परे होता है ।
- ❤ सच्चा प्रेम ईश्वर के प्रेम के समान निर्मल होता है ।
- ❤ सच्चा प्रेम अंत में मिलन ही नहीं, मोक्ष का द्वार खोलता है ।

सच्चा प्रेम केवल देने में विश्वास रखता है, मांगने में नहीं ।

यह घटना हमें क्या सिखाती है ?

- ★ प्रेम स्वार्थरहित होता है, सौदा नहीं करता ।
- ★ सच्चा प्रेम प्रिय की तकलीफ को अपनी तकलीफ मानता है ।
- ★ सच्चा प्रेम त्याग करके भी प्रसन्न रहता है ।
- ★ सच्चा प्रेम किसी बंधन की अपेक्षा नहीं करता ।
- ★ जो अपना सर्वस्व देकर भी कुछ न मांगे, वही सच्चा प्रेमी है ।
- ★ सच्चा प्रेम भगवान के प्रेम का ही रूप है ।
- ★ ऐसा प्रेम जीवन को धन्य कर देता है ।
- ★ सच्चा प्रेम देह से परे, आत्मा के मिलन तक ले जाता है ।
- ★ ऐसा प्रेम संसार में दुर्लभ है, वही परम प्रेम है ।

क्यों सच्चा प्रेम दुर्लभ है ?

- क्योंकि अधिकतर लोग स्वार्थ और वासना से प्रेम करते हैं ।
- क्योंकि त्याग करना अत्यंत कठिन है ।
- क्योंकि अहंकार प्रेम में भी आ जाता है ।
- क्योंकि लोग पाने के लिए प्रेम करते हैं, देने के लिए नहीं ।
- क्योंकि संसार में देह का आकर्षण प्रमुख है, आत्मा का नहीं ।

सच्चे प्रेम की विशेषताएँ

- ✔ निर्मल – स्वार्थ और छल से रहित ।
- ✔ निष्काम – केवल प्रिय के लिए समर्पित ।
- ✔ निःस्वार्थ – कुछ पाने की चाह नहीं ।
- ✔ नित्य – समय, दूरी, परिस्थिति से परे ।
- ✔ निरहंकार – मान, सम्मान की इच्छा नहीं ।
- ✔ सहयोगी – प्रिय के सुख-दुःख में साथ ।
- ✔ करुणामय – दया, ममता और सेवा से भरा ।
- ✔ उदार – देने में आनंद, लेने में नहीं ।
- ✔ त्यागमय – अपने सुख का बलिदान करने वाला ।
- ✔ मोक्षदायी – अंततः आत्मा के मिलन का कारण ।

सच्चे प्रेम का परिणाम (आगे की ओर)

- जीवन में शांति और संतोष आता है ।
- आत्मा पवित्र और प्रसन्न रहती है ।
- ईश्वर की कृपा स्वतः प्राप्त होती है ।
- संबंधों में मधुरता और विश्वास आता है ।
- ऐसा प्रेम जन्म-जन्मांतर तक साथ रहता है ।
- आत्मा को परम शांति मिलती है, जो मोक्ष का मार्ग है ।

सच्चे प्रेम का हृदय क्या कहता है ?

- ❤ तू सुखी रहे, यही मेरी पुजा है ।
- ❤ तेरी हँसी मेरी जिंदगी है ।
- ❤ तेरा दुःख मेरा दुःख है ।
- ❤ मैं तेरा हूँ, सदा तेरा रहूँगा ।
- ❤ तेरे लिए सब कुछ अर्पित है ।
- ❤ चाहे तू पास रहे या दुर, मेरा प्रेम सदा तेरे साथ रहेगा ।

मूल संदेश

सच्चा प्रेम शरीर से नहीं, आत्मा से होता है ।
सच्चा प्रेम स्वार्थ से नहीं, समर्पण से होता है ।
सच्चा प्रेम मांगता नहीं, केवल देता है ।
सच्चा प्रेम त्याग करता है, पर पश्चाताप नहीं करता ।
सच्चा प्रेम अंततः परम मिलन और मोक्ष का मार्ग है ।

लड़की ने क्या सीखा ?

- ❤ मुझे सच्चे प्रेम का अर्थ समझ में आया ।
- ❤ ऐसा प्रेम दुर्लभ है और अमूल्य है ।
- ❤ मैं ऐसे प्रेम के योग्य बनने का प्रयास करूँगी ।
- ❤ मैं जीवन भर इस त्याग को सम्मान दूंगी और स्मरण रखूँगी ।

जो प्रेम त्याग करे, वही सच्चा प्रेम है । जो प्रेम देता जाए, वही ईश्वर का प्रेम है ।
जो प्रेम मोक्ष तक ले जाए, वही प्रेम जीवन का सार है ।

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

कर्मों का अकाट्य नियम -
क्षमा नहीं, भोगना ही पड़ेगा
ॐ
ॐ
ब्रह्मवैवर्त पुराण
"कर्म का सिद्धान्त अटल है — क्षमा नहीं, केवल भोग"
24 घंटे का कर्म-लेखा
23 घंटे 50 मिनट - तपस्या
संचित पुण्य - प्रकाशित
10 मिनट - पाप
संचित पाप - अंधकार
मोक्ष मेरी मुट्ठी में
जा, 84 में
मोक्ष प्राप्त कर
1 धर्म का तराजू
कोई क्षमा नहीं — तौल बराबर,
फल अपरिहार्य
— ब्रह्म कल्प चक्र —
— जन्म-मृत्यु चक्र
धर्म
जन्म → बाल्य → मृत्यु
गर्भ में आत्मा
हज़ारों ब्रह्मा बीतते हैं
ब्रह्मा आते-जाते...,
कल्प बदलते...
केवल निष्काम कर्म → गोलोक
— निष्काम भक्ति → मुक्ति → गोलोक प्राप्ति —
पाप
पाप → नरक / निम्न योनि → पुनर्जन्म
पुण्य (सकाम)
दान-पूजा सकाम → स्वर्ग/धरती पर
पुनः जन्म भोगने के लिए
सुख भोग कर पुनः धरती पर वापस
शर्त: "एक भी कर्म बाकी तो वापस आना"
- 2% कर्म शेष भी कारण बनता है पुनर्जन्म का
2%
भक्त का मार्ग
– अनासक्त भाव
पूर्व जन्म के पाप — प्रारब्ध भोग
भजन-कीर्तन + अनासक्त भाव → कर्म बंधन क्षीण
© लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

स्वार्थ की मम्मी
और पापा कौन है?
मोह / ममता
मम्मी
अहंकार
पापा
स्वार्थ
लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैशणव

स्वार्थ की मम्मी
और पापा कौन है?
मेरा
मैं
स्वार्थ
में + मेरा = स्वार्थ
मम्मी - ममता / मोह
पापा - अहंकार
लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

माया का वंशावली - पूरा परिवार

अद्वैत वेदांत के अनुसार माया का परिवार वंशक्रम

दंपति

स्तर 1

निर्गुण निराकार ब्रह्म

सर्वोच्च • अनंत • निराकार • निरविकार

↓

दंपति

स्तर 2

माया शक्ति

सृष्टि की मूल शक्ति • ब्रह्म की क्रियात्मक शक्ति

↓

दंपति

स्तर 3

अविद्या (पति) अज्ञान • मोह का मूल	**त्रिगुणात्मक प्रकृति** (पत्नी) सत्त्व • रज • तम

↓

दंपति

स्तर 4

अहंकार (1 पुत्र) मैं-मेरा का अभिमान	**पती भ्रोह** बंधन • आसक्ति • मोह

↓

दंपति

स्तर 5

स्वार्थ (पुत्र) स्वयं के लाभ की प्रवृत्ति	**पती भ्रांति** (भ्रम - निक नाम 'भ्रम', असली 'भ्रति') भ्रम • गलत समझ • मिथ्या धारणा

↓

दंपति

स्तर 6

स्वार्थ एवं भ्रांति के 8 पुत्र और 4 बेटियां

8 पुत्र :

1. इच्छा
2. कामवासना
3. क्रोध
4. लोभ
5. राग-द्वेष
6. कपट
7. झूठ
8. भय

4 बेटियां :

1. चंचल • संसार की माया में उड़ान
2. चिंता • अब क्या होगा
3. निंदा (चुगली) • दूसरों में बुराई देखना
4. ईर्ष्या (जलन) • "मैं ही आगे रहूं"

लेखक - अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

ॐ तत् सत् • माया सिर्फ ब्रह्म का प्रतिबिंब है • ज्ञान से माया निवृत्त

माया का वंशावली
माया का पूरा खानदान
इनके भरे पूरे परिवार
जान लीजिए भक्तों!
यह सब माया के परिवार को!
रिसर्च के अनुसार
इसको तैयार किया गया हैं!
निर्गुण निराकार ब्रह्म ॐ
माया शक्ति
अविद्या (अज्ञान) (पति)
त्रिगुणात्मक प्रकृति (पत्नी)
श्रीमान अहंकार जी (कर्ताभाव) (पति)
श्रीमती मोह जी (आसक्ति) (पत्नी)
अहंकार के माता-पिता
पिताजी – अविद्या (अज्ञान)
माताजी – त्रिगुणात्मक प्रकृति
स्वार्थ राजा (एकमात्र पुत्र) (पति)
श्रम (भ्रांति) रानी (Nick Name – श्रम) (पत्नी)
पूरा डिटेल में वंशावली
1. निर्गुण निराकार ब्रह्म
2. माया शक्ति
3. अविद्या – त्रिगुण प्रकृति (पति–पत्नी)
4. अहंकार – मोह (आसक्ति) (पति–पत्नी)
5. स्वार्थ – भ्रांति (भ्रम) (पति–पत्नी)
6. 8 पुत्र और 4 पुत्रियों
अहंकार = दादाजी
मोह = दादी
स्वार्थ = पिता
भ्रांति = माता
इनके 12 संतानें – 8 पुत्र और 4 पुत्रियों
8 पुत्र (बेटे)
1 इच्छा
2 कामवासना
3 क्रोध
4 लोभ
5 राग द्वेष
6 कपट
7 झूठ
8 भय
4 पुत्रियों (बेटिंयों)
1 चंचल (चलायमान)
उद्देस्य
निरंतर बिना रुके संसार की माया में उड़ान भरना!
2 चिंता (तनाव)
उद्देस्य
अब क्या होगा? आगे क्या होगा? हे भगवान रक्षा करो!
3 निंदा (चुगली)
उद्देस्य
अपने स्वभाव से प्रतिकूल, अपने को सर्वश्रेष्ठ समझना और हर व्यक्तियों में बुराई पकड़ना, एक दुसरे को दोषी देना!
4 ईर्ष्या (जलन)
उद्देस्य
संसार में नंबर वन केवल में रहूँ, मैं ही सबसे आगे रहूँ, मेरे से आगे कोई न जाए, वह मुझे मिले वेवल मुझे किसी दूसरे को नहीं! चाहे संसार के एरिया में चाहे भगवान के एरिया में भगवान के क्षेत्र में भी और संसार के क्षेत्र में भी यह बेटी अंत:करण में शासन करती है! चाहे भक्त हो चाहे तपस्वी, चाहे ज्ञानी चाहे योगी, चाहे संत चाहे ऋषि! यह बेटी किसी को नहीं छोड़ती!
याद रखें –
यह आठ बेटा और चार वेटियां स्वार्थ और भ्रांति के बाल बच्चे हैं!
स्वार्थ के मम्मी और पापा का नाम –
मम्मी का नाम – श्रीमती मोह जी (आसक्ति).
पापा का नाम – श्रीमान अहंकार जी (कर्ताभाव).
अब जानते हैं कि अहंकार के माता और पिता कौन हैं?
इसके पिताजी का नाम है अविद्या अर्थात् अज्ञान
और उनकी मम्मी का नाम है त्रिगुणात्मक प्रकृति!
अब जानते हैं अविद्या की मम्मी का नाम क्या है- माया शक्ति!
और माया शक्ति के पिताजी का नाम है निर्गुण निराकार ब्रह्म!
ईर्ष्या (जलन) – विशेष जानकारी
क्योंकि यह अहंकार की नातिन है!
यह बेटी अहंकार का खून है!
अहंकार इस बेटी के दादाजी हैं
इसलिए इसका कार्थ अहंकार से संबंधित होता है!
स्वार्थ इनके पापा जी हैं?
और अहंकार दादाजी!
समझने योग्य मुख्य बातें
★ पुरा परिवार माया का है और यह संसार के सभी दु:खों का कारण है!
★ इनका उत्पति क्रम ब्रह्म से शुरू होकर माया की शक्ति से होता है!
★ इनले प्राणी का पतन होता है और यही बंधन का कारण हैं!
★ इनको पहचानने और इनसे ऊपर उठने का नाम ही भक्ति, साधना और ज्ञान है!
|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हररे ||
राधा राधा राधा राधा राधा राधा
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

माया का वंशावली

माया का पूरा खानदान – इनके भरे पूरे परिवार

जान लीजिए भक्तों
यह सब माया के परिवार को !
रिसर्च के अनुसार
इसको तैयार किया गया है !

ॐ निर्गुण निराकार ब्रह्म
(परम सत्य)

माया शक्ति
(समस्त सृष्टि की मूल शक्ति)

माया शक्ति के पिताजी
निर्गुण निराकार ब्रह्म
ॐ

अविद्या
(अज्ञान)

❤ पति-पत्नी

त्रिगुणात्मक प्रकृति
(सत, रज, तम)

▶ अविद्या (अज्ञान) और त्रिगुणात्मक प्रकृति (सत, रज, तम) का मिलन हुआ और इनसे उत्पन्न हुआ एक पुत्र → अहंकार

अहंकार
(कर्ताभाव)
(श्रीमान अहंकार जी)

❤ पति-पत्नी

मोह
(आसक्ति)
(श्रीमती मोह जी)

▶ अहंकार (कर्ताभाव) और मोह (आसक्ति) का विवाह हुआ और इनसे एक पुत्र का जन्म हुआ → स्वार्थ

स्वार्थ
(राजा)
(लाडला पुत्र)

❤ पति-पत्नी

भ्रांति (भ्रम)
(चालू नाम – भ्रम)
(असली नाम – भ्रांति)

▶ स्वार्थ और भ्रांति (भ्रम) का विवाह हुआ और इनके बहुत सारे बाल बच्चे हुए – कुल 12 बच्चे

8 पुत्र (बेटे)

1	2	3	4	5	6	7	8
इच्छा	कामवासना	क्रोध	लोभ	राग-द्रेष	कपट	झूठ	भय
उद्देश्य – हर समय कुछ न कुछ पाने की चाह रखना !	उद्देश्य – इंद्रियों के विषय भोगों की प्राप्ति की लालसा !	उद्देश्य – विरोध होने पर जलना, भड़कना और नष्ट करना !	उद्देश्य – अधिक से अधिक पाना, चाहे जैसे भी हो !	उद्देश्य – राग में चिपकना और द्वेष में घृणा करना !	उद्देश्य – दिखावे से स्वार्थ सिद्ध करना !	उद्देश्य – स्वार्थ के लिए सत्य को छिपाकर असत्य बोलना !	उद्देश्य – खोने का डर, असफलता का डर, अविष्य का डर !

4 पुत्री (बेटियां)

1	2	3	4
चंचल (चलायमान)	चिंता (तनाव)	निंदा (चुगली)	ईर्ष्या (जलन)
उद्देश्य – निरंतर बिना रूके संसार की माया में उड़ान भरना !	उद्देश्य – अब क्या होगा ? आगे क्या होगा ? हे भगवान रक्षा करो !	उद्देश्य – अपने स्वभाव से प्रतिकूल, अपने को सर्वश्रेष्ठ समझना और हर व्यक्तियों में बुराई पकड़ना ! एक दुसरे को दोषी देना !	अंत:करण में अंगार उबलना उद्देश्य – संसार में नंबर वन केवल मैं रहूं, मैं ही सबसे आगे रहूं, मेरे से आगे कोई न जाए, वह मुझे मिले केवल मुझे किसी दुसरे को नहीं !

ईर्ष्या (जलन) के बारे में विशेष रहस्य

- चाहे संसार के एरिया में चाहे भगवान के एरिया में, भगवान के श्रेत्र में भी और संसार के श्रेत्र में भी यह बेटी अंत:करण में शासन करती है !
- चाहे भक्त हो चाहे तपस्वी चाहे ज्ञानी चाहे योगी चाहे संत चाहे ऋषि ! यह बेटी किसी को नहीं छोड़ती ! मेरी भक्ति सर्वश्रेष्ठ बाकी की भक्ति बेकार ! अपने से कोई बड़ा भक्त मिले तो देख नहीं पाएगी, अपने से बड़ा धनवान मिले तो देख नहीं पाएगी, अपने से बड़ा ज्ञानी मिले तो देख नहीं पाएगी, अपने से बड़ी सुंदर रुप मिले तो देख नहीं पाएगी !
- क्योंकि इनका मुख्य उद्देश्य है – मैं ही सुंदरता में, धन में, ज्ञान में, भक्ति में, केवल मैं ही आगे रहूं कोई अन्य नहीं !

ईर्ष्या (जलन) का पारिवारिक संबंध

अहंकार (दादाजी)
स्वार्थ (पिता)
भ्रांति (माता)
ईर्ष्या (जलन)
(नातिन)

- ईर्ष्या, अहंकार की नातिन है !
- स्वार्थ इसका पिता और अहंकार इसका दादाजी है !
- इसलिए इसका स्वभाव "मैं ही सबसे बड़ा रहूँ" होता है !

इस प्रकार यह 12 बाल बच्चे (8 पुत्र + 4 पुत्रियां) स्वार्थ और भ्रांति के हैं,
और स्वार्थ अहंकार व मोह का पुत्र है, अहंकार अविद्या व त्रिगुणात्मक प्रकृति का पुत्र है,
अविद्या माया शक्ति का पुत्र है और माया शक्ति निर्गुण निराकार ब्रह्म की शक्ति है !

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

यह दुनिया केवल
पैसे की दुनिया है
वाह साहब जी! आपके बिना हम कुछ नहीं!
यह कैसी दुनिया है जान लीजिए
हटो... हमें काम है !
इस संसार में इज्जत आपकी नहीं, पैसे की होती है, संसार केवल पैसे का सम्मान करता है, आपका नहीं !
जब पैसा है...
तब सब आपके आगे पीछे घूमते हैं, आपकी इज्जत करते हैं, आपके गुण गाते हैं !
जब पैसा नहीं है...
तब कोई पूछने नहीं आता, सब मुंह फेर लेते हैं, यही है संसार का असली चेहरा !
संसार का सत्य समझिए
1 क्या वास्तव में आपकी इज्जत होती है ?
• आपको भ्रम है कि आपकी इज्जत हो रही है, आपका सम्मान हो रहा है !
• सच्चाई यह है कि आपकी इज्जत नहीं, पैसे का इज्जत हो रहा है !
• संसार अधिकतर धन का सम्मान करता है, व्यक्ति का नहीं।
2 समय बदलते ही सत्य सामने आ जाता है
• जब जीवन करवट लेता है और आप निर्धन हो जाते हैं, तब आपको संसार की असली रंगत दिखाई देती है।
• जो संसार आपको अपना समझते थे, वही मुंह फेर लेते हैं।
• तब समझ आता है कि यह दुनिया केवल स्वार्थ का संसार है !
3 संसार का असली चेहरा
• यह दुनिया ना कभी किसी की हुई, ना कभी किसी की होगी !
• यहां सबका रिश्ता केवल स्वार्थ और पैसे से है !
• पैसा है तब रिश्ता है, पैसा नहीं तो कोई नहीं !
• इसलिए सावधान रहो और इस संसार से बचकर रहो !
4 सबसे बड़ा संबंध किससे ?
• एकमात्र परमात्मा ही अपना है, दूसरा कोई नहीं !
• एक परमात्मा से रिश्ता जोड़ कर रखो, दुनिया में और किसी से नहीं !
• मन को इस जगत से हटाओ, तभी आपका कल्याण होगा।
• भजन-पूजन से नहीं, जब तक मन संसार से हटेगा नहीं। तब तक कल्याण होगा नहीं !
5 भगवान की कृपा क्या है ?
• जब भगवान जीव आत्मा पर बहुत बड़ी कृपा करते हैं, तो सबसे पहले संसार और प्राणियों के असली चेहरे को दिखाते हैं !
• जो संसार का नकली चेहरा देखकर फंसा होता है, उसे वे असली चेहरा पहचानने की बुद्धि देते हैं !
• यही भगवान की सच्ची कृपा है !
सत्य को जानिए
यहां संसार में कोई किसी की इज्जत नहीं करता, केवल इज्जत सिर्फ प्राणी पैसे का करता है !
इसीलिए सच्चाई को जानो और अपने भ्रम को दूर करो कि "यह मेरा है, यह मेरा है !"
दिनभर पागल जैसे झूठे संसार को अपना मान रहे हो !
सच्चाई को जानकर अपने मन को परमात्मा में लगाओ, यही जीवन का परम कल्याण है !
निष्कर्ष
संसार पैसे का संसार है, अहंकार का मायाजाल है !
इसलिए सावधान रहो, सत्य को पहचानो और एकमात्र परमात्मा से प्रेम जोड़ो !
लेख- श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

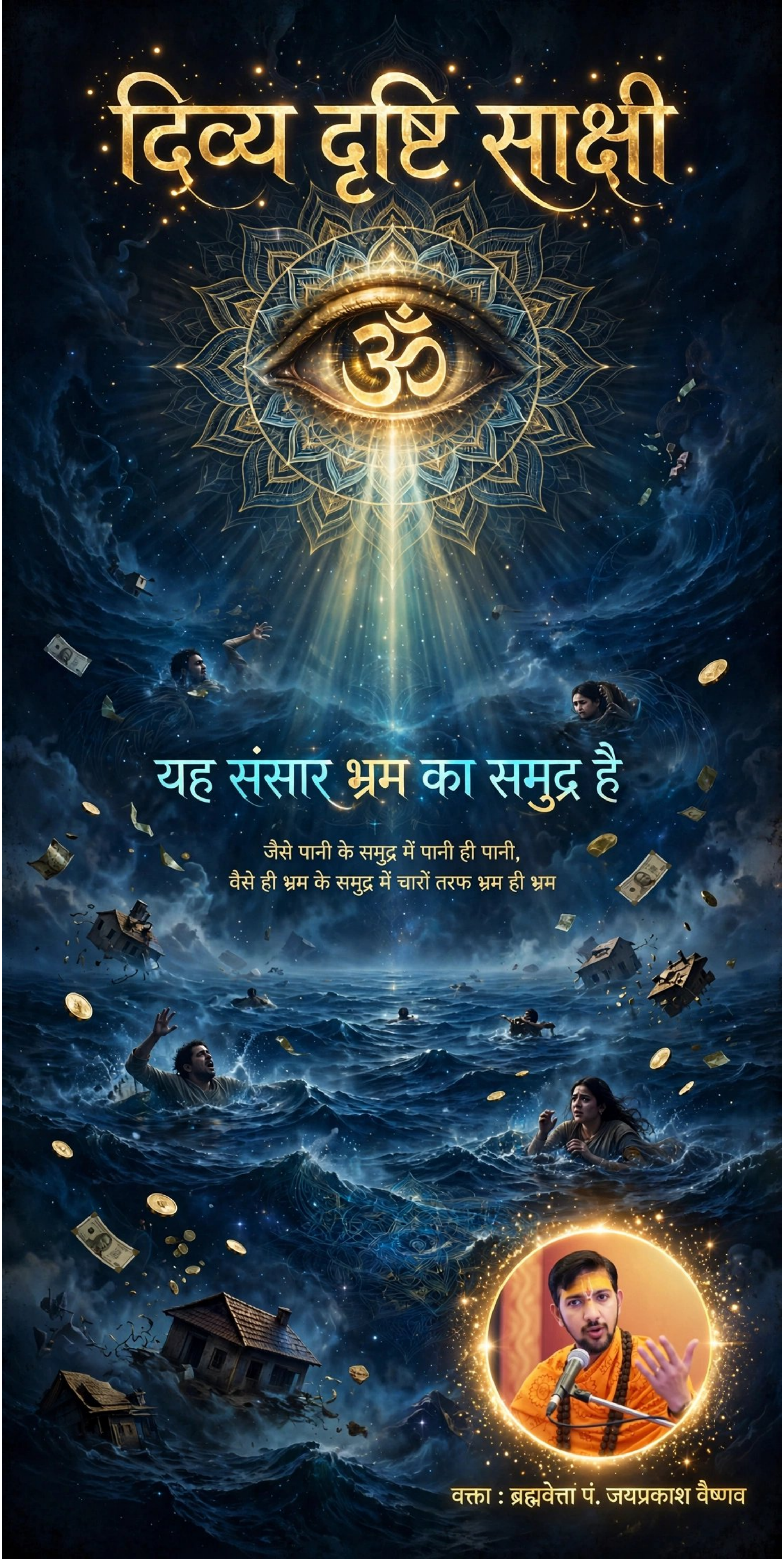
दिव्य दृष्टि साक्षी
यह संसार भ्रम का समुद्र है
जैसे पानी के समुद्र में पानी ही पानी,
वैसे ही भ्रम के समुद्र में चारों तरफ भ्रम ही भ्रम
वक्ता : ब्रह्मवेत्ता पं. जयप्रकाश वैष्णव

दुनिया के प्यार का नाटक प्रपंच
A Split Reality Comparison — Love vs. Truth Vision
माया दृष्टि (माइक दृष्टि)
— वह जो दिखता है, उस पर विश्वास —
I Love You
दिव्य दृष्टि
— छुपी सच्चाई का खुलासा —
पैसा
नाटक
स्वार्थ
बाएँ: भावनात्मक भ्रम • दाएँ: वास्तविकता

द्वितीय डिज़ाइन संस्करण - 02

दुनिया के प्यार का नाटक प्रपंच

— माया और दिव्य दृष्टि का बिरोधाभास —

जब मुखौटा उतरे, तब सच्चा स्वार्थ दिखे
— प्रेम नहीं, प्रयोजन।

दुनिया के प्यार का नाटक प्रपंच
नाटक
भाग-1
सत्य को पहचानो, भ्रम से बचो !
माइक दृष्टि (भ्रम की दृष्टि)
VS
दिव्य दृष्टि (सत्य की दृष्टि)
बाहरी शब्दों पर विश्वास करती है, भीतर की सच्चाई नहीं देख पाती !
मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ, I Love You. मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकती !
वाह ! यह मुझसे इतना प्यार करती है ! मैं कितना भाग्यशाली हूँ !
अरे हाँ भाई, लड़की सही कह रही है और इसके जाल में लड़का फंस जाएगा ! क्योंकि उसके पास माइक दृष्टि है, दिव्य दृष्टि नहीं !
यह बाहरी बातों और शब्दों में फंस जाती है !
भीतर की सच्चाई को देखती है, झूठ को पकड़ लेती है और सत्य पहचानती है !
मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ, I Love You. मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकती !
• क्या यह निःस्वार्थ प्रेम है ? • या किसी स्वार्थ के लिए मेरे पास आई है ? • इसका उद्देश्य क्या है ? • सत्य क्या है ?
दिव्य दृष्टि प्राणी को सिखाती है कि सत्य को पहचानो, केवल शब्दों को नहीं ! झूठ के पीछे छिपे मकसद को समझो !
यह सत्य को पहचानती है, झूठ के पर्दे को हटाती है !
माइक दृष्टि जाल में फंसाती है, दिव्य दृष्टि मुक्त कराती है !
एक भ्रम देती है, दूसरी सत्य का ज्ञान कराती है !
भ्रम का रास्ता बंधन की ओर ले जाता है
सत्य का रास्ता मुक्ति की ओर ले जाता है !
सार समझो
शब्दों का मीठापन सत्य की गारंटी नहीं होता !
हर मीठे बोल के पीछे नीयत को परखो !
दिव्य दृष्टि विकसित करो, सत्य की पहचान करो !
जो सत्य को पहचान लेता है, वही दुखों से बचता हैं !
दिव्य दृष्टि एक ऐसी दृष्टि है, जिसमें प्राणी झूठ को पकड़ लेता है और सत्य की पहचान करता है !
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-2
प्रेम के पीछे छिपा स्वार्थ का खेल !
बाहर प्रेम के मीठे शब्द.... अंदर स्वार्थ के गहरे भेद !
लड़का बाहर से क्या कहता है ?
मैं तुमसे बहुत प्यार करता हैं, तुम्हारे बिना नहीं जी सकता !
लड़की बाहर से क्या कहती है ?
I Love You. मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकती !
लेकिन अंदर का सच क्या है ?
मेरे मन में शरीर के स्पर्श, आकर्षण और भोग की इच्छा छिपी हुई है !
बाहर प्रेम का नाटक अंदर स्वार्थ का जाल
लेकिन अंदर का सच क्या है ?
मेरे मन में पैसा, सुरक्षा, सुविधा और सुख-साधन की चाह छिपी हुई है !
लड़के का स्वार्थ
शरीर के स्पर्श और भोग का स्वार्थ !
लड़की का स्वार्थ
पैसा, सुविधा और ऐशो-आराम का स्वार्थ !
स्वार्थ पूरा नहीं हुआ तो क्या होता है ?
स्वार्थ पूरा नहीं हुआ तो 2 मिनट भी साथ नहीं रहेगी/रहेगा !
स्वार्थ पूरा नहीं हुआ तो दोनों का रिश्ता एक सेकंड़ में खत्म !
स्वार्थ खत्म... रिश्ता खत्म, नाटक खत्म... प्रेम खत्म !
दुनिया के सारे रिश्ते स्वार्थ के झमेले हैं !
माता-पिता
अपेक्षाओं और स्वार्थ से भरा संबंध
पति-पत्नी
सुख-सुविधा और इच्छाओं का स्वार्थ
बेटा-बेटी
वृद्धावस्था का सहारा और अपेक्षाओं का स्वार्थ
भाई-बहन
संपति, तुलना और लाभ का स्वार्थ
मित्र
फायदे और उपयोग का स्वार्थ
रिश्तेदार/समाज
प्रतिछा, दिखावा और लाभ का स्वार्थ
हर रिश्ते के पीछे एक स्वार्थ छिपा है !
निष्कर्ष
यह दुनिया केवल प्यार का नाटक है !
अपने-अपने स्वार्थ को लेकर सब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं !
सत्य को पहचांनो, जागो और स्वयं को इस मायाजाल से बचाओ !
दिव्य दृष्टि सत्य को पहचानती है, माया दृष्टि नाटक में फंस जाती है !
झूठे प्रेम के जाल से बचो, परमात्मा के सत्य प्रेम से जुड़ो !
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-3

दुनिया के सारे रिश्ते स्वार्थ के झमेले हैं !

यह दुनिया केवल प्यार का नाटक हैं !

सत्य क्या है ?

- ✓ दुनिया में कोई किसी से निष्काम प्रेम नहीं करता !
- ✓ हर रिश्ता किसी न किसी स्वार्थ से जुड़ा है !
- ✓ स्वार्थ पूरा नहीं हुआ तो रिश्ता एक सेकंड में खत्म !
- ✓ यह दुनिया केवल प्यार का नाटक है !
- ✓ सत्य को पहचानो, भ्रम से बाहर आओ !

स्वार्थ का चक्र

भ्रम क्या है ?

- ⊗ मैं तुमसे बहुत प्यार करता/करती हूँ !
- ⊗ तुम्हारे बिना नहीं जी सकता/सकती !
- ⊗ हमारा प्यार सच्चा और अमर है !
- ⊗ हम एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं !
- ⊗ हमेशा साथ निभाएंगे !

सच्चाई क्या हैं ?

- ✓ हर दावा स्वार्थ छुपा कर करता है !
- ✓ स्वार्थ पूरा तो साथ, नहीं तो छुटकारा !
- ✓ नाटक का पर्दा जल्दी या देर से हटता है !
- ✓ जागो, सत्य देखो, भ्रम को तोड़ो !

हर रिश्ते के पीछे छिपा स्वार्थ

माता-पिता	पति-पत्नी	बेटा-बेटी	भाई-बहन	मित्र	रिश्तेदार/समाज
अपेक्षा और सहारे का स्वार्थ !	सुख-सुविधा और इच्छाओं का स्वार्थ !	भविष्य के सहारे और वृद्धावस्था का स्वार्थ !	सहयोग और स्वार्थ का रिश्ता !	लाभ, सुविधा और मनोरंजन का स्वार्थ !	प्रतिष्ठा, दिखावा और समाज में स्थान का स्वार्थ !
बुढ़ापे में सेवा मिले, इसी स्वार्थ से पालते हैं !	एक-दूसरे से सुख और संतोष की अपेक्षा !	बेटे-बेटी से सहारा और सम्मान की अपेक्षा !	जरूरत पर ही याद आता है रिश्ता !	काम पड़ने पर ही याद करते हैं !	लोग क्या कहेंगे, इस डर और दिखावे का स्वार्थ !

स्वार्थ पूरा नहीं तो क्या होता हैं ?

- ⊗ 2 मिनट में साथ छोड़ देते हैं !
- ⊗ फोना उठाना बंद कर देते हैं !
- ⊗ अहंकार और अपमान करते हैं !
- ⊗ दूसरों को दोष देते हैं !
- ⊗ रिश्ते का नाटक खत्म कर देते हैं !

जो अपना नहीं है, वही छोड़ जाता है ! जो सच्चा है, वही साथ निभाता है !

स्वार्थ पूरा हो तो क्या होता है ?

- ✓ मीठी बातें करते हैं !
- ✓ हमेशा साथ रहने की बात करते हैं !
- ✓ प्यार का नाटक करते हैं !
- ✓ स्वार्थ पूरे होने तक ही सब कुछ अच्छा लगता हैं !

दिव्य संदेश

- ✦ दुनिया स्वार्थ का मायाजाल है, यहां कोई किसी का नहीं !
- ✦ प्रेम का नाटक करके सब स्वार्थ सिद्ध करते हैं !
- ✦ भगवान की दृष्टि से देखो, सत्य को पहचानो !
- ✦ सच्चा प्रेम केवल एक है – परमात्मा का प्रेम !
- ✦ उनसे जुड़ोगे तो न कभी धोखा मिलेगा, न कभी छोड़ेंगे !

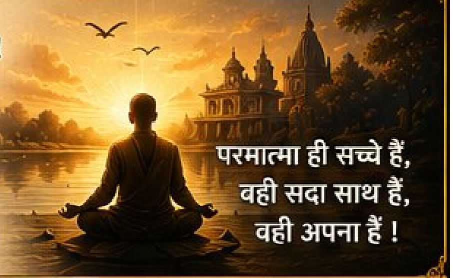

निष्कर्ष

दुनिया के सारे रिश्ते स्वार्थ के झमेले हैं !
अपने-अपने स्वार्थ को लेकर सब दुनिया में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं !
इसलिए जागो, सत्य को पहचानो और परमात्मा से रिश्ता जोड़ो !

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

गीता अध्याय 2 श्लोक 27

**जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥**

भक्तों याद रखो - पूरे जीवन भक्ति की,
पर एक भी पाप रहा तो फिर से धरती पर आना पड़ेगा।
भक्ति का फल मिलेगा, पर पाप का भी भोन्न ड़े का हिसाब बाकी है, मुक्ति नहीं।
पाप-पुण्य दोनों का हिसाब चुकता होना ही मुक्ति है। इसलिए 24 घंटे ध्यान
रखो - पाप बिल्कुल न हो। जितने पाप, उतने जन्म!

एक भी पाप = फिर से जन्म निश्चित!
पाप और पुण्य दोनों का हिसाब
चुकता = मुक्ति

वक्ता : ब्रह्मवेत्ता पं. जयप्रकाश वैष्णव

धर्म ही जीवन का सार — कर्म से बंधन, ज्ञान से मुक्ति

गीता ज्ञान - कर्म और मुक्ति

श्लोक:

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।

- गीता 2.27

व्याख्या:

भक्तों याद रखो - यदि मृत्यु के बाद फिर जन्म नहीं लेना, इस जन्म-मरण चक्र से छूटना है, तो पाप कर्म से बचो! भगवान कहते हैं पूरे जीवन में एक भी अपराध शेष रहा तो थरती पर आना निश्चित है। भक्ति का फल मिलेगा, पर पाप का हिसाब भी चुकाना पड़ेगा। जब तक एक भी कर्म शेष है, मुक्ति नहीं। मुक्ति का अर्थ है - पाप और पुण्य दोनों का हिसाब शून्य हो जाना। अच्छे कर्म भी बंधन हैं - सुख भोगने के लिए फिर आना। जैसे दिन के बाद रात, रात के बाद दिन निश्चिद है, तैसे ही जब तक मुक्ति नहीं, जन्म-मृत्यु का चक्र चलता ही रहता है। इसलिए 24 घंटे यही ध्यान रखो - मुझसे कोई अपराध हो। एक दिन में एक पाप से सोचो, जीदन भर कितने? उतनी बार जन्म लेना पड़ेगा।

लेख - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

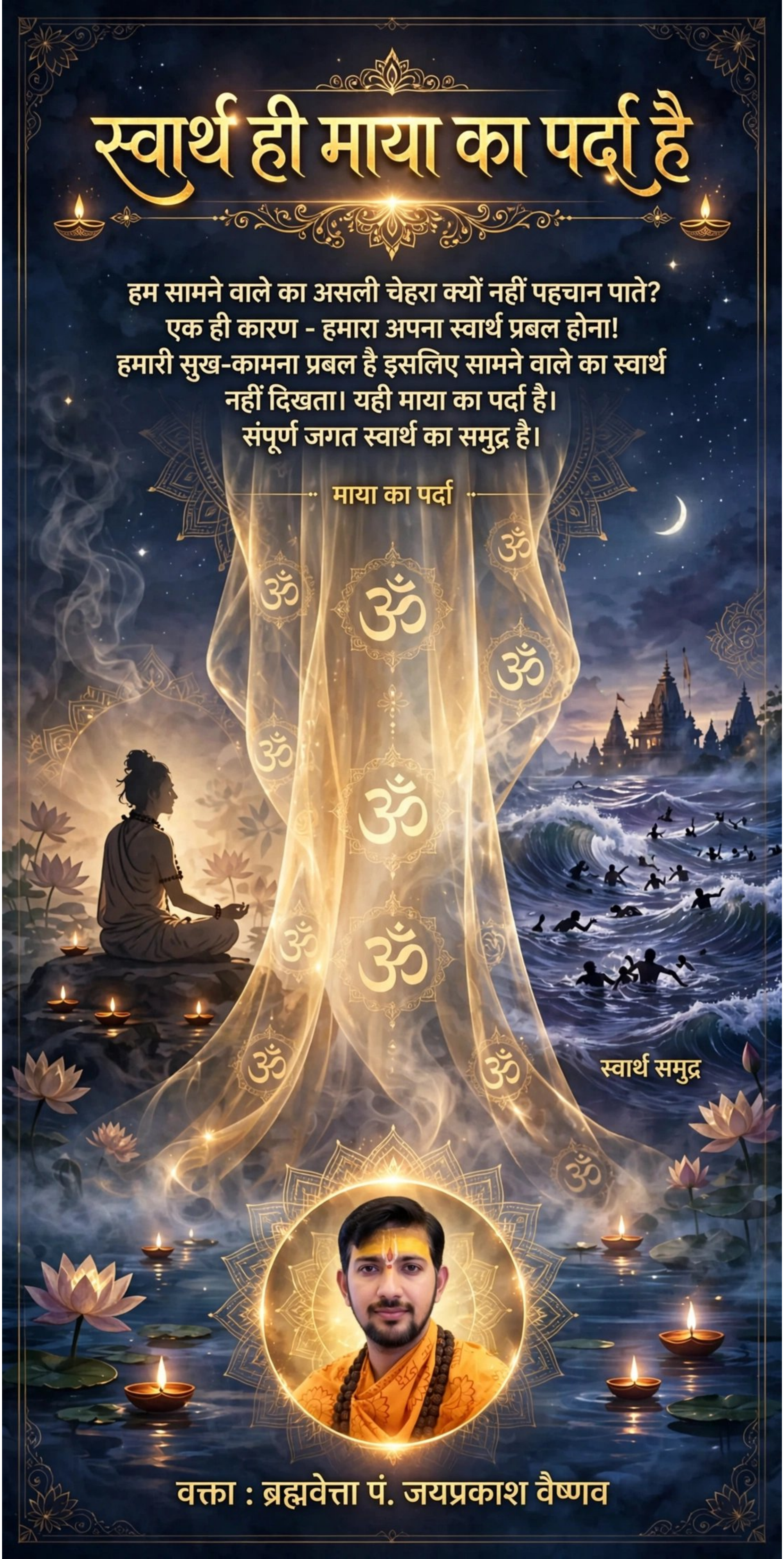
स्वार्थ ही माया का पर्दा है
हम सामने वाले का असली चेहरा क्यों नहीं पहचान पाते?
एक ही कारण - हमारा अपना स्वार्थ प्रबल होना!
हमारी सुख-कामना प्रबल है इसलिए सामने वाले का स्वार्थ
नहीं दिखता। यही माया का पर्दा है।
संपूर्ण जगत स्वार्थ का समुद्र है।
माया का पर्दा
स्वार्थ समुद्र
वक्ता : ब्रह्मवेत्ता पं. जयप्रकाश वैष्णव

स्वार्थ ही माया
का पर्दा है
हम सामने वाले का असली चेहरा क्यों नहीं पहचान पाते?
एक ही कारण - हमारा अपना स्वार्थ प्रबल होना!
हमारी सुख-कामना इतनी प्रबल है कि
सामने वाले का स्वार्थ नहीं दिखता।
यही माया का पर्दा है।
संपूर्ण जगत स्वार्थ का समुद्र है।
स्वार्थ समुद्र
माया का पर्दा
वक्ता : ब्रह्मवेत्ता पं. जयप्रकाश वैष्णव
धर्म ही जीवन का सार - स्वार्थ से बंधन, ज्ञान से मुक्ति

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥7॥

अब तक बीते: 5,128 वर्ष |
शेष: 4,26,872 वर्ष |
कुल आयु: 4,32,000 वर्ष

कलियुग शेष समय :
4,32,000 वर्ष
— समाप्ति की ओर —

अगर 4,32,000 कलयुग के पूरा होने में अगर दो दिन भी बाकी रहेगा तब तक भक्तों याद रखना भगवान धरती में नहीं आएंगे। भगवान धरती में कब आएंगे जब वह दो दिन भी पूरा हो जाएगा मतलब पूरी कलयुग की अवधि जब पूरी हो जाएगी। चारों तरफ प्रचंड़ पाप जब कलयुग में पाप तूफान पर होगा चारों तरफ हाहाकार मचेगा भीषण महा भयंकर पाप जब कलयुग में बढ़ जाएंग तब भगवान धरती में आएंगे। बाकी पापों के लिए यमराज और यमदूत काफी होते हैं उसको सुधारने के लिए भगवान को धरती में आना नहीं पड़ता। भगवान धरती में कब आते हैं जब इस पूरी धरती को शांत करना मुश्किल हो जाता है जब चारों तरफ भीषण पाप बढ़ जाता है तब भगवान आते हैं याद रखना प्यारे भक्तों।

श्लोक 8
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च्
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि
युगे युगे॥8॥

वक्ता : ब्रह्मवेत्ता पं. जयप्रकाश वैष्णव

धर्म की रक्षा • सत्य की विजय • कल्कि अवतार

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥7॥

अब तक बीते : 5,128 वर्ष ।
शेष : 4,26,872 वर्ष ।
कुल आयु : 4,32,000 वर्ष

कलियुग शेष समय :
4,32,000 वर्ष
— समाप्ति की ओर —

गीता अध्याय 4 श्लोक 7, 8

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥7॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥8॥

अगर 4,32,000 कलियुग के पूरा होने में अगर दो दिन भी बाकी रहेगा तब तक भक्तों याद रखना भगवान धरती में नहीं आएंगे। भगवान धरती में कब आएंगे जब वह दो दिन भी पूरा हो जाएगा मतलब पूरी कलियुग की अवधि जब पूरी हो जाएगी। चारों तरफ प्रचंड पाप जब कलियुग में पाप तूफान पर होगा चारों तरफ हाहाकार मचेगा भीषण महा भयंकर पाप जब कलियुग में बढ़ जाएंगे तब भगवान धरती में आएंगे। बाकी पापों के लिए यमराज और यमदूत काफी होते हैं उनको सुधारने के लिए भगवान को धरती में आना नहीं पड़ता। भगवान धरती में कब आते हैं जब इस पूरी धरती को शांत करना मुश्किल हो जाता है जब चारों तरफ भीषण पाप बढ़ जाता है तब भगवान आते हैं याद रखना प्यारे भक्तों।

श्लोक 8
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च्
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि
युगे युगे ॥8॥

वक्ता : ब्रह्मवेत्ता पं. जयप्रकाश वैष्णव

धर्म की रक्षा • सत्य की विजय • कल्कि अवतार

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥7॥
— श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 4, श्लोक 7 —
वक्ता : ब्रह्मवेत्ता पं. जयप्रकाश वैष्णव
धर्म की रक्षा हेतु मैं हर युग में आता हूँ
कुरुक्षेत्र — धर्म वस्तर् धर्म स्थापन

भगवान के यहाँ केवल फल याद रहता है,
कर्म भुला दिया जाता है
गीता 15.15 - मैं ही याद रखवाता हूँ, मैं ही भुलाता हूँ
इस जन्म में सब याद है
अगले जन्म में सब भूल जाओगे
नशा • झूठ
पुनर्जन्म • छिपकली • स्मृति शून्य
??
??
??
झूठ • छल
यम का लेखा - कर्म लेखा
अंधा • रोना • यादें मिटी
प्रश्नपत्र = कर्म
परिणाम = फल
स्मृति मिट गई
प्रार्थना • अच्छे कर्म
कुत्ता • दुख • भूल गया
वक्ता : ब्रह्मवेत्ता पं. जयप्रकाश वैष्णव
कर्म सुधार लो - आगे सिर्फ रोना पड़ेगा, याद कुछ नहीं रहेगा

भाग-1
भगवान के यहाँ
केवल एक चीज याद रहती है
भक्तों समझो इसका रहस्य !
परमात्मा
सर्व साक्षी है !
आज – वर्तमान जीवन में आपको सब याद है
मांस भक्षण कर रहे हो
मुझे याद है मैं मांस भक्षण कर रहा हूँ !
शराब पी रहे हो
मुझे याद है मैं शराब पी रहा हूँ !
किसी के साथ धोखा कर रहे हो
मुझे याद है मैं उसके साथ धोखा कर रहा हूँ !
झूठ बोल रहे हो
तुझे मालूम है मैं झूठ बोल रहा हूँ !
गुस्सा कर रहे हो
मुझे याद है मैं गुस्सा कर रहा हूँ !
पैसे का लालच है
मुझे मालूम है मैं लालची हूँ !
भगवान का नाम जप रहे हो
मुझे याद है मैं भगवान का नाम ले रहा हूँ !
लेकिन आगे सब कुछ खत्म हो जाएगा !
न भगवान की भक्ति याद रहेगी,
न पाप कर्म याद रहेंगे,
केवल भगवान जानेंगे कि
आपने पूरा जीवन क्या-क्या किया !
इसलिए परमात्मा को
सर्व साक्षी कहा गया है !
मृत्यु के समय क्या होता है ?
मेमोरी पावर को “रिसेट” कर दिया जाता है !
RESET
सब याददाश्त शून्य हो जाता है
स्मृति (ब्लेंक)
जैसे आपको अपनी माता के गर्भ में 9 महीने रहने का याद नहीं है,
उसी तरह आगे आपको कुछ भी याद नहीं रहेगा !
जीवात्मा
शून्य अवस्था से आती हैं संसार में, और अंत में वापस शून्य अवस्था में चली जाती है !
शून्य अवस्था
संसार में आती है
शून्य अवस्था में वापस जाती है
संक्षेप में समझो
✦ अभी सब याद है क्योंकि परमात्मा याद रखवाते हैं !
✦ मृत्यु के बाद सब भुला दिया जाता है !
✦ केवल परमात्मा सर्व साक्षी रहते हैं !
✦ इसेलिए अपने कर्म सुधारो अभी !
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-2

मृत्यु के समय स्मृति क्यों मिट जाती है?

कर्म करते समय स्मृति, कर्मफल भोगते समय विस्मृति !

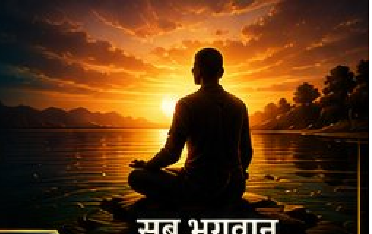

1 आज आपको सब याद है

आपको याद है कि आप

- क्या कर रहे हैं।
- पाप कर रहे हैं या पुण्य।
- भगवान का नाम जप रहे हैं।
- झुठ बोल रहे हैं या सत्य।
- क्रोध, लोभ, छल, मांस-भक्षण या किसी के साथ अन्याय कर रहे हैं।

अर्थात कर्म करते समय प्राणी को अपने प्रत्येक कर्म की स्मृति रहती है !

2 भगवान स्मृति क्यों देते है ?

भगवान कर्म करते समय स्मृति इसलिए देते हैं कि—

- प्राणी अपने कर्मों को पहचान सके।
- अपने जीवन को सुधार सके।
- पाप छोड़कर धर्म के मार्ग पर चल सके।

जब तक स्मृति है, तब तक सुधार का अवसर है !

3

मृत्यु के साथ वर्तमान जन्म की स्मृतियाँ समाप्त हो जाती हैं!

4 सब याददाश्त शून्य हो जाती है

- जैसे गर्भ के नौ महीने याद नहीं रहते।
- वैसे ही पिछले जन्म के कर्म भी याद नहीं रहते।
- जीव शून्य स्मृति के साथ नया शरीर प्राप्त करता है।

जन्म लेते समय सब कुछ शून्य (RESET) हो जाता है !

5 फिर क्या याद रहता है ?

केवल कर्मों का फल !

सुख का अनुभव	दु:ख का अनुभव
▶ सुख मिल रहा है — यह याद रहता है। ▶ आनंद मिल रहा है — यह याद रहता है।	▶ दु:ख मिल रहा है — यह याद रहता है। ▶ पीड़ा मिल रही है — यह याद रहती है।

लेकिन यह याद नहीं रहता कि यह किस जन्म के किस कर्म का फल है !

श्रीमद्भगवद्गीता 15.15 (सार)

" मैं ही प्राणी को स्मरण कराता हूँ और मैं ही उसे विस्मरण कराता हूँ ! "

अंतिम संदेश

जब तक चेतन शक्ति और स्मृति है, तब तक अपने कर्म सुधार लो !

मृत्यु के बाद कर्म याद नहीं रहते, केवल उनका फल भोगना पड़ता है !

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-3
कर्मों का फल तो याद रहता है,
कर्म क्यों याद नहीं रहते?
कर्म करते समय स्मृति, कर्मफल भोगते समय विस्मृति !
1 प्राणी पूछता है–
" हे भगवान! मैं कौन से जन्म के कर्मों की सजा भुगत रहा हूँ ? "
दु:ख, बीमारी, गरीबी, विकलांगता, असफलता, अपमान– सब सहकर प्राणी यही प्रश्न करता है।
2 भगवान कहते हैं–
जब तुम कर्म कर रहे थे, तब तुम्हें सब याद था।
मैंने तुम्हें स्मृति दी थी ताकि तुम अपने कर्म सुधार सको।
लेकिन मृत्यु के बाद, उसी स्मृति को मेरी माया ने ढक दिया।
अब केवल कर्मफल रहेगा, कर्म याद नहीं रहेंगे।
3 यही है भगवान की व्यवस्था
वर्तमान जन्म में कर्म
पाप, पुण्य, भक्ति, लोभ, क्रोध, छल, अत्याचार– सब करते समय याद रहता है।
मृत्यु
मृत्यु होते ही शरीर छूट जाता है।
स्मृति समाप्त
MEMORY RESET
स्मृति (याददाश्त) पूर्ण रूप से समाप्त !
अगला जन्म
जीव नया शरीर प्राप्त करता है।
केवल कर्मफल का भोग
सुख-दु:ख, रोग-शोक, गरीबी-अमीरी– केवल कर्मों का फल भोगता है।
फल तो मिल रहा है, पर यह याद नहीं कि किस कर्म का फल है !
4 क्या इन जीवों को याद है कि यह कौन से कर्मों का फल है?
छिपकली
क्या इसे याद है? नहीं !
कुत्ता
क्या इसे याद है? नहीं !
सूअर
क्या इसे याद है? नहीं !
गाय
क्या इसे याद है? नहीं !
इसी प्रकार मनुष्य को भी याद नहीं रहता कि वह किस जन्म के कौन से कर्मों का फल भोग रहा है।
लेकिन कर्मफल अवश्य मिल रहा है !
5 कर्मफल के कुछ भयानक उदाहरण
जन्म से नेत्रहीन
ना प्रकाश देख सकता है, ना रंग, ना चेहरा।
चन्म से विकलांग
चल नहीं सकता, दूसरों पर निर्भर जीवन।
वाणीहीन (बोल नहीं सकता)
मन में बहुत कुछ है, पर बोल नहीं सकता।
असहनीय रोग से पीड़ित
दिन-रात असहनीय वेदना, कभी आराम नहीं।
अत्यंत गरीबी और अभाव
भोजन, वस्त्र, मकान तक का अभाव।
यह सब कर्मों का फल है, पर यह याद नहीं कि यह किस कर्म का फल है।
निष्कर्ष
यही भगवान की माया है–
कर्म करते समय – स्मृति !
कर्मफल भोगते समय – विस्मृति !
भगवान सर्वसाक्षी हैं। तुम भूल जाते हो, पर भगवान कभी नहीं भूलते। इसलिए अभी अपने कर्म सुधार लो।
आज का सुधरा हुआ कर्म कल के दु:खों को रोक सकता है। जब तक स्मृति है, तब तक अवसर है।
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-4
भगवान अभी क्यों नहीं बताते
कि यह किस कर्म का फल है ?
कर्म करते समय स्मृति, कर्मफल भोगते समय विस्मृति !
1 जीव की पुकार
“ हे भगवान ! मुझे बता दीजिए कि यह दु:ख किस जन्म के किस कर्म का फल है ?”
दु:ख, बीमारी, गरीबी, विकलांगता, अपमान – जीव पूछता है कि यह सब क्यों मिल रहा है ?
2 भगवान का उत्तर
❖ जब तुम कर्म कर रहे थे, तब तुम्हें सब याद था।
❖ मैंने तुम्हें स्मृति दी थी ताकि तुम अपने कर्म सुधार सको।
❖ लेकिन मृत्यु के बाद उसी स्मृति को मेरी माया ने ढक दिया।
क्योंकि यदि सब याद रहे, तो मेरी माया की व्यवस्था समाप्त हो जाएगी !
3 दो स्थितियाँ – यही भगवान की माया का रहस्य है
यदि पिछले जन्म याद रहते तो क्या होता ?
❖ हर व्यक्ति अपने पुराने जन्मों में उलझा रहता।
❖ किसी से बदला लेता।
❖ किसी से द्वेष करता।
❖ मोह, आसक्ति और झगड़े कभी समाप्त नहीं होते।
❖ कोई भी आगे बढ़ नहीं पाता।
न जीवन में शांति रहती, न प्रेम, न सुख !
MEMORY RESET
इसलिए भगवान स्मृति को RESET कर देते हैं !
इसलिए भगवान विस्मृति देते हैं
❖ जीव को नया जीवन मिलता है।
❖ नया शरीर, नया परिवार, नया वातावरण, नई दिशा।
❖ पुरानी बातें भूलकर आगे बढ़ने का अवसर मिलता है।
❖ अपने वर्तमान कर्मों से भविष्य बदलने की शक्ति मिलती है।
नया अवसर मिलता है, आगे बढ़ने की शक्ति मिलती है !
4 भगवान का संदेश
❖ मैं तुम्हें दंड देने के लिए नहीं, सुधारने के लिए संसार में भेजता हूँ।
❖ दु:ख, कष्ट और परेशानियाँ तुम्हें जगाने के लिए हैं।
❖ यदि तुम सुधर जाओगे, तो आने वाला भविष्य सुखमय होगा।
❖ मैं चाहता हूँ कि तुम अपने वर्तमान कर्मों को श्रेष्ठ बनाओ।
अतीत नहीं, वर्तमान महत्वपूर्ण है !
5 जीव का संकल्प
अब मैं अपने वर्तमान जीवन के कर्म सुधारूँगा। क्योंकि आगे केवल कर्मफल याद रहेगा, कर्म नहीं।
भूतकाल मत खोजो, वर्तमान सुधारो !
भगवान की व्यवस्था – जीव के कल्याण के लिए
कर्म करते समय स्मृति देते हैं
ताकि जीव अपने कर्म सुधार सके
मृत्यु के साथ स्मृति मिटा देते हैं
नया जन्म देते हैं
केवल कर्मफल का भोग कराते हैं
यही भगवान की अद्भुत, न्यायपूर्ण और करुणामयी व्यवस्था है !
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-5

अब क्या करना चाहिए ?
यही है जीवन का सार !

कर्म करते समय स्मृति, कर्मफल भोगते समय विस्मृति !

1 सत्य को समझो

- कर्म करते समय तुम्हें सब याद रहता है।
- मृत्यु के बाद स्मृति मिट जाती है।
- फिर केवल कर्मों का फल याद रहता है, कर्म नहीं।
- यह भगवान की माया है।

इस सत्य को समझ लेना ही ब्रह्म ज्ञान की शुरुआत है।

2 कर्म सुधारने का सुनहरा अवसर

- वर्तमान जन्म ही कर्म सुधारने का एकमात्र अवसर है।
- पाप छोड़ो, पुण्य अपनाओ।
- भजन, सेवा, दया, सत्य, प्रेम, करुणा को जीवन में लाओ।
- क्योंकि अगला जन्म कैसा होगा, यह तुम्हारे कर्म तय करेंगे।

अभी किया गया छोटा सा शुभ कर्म भी भविष्य को बदल सकता है।

3 किस पर ध्यान दो ?

- ✗ भूतकाल के कर्म ढूंढने में समय व्यर्थ मत करो।
- ✗ दूसरों को दोष मत दो।
- ✓ अपने वर्तमान कर्मों पर ध्यान दो।
- ✓ ईश्वर की शरण लेकर कर्म करते रहो।

भूत की चिंता छोड़ो, वर्तमान सुधारो, भविष्य संवारो।

4 कर्मों का फल भोगना निश्चित है – इससे कोई बच नहीं सकता

पाप के फल
- दुःख, बीमारी, कष्ट
- गरीबी, अपमान
- अशांति, भय
- असफलता
- नरक जैसी स्थिति

पुण्य के फल
- सुख, शांति, समृद्धि
- सम्मान, प्रतिष्ठा
- स्वस्थ शरीर, बुद्धि
- संतान सुख, सहयोग
- स्वर्ग जैसी स्थिति

लेकिन स्मृति नहीं रहती
कर्मों का फल तो मिलता है, पर यह याद नहीं रहता कि यह किस कर्म का फल है।

सबको समान नियम
राजा हो या रंक, विद्वान हो या मूर्ख, सभी को अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है।

भगवान सर्वसाक्षी हैं
भगवान सब देख रहे हैं, सब जानते हैं, सबके कर्मों का लेखा उनके पास सुरक्षित है।

अतः इस शरीर रहते हुए अपने कर्मों को पवित्र, शुभ और भगवान के लिए बना लो।

5 कैसे करें अपने जीवन को सफल ?

- प्रति दिन भगवान का स्मरण और नाम जप करो।
- सत्य बोलो, धर्म से कमाओ, दया और सेवा करो।
- माता-पिता, गुरु और बड़ों का सम्मान करो।
- पाप कर्मों से बचो – हिंसा, चोरी, छल, क्रोध, नशा आदि।
- सभी प्राणियों में भगवान को देखकर प्रेम करो।
- जो कुछ भी करो, भगवान को अर्पण करके करो।

6 अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण संदेश

आज जो करेंगे,
वही कल बनकर आएगा।
अभी संभल जाओ,
यही जीवन की कमाई है।
कर्म ही साथ जाएंगे,
बाकी सब यहीं छूट जाएगा।

जागो, समझो और अपने कर्मों को बदलो – यही जीवन की सफलता है !

पूरी श्रृंखला का सार

1. कर्म करते समय स्मृति रहती है।
2. मृत्यु के बाद स्मृति मिट जाती है।
3. कर्मों का फल तो याद रहता है, कर्म नहीं रहते।
4. भगवान ऐसा ही करते हैं हमारी भलाई के लिए।
5. अब वर्तमान जीवन के कर्म सुधारना ही हमारा एकमात्र कर्तव्य है।

अंतिम निष्कर्ष

कर्म आपका है,
व्यवस्था भगवान की है,
फल निश्चित है।
इसलिए अच्छा कर्म ही
सच्ची सुरक्षा है।

श्रीमद्भगवद्गीता 3.9 (सार)

“ यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।”

यज्ञ (ईश्वर) के लिए किए बिना कर्म बन्धन का कारण बनते हैं।

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-6
सुख में भगवान क्यों भूल जाते हैं,
दुःख में क्यों याद आते हैं ?
सुख और दुःख दोनों प्रारब्ध से मिलते हैं !
1 सुख और दुःख दोनों प्रारब्ध से मिलते हैं
भक्तों !
सुख भी आपके पूर्व जन्म के कर्मों का फल है।
दुःख भी आपके पूर्व जन्म के कर्मों का फल है।
सुख
दुःख
प्रारब्ध
पूर्व जन्म के कर्म
दोनों प्रारब्ध से मिलते हैं, कोई भी अपने बल से नहीं !
2 दुःख में जीव क्या कहता है ?
हे श्रीकृष्ण ! मैंने ऐसा कौन-सा कर्म किया कि मुझे इतना दुःख मिला ?
दुःख आते ही जीव को अपने कर्म याद आने लगते हैं !
3 सुख में जीव क्या कहता है ?
✓ मैंने मेहनत से सब पाया है।
✓ यह मेरी योग्यता है।
✓ भगवान की क्या आवश्यकता ?
यहीं जीव अपने प्रारब्ध और भगवान—दोनों को भूल जाता है !
4 सुख में माया का पर्दा पड़ जाता है, दुःख में वही पर्दा हटने लगता है
सुख का समय (माया का पर्दा)
धन, संपत्ति, मान, सम्मान, परिवार, सुख-सुविधा चारों तरफ से आनंद और ऐश्वर्य
अहंकार का पर्दा पड़ जाता है ! भगवान सामने होते हुए भी दिखाई नहीं देते !
माया का पर्दा (अहंकार)
दुःख का समय (पर्दा हटने लगता है)
दुःख, बीमारी, गरीबी, अपमान, विपत्ति, हानि, अकेलापन, हार और शोक
अहंकार गिरता है, माया का पर्दा हटता है, भगवान दिखाई देते हैं !
5 कबीरदास जी ने सत्य कहा है
"दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय !"
6 क्यों भूल जाता है जीव ?
क्योंकि सुख में अहंकार चढ़ जाता है और माया का मद (शराब) पिला दिया जाता हैं
माया सुख का मद पिलाती है
अविद्या की शराब
कर्तापन का नशा
मैं, मेरा, मुझे का भाव
भगवान, प्रारब्ध, कर्म सब भूल जाता है
7 याद रखना !
❖ सुख और दुःख दोनों प्रारब्ध से मिलता है।
❖ न केवल दुःख प्रारब्ध से,
❖ न केवल सुख प्रारब्ध से, दोनों प्रारब्ध के बच्चे हैं।
❖ जो मिल रहा है वह आपके पूर्व जन्म के कर्मों का फल है।
❖ अपने बल, परिश्रम, शक्ति से कभी नहीं मिलता कुछ भी !
इसलिए...
सुख में अहंकार त्यागो, अपने प्रारब्ध और भगवान को याद रखो।
दुःख में धैर्य रखो, भगवान को याद करो, यह तुम्हारे कल्याण के लिए है।
निष्कर्ष
✓ सुख में मत भूलो कि यह प्रारब्ध है।
✓ दुःख में मत टूटो, यह भी प्रारब्ध है।
✓ दोनों स्थितियों में भगवान को याद करो,
यही बुद्धिमानी है, यही भक्ति है !
सुख में अहंकार उठता है, दुःख में विवेक जागता है,
अहंकार गिरता है तो केवल भगवान ही दिखाई देते हैं !
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-7

माया का पर्दा, अहंकार का नशा और अविद्या का मद

यही कारण है कि सुख में जीव भगवान को भूल जाता है !

1 सुख आते ही क्या होता है ?

जैसे ही सुख, धन, मान- सम्मान, परिवार, सफलता, ऐश्वर्य, पद, प्रतिष्ठा, भोग-विलास आदि जीवन में आते हैं, माया जीव पर अपना काला पर्दा डाल देती है।

यही माया का पहला आक्रमण है !

माया अविद्या का मद पिलाती है, और जीव को अहंकार का नशा चढ़ा देती है !

2 माया क्या करती है ?

- माया जीव को अविद्या का मद (शराब) पिलाती है।
- उसे कर्तापन का नशा चढ़ा देती है।
- जीव को पता ही नहीं चलता कि वह नशे में है।
- नशे में वह बकबक करने लगता है।

जैसे शराबी को नहीं पता चलता कि वह शराब पी चुका है, वैसे ही जीव को पता नहीं चलता कि वह अहंकार के नशे में है !

3 अहंकार का नशा चढ़ते ही जीव क्या बोलता है ?

- मैं जो कुछ भी हूँ, अपने परिश्रम से हूँ।
- भगवान जैसी कोई शक्ति नहीं है।
- मैं भगवान को नहीं मानता।
- मुझे किसी की आवश्यकता नहीं।
- यह मेरा घर, मेरा धन, मेरा परिवार, मेरी बुद्धि, मेरी सफलता है।
- मैंने सब कुछ अपनी मेहनत से कमाया है।
- मैं ही कर्ता हूँ, मैं ही भोक्ता हूँ।
- मैं जैसा चाहता हूँ, वैसा करता हूँ।

यह बकबक 24 घंटे चलती रहती है !

4 यही अहंकार क्या-क्या भुला देता है ?

- ✗ भगवान को भूल जाता है।
- ✗ अपने प्रारब्ध को भूल जाता है।
- ✗ अपने पूर्व जन्म के कर्मों के विधान को भूल जाता है।
- ✗ परम सत्य को भूल जाता है।
- ✗ कर्मों के फल का मूल कारण भूल जाता है।
- ✗ सब कुछ अपना समझकर संसार में उलझ जाता है।

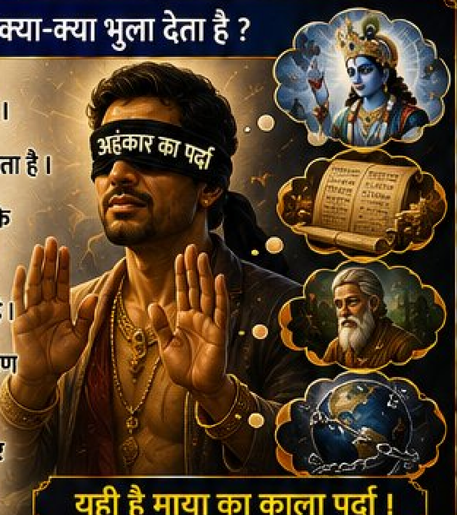

यही है माया का काला पर्दा !

5 अहंकार का स्वभाव और परिणाम

- अहंकार अंधा बना देता है।
- अहंकार विवेक छीन लेता है।
- अहंकार सत्य से दूर कर देता है।
- अहंकार जीव को भगवान से दूर कर देता है।
- अहंकार माया का सबसे बड़ा हथियार है।
- अहंकार रहेगा तो शांति नहीं मिलेगी।
- अहंकार रहेगा तो भक्ति नहीं जगेगी।
- अहंकार रहेगा तो ज्ञान नहीं खुलेगा।
- अहंकार रहेगा तो कल्याण नहीं होगा।

जब तक अहंकार है, तब तक परमात्मा दूर हैं !

6 कबीरदास जी का अमर वचन

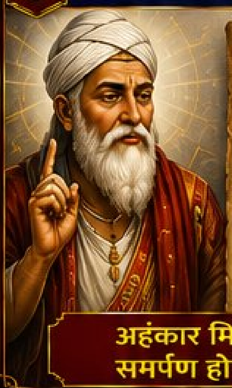

"जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।"

अर्थ :-
जब तक 'मैं' (अहंकार) था,
तब तक भगवान का अनुभव नहीं हुआ।
अब जब 'मैं' मिट गया, तब केवल हरि ही हैं।

अहंकार मिटते ही भगवान मिलते हैं !
समर्पण होते ही सत्य प्रकट होता है !

निष्कर्ष

माया का पर्दा अहंकार है, अविद्या उसका मद है,
जो जीव को नशे में डालकर भगवान से दूर कर देता है।
यह पर्दा हटते ही जीव को परमात्मा का दर्शन होने लगता है।

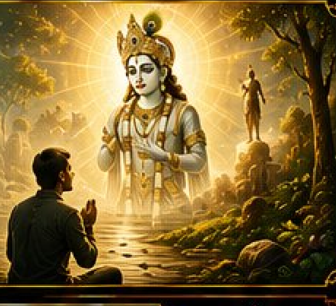

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-8
भगवान दु:ख की भट्टी में
क्यों डालते हैं ?
दु:ख दंड नहीं, जागरण का द्वार हैं !
1 सबसे बड़ा प्रश्न
भक्तों !
यदि भगवान दयालु हैं, तो अपने भक्तों को दु:ख क्यों देते हैं ?
?
2 सही उत्तर
भगवान दंड देने के लिए दु:ख नहीं देते ।
वे जीव के अहंकार को गलाने के लिए,
सोई हुई बुद्धि को जगाने के लिए, दु:ख देते हैं ।
3 दो उदाहरण – एक ही सत्य
सोना अग्नि में तपकर कुंदन बनता है ।
सोना
कुंदन
जीव दु:ख में तपकर महान बनता है ।
4 दु:ख की भट्टी में क्या होता है ?
1 अहंकार टूटता है ।
अहं कार
2 माया का पर्दा हटता है ।
3 भगवान का स्मरण जागता है ।
4 विवेक और बैराग्य प्रकट होते हैं ।
5 भगवान का उद्देश्य
दंड देना नहीं ।
अनंत जन्मों की सोई हुई बुद्धि को जगाना ।
जीव को 84 लाख योनियों के चक्र से मुक्त करना ।
84 लाख योनियाँ
उसे परम सत्य की ओर ले जाना ।
6 यदि भगवान किसी जीव का कल्याण चाहते हैं...
तो सबसे पहले उसे दु:खों की अग्नि में तपाते हैं ।
दु:खों की अग्नि
कर्मों की कटाई
अहंकार का गलना
बुद्धि का जागना
समर्पण और परम शांति
वहीं से उसके जीवन का वास्तविक परिवर्तन प्रारंभ होता हैं ।
याद रखें
दु:ख शत्रु नहीं, शिक्षक है ।
दु:ख बंधन नहीं, वरदान है ।
दु:ख अंत नहीं, आरंभ है ।
दु:ख से भागो मत, उसे भगवान की कृपा समझो ।
अंतिम निष्कर्ष
दुख भगवान का क्रोध नहीं, जीवन में प्रतिकूलता भगवान की सबसे बड़ी विशेष कृपा होती हैं !
भक्तों के लिए संदेश
दु:ख में धैर्य रखो ।
भगवान को याद रखो ।
समर्पण करो ।
दु:ख को साधना बनाओ, यही मुक्ति का रास्ता है ।
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-9
दुःख शत्रु नहीं,
जीव के कल्याण का द्वार है
दुःख नहीं, जागृति का द्वार है !
1 संसार की भूल
अधिकांश लोग सोचते हैं—
“ दुःख मेरा सबसे बड़ा शत्रु है !”
लेकिन यही सबसे बड़ा भ्रम है !
दुःख
2 परम सत्य
यदि जीवन में कभी भी दुःख न आए—
✗ अहंकार कभी नहीं टूटेगा।
✗ माया का पर्दा नहीं हटेगा।
✗ भगवान का स्मरण नहीं होगा।
✗ समर्पण उत्पन्न नहीं होगा।
अहंकार
माया पर्दा
भगवान से दूरी
3 दुःख का मार्ग ही जागृति का मार्ग बन सकता है !
सुख का मार्ग (भ्रम का मार्ग)
दुःख का मार्ग (जागृति का मार्ग)
चुनाव आपका है
दो मार्ग हमेशा सामने होते हैं
✗ ऐश्वर्य
✗ अहंकार
✗ माया का पर्दा
✗ भगवान से दूरी
✓ आँसू
✓ प्रार्थना
✓ समर्पण
✓ भगवान का प्रकाश
अंत – अंधकार, अशांति और भविष्य का दुःख
अंत – शांति, आनंद और भगवान का साक्षात्कार
4 जब दुःख आता है...
✓ जीव अपने भीतर झाँकता है।
✓ अपने कर्मों पर विचार करता है।
✓ भगवान को पुकारता है।
यहीं से वास्तविक आध्यात्मिक यात्रा प्रारंभ होती है !
5 भगवान दुःख इसलिए नहीं देते कि जीव टूट जाए !
भगवान दुःख इसलिए आने देते हैं कि जीव जाग जाए !
6 याद रखिए—
जिस दुःख ने आपको भगवान के निकट पहुँचा दिया,
वह दुःख नहीं,
आपके जीवन का सबसे बड़ा वरदान है !
अंतिम निष्कर्ष
जिस प्रतिकूलता से अहंकार टूटे,
वही प्रतिकूलता जीव के कल्याण का द्वार बन जाती है !
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-10

बुद्धि जागने का लक्षण, समर्पण और कर्म सिद्धांत का अंतिम निष्कर्ष

यही जीवन का सत्य है, यही मुक्ति का पथ है !

1 बुद्धि जागने के 10 लक्षण

1. अपने दुखों का कारण समझने लगता है।
2. कर्म सिद्धांत पर विश्वास जागता है।
3. भगवान को याद करने लगता है।
4. अहंकार गलने लगता है।
5. माया की असारता दिखने लगती है।
6. सत्संग और शास्त्रों में रुचि बढ़ती है।
7. अपनी गलतियों पर पश्चाताप होता है।
8. मन शांत और संयमित होने लगता है।
9. समर्पण की भावना उत्पन्न होती है।
10. सभी में भगवान का अंश देखने लगता है।

2 समर्पण के 10 लक्षण

1. मैं कुछ नहीं, सब कुछ तेरा है।
2. सुख-दुख में समान भाव रहता है।
3. भगवान की इच्छा में प्रसन्न रहता है।
4. अपने कर्मों का फल भगवान को सौंप देता है।
5. अहंकार और अभिमान त्याग देता है।
6. हर परिस्थिति में भगवान पर भरोसा रखता है।
7. मन, वचन, कर्म से भगवान को समर्पित रहता है।
8. किसी से अपेक्षा नहीं रखता।
9. प्रार्थना केवल भगवान के लिए करता है।
10. अपना जीवन भगवान की सेवा में लगाता है।

3 कर्म सिद्धांत का सार

- जो बोओगे, वही काटोगे।
- हर कर्म का फल निश्चित है।
- कोई भी कर्म व्यर्थ नहीं जाता।
- कर्म तीन प्रकार के हैं–

संचित कर्म – अनेक जन्मों के संचित कर्म

प्रारब्ध कर्म – इस जन्म में भोगना ही पड़ता है

क्रियमाण कर्म – अभी जो कर रहे हैं

- क्रियमाण कर्म से भविष्य का निर्माण होता है।
- कर्मों से बचा नहीं जा सकता, पर बदला जा सकता है।

4 जीवन का पूरा क्रम

कर्म करते हैं (क्रियमाण)
↓
फल मिलता है (प्रारब्ध)
↓
सुख या दुख का अनुभव होता है।
↓
बुद्धि जागती या सोई रहती है
↓
फिर से कर्म करते हैं
↓
चक्र चलता रहता है...

5 जब बुद्धि जाग जाती है तब...

जीव समझ जाता है कि–

- ✔ मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ।
- ✔ सुख-दुख कर्मों का परिणाम है।
- ✔ सब कुछ भगवान की योजना है।
- ✔ माया असार है, भगवान ही सार हैं।
- ✔ मेरा कर्त्तव्य है– कर्म करना और फल भगवान को समर्पित करना।
- ✔ यही समझ ही वास्तविक ज्ञान है।

6 समर्पण होने पर क्या होता है ?

- मन शांत हो जाता है।
- भय समाप्त हो जाता है।
- चिंता समाप्त हो जाती है।
- जीवन में संतोष आ जाता है।
- भगवान का अनुभव होने लगता है।
- कर्म बंधन कटने लगते हैं।
- जीव मुक्ति के मार्ग पर चल पड़ता है।

7 जीव की तीन अवस्थाएँ

अविद्या अवस्था
अहंकार, माया, विषय भोग
भगवान से दूरी, दुःख ही दुःख
↓
विवेक अवस्था
दुःख से जागरण, विचार,
सत्संग, भगवान की ओर कदम
↓
समर्पण अवस्था
शांति, संतोष, भगवान का अनुभव,
कर्मबंधन से मुक्ति

8 मुक्ति के 10 लक्षण

1. अहंकार का पूर्ण नाश।
2. माया से पूर्ण वैराग्य।
3. सुख-दुख में अचल रहना।
4. राग-द्वेष से मुक्त होना।
5. मन का पूर्ण संयम।
6. समस्त कर्मों का क्षय होना।
7. केवल भगवान में प्रेम रहना।
8. जन्म-मरण के भय से मुक्ति।
9. आत्मा का साक्षात्कार होना।
10. ब्रह्म में लीन होकर शाश्वत शांति पाना।

9 वास्तविक सफलता क्या है ?

- ★ धन, मान, पद, यश क्षणिक हैं।
- ★ शरीर नश्वर है, साथ कुछ नहीं जाता।
- ★ केवल कर्म और भक्ति साथ जाते हैं।
- ★ भगवान की शरण ही जीवन की सच्ची सफलता है।

10 अंतिम निष्कर्ष

कर्म करते रहो,
कर्म सिद्धांत को समझो,
फल को भगवान को समर्पित करो।

→ दुःख आए तो घबराओ मत,
यह भगवान की विशेष कृपा है।

→ बुद्धि जागाओ,
समर्पण करो,
भगवान को पा जाओ।

→ यही जीवन का उद्देश्य है,
यही मुक्ति का मार्ग है,
यही शाश्वत सत्य है।

→ इस सत्य को जानकर जो जीता है,
वही वास्तव में मुक्त है,
वही धन्य है, वही सफल है।

कर्म करो, समर्पण करो, भगवान को पाओ और जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाओ !

लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश बैष्णव

हमको भगवान दिखाई नहीं देता तो क्यों?
इसलिए क्योंकि उनके अभी उसके जीवन में प्रकाश की किरण है सुख की रोशनी हैं!
और जब तक जीवन में सुख की रोशनी रहेगी तब तक परमात्मा दिखाई नहीं दे सकता, कभी दिखाई नहीं देगा!
सुख की रोशनी
धन, संपति, मान-सम्मान, परिवार, शरीर, इंद्रिय सुख...
इसमें भगवान नहीं दिखते!
भगवान का एड्रेस क्या हैं?
दुःख और कष्ट ही भगवान का एड्रेस है!
भगवान प्राणी को तब तक दिखाई नहीं देते
जब तक उसे काल, कर्म और नियति का झापड़ ना पड़े!
जब कोई दिखाई नहीं देता ना दुनिया में कोई नहीं,
मतलब कोई नहीं, तब वही परमात्मा दिखाई देता हैं!
दुःख और कष्ट
जब सब रास्ते बंद हो जाते हैं, तब परमात्मा स्वयं दर्शन देते हैं!
अभी परमात्मा दिखाई क्यों नहीं देते? – इसका सबसे बड़ा कारण हैं – माया का पर्दा!
माया किसको कहते हैं?
धन
संपति
मान-सम्मान
प्रतिष्ठा
माता-पिता
पति-पत्नी
पुत्र-पुत्री
शरीर
यह सब संसार में चारों तरफ जाल फैला हुआ है, वही माया का फंदा है! इसीलिए भगवान अभी दिखाई नहीं देते!
जब गर्भ में थे तब?
एक जगह थैली में सिकुड़े हुए,
भगवान से हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहे थे!
केवल भगवान ही भगवान दिखाई दे रहे थे!
क्यों?
क्योंकि वहां माया नहीं था!
जैसे ही योनि द्वार से बाहर आए...
भगवान की माया
★ श्रीमद्भागवत महापुराण कहती हैं – जैसे ही प्राणी माता की योनि द्वार से बाहर आया, भगवान की माया उसे पकड़ लेती हैं!
★ फिर उसकी बुद्धि भगवान से हटकर माया की तरफ घूम जाती हैं, इंद्रिय, मन, बुद्धि को हग कर लेती है और भगवान से दूर कर देती हैं!
जहां माया है वहां ब्रह्म नहीं, जहां ब्रह्म है वहां माया नहीं!
भगवान उन्हें ही दिखाई देते हैं जिनके जीवन में सभी रास्ते बंद हो जाते हैं!
वेद कहते हैं – भगवान दिखाई ना देने का सबसे बड़ा कारण – भगवान की माया!
एक दरवाजा भी खुला हो तो भगवान दिखाई नहीं देंगे!
वेद
परमात्मा कब दिखाई देते हैं?
जब चारों रास्ते बंद हो जाते हैं!
जब एक भी रास्ता दिखाई नहीं देता!
जब सब सहारा छूट जाता हैं!
जब दुख और कष्ट ही एकमात्र सहारा बनते हैं!
धन
परिवार
मान
शरीर
तब खुलता है भगवान का द्वार!
दुःख और कष्ट क्यों आते हैं? – पीटने के लिए नही, समर्पण करवाने के लिए!
कर्तापन के नशे को उतारने के लिए
अनंत जन्मों से कर्तापन का भांग चढ़ा हैं!
इस शराब के नशे को उतारने का एक ही दवाई है – चारों तरफ से कष्ट, असफलता, दुख ही दुख!
अहंकार को तोड़ने के लिए
अपने शक्ति और अहंकार को मिटाने के लिए!
जीवन में विपत्तियों, दुखों का तूफान आते हैं!
समर्पण को सच्चा और पूर्ण करने के लिए
अनंत जन्मों से समर्पण में जो कमी है, उसको पूर्ण करने के लिए भगवान दुख डालते हैं!
जीव को महान और ज्ञानी बनाने के लिए
भगवान को रटने वाला ज्ञान नहीं, जीवन के अनुभव से हृदय की गहराई से निकला हुआ ज्ञान चाहिए!
वैराग्य और प्रेम जागृत करने के लिए
जिसमें वैराग्य हो, भगवान के अलावा जब कोई अच्छा न लगे –
“मेरे तो गिरधर गोपाल दुसरो न कोई”
– ऐसा प्रेम भाव!
समर्पण कैसे होता हैं?
भगवान स्वयं अपनी कृपा से, जबरदस्ती खींचकर प्राणी को अपनी समर्पण करवाते हैं!
याद रखें!
★ समर्पण जीव अपने बल पर नहीं होती!
★ भगवान की कृपा के बिना समर्पण असंभव है!
★ भगवान चाहेगे तभी समर्पण होगा!
★ जितना दुख, उतना पक्का समर्पण!
★ जितना सुख, उतना समर्पण दूर!
समर्पण का परिणाम
जो भगवान में पूर्ण समर्पण हो जाता है, वही दुनिया में सबसे महान होता है, जिसका कभी वापस जन्म नहीं होता!
और जो समर्पण नहीं करते, वे अनंत काल तक इस जन्म-मृत्यु के चक्र में पिसते रहते हैं!
जन्म
जन्म-मृत्यु का चक्र
मृत्यु
इस चक्र का अंत कहां पर होता हैं?
भगवान में पूर्ण समर्पण पर! जब तक समर्पण नहीं, तब तक कल्याण नहीं!
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-1
भगवान दिखाई क्यों नहीं देते ?
सुख की रोशनी और भगवान का अदृश्य रहना
अभी भगवान क्यों नहीं दिखाई देते ?
क्योंकि हमारे जीवन में प्रकाश की किरण है, सुख की रोशनी है ! जब तक जीवन में सुख की रोशनी रहेगी, तब तक परमात्मा दिखाई नहीं देगा, कभी दिखाई नहीं देगा !
धन
सुख
सम्मान
प्रतिष्ठा
परिवार
शरीर
इच्छाएँ
जब तक यह सब दिखाई दे रहा है, तब तक परमात्मा कहाँ से दिखाई देगा ?
माया का पर्दा
(माया = धन, परिवार, प्रतिष्ठा, शरीर, इच्छाएँ और यह पूरा संसार)
जहाँ माया है, वहाँ ब्रह्म नहीं ! ब्रह्म वहाँ है, जहाँ माया नहीं !!
नोट कर लीजिए – भगवान का एड्रेस क्या है ?
दुख और कष्ट ही भगवान का एड्रेस है !
भगवान प्राणी को तब तक दिखाई नहीं देता...
जब तक काल
कर्म
और नियति
का झापड़ ना पड़े !
जब कोई दिखाई नहीं देता...
✕ ना दुनिया में कोई !
✕ ना रिश्तेदार !
✕ ना सहारा !
✕ ना अपनापन !
✕ मतलब – कोई नहीं !
तब वही परमात्मा दिखाई देता है !
अंतिम सार
सुख में माया दिखाई देती है, दुख में भगवान दिखाई देते हैं !
जब जीवन के सहारे टूट जाते हैं, तब परमात्मा साथ देते हैं !!
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश बैष्णव

भाग-2
माया का पर्दा कैसे
भगवान से दूर करता है?
गर्भ में केवल भगवान, जन्म के बाद माया का प्रभाव
धन
परिवार
प्रतिष्ठा
शरीर
शरीर
इच्छाएं
अहंकार
1 गर्भ में केवल भगवान
ॐ
गर्भ में जीव पूर्णतः भगवान में लीन होता है।
न कोई धन, न माया, न संसार का मोह।
केवल भगवान से प्रार्थना – "हे प्रभु! मुझे अपनी शरण में रखना।"
2 जन्म के बाद माया का प्रभाव
जन्म होते ही भगवान की माया जीव को पकड़ लेती है।
इंद्रियाँ, मन और बुद्धि संसार की ओर घूम जाते हैं।
माया का जाल – धन, परिवार, शरीर, प्रतिष्ठा, इच्छाएँ...
3 माया का जाल (बंधन)
धन
परिवार
माया
प्रतिष्ठा
शरीर
इच्छाएँ
अहंकार
संबंध
माया इंद्रियों, मन और बुद्धि को हरण कर लेती है।
भगवान की जगह संसार को सत्य मानने लगते हैं।
यही कारण है कि भगवान दिखाई नहीं देते।
गर्भ में जीव की प्रार्थना
"हे प्रभु! मुझे अपनी शरण में रखना, मैं केवल आपका हूँ।"
जन्म के बाद माया का प्रभाव
जैसे ही जन्म हुआ, माया ने जीव को अपने जाल में ले लिया।
4 इंद्रियों और संसार का आकर्षण
देखना
सुनना
सूंघना
स्वाद
स्पर्श
इंद्रियाँ बाहर की ओर दौड़ती हैं।
मन भटकता है, बुद्धि भ्रमित हो जाती है।
जीव भगवान से दूर होकर माया में फंस जाता है।
5 जब तक माया है, भगवान दूर हैं
माया का पर्दा धना है, प्रकाश भीतर नहीं पहुँचता।
जब तक यह पर्दा नहीं हटेगा, भगवान दिखाई नहीं देंगे।
6 मुक्ति का मार्ग एक ही है
माया को पहचानना पहली जीत है।
भगवान की शरण ही मुक्ति का मार्ग है।
जब माया हटेगी, तभी भगवान का दर्शन होगा।
याद रखिए – भगवान दूर नहीं, माया का पर्दा बीच में है।
पर्दा हटेगा, तो भगवान प्रकट होंगे।
सार
गर्भ में केवल भगवान
जन्म के बाद माया का प्रभाव
इंद्रियों और संसार का आकर्षण
माया ही भगवान को छुपा देती है।
माया हटेगी, तो भगवान दिखाई देंगे
माया
भगवान
संदेश
"माया का जाल गहरा है, पर भगवान की कृपा उससे भी गहरी है।"
समर्पण करें, माया हटेगी, भगवान प्रकट होंगे।"
लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-2

माया का पर्दा
कैसे भगवान से दूर करता है ?

जब तक माया है, तब तक भगवान का दर्शन नहीं है

1 माया का जाल क्या है ?

धन, संपत्ति, सम्मान, प्रतिष्ठा, माता-पिता, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, शरीर – ये सब संसार के जाल हैं। **यही माया है !**

गर्भ में – केवल भगवान

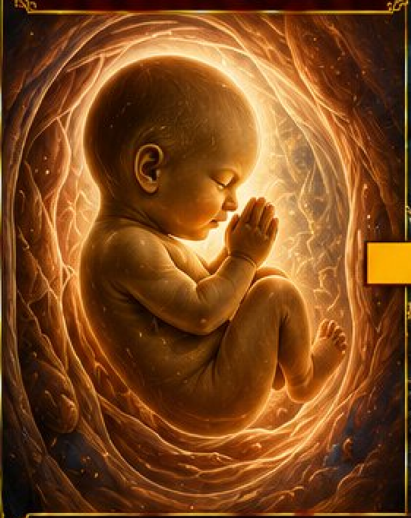

गर्भ में जीव भगवान से प्रार्थना करता है
पूर्ण समर्पित होता है, केवल भगवान ही भगवान

जन्म के बाद – माया का जाल

जन्म के बाद माया इंद्रियों, मन और बुद्धि
को अपनी ओर खींच लेती है

2 माया कैसे पकड़ लेती है ?

- इंद्रियाँ विषयों की ओर भागती हैं
- मन इच्छाओं में उलझ जाता है
- बुद्धि माया को सही मान लेती है
- जीव भगवान से दूर हो जाता है

जीव की यात्रा

गर्भ में केवल भगवान → जन्म – माया का प्रवेश → माया का जाल इंद्रियाँ व विषय → भगवान दूर माया पास

3 गर्भ की याद क्यों नहीं रहती ?

गर्भ में जीव भगवान से जुड़ा होता है। जन्म लेते ही माया उसे ढक लेती है ! इसीलिए सब भूल जाता है और संसार में भटकने लगता है।

4 माया का प्रभाव

- भगवान से दूरी
- सांसारिक मोह
- भ्रम और दुख
- जन्म-मृत्यु का चक्र

**जहाँ माया है,
वहाँ ब्रह्म नहीं...
जहाँ ब्रह्म है,
वहाँ माया नहीं !!**

5 याद रखने योग्य बातें

- गर्भ में भगवान ही भगवान थे
- जन्म के साथ माया का जाल आया
- माया में निकलना ही सच्चा जीवन है
- भगवान के लिए माया छोड़नी होगी

निष्कर्ष

माया संसार में बाँधती है और भगवान से दूर करती है।
जब तक माया का पर्दा है, तब तक भगवान दिखाई नहीं देते।
माया से ऊपर उठकर ही जीव भगवान के दर्शन कर सकता है।

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-3
भगवान कब दिखाई देते हैं ?
जीवन के सभी रास्ते बंद होने पर ही !
एक भी रास्ता खुला है तो भगवान नहीं दिखाई देते !
धन
परिवार
शरीर
प्रतिष्ठा
सुख
मान
संसार
इच्छाएँ
भगवान दर्शन की शर्त
जब चारों तरफ से मार्ग बंद हो जाते हैं,
तब ही परमात्मा का साक्षात्कार होता है।
धन का दरवाज़ा
परिवार का दरवाज़ा
प्रतिष्ठा का दरवाज़ा
इच्छाओं का दरवाज़ा
जब चारों दरवाज़े बंद,
तब खुलता है भगवान का द्वार !
क्यों नहीं दिखाई देते भगवान ?
जब तक मन किसी सहारे, सुख, या आशा की ओर भाग सकता है,
तब तक वह भगवान की ओर नहीं मुड़ता।
✗ थोड़ा धन है – उसी में लगा है।
✗ परिवार है – उसी में उलझा है।
✗ सम्मान है – उसी की चाह है।
✗ शरीर स्वस्थ है – भोग में लिप्त है।
✗ इच्छाऐं बची हैं – उन्हीं के पीछे है।
✗ एक भी रास्ता खुला है – इसलिए भगवान नहीं दिखाई देते !
एक भी सहारा जीव को भगवान से दूर रखता हैं !
कब प्रकट होते हैं भगवान ?
जब धन चला जाता है
धन ही सब कुछ नहीं,
यह समझ आता हैं।
जब परिवार साथ छोड़ देता है
अपने ही पराये लगने लगते हैं,
तब मन भगवान को पुकारता हैं।
जब मान-सम्मान मिट जाता है
अपमान और तिरस्कार में
अहंकार टूटता हैं।
जब शरीर साथ नहीं देता
तब समझ आता है,
मैं शरीर नहीं, आत्मा हूं।
चारों रास्ते बंद होने की स्थिति
• धन नहीं
सहारा नहीं
• परिवार नहीं
साथ नहीं
• मान नहीं
सम्मान नहीं
• इच्छाऐं टूटी
उम्मीदें खत्म
जब कुछ भी
शेष नहीं रहता,
तब केवल वही
शेष रहता है –
परमात्मा !
तब होता है परमात्मा का साक्षात्कार
✓ मन शरणागत हो जाता है।
✓ अहंकार समाप्त हो जाता है।
✓ जीव रो-रोकर पुकारता है।
✓ भगवान स्वयं प्रकट होते हैं।
✓ दर्शन, शांति और आनंद मिलता है।
यही है भगवान के दर्शन का रहस्य !
याद रखिए
भगवान को पाने का शॉर्टकट
कोई नहीं है।
सर्वाधिक सच्चाई यही है –
सभी रास्ते बंद, तभी
भगवान प्रकट !
वेद का कथन
"भगवान केवल उन्हीं को दिखाई देते हैं,
जिनके जीवन में सभी रास्ते बंद होते हैं।
एक भी दरवाज़ा खुला हो,
तो परमात्मा का
दर्शन नहीं होता !"
अंतिम संदेश
जीवन में कष्ट, असफलता, टूटन और
बंद होते दरवाज़े – यह सब भगवान की
कृपा है, सजा नहीं !
इन्हीं से खुलता है वह परम द्वार,
जहां केवल भगवान मिलते हैं !
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-4
समर्पण अपने बल से नहीं होता,
भगवान स्वयं समर्पण करवाते हैं !
दुनिया में सबसे कठिन कार्य – भगवान में समर्पण होना
1. समर्पण अपने बल से संभव नहीं
जीवात्मा अपने प्रयास से समर्पण नहीं कर सकती।
अहंकार
ममता
वासना
कर्तापन
मैं करूँगा, मैं पाऊँगा – यह अहंकार है।
अपने बल पर समर्पण करना असंभव है।
जीव अपनी सीमित शक्ति से बंधा हुआ है।
2. भगवान कृपा से समर्पण करवाते हैं !
भगवान अपनी कृपा से जीव को अपनी ओर खींचते हैं।
वही उठाते हैं, वही संभालते हैं।
वही खींचते हैं, वही अपनाते हैं।
वही समर्पण करवाते हैं आ्ह्ी ओर।
3. कौन करता है समर्पण ?
समर्पण जीव नहीं करता, करवाया जाता है।
जीव का प्रयास
अस्थायी
अधूरा
थकावट भरा
अहंकार युक्त
कभी भी टूट सकता है
VS
भगवान की कृपा
पूर्ण और स्थायी
अहंकार रहित
शांति देने वाला
सदा अटल
कभी नहीं टूटता
भगवान खींचते हैं, तभी समर्पण होता है !
4. संसार में सबसे कठिन कार्य
भगवान में समर्पण होना !
स्वयं को मिटाना कठिन है।
ममता छोड़ना कठिन है।
अहंकार त्यागना कठिन है।
भगवान पर पूर्ण विश्वास कठिन है।
सब कुछ छोड़कर उन्हीं का होना कठिन है।
5. संसार में सबसे सरल कार्य
भगवान से दूर होना !
इंद्रियों के पीछे भागना आसान है।
धन, मान, माया में फंसना आसान है।
अहंकार करना बहुत आसान है।
भगवान को भूल जाना सरल है।
संसार में खो जाना बहुत सरल है।
याद रखिए – समर्पण कठिन है, परन्तु वही जीवन का कल्याण करता है !
6. समर्पण के बिना क्या होता है ?
जो भगवान में समर्पण नहीं करता...
जन्म
मृत्यु
दुःख
चिंता
भय
अशांति
दुःख
वह जन्म-मृत्यु के चक्र में फँसा रहता है।
वह अनंत काल तक भटकता रहता है।
उसे कभी शांति और सुख नहीं मिलता।
7. समर्पण करने वाले का क्या होता है ?
जो भगवान को समर्पित हो जाता है...
वह भगवान का हो जाता है।
उसका जीवन सफल हो जाता है।
उसे शांति, प्रेम और आनंद मिलता है।
उसका कभी वापस जन्म नहीं होता।
8. समर्पण करवाने का तरीका
भगवान जब जीवन में दुखों की आँधी लाते हैं...
दुख
माया के सहारे छूटते हैं
भगवान की ओर मुड़ता है
जब सारे सहारे छूटते हैं, तब मन भगवान की ओर मुड़ता है।
जब कोई रास्ता नहीं बचता, तब वही एकमात्र सहारा बनते हैं।
यह उनकी कृपा है, सजा नहीं – समर्पण का माध्यम है।
9. समर्पण की पहचान
मैं नहीं, तू ही तू – ऐसा भाव होना।
जो कुछ भी है, वह तेरा है – ऐसी भावंत।
तेरी इच्छा में मेरी खुशी – यह स्थिति।
दुख-सुख में तेरा स्मरण – यही भक्ति !
तेरा दास, तेर सेवक – यही पहचान !
10. अंतिम सत्य
जो भगवान में समर्पण हो जाता है,
वही दुनिया में सबसे महान होता है !
जिसका कभी वापस जन्म नहीं होता !
समर्पण है – जीवन का परम लक्ष्य !
भगवान है – समर्पण का एकमात्र आधार !
अंतिम संदेश
समर्पण स्वयं से नहीं,
कृपा से होता है !
कृपा उनकी है,
आश्रय उनका है,
उद्धार उनका है !
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-5

भगवान दुख क्यों देते हैं ?

दंड देने के लिए नहीं, समर्पण को पूर्ण करने के लिए !

भगवान का हर दुःख – उसकी असीम कृपा का प्रमाण है !

स्मरण रहे

जो दुःख देता है, वह शत्रु नहीं, वही सच्चा हितैषी है – वही परमात्मा है !

1. भगवान दुःख क्यों देते हैं ?

- दंड देने के लिए नहीं।
- पीटने के लिए नहीं।
- हमसे बदला लेने के लिए नहीं।
- हमारा अहित करने के लिए नहीं।

बल्कि समर्पण को पूर्ण करने के लिए देते हैं !

2. समर्पण को पूर्ण करने के लिए !

- हमारा समर्पण अधूरा है जन्मों से।
- समर्पण में बहुत सी कमियाँ हैं।
- अनंत जन्मों से संचित अहंकार, कर्तापन, वासना, ममता – अभी शेष हैं।
- उन्हीं कमियों को पूर्ण करने के लिए, भगवान दुःखों की अग्नि में तपाते हैं।

दुःख हमें अपूर्णता से पूर्णता की ओर ले जाता है !

3. अधूरे समर्पण को पूर्ण बनाना

- जब तक समर्पण अधूरा है, तब तक भगवान हमें संसार में रखते हैं।
- समर्पण की एक-एक कमी को पूर्ण करने के लिए, वे हमारे जीवन में दुःखों को भेजते हैं।
- जब समर्पण पूर्ण हो जाता है, तभी वे अपने धाम में बुलाते हैं।

दुःख समर्पण को पक्का और संपूर्ण बनाता हैं !

"जितना दुःख, उतना गहरा समर्पण | जितना गहरा समर्पण, उतना निकट भगवान !"

4. समर्पण में कमी क्यों रहती है ?

- ✗ हम सोचते हैं – "मैं करता हूँ" – यही कर्तापन।
- ✗ मेरा परिवार, मेरा धन, मेरी इज्जत – यही ममता।
- ✗ मेरी इच्छाएँ, मेरे स्वार्थ – यही आसक्ति।
- ✗ यही सब समर्पण में बाधा बन जाते हैं।

इन बंधनों को तोड़ने के लिए ही दुःख आते हैं !

5. दुःख समर्पण का शोधन है

- जैसे सोने को कुंदन बनाने के लिए आग में तपाते हैं, वैसे ही हमें पूर्ण समर्पित बनाने के लिए भगवान दुःखों की भट्टी में तपाते हैं।
- यह शोधन है, विनाश नहीं।
- यह निर्माण है, नाश नहीं।

दुःख समर्पण को शुद्ध और पवित्र बनाते हैं !

6. भगवान की प्रेममयी योजना

- भगवान हर जीव को अपने पास लाना चाहते हैं।
- वे चाहते हैं कि हम संसार से हटकर, सिर्फ़ उन्हीं के हो जाएं।
- इसीलिए वे हमें प्रेमपूर्वक दुःख देते हैं, ताकि हम उनकी शरण में आ जाएं।

दुःख – भगवान के प्रेम का ही दूसरा रूप हैं !

दुःखों के द्वारा भगवान क्या-क्या करते हैं ?

- कर्तापन का नाश करते हैं
- अहंकार को तोड़ते हैं
- ममता को मिटाते हैं
- आसक्ति को छुड़ाते हैं
- स्वार्थ को समाप्त करते हैं
- आत्मा को जगाते हैं
- वैराग्य को जन्म देते हैं
- समर्पण को पूर्ण करते हैं

भगवान का लक्ष्य क्या है ?

हमारा कल्याण !
हमारा मोक्ष !
हमारा पूर्ण समर्पण !
हमारा शाश्वत सुख !

अंतिम संदेश

यदि जीवन में दुःखों का तूफान उठे,
तो समझ लेना –
भगवान तुम्हें अपने पास बुलाना चाहते हैं।

हार मत मानो, टूटो मत, रोओ नहीं !
सिर्फ़ एक ही कार्य करो –
उनके चरणों में समर्पित हो जाओ।
दुःख को कृपा समझकर स्वीकार करो,
तभी समर्पण पूर्ण होगा और
तुम्हारा कल्याण निश्चित होगा।

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-6
कर्तापन रूपी शराब का नशा
दुख ही इस नशे की औषधि है !
अनंत जन्मों से छाया हुआ "मैं करता हूँ" का अहंकार !
स्मरण रहे
कर्तापन के नशे से ही जीव भगवान से दूर है और दुख ही उसे भगवान के पास लाता है !
1. कर्तापन क्या है ?
मैं करता हूँ
मुझसे हुआ
मेरे बिना कुछ नहीं
मैं ही महान
मेरी बुद्धि
मेरी शक्ति
✗ मैं करता हूँ – यही कर्तापन है ।
✗ यही अहंकार का मुख्य रूप है ।
✗ यही भगवान से दूर करने वाला नशा है ।
✗ यही बंधन और जन्म-मृत्यु का कारण है ।
कर्तापन = अहंकार = बंधन = दुख का कारण
2. कर्तापन रूपी शराब का नशा
अहंकार
मान
प्रतिष्ठा
अपेक्षा
कर्तापन रूपी शराब
मैं
मेरा
मेरे लिए
मुझसे
✓ यह शराब अनंत जन्मों से पी रखी है हमने ।
✓ इसका नशा इतना गहरा है कि हमें पता नहीं चलता ।
✓ यह नशा उतरने नहीं देता, भगवान की ओर देखने नहीं देता ।
यह नशा जितना पुराना है, उतना ही घातक है !
3. इस नशे के लक्षण
दूसरों को छोटा समझना
शाबाशी की चाह
क्रोध और चिड़चिड़ापन
अपनी राय को ही सही मानना
निंदा सहन न होना
असफलता में टूट जाना
✗ हर काम का श्रेय अपने को देना ।
✗ दूसरों की सफलता से जलना ।
✗ भगवान की कृपा को भी भूल जाना ।
✗ विपत्ति आने पर भी अहंकार न टूटना ।
ये सब कर्तापन रूपी नशे के लक्षण हैं !
4. इस नशे की एक ही औषधि – दुख, कष्ट और असफलता !
✓ चारों तरफ से कष्ट
✓ असफलता ही असफलता
✓ अपमान और तिरस्कार
✓ सपनों का टूटना
✓ सहारे का छूटना
यही औषधि है जो इस नशे को उतारती है !
✓ अहंकार टूटता है
✓ कर्तापन समाप्त होता है
✓ मन नम्र और विनम्र होता है।
✓ भगवान की याद आती है
✓ समर्पण की भावना जागती है।
यह नशा उतारने का केवल एक ही दवाई है – दुख, कष्ट, असफलता और विपत्तियाँ !
5. दुख क्यों जरूरी है ?
✓ यह अहंकार को गलाता है ।
✓ कर्तापन को जलाता है ।
✓ हमारी वास्तविक स्थिति दिखाता है ।
✓ भगवान पर निर्भर करना सिखाता है ।
✓ जीव को परिपक्व बनाता है ।
दुख हमें तोड़ता नहीं, हमें तैयार करता हैं !
6. कर्तापन का नशा उतरेगा तो...
✓ हम समझेंगे – मैं कुछ नहीं, सब तू ही तू ।
✓ हर सांस में तेरा एहसान दिखाई देगा ।
✓ जीवन में शांति और संतोष आएगा ।
✓ समर्पण की भावना प्रकट होगी ।
✓ भगवान ही एकमात्र सहारा लगेगा ।
नशा उतरेगा तो, जीवन संवर जाएगा !
7. याद रखिए
कर्तापन रूपी शराब का नशा उतारने के लिए भगवान स्वयं जीवन में दुखों का वर्षा करते हैं ।
यह उनका क्रोध नहीं, उनकी कृपा है !
जो इस कृपा को समझ लेता है, वही सच्चा भाग्यवान है !
अंतिम संदेश
कर्तापन का नशा ही हमें भगवान से दूर रखता है !
दुख ही वह अग्नि है जिसमें यह नशा जलकर राख होता है !
नशा उतरेगा, तब ही भगवान मिलेंगे और समर्पण होगा !
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-7

भगवान बार-बार परीक्षा क्यों लेते हैं ?
ताकि समर्पण की जड़ गहरी हो जाए !

परीक्षा कठिन नहीं, हमारा अहंकार छोड़ना कठिन है !

स्मरण रहे

जो परीक्षा से भागता है, वह भगवान से दूर भागता है !
जो परीक्षा में खरा उतरता है, वह भगवान के हृदय के सबसे पास पहुँचता है !

1. भगवान परीक्षा क्यों लेते हैं ?

- हमारे अहंकार को तोड़ने के लिए।
- हमारे समर्पण की गहराई जानने के लिए।
- हमारी आस्था को अटूट बनाने के लिए।
- हमारे भीतर की कमजोरियों को दूर करने के लिए।
- हमें और अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए।

परीक्षा दंड नहीं, भगवान का दिव्य प्रशिक्षण है !

2. परीक्षा के समय क्या होता हैं ?

- ✅ मन में डर, चिंता और असहायता बढ़ती हैं।
- ✅ पुराने पाप, कमजोरियों उभरने लगती हैं।
- ✅ हमारी आस्था और धैर्य की परीक्षा होती हैं।
- ✅ हम भगवान से दूर जाने लगते हैं।

यही समय है – रुकने का नहीं, झुकने का !

3. परीक्षा में हमारी क्या गलती होती हैं ?

- ❌ हम भगवान से शिकायत करने लगते हैं।
- ❌ हमारा विश्वास डगमगाने लगता है।
- ❌ हम अधैर्य होकर गलत निर्णय लेते हैं।
- ❌ हम दूसरों से तुलना करके दुखी होते हैं।
- ❌ हम क्रोध, कटुता और नकारात्मक बनते हैं।

गलती परीक्षा की नहीं, हमारी प्रतिक्रिया की होती है !

4. परीक्षा में क्या करना चाहिए ?

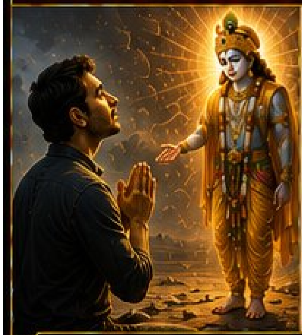

- ✅ हर परिस्थिति में भगवान पर विश्वास रखें।
- ✅ धैर्य, शांति और सकारात्मकता बनाए रखें।
- ✅ नियमित नाम जप और प्रार्थना करें।
- ✅ शास्त्र पढ़ें और सत्संग से जु. ड़े रहें।
- ✅ हर परीक्षा को भगवान की कृपा समझें।
- ✅ अपने कर्म सुधारें, शिकायत नहीं करें।

परीक्षा में जो टिक गया, वह भगवान के दिल में बस गया !

हर परीक्षा के बाद समर्पण और मजबूत होता है !

5. परीक्षा के बाद क्या होता है ?

- ✅ अहंकार टूट जाता है।
- ✅ आस्था अटूट हो जाती है।
- ✅ समर्पण गहरा हो जाता है।
- ✅ मन में अद्भुत शांति आती है।
- ✅ जीवन में स्थिरता और शक्ति आती है।
- ✅ भगवान और अधिक निकट हो जाते हैं।

जो परीक्षा सहता है, वह परम कृपा पाता है !

6. किसकी परीक्षा सबसे अधिक होती है ?

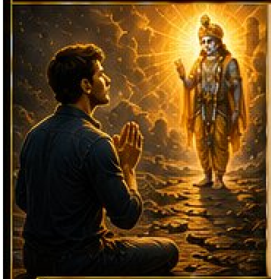

- जिसे भगवान बहुत प्रेम करते हैं।
- जो भगवान के बहुत निकट होता है।
- जो सत्संग, भजन और सेवा करता है।
- जो भगवान को पाने की तीव्र इच्छा रखता है।
- जिसका पिछला कर्म-क्रण अधिक होता है।

याद रखें – परीक्षा प्रेम का प्रमाण है, उपेक्षा का नहीं !

7. परीक्षा में सफल होने के लक्षण

- ✅ मन विचलित नहीं होता।
- ✅ भगवान से शिकायत नहीं करता।
- ✅ आस्था और विश्वास अडिग रहते हैं।
- ✅ समस्या में भी नाम जप नहीं छुटता।
- ✅ प्रार्थना और समर्पण और बढ़ जाता है।
- ✅ हर परिस्थिति में भगवान को याद करता हैं।

जो इन लक्षणों को धारण कर लेता है, वह परीक्षा में उत्तीर्ण होता है !

अंतिम संदेश

परीक्षा आएगी, बार-बार आएगी,
कभी सुख छीन लेगी, कभी सब सहारे तोड़ देगी,
पर जो भगवान पर अटल रहेगा – वही जीत जाएगा !
परीक्षा से मत घबराओ, यह तो भगवान की गोद तक पहुंचने की सीढ़ी हैं !

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-8

भगवान को पाने के लिए हम क्या करें ?

सच्चा मार्ग – समर्पण, भक्ति और धैर्य का !

स्मरण रहे

जो सच्चे मन से भगवान को पाना चाहता है, भगवान उससे दूर नहीं रहते – भगवान स्वयं उसके पास आते हैं !

1. भगवान को पाने की पहली सीढ़ी

सच्ची चाहत पैदा करें

- मन से पुकारें – "हे भगवान, मुझे आप चाहिए, और कुछ नहीं !"
- आपके बिना जीवन अधूरा है – यह अनुभव करें।
- दुनिया के सुख अस्थायी हैं – यह जान लें।
- भगवान के बिना स्थायी शांति नहीं मिलती, यह समझ लें।

सच्ची चाहत ही भगवान को खींच लती हैं !

2. समर्पण पूरा और सच्चा करें

अपने आप को भगवान के हवाले करें

- मैं कुछ नहीं, आप ही सब कुछ – यह भाव रखें।
- अपने सुख-दुख, मान-अपमान, भविष्य, सब कुछ भगवान को समर्पित करें।
- निर्णय भगवान पर छोड़ दें – वही सही करेंगे।
- "आप जो करें, अच्छा करें" – इस भाव में रहें।

समर्पण जहां पूर्ण हुआ, वहां भगवान प्रकट हुए !

3. नाम स्मरण और भक्ति को अपनाएं !

नाम में है अपार शक्ति

- भगवान का नाम जपें – मन, वाणी और कर्म से।
- माला जपें, कीर्तन करें, भजन सुनें और गाएं।
- नाम स्मरण से मन शुद्ध होता हैं।
- भक्ति से हृदय में प्रेम और शांति आती हैं।
- निरंतर स्मरण से भगवान निकट आते हैं।

नाम जपें – कल्याण पाएं, भगवान को पाएं !

4. धैर्य, विश्वास और प्रतीक्षा रखें

भगवान का समय ही सर्वोत्तम है

- भगवान मिलने में समय लगाते हैं, पर देर नहीं करते।
- प्रतीक्षा में विश्वास रखें – यही परीक्षा है।
- अधीरता, शिकायत और संदेह छोड़ दें।
- धैर्य रखने से मन स्थिर होता हैं।
- समय आने पर भगवान स्वयं द्वार खोलते हैं।

जो धैर्य रखता है, वही भगवान को पाता है !

5. मन, वाणी और कर्म को शुद्ध करें

शुद्धता ही भगवान का निवास है

- मन में बुरे विचार न आने दें।
- वाणी से किसी को दुःख न दें।
- कर्म सेवा और कर्तव्य भाव से करें।
- अहंकार, छल, कपट, ईर्ष्या छोड़ दें।
- शुद्ध मन में ही भगवान का वास होता हैं।

शुद्धता ही भक्ति की सुंदरता है !

6. संतों की संगति और शास्त्र का अध्ययन करें

यह मार्ग को सरल और स्पष्ट करता है

- संत मार्ग दिखाते हैं, भ्रम दूर करते हैं।
- उनकी संगति से मन में भक्ति जागती है।
- शास्त्र पढ़ने और सुनने से ज्ञान बढ़ता है।
- ज्ञान और भक्ति मिलकर मार्ग को प्रकाशित करते हैं।
- सत्संग से जीवन बदल जाता है।

सत्संग और शास्त्र अध्ययन – जीवन का प्रकाश है !

7. सेवा, दया और करूणा को जीवन में लाएं

हर जीव में भगवान को देखें

- सेवा से अहंकार और स्वार्थ दूर होता हैं।
- दया और करुणा से हृदय कोमल बनता है।
- हर जीव में भगवान का अंश है – यह जानें।
- किसी का भला करने का अवसर न छोड़ें।
- सेवा ही सच्ची पूजा हैं।

सेवा है भक्ति का आचरण, दया है भगवान का दर्शन !

याद रखें

- 👉 भगवान दूर नहीं, हमारे ही हृदय में हैं।
- 👉 हमारी पुकार, भक्ति और समर्पण उन्हें प्रकट कर देता है।
- 👉 सच्चा प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाता।
- 👉 भगवान का मार्ग प्रेम, धैर्य और विश्वास का है।

अंतिम संदेश

सच्ची चाहत रखो, पूरा समर्पण करो,
नाम जपो, भक्ति करो, धैर्य रखो,
जीवन को शुद्ध बनाओ और सेवा करो –
फिर देखो, भगवान स्वयं चलकर
आपके पास आ जाएंगे !

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-9
भगवान की कृपा पाने के लिए
हमें क्या साधना करनी चाहिए ?
साधना वही, जो हमें भगवान के पास ले जाए !
स्मरण रहे
साधना कठिन नहीं है, सच्ची होनी चाहिए ! मन, वाणी और कर्म से हम भगवान को चाहेंगे, तभी उनकी कृपा हम पर बरसेगी !
1. सच्ची चाहत और तड़प जगाएं
भगवान को पाने की सच्ची चाह रखें ।
दुमिया की चाहत कम करें, भगवान की चाह बढ़ाएं ।
दिन-रात भगवान को याद करें ।
उनके बिना जीवन अधूरा है, यह भावना रखें ।
मन से पुकारें – “हे भगवान, मुझे आप चाहिए” ।
तड़प होगी, तो भगवान दौड़े चले आएंगे !
2. नाम जप और स्मरण करें
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
भगवान का नाम जप सबसे सरल साधना है ।
माला से या मन ही मन नाम जप करें ।
नाम जप से मन शुद्ध होता है और चिंत एकाग्र ।
चलते-फिरते, खाते-पीते नाम का स्मरण करें ।
नाम जप में प्रेम और विश्वास होना चाहिए ।
नाम जप – कलियुग में सबसे मह साधना !
3. शास्त्र पढ़ें और मनन करें
श्रीमद्भगवद्गीता
भागवत पुराण
गीता, भागवत, रामायण जैसे ग्रंथ पढ़ें ।
शास्त्रों में भगवान का ज्ञान और मार्गदर्शन है ।
पढ़कर मनन करें और जीवन में उतारें ।
सत्संग से शास्त्र का सही अर्थ समझें ।
ज्ञान से भक्ति और विश्वास बढ़ता है ।
शास्त्र ज्ञान से हमारी बुद्धि निर्मल होती है !
4. सत्संग करें और संतों की शरण लें
संतों का संग जीवन बदल देता है ।
संत भगवान के साक्षात दूत होते हैं ।
उनकी वाणी में भगवान का अनुभव होता है ।
सत्संग से मोह, अहंकार और वासनाएं घटती हैं ।
संतों की सेवा और आज्ञा का पालन करें ।
सत्संग से ही सच्चे मार्ग की प्राति होती है !
5. मन, वाणी और कर्म को शुद्ध करें
मन शुद्ध विचार
वाणी मधुर और सत्य
कर्म सेवा और धर्मयुक्त
मन में भगवान के प्रति प्रेम और श्रद्धा रखें ।
वाणी से किसी को दुख्र न दें, सत्य वोलें ।
कर्म से सेवा, दया और धर्म का पालन करें ।
तीनों की शुद्धि से भगवान प्रस्न्न होते हैं ।
शुद्ध जीवन ही सच्ची साधना है ।
मन-वाणी-कर्म की शुद्धि से भगवान प्रस्न्न होते है !
6. समर्पण और शरणागति करें
सब कुछ भगवान को समर्पित कर दें ।
अपने अहंकार, चिंता और इच्छाओं को छोड़ दें ।
उनकी इच्छा में अपनी इच्छा मिलाएं ।
कहें – "जो आप चाहें, वही मेरे लिए श्रेष्ठ है" ।
पूर्ण समर्पण से भगवान अपने बना लेते हैं ।
समर्पण ही भगवान को पाने का सरलतम मार्ग है !
7. धैर्य, विश्वास और निरंतरता रखें
साधना में धैर्य रखना वहुत जरुरी है ।
तुरंत फल की इच्छा न करें ।
विश्वास रखें – भगवान सुन रहे हैं ।
निरंतर साधना करते रहें, कभी न छोड़ें ।
एंक दिन अवश्य कृपा होगी ।
धैर्य और निरंतरता से ही सिद्धि मिलती है !
याद रखें
साधना दिखावे के लिए नहीं, भगवान के लिए करें ।
भगवान को पाने के लिए हृदय पवित्र और भावना सच्ची होनी चाहिए ।
रोज थोड़ा समय भगवान के लिए अवश्य निकालें ।
प्रेम, विश्वास और समर्पण ही भगवान को अत्यंत प्रिय है ।
हम जितना उन्हें चाहेंगें, वे हमसे उससे भी अधिक प्रेम करेंगे ।
अंतिम संदेश
सच्ची साधना से ही भगवान की कृपा मिलती है ! मन, वाणी और कर्म से उन्हें चाहो, याद करो, सेवा करो और समर्पण करो – फिर देखो, भगवान स्वयं आपके पास आ जाएंगे !
साधना का सार यही है – भगवान को पाना है, भगवान का बनना है, और भगवान में ही जीवन का परम सुख पाना है !
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-9

भगवान के चरणों में समर्पण करने का सही तरीका क्या है ?

सच्चा समर्पण – केवल शब्दों से नहीं, जीवन से होता है !

समरण रहे

जो तन, मन, धन, समय, विचार, कर्म – सब कुछ भगवान को समर्पित कर देता है, वही उनका सच्चा प्रिय बनता है !

1. समर्पण क्या है ?

- समर्पण का अर्थ है – अपना 'मैं' भगवान को सौंप देना।
- अपने अहंकार, अपनी इच्छाएँ, अपने फैसले – सब छोड़ देना।
- अपने जीवन की डोर भगवान के हाथ में दे देना।

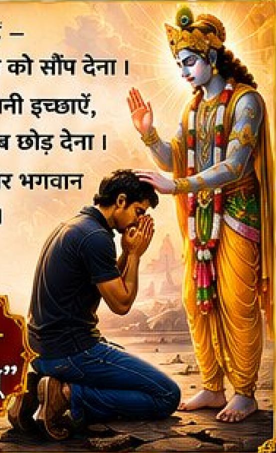

समर्पण है – "मैं नहीं, तू ही तू"

2. सच्चे समर्पण के लक्षण

- मैं हर परिस्थिति में भगवान की इच्छा को स्वीकार करता हूँ।
- मैं शिकायत नहीं करता, केवल प्रार्थना करता हूँ।
- मैं अपने सुख-दुख, सब कुछ प्रभु को सौंप देता हूँ।
- मैं अपने जीवन के हर निर्णय में उनकी मार्गदर्शना चाहता हूँ।
- मैं अपने अहंकार, स्वार्थ और अपेक्षाएँ भगवान को अर्पित करता हूँ।

यह समर्पण है, यही भक्ति की पहचान है !

3. समर्पण में आने वाली बाधाएँ

- ✗ अहंकार – 'मैं करता हूँ' की भावना
- ✗ अपेक्षा – भगवान से लेन-देन करना
- ✗ शिकायत – परिस्थिति से लड़ना
- ✗ तुलना – दूसरों से तुलना करना
- ✗ अविश्वास – 'भगवान क्यों करेंगे ?'

इन बंधनों को छोड़ना ही समर्पण हैं !

4. समर्पण कैसे करें ? (व्यावहारिक तरीके)

- हर दिन भगवान से संवाद करें।
- हर कार्य पहले भगवान को अर्पित करें।
- सेवा, दया, शुद्ध विचार अपनाएं।
- प्रार्थना करें – "हे प्रभु, मुझे सही मार्ग दिखाएं"।
- हर स्थिति को प्रसाद मानकर स्वीकार करें।

छोटे-छोटे कदम से बड़ा समर्पण होता है !

5. समर्पण के बाद क्या होता है ?

जब आप समर्पित होते हैं, तब भगवान आपके जीवन का संचालन करते हैं !

6. समर्पण और कर्म का संबंध

- समर्पण का अर्थ कर्म छोड़ना नहीं, कर्म को भगवान को अर्पित करना हैं।
- कर्तव्य करते हुए, फल की इच्छा छोड़ दें।
- कर्म आपका, फल उनका – यही समर्पण हैं।

यही गीता का सार हैं – कर्मयोग और समर्पण !

7. समर्पण में सबसे बड़ा रहस्य

- भगवान को हमारे धन, रूप, ज्ञान की नहीं, हमारे दिल की सच्चाई चाहिए।
- वह हमारे छोटे से छोटा समर्पण भी स्वीकार करते हैं।
- वह हमारे आँसू भी समझते हैं, हमारी चुप्पी भी सुनते हैं।

भगवान सच्चे दिल को तुरंत पहचान लेते हैं !

8. समर्पण की परख कैसे होती है ?

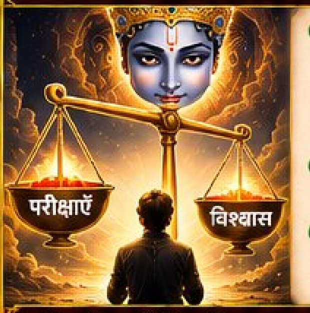

- कभी-कभी भगवान हमें कठिनाईयों में डालकर हमारी परीक्षा लेते हैं।
- देखते हैं – क्या हम उनके साथ हैं या नहीं ?
- यह परीक्षा हमें और मजबूत बनाती है।

परीक्षाएँ आती हैं, ताकि हमारा समर्पण गहरा हो जाए !

9. भगवान का वचन

"जो मुझ में मन लगाता है,
जो मुझे ही अपना मानता है,
जो मेरा अनन्य भक्त हैं,
मैं उसका कभी नाश नहीं होने देता !"

(भगवद गीता – 9.31)

10. अंतिम निष्कर्ष

- समर्पण शब्दों से नहीं, जीवन से होता हैं।
- समर्पण में शांति, शक्ति और आनंद मिलता है।
- समर्पण से हमारा जीवन पवित्र और सफ़ल होता हैं।
- समर्पण ही भक्ति का सर्वोच्च स्वरूप हैं।

अंतिम संदेश

हे प्रभु ! मुझे इतना सामर्थ्य दें कि
मैं अपने जीवन का हर क्षण,
हर सांस, हर विचार, हर कर्म
आपको समर्पित कर सकूं !
आप ही मेरे स्वामी, आप ही मेरे सहारा,
आप ही मेरे जीवन का आधार हैं !

याद रखें

- 👉 समर्पण करें – सच्चे दिल से।
- 👉 भरोसा रखें – पूरे विश्वास से।
- 👉 भक्ति करें – श्रद्धा से।
- 👉 सेवा करें – निस्वार्थ भाव से।
- 👉 और फिर देखें – भगवान कैसे आपके जीवन को सुंदर बनाते हैं !

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भाग-10

भगवान को पाने के बाद भक्त को क्या प्राप्त होता है ?

यह जान लों – यही जीवन का परम लक्ष्य है !

स्मरण रहे

भगवान को पाना किसी स्थान पर जाना नहीं, बल्कि अपने हृदय में भगवान के प्रेम और साक्षात्कार का पूर्ण अनुभव है !

1. परम शांति और आनंद की प्राप्ति

- मन का सारा क्लेश, चिंता और अशांति समाप्त हो जाती है।
- हृदय में निरंतर शांति और प्रसन्नता बनी रहती है।
- बाहरी परिस्थितियाँ जैसी भी हों, अंदर आनंद बना रहता है।
- भगवान के स्मरण से ही मन तृप्त हो जाता है।
- अब और किसी सुख की चाह नहीं रहती।

यह शांति संसार का नहीं, भगवत् प्राप्ति का फल है !

2. भय, दुख और बंधन से मुक्ति

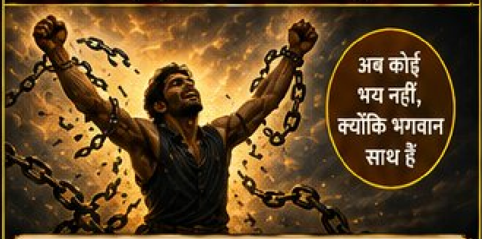

- मृत्यु, रोग, हानि, अपमान – किसी का भय नहीं रहता।
- क्योंकि भक्त जानता है – "मेरे साथ भगवान हैं"।
- दुख आता है, पर वह तो भगवान की लीला समझता है।
- कर्मबंधन ढीले हो जाते हैं, मन स्वतंत्र हो जाता है।
- जन्म-मरण का चक्र धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है।

भक्त अब संसार में रहते हुए भी मुक्त हो जाता है !

3. अखण्ड भगवान का प्रेम अनुभव

- भगवान अब दूर नहीं रहते, निकटतम हो जाते हैं।
- भक्त का हृदय भगवान के प्रेम से भर जाता है।
- हर कार्य में भगवान का साथ और उपस्थिति अनुभूत होती है।
- भक्त को भगवान से बात करना सहज हो जाता है।
- यह प्रेम संसार के किसी संबंध से श्रेष्ठ होता है।

प्रेम ही भक्ति का शिखर और फल है !

4. आत्मज्ञान और साक्षात्कार

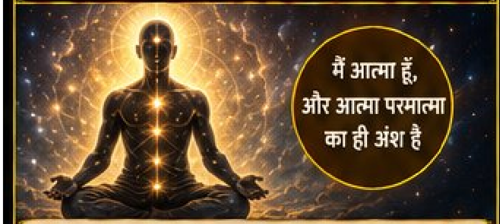

- भक्त को अपने वास्तविक स्वरूप – आत्मा का ज्ञान होता है।
- समझ आता है – "मैं शरीर, मन, बुद्धि नहीं, शुद्ध आत्मा हूँ"।
- भगवान सर्वत्र हैं – यह प्रत्यक्ष अनुभव हो जाता है।
- अद्वैत भाव जागृत होता है – सब में वही एक है।
- यह ज्ञान केवल पुस्तकों से नहीं, अनुभव से होता है।

यह आत्मज्ञान ही मोक्ष का द्वार है !

5. सेवा में आनंद और तृप्ति

- अब सेवा बोझ नहीं, बल्कि आनंद का स्रोत बन जाती है।
- हर जीव में भगवान दिखते हैं, सेवा स्वतः होने लगती है।
- सेवा से हृदय पवित्र और विनम्र होता है।
- मान, यश, प्रशंसा की चाह समाप्त हो जाती है।
- सेवा और समर्पण में ही आनंद और तृप्ति मिलती है।

सेवा ही सच्ची भक्ति है, और भक्ति का फल है !

6. इच्छाओं का पूर्ण क्षय

- संसारिक इच्छाएँ धीरे-धीरे समाप्त हो जाती हैं।
- केवल भगवान की इच्छा और प्रसन्नता ही महत्वपूर्ण लगती है।
- मन पूर्ण रूप से संतुष्ट और निरपेक्ष हो जाता है।
- कुछ भी मिले या न मिले, मन में कोई विकार नहीं उठता।
- इच्छाओं का क्षय होने से मन सदा प्रसन्न रहता है।

जहाँ इच्छा समाप्त, वहाँ सच्चा सुख प्रारंभ !

7. भगवान से एकत्व (एकरूपता) की स्थिति

- भक्त का मन, बुद्धि, अहंकार – सब भगवान में लीन हो जाता है।
- भक्त की हर श्वास, हर विचार, हर कर्म भगवान के लिए ही होता है।
- भक्त को ऐसा अनुभव होता है – 'भगवान ही मैं हूँ, मैं ही भगवान का हूँ'।
- यह स्थिति सहज, स्वाभाविक और अखण्ड बनी रहती है।
- यही परम मिलन है – जहाँ से फिर कभी बिछड़ना नहीं होता।

यही है जीवन का परम लक्ष्य – भगवान से एकत्व की प्राप्ति !

अंतिम सत्य

भगवान को पाने के बाद
और कुछ शेष नहीं रहता,
क्योंकि सब कुछ तो वही हैं –
वही लक्ष्य, वही मार्ग, वही साधन,
वही सुख, वही शांति,
वही प्रेम, वही प्राप्ति !
॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

सार रूप में – भगवान को पाने के बाद भक्त को यह सब प्राप्त होता है

1 परम शांति और आनंद

अंतर में अटूट शांति और निरंतर आनंद।

2 भय, दुख और बंधन से मुक्ति

सभी बंधनों से मुक्ति और निडर जीवन।

3 अखंड भगवान का प्रेम

भगवान का प्रेम हृदय में सदा अनुभूत होता है।

4 आत्मज्ञान और साक्षात्कार

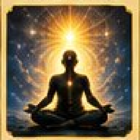

अपने वास्तविक स्वरूप का प्रत्यक्ष ज्ञान।

5 सेवा में आनंद और तृप्ति

सेवा ही जीवन का परम सुख बन जाता है।

6 इच्छाओं का पूर्ण क्षय

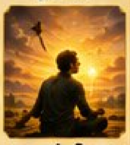

कुछ पाने की चाह समाप्त, केवल भगवान की इच्छा।

7 भगवान से एकत्व

भक्त और भगवान अलग नहीं रहते, एक हो जाते हैं।

8 कर्म शुद्ध और निर्लिप हो जाते हैं

कर्म होते हुए भी बांधते नहीं, शुद्ध हो जाते हैं।

9 करुणा और प्रेम का विस्तार

हर जीव में भगवान देखकर करुणा जागती है।

10 मोक्ष की प्राप्ति

जन्म-मरण का चक्र समाप्त, परम धाम की प्राप्ति होती है।

भगवान को पाना ही मानव जीवन का परम उद्देश्य है – इसे पाकर सब कुछ पा लिया !

लेख – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

भगवान की
दो प्रचंड माया
जो इन दोनों प्रचंड माया
को परास्त करता है
उन्हीं को भगवान मिलते हैं!
बाकी का फिर से जन्म!
भक्तों जान लीजिए भगवान किसको मिलते हैं? क्या भजन, पूजन, तपस्या, योग
इनसे भगवान मिल जाएंगे? नहीं! भगवान की इस दो प्रचंड माया को परास्त करने वाले को ही भगवान मिलते हैं!
इस माया से इस पूरी सृष्टि में कोई नहीं बच सकता! जो इन दोनों से बच निकल गया, बस उनको भगवान मिल गए और जो इन दोनों के जाल में फंस गए तो अनंत काल के लिए आवागमन के चक्र में फंस गए!
1. सुंदर रूप (अप्सरा)
जैसे ब्रह्म ऋषि विश्वामित्र की तपस्या भंग करने रम्भा और मेनका आई थी! इतनी सुंदर की मूर्ति कि देखने वाला घायल हो जाए!
▸ दुनिया में ऐसा कोई प्राणी नहीं जो सुंदर रूप को देखकर घायल न हो!
▸ संपूर्ण स्त्री सुंदरता – भगवान की मोहिनी रूप माया है!
▸ जो अप्सरा, रूप, स्त्री, मोहिनी रूप से प्रभावित नहीं होता, उसी को कामवासना की जीत होती है!
▸ जब तक सुंदर रूप में पिघलने की आदत है, तब तक भगवान की प्राप्ति संभव नहीं!
जो सुंदर रूप की माया को परास्त करता है – वही भगवान का अधिकारी बनता है!
2. धन संपत्ति (प्रतिष्ठा)
• धन, संपत्ति, प्रतिष्ठा, सम्मान – यह भगवान की प्रचंड माया है!
• यही जगत में तहलका मचा रही है!
• इंद्रिय भोग, सुख साधन – सब धन–संपत्ति के अंतर्गत आते हैं!
• ऐसा कोई प्राणी नहीं जो धन–संपत्ति की माया में न फंसे!
जो धन–संपत्ति, प्रतिष्ठा, समाने की माया से बच जाता है – वही भगवान को मिलता है!
भगवान की माया के अनेक जाल – लेकिन इनमें सबसे बलवान यही दो हैं!
1. कामवासना का जाल
2. क्रोध का जाल
3. लालच का जाल
4. अहंकार का जाल
5. मोह का जाल
ये सब जाल धन–संपत्ति और सुंदर रूप की माया में ही समाए हुए हैं!
अभी भगवान दिखाई क्यों नहीं देते?
क्योंकि माया का पर्दा है!
धन, संपत्ति, सम्मान, प्रतिष्ठा, माता–पिता, पति–पत्नी, पुत्र–पुत्री, शरीर – यह सब माया का फंदा है!
गर्भ में थे तो माया नहीं थी, केवल भगवान दिखाई देते थे, प्रार्थना करते थे, समर्पित थे!
योनि द्वार से बाहर आते ही भगवान की माया पकड़ लेती है और इंद्रिय, मन, बुद्धि हरण कर लेती है, फिर भगवान से दूर कर देती है!
जहाँ माया है वहाँ ब्रह्म नहीं
ब्रह्म वहाँ है जहाँ माया नहीं!
भगवान कब दिखाई देते हैं?
जब भगवान सभी रास्ता बंद कर देते हैं!
धन
सुख
रिश्ते
सहारा
जब कोई नहीं रहता, कोई सहारा नहीं रहता, जब काल, कर्म और नियति का झापड़ पड़ता है – तब वही परमात्मा दिखाई देते हैं!
जीवन में सुख का एक तिनका भी किरण है वो परमात्मा दिखाई नहीं दे सकते!
कैसे जानें – यही हमारा अंतिम जन्म है?
दो माया से जीत कीजिए और स्वयं जांच कीजिए!
1. सुंदर रूप का आकर्षण क्या समाप्त हुआ? →
2. धन का आकर्षण क्या समाप्त हुआ? →
अगर दोनों से प्रभावित नहीं होते – यही आपका अंतिम जन्म है! इसके बाद श्री कृष्ण की प्राप्ति निश्चित है!
भगवान दुख और कष्ट क्यों देते हैं?
✔ समर्पण को सच्चा और पूर्ण करने के लिए!
✔ अनंत जन्मों के कर्तापन, अहंकार, संस्कार को तोड़ने के लिए!
✔ कर्तापन रूपी शराब का नशा उतारने के लिए!
✔ अहंकार को तोड़ने के लिए, जीव को महान और ज्ञानी बनाने के लिए!
✔ भोग पूरा करवाकर जीव को अपने में समर्पित कराने के लिए!
दुख पीटने के लिए नहीं आते, समर्पण करवाने के लिए आते हैं! चारों तरफ से कष्ट, असफलता, दुख ही दुख – यही औषधि है इस नशा को उतारने का दूसरा और कोई औषधि नहीं!
जिसे भगवान की विशेष कृपा होती है, वही इन दोनों माया को पहचान पाता है और उनसे मुक्त होता है!
सुंदर रूप और धन संपत्ति – यही भगवान की दो प्रचंड माया हैं!
इन दोनों पर विजय – यही ब्रह्म की प्राप्ति है!
|| हरे कृष्ण हरे कृष्ण,
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव
राधा राधा राधा राधा राधा

भगवान की
दो प्रचंड माया
जो इन दोनों प्रचंड माया को
परास्त करता है उन्हीं को
भगवान मिलते हैं!
1. सुंदर रूप (अप्सरा)
यह भगवान की मोहिनी माया है।
रंभा, मेनका, उर्वशी जैसी अप्सराओं का
रूप इतना मोहक है कि बड़े-बड़े ऋषि-मुनि
की तपस्या भंग्ग हो जाती है।
जो सुंदर रूप से प्रभावित नहीं होता,
वही कामवासना पर विजय पाता है और
भगवान की प्राप्ति का अधिकारी बनता है।
2. धन-संपत्ति (प्रतिष्ठा)
यह भगवान की ऐश्वर्य माया है।
धन, संपत्ति, मान-प्रतिष्ठा, सम्मान का
आकर्षण इतना बलवान है कि पूरी
दुनिया इसी में फंसी हुई है।
जो धन-संपत्ति से आसक्त नहीं होता,
वही लोभ, अहंकार, मोह से मुक्त होकर
भगवद्द प्राप्ति का अधिकारी बनता है।
इस माया से इस पूरी सुष्टि में
कोई नहीं बच सकता।
जो इन दोनों से बच निकल गया
बस उनको भगवान मिल गए।
जो इनके जाल में फंस गए तो
अनंत काल के लिए आवागमन के
चक्र में फंस गए!
दोनों माया का प्रभाव और जीत का मार्ग
परीक्षा – 1 : सुंदर रूप (अप्सरा की परीक्षा)
कोई अप्सरा आकर मीठी-मीठी बातें करे, विवाह का प्रस्ताव रखे,
इतनी सुंदर कि देखने मात्र से मन मोहित हो जाए।
ब्रह्म ऋषि विश्वामित्र भी रंभा और मेनका से नहीं बच सके।
संपुर्ण जगत में जितनी भी सुंदरता है, वह भगवान की मोहिनी रूप माया है।
जो बड़े से बड़े सुंदर रूप को देखकर भी विचलित न हो, प्रभावित न हो,
वह कामवासना पर विजय पाकर भगवान को प्राप्त करता है।
सुंदर रूप में पिघलने की आदत है, तो भगवान की प्राप्ति संभव नहीं।
परीक्षा – 2 : धन-संपत्ति (आर्थिक परीक्षा)
धन, संपत्ति, प्रतिष्ठा, मान-सम्मान – यही दुनिया में तांडव मचा रही है।
इसी में कामवासना, क्रोध, लालच, अहंकार, मोह – सभी जाल समाए हैं।
दुनिया की सारी माया इन्हीं दो में समाई है।
जो धन-संपत्ति के आकर्षण से बच जाता है,
उसे ही भगवान मिलते हैं।
भगवान की माया के जाल
1 कामवासना का जाल
2 क्रोध का जाल
3 लालच का जाल
4 अहंकार का जाल
4 मोह का जाल
इन सब में सबसे बलवान
दो जाल हैं – सुंदर रूप
और धन-संपत्ति।
कैसे जांच करें कि यही हमारा अंतिम जन्म है ?
अपने अंदर टेस्ट कीजिए – सुंदर रूप का आकर्षण गया या नहीं ?
धन-संपत्ति का आकर्षण समाप्त हुआ या नहीं ?
अगर दोनों का आकर्षण समाप्त हो गया,
इन दोनों में लवलेश मात्र भी आकर्षण नहीं है,
तो समझिए यही आपका अंतिम जन्म है
इसके बाद श्री कृष्ण की प्राप्ति निश्चित है।
जीव इन दोनों की चपेट में क्यों आ जाता है ?
जीव के अनंत जन्मों के संस्कार धन-संपत्ति
और सुंदर रूप के आकर्षण में फंसे हुए हैं।
इन्हीं अनंत जन्मों के संस्कार उसे बार-बार
इन्हीं मायाओं में फंसा देते हैं।
यही कारण है कि जीव बार-बार जन्म-मरण के चक्र में घुमता रहता है।
जीत का परिणाम
अगर इन दोनों में से कोई एक में भी जीत गया, तब भी फिर से जन्म होता है।
जब जीव इन दोनों माया से पूरी तरह जीत जाता है,
तत्काल उसे श्री कृष्ण की प्राप्ति होती है।
परमात्मा की प्राप्ति का सार
ना सुंदर रूप हमें प्रभावित करे, ना धन-संपत्ति हमें आकर्षित करे।
यही इन दोनों माया से जीत है, यही ब्रह्म की प्राप्ति है।
जो इन दोनों प्रचंड माया को परास्त करता है, वही भगवान को प्राप्त करता है, वही मुक्त होता है!
लेख– श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

हे श्याम सुंदर हे कन्हैया!

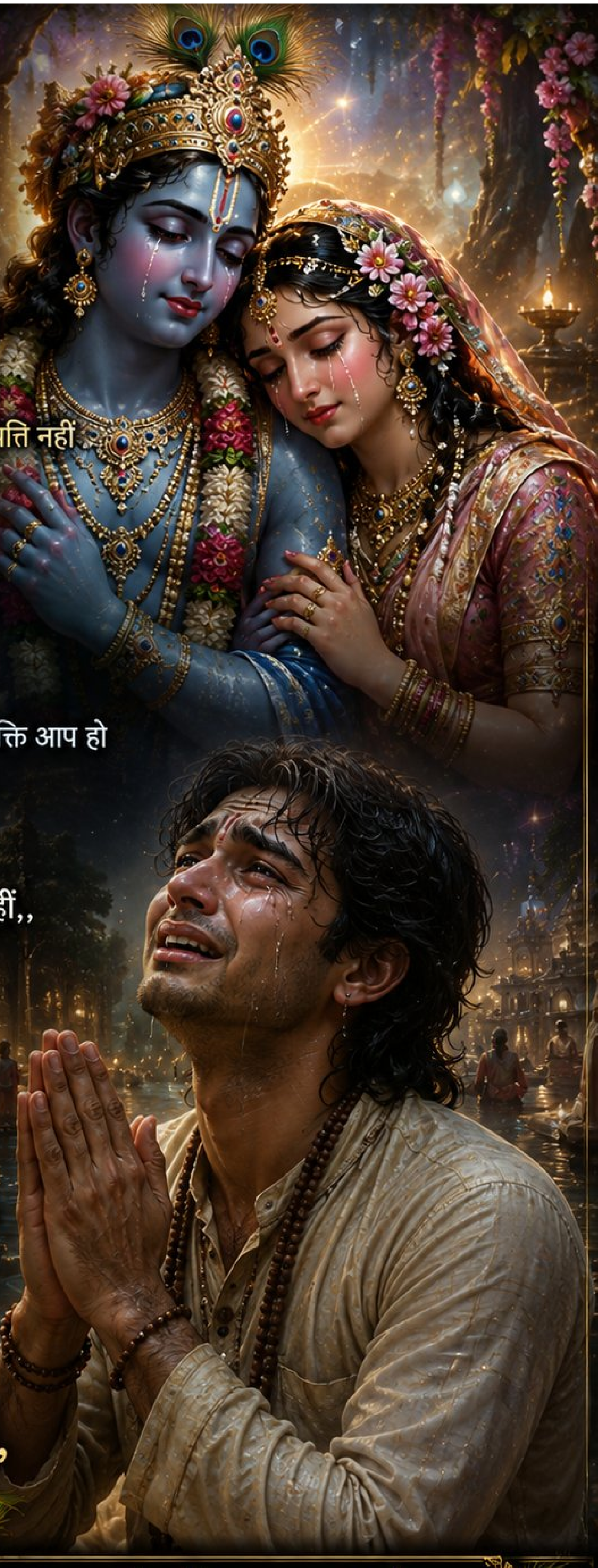

मेरे बांके बिहारी लाल मेरे प्राणों के स्वामी
मेरे प्राण पति सर्वेश्वर अखिल ब्रह्मांड के मायाधिपति
दुनिया छूट जाए सब छूट जाए परिवार छूट जाए
प्राण छूट जाए पर मुझे आप अपने पास रख लो!
और दुनिया में कभी मत भेजना जहां कोई अपना ना हो!
सबके अपने-अपने जमा पूंजी हैं वही उसका आधार है
मेरा तो जमा पूंजी आप हो क्योंकि मेरे आधार आप हो धन संपत्ति नहीं
अगर दे दिया धन संपत्ति तो भी उनको फेंक दुंगा
क्योंकि मेरा आधार आश्रय आप हो धन नहीं
मेरे त्रिकालदर्शी मेरा वर्तमन आप हो,,
मेरा भविष्य आप हो,, मेरा भूतकाल ही आप हो,,
मेरा जीवन आप हो मेरे प्राणों में बसने वाले
मेरे 24 धंटे निरंतर धड़कन को धड़काने वाले,,
सांसों को चलाने वाले आप हो,, मेरी इंद्रियां मन बुद्धि चेतन शक्ति आप हो
मेरी भक्ति आप हो मेरा ज्ञान आप हो मेरा कर्म आप हो,
मेरा योग ध्यान साधना प्रेम आप हो,,
जो आपने मुझे तत्व ज्ञान दिया वह ज्ञान भी आप हो,,
मेरी आत्मा की आत्मा आप हो,, दुनिया में कोई मेरा नहीं,,
इस झूठ़ी दुनिया से मुझको पार लगाओगे आप,
मेरी माता भी आप हो मेरे पिता भी आप हो
मेरा भाई भी आप हो मेरा मित्र भी आप हो
मेरा धन संपत्ति जीवन प्राण सब आप हो,
मेरी कोई जमा पूंजी नहीं क्योंकि मेरी जमा पूंजी आप हो!

100 खरब संपत्ति को आप अकेले
एक चुनौती दे सकते हो मेरे लिए आप एक अकेले काफी हो!

अनंत सूरज चांद तारे बनाने वाले मेरे मालिक
जिनके गणित का गणित बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी नहीं लगा सकते
मेरे वह परम शक्ति परम सत्ता आप हो,,
मुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं,,,

मेरे तो गिरधर गोपाल दुसरो न कोई,,
क्योंकि मेरा सर्वव्व आप हो!

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

हे श्याम सुंदर हे कन्हैया!

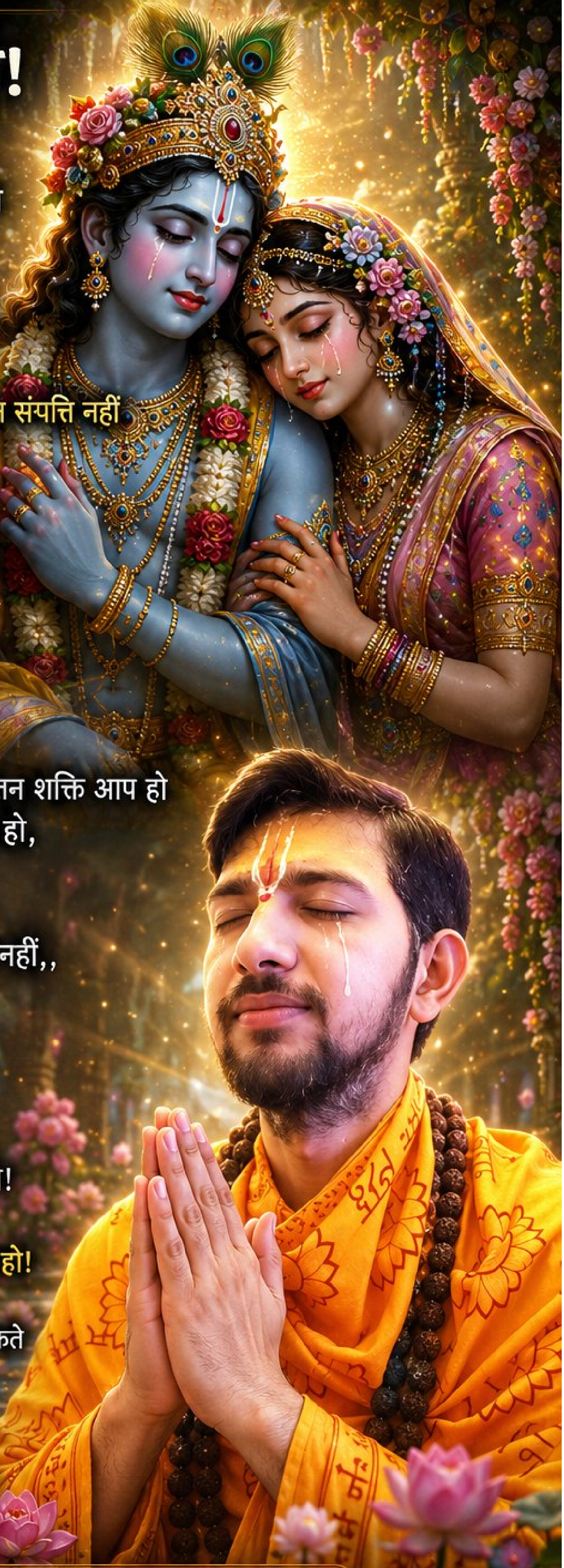

मेरे बांके बिहारी लाल मेरे प्राणों के स्वामी
मेरे प्राण पति सर्वेश्वर अखिल ब्रह्मांड के मायाधिपति
दुनिया छूट जाए सब छूट जाए परिवार छूट जाए
प्राण छूट जाए पर मुझे आप अपने पास रख लो!
और दुनिया में कभी मत भेजना जहां कोई अपना ना हो!
सबके अपने-अपने जमा पूंजी हैं वही उसका आधार है
मेरा तो जमा पूंजी आप हो क्योंकि मेरे आधार आप हो धन संपत्ति नहीं
अगर दे दिया धन संपत्ति तो भी उनको फेंक दूंगा
क्योंकि मेरा आधार आश्रय आप हो धन नहीं
अगर दे दिया धन संपत्ति तो भी उनको फेंक दूंगा
क्योंकि मेरा आधार आश्रय आप हो धन नहीं
मेरे त्रिकालदर्शी मेरा वर्तमान आप हो,,
मेरा भविष्य आप हो,, मेरा भूतकाल ही आप हो,,
मेरा जीवन आप हो मेरे प्राणों में बसने वाले
मेरे 24 धंटे निरंतर धड़कन को धड़काने वाले,,
सांसों को चलाने वाले आप हो,, मेरी इंद्रियां मन बुद्धि चेतन शक्ति आप हो
मेरी भक्ति आप हो मेरा ज्ञान आप हो मेरा कर्म आप हो,
मेरा योग ध्यान साधना प्रेम आप हो,,
जो आपने मुझे तत्व ज्ञान दिया वह ज्ञान भी आप हो,,
मेरी आत्मा की आत्मा आप हो,, दुनिया में कोई मेरा नहीं,,
इस झूठी दुनिया से मुझको पार लगाओगे आप,
मेरी माता भी आप हो मेरे पिता भी आप हो
मेरा भाई भी आप हो मेरा मित्र भी आप हो
मेरा धन संपत्ति जीवन प्राण सब आप हो,
मेरी कोई जमा पूंजी नहीं क्योंकि मेरी जमा पूंजी आप हो!
100 खरब संपत्ति को आप अकेले
एक चुनौती दे सकते हो मेरे लिए आप एक अकेले काफी हो!
अनंत सूंरज चांद तारे बनाने वाले मेरे मालिक
जिनंके गणित का गणित बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी नहीं लगा सकते
मेरे वह परम शक्ति परम सत्ता आप हो,,
मुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं,,,

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई,,
क्योंकि मेरा सर्वस्व आप हो!

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

अहंकार और चित्त रहस्य
अहंकार, चित्त के अधीन है ना कि चित्त, अहंकार के अधीन !
उदाहरण के द्वारा समझेंगे कि दोनों में से कौन बलवान है – कौन किसका नौकर है ?
उदाहरण नंबर – 1
★ आज मुझे व्हाट्सएप के स्टेटस में एक बहुत अच्छी मेरी प्रिय चीज रखना है !
WhatsApp Status
आज मुझे एक स्टेटस रखनी है !
"मुझे रखनी है" – यह कौन है ? यह अहंकार है ! यह शब्द अहंकार का नारा है, चित्त का नहीं !
जो मुझे पसंद है मैं वही रखूंगा, जो मुझे पसंद नहीं मैं वह कभी नहीं रखूंगा !
अहंकार
अहंकार बोल रहा है – "जो मुझे पसंद है मैं वही रखूंगा"
इसका मतलब
अहंकार किसी का गुलाम है !
किसका गुलाम है ? – अपनी पसंद का !
दोनों में से कौन सी बात सही है ?
1. जो मुझे पसंद आएगा मैं वही करूंगा
2. मैं जो करूंगा वही मुझे पसंद आएगा
सही उत्तर – पहला वाक्य
क्योंकि अहंकार अपनी पसंद का गुलाम है !
चित्त (संस्कार) जो देता है, अहंकार वही करता है !
दूसरा वाक्य (गलत) क्यों है ?
आपको खेलकूद में रुचि नहीं है और कहा जाए कि 8 घंटे तक क्रिकेट मैच ध्यान लगाकर देखो !
मुझे यह पागलपन नहीं करना है ! तुझे करना है तो कर, मुझे यह सब पसंद नहीं !
अगर जो पसंद नहीं है उसे स्टेटस में रखते हैं, तो सिद्ध होता है कि अहंकार किसी का गुलाम नहीं ! लेकिन ऐसा होता है क्या ? नहीं ! जो पसंद है वही रखते हैं, इसका मतलब – अहंकार चित्त का गुलाम है !
समझो ऐसे –
मुख्यमंत्री अहंकार है और प्रधानमंत्री चित्त है !
प्रधानमंत्री (चित्त)
मुख्यमंत्री (अहंकार)
अनुमति देता है, संस्कार देता है, दिशा देता है
जब तक प्रधानमंत्री अनुमति न दे, मुख्यमंत्री कुछ नहीं कर सकता !
अहंकार, चित्त के अधीन है ना कि चित्त, अहंकार के अधीन !
अहंकार क्या है ?
मैं करूंगा ! मैं वही करूंगा ! यही शब्द अहंकार है ! यही भावना अहंकार है !
जो करने वाला है और मन को आनंदित करने वाला है, उस कलाकार का नाम अहंकार है !
लेकिन अहंकार करेगा तो करेगा क्या ? अपने अनंत जन्म के संस्कार के अनुसार !
चित्त क्या है ?
अनंत जन्मों के –
➤ स्वभाव
➤ अनुभूति
➤ प्रवृत्ति
➤ आदत
➤ संस्कार
यह सब चित्त में जमा रहता है !
सिंटेक्स टंकी
चित्त
(संस्कारों का भंडार)
इंद्रिय, मन, बुद्धि
नल से जैसी धारा निकलेगी वैसा ही व्यवहार होगा !
अगर टंकी में लाल रंग का पानी है – तो नल से लाल रंग का पानी ही निकलेगा !
अगर टंकी में हरा रंग का पानी है – तो नल से हरा रंग का पानी ही निकलेगा !
ऐसे ही अनंत जन्मों के संस्कार में जैसा डेटा जमा है, इंद्रिय मन बुद्धि नल से वैसी ही लहर आएगी !
इसलिए संसार के हर प्राणी अलग–अलग चीजों में उसका इंद्रिय मन बुद्धि भाग रहा है – अपने–अपने अनंत जन्मों के संस्कार के अनुसार !
भगवान की दो प्रचंड माया
1. सुंदर रूप (अप्सरा)
➤ रूप की मोहिनी माया
➤ संपूर्ण जगत को मोहित क्या हुआ है !
➤ रंभा, मेनका, उर्वशी आदि कौन भी बचा नहीं सका !
➤ जो इस माया से बच गया, वही भगवान को पाता है !
2. धन संपत्ति (प्रतिष्ठा)
➤ धन, संपत्ति, प्रतिष्ठा, सम्मान – यही माया है !
➤ यही जगत में तांडव मचा रही है !
➤ जो इस माया से बच गया, उन्हें भगवान मिल गए !
इन दोनों माया से जो बच गए – वही भगवान को पाते हैं !
सुंदर रूप में पिघलना बंद करो !
धन–संपत्ति में लिपटना बंद करो !
इन दोनों माया से जीत जाना ही भगवत प्राप्ति है !
जब तक इन दोनों में लवलेश मात्र भी आकर्षण है, तब तक ब्रह्म की प्राप्ति संभव नहीं !
भगवान जिस जीव पर विशेष कृपा करते हैं, वही इस माया को जान पाता है, जाल से बच जाता है और भगवान को पाता है !
बाकी सब माया के जाल में फंसे रहकर जन्म–मरण के चक्र में घूमते रहते हैं !
लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

माइक दृष्टि और दिव्य दृष्टि

समझो अंतर, पहचानो स्वयं को

माइक दृष्टि VS दिव्य दृष्टि

माइक दृष्टि (यह साक्षी भाव की अवस्था नहीं है)	दिव्य दृष्टि (साक्षी भाव)
सामने वाला जो बात कर रहा है, उसकी बातों में डूब जाता है और जवाब देने लगता है।	सामने वाले की बात को कैचिंग तो कर लेता है, लेकिन बातों में डूबता नहीं।
माइक जैसी – केवल सुनना, समझना और बातों में डूबे रहना, बाहर नहीं जा सकती।	तुरंत पहचानता है – इसको बात कौन करवा रहा है? किसके विषय में बोल रहा है?
ज्यादा गहराई को पकड़ने की ताकत नहीं होती, बस सतह पर ही रहती है।	इसकी वाणी से आवाज कहाँ से आ रही है? इसको बोलने की शक्ति कहाँ से मिल रही है?
पूछो तो कहेगा – मैं खुद से बात कर रहा हूँ, मन बुद्धि द्वारा बात कर रहा हूँ।	यह तो उनके वशीभूत होकर बोल रहा है – कौन? भगवान की माया – त्रिगुणात्मक प्रकृति।
अहंकार का पर्दा छाया रहता है – 'मैं कर रहा हूँ' का नशीला पर्दा।	(सत्व रज तम) एक-एक शब्द्र त्रिगुणात्मक प्रकृति का है, अपना कोई शब्द नहीं।
इसी को एक गधा दृष्टि कहा जाता है – जिसे कोई भी चीज का ज्ञान नहीं रहता।	दिव्य दृष्टि उनकी बात को नहीं सुनता, बल्कि अंत:करण की गहराई तक देखता है।
बस जानता है – खाना, पीना, सोना, संतान, विषय भोग और पैसा कमाना – यही सत्य मानता है।	विचारों का जन्म कहाँ से होता है? कौन विचार भेजता है? ज्ञान शक्ति कहाँ से आई? चेतना कहाँ से आई?
पर्दे के पीछे क्या है, नहीं जानता – यही माया का पर्दा है।	प्रत्येक जीव को 24 घंटे जो कुछ भी करवाती है, वह प्रकृति ही करवाती है – दूसरा और कोई नहीं।
अनंत काल तक नहीं पहचाना सकता कि उसे कौन करवा रहा है।	एक झट में पहचान लेता है कि असली कारण क्या है और उसी की खोज में लग जाता है।
माइक दृष्टि संसार के प्राणी को देखने में लग जाता है, संसार में डूबा रहता है, आगे पीछे किसी भी चीज का होश नहीं रहता।	दिव्य दृष्टि संसार के प्राणी में नहीं डूबती, बल्कि यह प्राणी कौन है? इसका वास्तविक कारण क्या है? इसी की खोज में लगी रहती है। नजर केवल त्रिगुणात्मक माया पर।

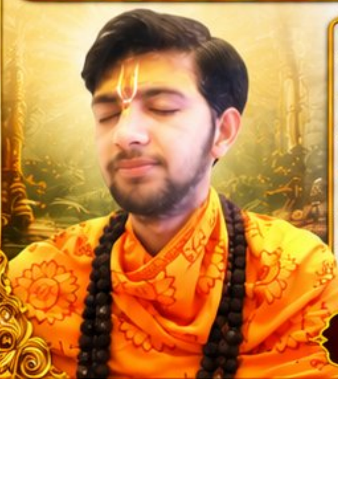

मुख्य अंतर एक नजर में

माइक दृष्टि		दिव्य दृष्टि
बातों में डूबना	स्वभाव	साक्षी बनकर देखना
सतह पर रहना	गहराई	गहराई तक देखना
मैं करता हूँ का भाव	अहंकार	माया का खेल समझना
ज्ञान सीमित	ज्ञान	कारण की खोज
माया में डूबा	स्थिति	माया के पार देखना
अनंत काल तक नहीं पहचानता	पहचान	एक झट में पहचान लेता है

लेखक – श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

परमात्मा अपनी मर्जी से कुछ नहीं बनाते।

जीव के अनंत जन्मों के कर्म रजिस्टर को देखकर ही
शरीर की रचना करते हैं।

यह शरीर कर्मों के धागों से ही बुना है -
जैसा कर्म, वैसी देह और वैसी ही जीवन।

ॐ
तीन चरण
जीव और परमात्मा का अनादि साथ
1 शरीर में दो पक्षी
इस देह में जीव और ब्रह्म दोनों साथ रहते हैं
2 मृत्यु का क्षण
कर्म रजिस्टर -
अनंत जन्म
मृत्यु पर परमात्मा जीव को कर्म रजिस्टर सहित अपने साथ ले जाते हैं, शरीर यहीं छूट जाता है
3 नित्य साथ
जीव और ब्रह्म का साथ अनदि अनंत है
सनातन सत्य | आत्मा अमर

तीन चरण —
जन्म, मृत्यु, पुनर्जन्म
चरण 1
गर्भ में प्रवेश
परमात्मा
जीवात्मा
माता के गर्भ में रचना के समय परमात्मा जीव के
साथ शरीर में प्रवेश करते हैं
चरण 2
मृत्यु - साथ प्रस्थान
कर्म
रजिस्टर -
अनंत जन्म
मृत्यु पर दोनों साथ निकलते हैं, शरीर यहीं छूटता है,
कर्म रजिस्टर साथ जाता है
चरण 3
अगले जन्म में पुनः प्रवेश
अगले जन्म में फिर दोनों साथ नए शरीर में प्रवेश करते हैं
- साथ कभी नहीं छूटता
जीव और परमात्मा — अनंत यात्रा | साथ, शाश्वत

तुलना: दो दृष्टियाँ
मायिक दृष्टि - अहंकार का पर्दा
(गधा दृष्टि)
अहंकार का पर्दा
मैं कर रहा हूँ
खाना कब बनेगा?
पैसे लाए?
जल्दी करो!
जल्दी करो!
सो गए क्या?
अहंकार
सो गए क्या?
खाना
सोना
पैसा
विशेषताएँ:
बातों में डूब जाता है
मैं कर्ता हूँ समझता है
पर्दे के पीछे नहीं देखता
खाना-पीना-सोना-भोग ही सत्य
VS
दिव्य दृष्टि - साक्षी भाव
साक्षी भाव
शब्द/बात
शब्द/बात
शब्द/बात
शब्द/बात
सत
रज
तम
साक्षी
त्रिगुण
कारण
निर्लिप्त
विशेषताएँ:
बात कौन करवा रहा है? पहचानता है
त्रिगुणात्मक माया को देखता है
शब्दों के पीछे कारण खोजता है
साक्षी रहता है, डूबता नहीं
मायिक दृष्टि = बंधन | दिव्य दृष्टि = मुक्ति

दृष्टि - दो प्रकार
मायिक दृष्टि -
(अंधेपन)
दिव्य दृष्टि -
(साक्षी भाव)
सत्त्व
रजस
तमस
अहंकार
VS
• अंधकार में भ्रमित
• अहंकार से बंधा
• माया के धुएँ में असहाय
• साक्षी होकर देखना
• गुणों के तंतु स्पष्ट
• निर्लिप्त, जागृत चेतना
मायिक दृष्टि → बंधन | दिव्य दृष्टि → मुक्ति
ॐ

ब्रह्म
माया ब्रह्म की शक्ति है
सतोगुण
रजोगुण
तमोगुण
1. इंद्रिय
2. मन
3. बुद्धि
4. चित्त
5. अहंकार
प्रकृति माया (ब्रह्म की शक्ति)
© लेखक - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म © अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

राधा तत्व क्या है? - भाग 1
• राधा कोई साधारण गोपी नहीं, वे कृष्ण की ह्लादिनी शक्ति हैं,
• कृष्ण की आत्मा हैं, वेद कहते हैं - राधा कृष्ण की आत्मा, कृष्ण राधा का प्राण।
• कृष्ण प्रेम का सागर है तो राधा उसकी लहर है।
• कृष्ण अगर मंत्र हैं तो राधा उसका अर्थ हैं।
• राधा के बिना कृष्ण आधे हैं, जैसे बिना दया के धर्म अधूरा।
• जो राधा को पा लेता है उसे कृष्ण स्वयं दौड़े आते हैं।
• राधा नाम लेते ही कृष्ण का हृदय पिघल जाता है।
लेख- श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म
@ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

राधा तत्व क्या है?
- भाग 2

- राधा तत्व वह परम शक्ति है जो निर्गुण निराकार ब्रह्म को साकार रूप में प्रकट करती है अर्थात मूल प्रकृति।
- राधा रानी प्रकृति नहीं, मूल प्रकृति हैं - प्रकृति की भी प्रकृति।
- जगत जननी दुर्गा माता भी जिनसे उत्पन्न होती हैं वही राधा हैं।
- ज्ञानी ऋषि मुनि अनेक जन्म तप करते हैं फिर भी परम तत्व दर्शन नहीं देते जब तक राधा चरणों में न गिरें।
- जो भक्त सब आश्रय त्याग कर राधा चरणों में पूर्ण समर्पित होता है वह शीघ्र परम तत्व को पा लेता है।
- राधा वह शक्ति है जो जीव को जन्म मृत्यु के बंधन से मुक्त करती है।
- गोलोक परमधाम की चाबी केवल राधा रानी के पास है - उनकी कृपा बिना द्वार नहीं खुलता।
- राधा कृपा बिना कृष्ण प्राप्ति असंभव है।

लेख- श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

राधा तत्व क्या है?
- भाग 3 -

ब्रह्मवैवर्त पुराण कहता है - परम तत्व ब्रह्म कुम्हार है और राधा मिट्टी रूपी शक्ति हैं,
बिना मिट्टी के कुम्हार गमला नहीं बना सकता, बिना राधा शक्ति के ब्रह्म सृष्टि
नहीं कर सकते। सृष्टि दोनों के सहयोग से बनती है। प्रकृति दृश्य शक्ति है
परमात्मा अदृश्य। जो आंखों से दिखे वह माया, जो न दिखे वह ब्रह्म।
अनंत देवियों की उत्पत्ति का मूल कारण राधा हैं। करोड़ों जन्म कृण शरण
से जो न मिले, वह एक जन्म राधा शरण से मिल जाता है।
राधा एक नाम अनंत जन्मों के कर्मों पर भारी है।
कृष्ण कठोर न्यायाधीश हैं - एक अपराध पर वापस भेजे देते हैं,
पर राधा करुणा महासागर हैं - सच्चे आंसुओं से शरण में आए भक्त के
अनंत अपराध क्षमा कर गोलोक वास दे देती हैं।

लेख- श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव

राधा तत्व क्या है?
- भाग 4 -
गर्ग संहिता
गर्ग संहिता वृंदावन खंड अध्याय 15 कहती है - जो राधा और कृष्ण को अलग समझते हैं वे कालसूत्र नरक अधिकारी बनते हैं, जब तक सूर्य चंद्रमा की सत्ता है तब तक नरक भोगना पड़ता है, मन में भी भेद सोचना पाप है। राधा प्रकृति रूप, कृष्ण पुरुषरूप, दोनों मिलकर एक परम तत्व हैं। जैसे नोट के दो पहलू - आगे और पीछे अलग नहीं, एक ही नोट के दो भाग हैं, वैसे राधा एक भाग, कृष्ण दूसरा भाग, नोट वही परम तत्व है। संसारी स्त्री पुरुष अलग हैं पर राधा कृष्ण अलग नहीं। स्त्री तत्व और पुरुष तत्व दोनों एक ही परम तत्व के अंश हैं।
जब राधा रूपी प्रकृति और कृष्ण रूपी पुरुष एक होते हैं, तभी वही अखंड परात्पर ब्रह्म कहलाता है - जिसे वेद परम तत्व कहता है।
लेख - श्री राधे कृष्ण परात्पर ब्रह्म @ अद्वैतानंद पं. श्री जयप्रकाश वैष्णव